उद्धरण-कोश

A DICTIONARY OF QUOTATIONS

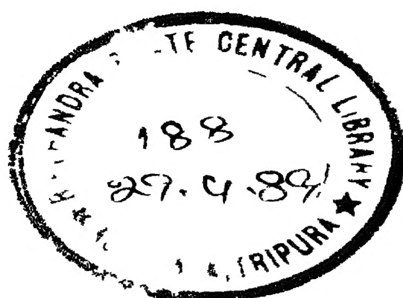
उद्धरण-कोश
उद्धरण-कोश
उद्धरण-कोश
उद्धरण-कोश
उद्धरण-कोश
उद्धरण-कोश

डा. भोलानाथ तिवारी

उद्धरण कोश

उद्धरण कोश

A Dictionary of Quotations



संपादक

डॉ० भोलानाथ तिवारी

सहयोग

डॉ० किरण बाला

श्रीमती दुलारी

बुक्स एन' बुक्स

दिल्ली-9

प्रकाशक : बुक्स एन' बुक्स
77 टैगोर पार्क, दिल्ली-9

मूल्य : 175.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 1956

मुद्रक : शांति मुद्रणालय, दिल्ली-32

आवरण : अनिल चतुर्वेदी

पुस्तकबंध : खुराना बुक बाइंडिंग हाउस, दिल्ली-6

दो शब्द

प्रस्तुत उद्धरण कोश में अनेक विषयों पर विद्वानों और चिंतकों के विचार संकलित हैं। इस काम में मुझे किरण बाला, दुलारी, श्वेता तथा सौरभ से तरह-तरह की सहायता मिली है।

स्थान बचाने की दृष्टि से प्रायः संदर्भ नही दिए गए हैं। कहीं-कहीं दिए भी गए हैं तो प्रायः संकेत रूप में।

प्रूफ़ व.ा अशुद्धियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

—भोलानाथ तिवारी

विषय-सूची

अ

अँग्रेज

भीतर-भीतर सब रस चूसै।
हँसि-हँसि कै तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज़।
क्यों लखि साजन, नहिं अँग्रेज़। —**भारतेंदु**

अँग्रेज़ी

हमारे देश की भाषा, हमारे देश में शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी नही हो सकती। —**महात्मा गाँधी**

एक अखिल भारतीय भाषा जरूरी है। कुछ लोग यह कल्पना करते हैं कि शायद अँग्रेज़ी यह काम दे सकती है···लेकिन यह साफ़ तौर पर नामुमकिन है।
—**जवाहरलाल नेहरू**

अँग्रेज़ों के चले जाने के बाद भी, अँग्रेज़ी यहाँ रह जाए तो हमारे राष्ट्रपिता के 'अँग्रेज़ो, भारत छोड़ो' आंदोलन का कोई अर्थ नही रहता।
—**अनंत शयनम् आयंगार**

आकाश बेल अँग्रेज़ी छाई जन-मन-पादप पर
जीवन-विकास-क्रम जिससे कुंठित हो रहा निरंतर।
इस पीढ़ी के मस्तक से कब छूटेगा, यह लांछन।
इतिहास पुकार कहेगा, जन-घातक थे नेतागण।
—**सुमित्रानंदन पंत (लोकायतन)**

अंत:करण

अंत:करण न्याय का कक्ष है। —**एक चीनी कहावत**

सन्देह की स्थिति में सज्जनों के अंत:करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है।
—**कालिदास**

मनुष्य का अंत:करण उसके आकार, संकेत, गति, चेहरे की बनावट, बोल-चाल तथा आँख और मुख के विकारों से मालूम पड़ जाता है। —**पंचतंत्र**

मानव का अंत:करण ही ईश्वर की वाणी है। —बायरन

अंत:करण के मामले में बहुमत के नियम को कोई स्थान नहीं है।

—महात्मा गाँधी

अंत:करण आत्मा की वाणी है, जैसे कि वासनाएँ शरीर की। इसमें आश्चर्य ही क्या यदि वे एक दूसरे का खंडन करती हैं। —रूसो

कोई साक्षी इतना विकट और कोई अभियोक्ता इतना शक्तिशाली नही है, जितना कि अपना अंत:करण। —सोफ़ोक्लीज

कायरता पूछती है—क्या यह भयरहित है? औचित्य पूछता है क्या यह व्यावहारिक है? अहंकार पूछता है—क्या यह लोकप्रिय है? परन्तु अंत:करण पूछता है—क्या यह न्यायोचित है? —पंशन

अंत:करण डरपोक होता है, तो जिन दोषों को रोकने की उसमें शक्ति नही होती, उन्हें अपराधी ठहराने की उसमें प्रायः न्यायबुद्धि भी नही होती।

—गोल्डस्मिथ

अंत:करण हम सब को कायर बना देता है। —शेक्सपियर

ईश्वर का मानव से कोमल संलाप ही अंत:करण है। —यंग

मनुष्य के अन्दर ईश्वर की उपस्थिति को अंत:करण कहते हैं।

—स्वेडन बोर्ग

(1) जैसे नेत्रों में एक भी कण पड़ जाने से कोई वस्तु ठीक-ठीक नही दीख पड़ती, ऐसे ही अंत:करण मे थोड़ी भी वासना रहने से आत्मा के दर्शन नहीं हो पाते।

(2) जैसे शीशे में अपना चेहरा तभी दिखलाई पड़ता है जब कि शीशा साफ़ व स्थिर हो, इसी प्रकार शुद्ध अंत:करण मे ही भगवान् के दर्शन होते हैं।

—स्वामी भजनानंद

मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिविम्ब नही पड़ता। उसी प्रकार जिनका अंत:करण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिविम्ब नही पड़ सकता। —रामकृष्ण परमहंस

अन्त:करण को 'मैं, मेरा' ये भावनाएँ बहुत तकलीफ़ देती हैं। इनके निकल जाने से अन्त:करण को उसी प्रकार सुख होता है, जैसे काँटा निकल जाने से शरीर को। —कनफ़्यूशियस

जिनका अन्त:करण सत्यनिष्ठ, पवित्र और दयालु होगा, उन्हें स्वर्ग के उपवन में प्रवेश मिलेगा। —हजरत मुहम्मद साहब

अंतर्जातीय विवाह

(1) यह तो व्यक्ति की पसन्द पर छोड़ देना चाहिए कि वह किस वर्ग में विवाह करता है।

(2) हिन्दू धर्म का अन्तर्जातीय खान-पान और अन्तर्जातीय विवाह से कोई विरोध नहीं है। विवाह में ऊँच-नीच का प्रश्न आड़े नहीं आता, क्योंकि ऐसे विवाह—विलोम, प्रतिलोम—प्राचीनकाल से होते आए हैं।

(3) अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह से वर्णाश्रम धर्म को कोई हानि नहीं पहुँचती। **—महात्मा गाँधी**

अंतर्जातीय व्यवहार

(1) दूसरी जाति के लोगों के साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध करने से किसी की जाति नहीं बदलती, क्योंकि वर्णाश्रम पेशे के आधार पर होता है न कि जन्म के।

(2) सभी जाति के लोग भगवान की सृष्टि के सेवक हैं—ब्राह्मण अपने ज्ञान द्वारा, क्षत्रिय बाहुबल द्वारा, वैश्य वाणिज्य द्वारा और शूद्र अपने शरीर-श्रम या सेवा द्वारा। फिर इनमें कोई ऊँच-नीच नहीं कहा जा सकता।

(3) अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार चालू हुए बिना देश में एकता और राष्ट्रप्रेम की भावना नहीं आ सकती।

(4) वास्तव में जाति के नाम से तो केवल मनुष्य जाति है, इसलिए सारे मानवीय व्यवहार जातीय हैं न कि अन्तर्जातीय।

(5) जात-पाँत का ढकोसला हिन्दू-संस्कृति की आरम्भिक नहीं बाद की देन है, जिसका खमियाज़ा हम आज भी उठा रहे हैं। **—महात्मा गाँधी**

अंधविश्वास

कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो, अंधों की तरह उसके पीछे न चलो।

—स्वामी विवेकानन्द

दूसरों की अंधाधुन्ध नकल करना छोटे मग़ज़ वाले लोगों का काम है।

—प्रेवाइक

किसी व्यक्ति पर, किसी ग्रन्थ पर, कभी अन्धविश्वास न करना।

—सोफ़ोक्लीज़

अंधा

अन्धा वह नहीं है जिसकी आँखें फूट गयी हैं, वरन् वह है जो अपने दोष छिपाता है।

—एक यूनानी कहावत

को वा महान्धो, मदनातुरो यः।
(बड़ा भारी अन्धा कौन है, जो काम-वश व्याकुल है।)

—स्वामी शंकराचार्य

अंधकार प्रकाश की ओर चलता है, परन्तु अंधापन मृत्यु की ओर।

—टैगोर

अकर्मण्य

प्रकृति अपनी प्रगति और विकास में रुकना नहीं जानती और प्रत्येक अकर्मण्य पर वह अपने शाप की छाप लगाती रहती है। —गोथे

यदि नगण्य बनना चाहते हो तो अकर्मण्य बनो। —होव

अकर्मण्यता

अकर्मण्यता मृत्यु है। —मुसोलिनी

अकाल

सावन सुक्र न दीसै निहचै पड़ै अकाल। —घाघ

(1) रात्यौ बोलै कागलो दिन में बोलै स्याल।
तो यों भाखैं भड्डरी निहचै परै अकाल॥
(2) माघ मास सनि पाँच हौ फागुन मंगल पाँच।
काल पड़ैगो भड्डरी जोतिस को मत साँच॥
(3) आसाढ़ै धुर अष्टमी चन्द उगंतो जोय।
कालो वै तौ करबरो धोलो वै तो सुगाल॥ —भड्डरी

करबरो = अकाल, सुगाल = सुकाल।

अकृतज्ञ

जो व्यक्ति अकृतज्ञ है, हमेशा दोष देखता रहता है, उसे पूरी पृथ्वी का साम्राज्य दे दें तब भी वह प्रसन्न नहीं होता।

—जातक कथा (1. 72. 72)

अकृतज्ञ मानव से एक कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। —शेख सादी

अकृतज्ञता

पशुओं ने अकृतज्ञता मानव के लिए छोड़ दी है —कोल्टन

अकृतज्ञता ही मनुष्यत्व का विष है। —सर पी० सिडनी

नेकी का बदला न देना क्रूरता है और उसका बदी में जवाब देना पिशाचता है। —सेनेका

अकृतज्ञता मानवता के प्रति विश्वासघात है। —टॉमसन

अकेला

सब जग रिपु, हौं एक हौ, कृश हौ अरु असहाय।
ऐसी शङ्का सिंह के, सपने हूँ नहिं भाय।।

—महाराज मानसिंह

एक अकेला सच्चरित्र नर जगत्प्रवाह फेर सकता है।
अपनी शाश्वत कीर्ति-कौमुदी वसुधा पर बिखेर सकता है।।

—शालिग्राम

जिसे भगवान ने अकेला बनाया है, न तो जिसके पास धन-वैभव है और न सुख में प्रसन्न होने वाला और न दुख मे रोने वाला, उसके जीवन का उद्देश्य महान् होता है। —रामकृष्ण परमहंस

अक़्लमंद (दे० बुद्धिमान भी)

अक़्लमंद व्यक्ति अपने अनुभवों से सीखता है, किंतु अधिक बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है। —एक चीनी लोकोक्ति

अक़्लमंद की बात सावधानी से सुनो चाहे वह उस पर आचरण न भी करता हो, क्योंकि अच्छे उपदेश दीवार पर लिखे हों तो भी वे मानने योग्य होते है।

—शेख़ सादी

अक़्लमंद को इशारा काफी है। —एक ईरानी लोकोक्ति

अक़्लमंद को इशारा बेवकूफ़ को तमाचा। —एक हिब्रू लोकोक्ति

अक़्लमंद वही है जो पूरे संकल्प से अपने काम को निपटाना जानता है।

—नैपोलियन

अक़्लमंद व्यक्ति अपने धन की बर्बादी, अपने मन का दुख, अपनों का बुरा व्यवहार, अपनी बेइज़्ज़ती तथा दूसरों द्वारा अपना ठगा जाना दूसरों से नहीं कहते। —बाइबिल

वास्तव में बुद्धिमान वह है जो क्रोध में भी ग़लत बात अपने मुँह से नहीं निकालता। —शेख़ सादी

थोड़ा पढ़ना ज़्यादा सोचना, कम बोलना ज़्यादा सुनना, यही बुद्धिमान बनने के लक्षण हैं। —कबीर

बुद्धिमान व्यक्ति मूर्खों से जितनी शिक्षा लेता है, मूर्ख बुद्धिमानों से उतनी नहीं लेता। —केतो

बुद्धिमान एक पग आगे बढ़ता है, किंतु एक पग पीछे जमाए रहता है। जब तक कि वह दूसरे स्थान की पूरी तरह परीक्षा नहीं कर लेता, तब तक पहले स्थान को नही छोड़ता। —चाणक्य

परामर्श तो अनेक लोग प्राप्त कर सकते हैं, किंतु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है। —साइरस

बुद्धि बहुत बड़ा धन है, किंतु इसकी पहचान बुद्धिमानों को ही होती है, मूर्खों को नही। —एक चीनी कहावत

अख़बार—दे० 'समाचार पत्र'।

अगर

एक अगर से इन्सान पेरिस को बोतल में बंद कर सकता है।

—एक फ्रांसीसी कहावत

अगुआ

सबसों आगे होयकै, कबहुँ न करिये बात।
सुधरै काज समाज फल, बिगरै गारी खात।।

—वृन्द

अगुआ या तो पान खाता है या जूता। —एक भोजपुरी कहावत

अच्छा

तुम को क्या अच्छा लगता है, इसके पहले इसका विचार करो कि ईश्वर को क्या अच्छा लगता है। —अज्ञात

ग्रह भेषज जल पवन पट,
पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग,
लखहिं सुलच्छन लोग।। —तुलसीदास

जाकौ मन जासौं रमै, जग कछु भलो न मन्द।
चहत चकोरी चन्द कौ, चकई चहत न चन्द॥

—रामचरित उपाध्याय

अच्छाई

इसमें आश्चर्य नहीं कि मूर्ख जिस गति से बुराइयों की ओर बढ़ता है, उसकी अपेक्षा बुद्धिमान की गति अच्छाइयों की ओर कहीं धीमी रहती है।

—कन्फ्यूशियस

बुराई को अच्छाई से जीतना अच्छा है, किन्तु बुराई को बुराई से जीतना बुरा है।

—हजरत मुहम्मद

जितनी अच्छाई कर सकते हो उतनी करो, हर साधनों द्वारा, हर तरह से, हर स्थान में, हर समय, हर व्यक्ति के साथ, और तब तक जब तक कि तुम कर सकते हो।

—जान् वेस्ले

अछूत

असत्य और पाखण्ड से भरे दुष्ट लोगों को ही अछूत कहा जा सकता है।

—महात्मा गाँधी

बाल-बाल बिके हैं बेहाल रहते हैं सदा
इनके बवाल आज भी गए न कूते हैं।
× × ×
छाती से लगा लो कौन छूत इनमें है लगी,
छूने क्यों नहीं हो ये अछूत तो अछूने हैं।

—हरिऔध

पर अजब इस लोक का व्यवहार है।
न्याय है संसार से जाता रहा,
श्वान छूना भी जिन्हें स्वीकार है,
है उन्हें भी हम अभागों से घृणा।

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अज्ञात तत्त्व

तत्त्व दृष्टि से, मनोविज्ञान की दृष्टि से, साहित्य की दृष्टि से 'अज्ञात की लालसा' कोई भाव ही नहीं है। यह केवल 'ज्ञात की लालसा' है जो भाषा की छिपाने वाली वृत्ति के सहारे 'अज्ञात की लालसा' कही जाती है। (काव्य में रहस्यवाद)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अज्ञ / अज्ञान / अज्ञानी

अज्ञान जैसा शत्रु दूसरा नही है। —चाणक्य

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नही है, बल्कि स्वयं को अज्ञानी जानना ही उसका विशेष अधिकार है। —राधाकृष्णन्

अज्ञानी रहने से पैदा न होना अच्छा है, क्योंकि अज्ञान ही सब विपत्तियों का मूल है। —प्लेटो

मोह और स्वार्थ अज्ञान के पुत्र हैं, अत: अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते हैं। —गाँधी

अज्ञानी के लिए ख़ामोशी से बढ़कर कोई चीज नही और यदि उसमें यह समझने की बुद्धि हो तो वह अज्ञानी नहीं रहेगा। —शेख़ सादी

अज्ञान से बढ़कर मनुष्य का कोई शत्रु नहीं। —एक अरबी लोकोक्ति

अज्ञात मन की रात्रि है, लेकिन वह रात्रि जिसमे न तो चाँद है और न तारे। —कनफ़्यूशियस

अज्ञान हठधर्मिता की जननी है। —पोप

अज्ञानी मनुष्य थोड़ा ही आरंभ करते है और बहुत व्याकुल होते हैं, परन्तु ज्ञानी बड़ा कार्य आरंभ करने पर भी नही घबराते। —शिशुपालबध

अपनी विद्वत्ता पर घमंड करना सबसे बड़ा अज्ञान है। —जैरेमी टेलर

जहाँ अज्ञान परम सुख हो वहाँ ज्ञानी होना मूर्खता है। —ग्रे

अज्ञान भय की जननी है। —होम

हितहू की कहिये नहीं, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध।। —वृन्द

अज्ञान ही अंधकार है। —शेक्सपियर

कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जब अज्ञान ही सुखद होता है। —डिकेन्स

अज्ञान अंधकार स्वरूप है। दीया बुझाकर भागने वाला यदि समझता है कि दूसरे उसे देख नही सकते, तो उसे यह भी समझ रखना चाहिए कि वह ठोकर खाकर गिर भी सकता है। (लज्जा और ग्लानि) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

वास्तविक रूप में अज्ञ ही बच्चे होते हैं, कम उम्र वाले नहीं। —मनु

मोह और स्वार्थ अज्ञान के पुत्र हैं। —**गाँधी**

अज्ञान सभी मलों में परममल है। भिक्षुओ, इस मत को धोकर पवित्र हो जाओ। —**भगवान बुद्ध**

सबसे बड़ा अज्ञान अपने अज्ञान को न जानना है। —**टैगोर**

नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा है। (दाना = बुद्धिमान)
—**एक ईरानी कहावत**

अज्ञानी का संग मत करो। —**भगवान महावीर**

अज्ञानी दूसरों की भली-बुरी बातें सुनकर बुरी बातों को ही ग्रहण करता है। ठीक वैसे ही जैसे सूअर अच्छी वस्तुओं के होते हुए भी विष्टा ही खाता है।
—**महाभारत**

अति

(1) रहिमन अती न कीजिए, गहि रहिए निज कानि ।।
सहिजन अति फूलै तऊ, डार पात कै हानि।
(2) रहिमन अती न कीजिए, गहि रहिए निज कानि।
सैंजना अति फूलै फरै डार पात की हानि ।। —**रहीम**

अति सर्वत्र वर्जयेत। —**एक संस्कृत लोकोक्ति**

अति संघरष करै जौ कोई।
अनल प्रगट चंदन मे होई।। —**तुलसी**

अति छबि से सीता हरी गई, अति मद से रावण नष्ट हुआ।
अति दान दिये बलि बाँध गये, अति से जग मे नित कष्ट हुआ।।
—**शालिग्राम**

अतिरूपेण वै सीता अति गर्वेण रावण।
अतिछानाद्बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत् ।।
(अति सुन्दरता के कारण सीता हरी गयी, अति गर्व से रावण मारा गया, अति दान के कारण बलि को बँधना पड़ा, अति को सभी जगह छोड़ देना चाहिए।)
—**चाणक्य**

अधिक हर्ष और अधिक उन्नति के बाद ही अधिक दुःख और पतन की बारी आती है। —**जयशंकर प्रसाद**

अति दान से निर्धनता और अति लोभ से तिरस्कार होता है। अति विनाश का कारण है, अतः अति से सदा दूर रहो। —**शुक्रनीति**

प्रकृति का नियम यही है एक
कि अति का होगा ही विध्वस । —रांगेय राघव

प्रेम में, ज्ञान में और सौन्दर्य में कभी अति नही होती, यदि ये गुण पूर्णतः शुद्ध अर्थ में समझे जायँ । —एमर्सन

प्राय: अति से प्रतिक्रिया होती है और विपरीत दिशा मे परिवर्तन होता है, चाहे यह ऋतु, व्यक्ति या शासन में हो । —प्लेटो

अति न करहु अतिता बुरी, चाहे होव ललाम ।
देखहु कीरा परत है, अति मीठे जो आम ।।
—पतिराम कवि

अति सब चीज की बुरी होती है, यहाँ तक कि अत्यंत मीठी शहद भी हानिकारक हो जाती है । —एनन

अति खाना, श्मशान जाना । —एक मराठी लोकोक्ति

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप ।। —कबीर

अति परिचयादवज्ञा । —एक संस्कृत लोकोक्ति

अति प्रेम से यश चला जाता है । —वाल्मीकि

अनिथि

जौ घर आवत सत्रु हू, सज्जन देत मु चाहि ।
ज्यों काटै तरु मूल कोउ, छाँह करत वह ताहि ।। —वृन्द

(1) अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है । अतिथि के रूप में समाज हमसे सेवा मांग रहा है, हमारी यह भावना होनी चाहिए ।

(2) यदि कुछ न हो तो प्रेमपूर्वक बोलकर ही अतिथि का सत्कार करना चाहिए —हितोपदेश

(1) जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा ।।
तदपि विरोध मान जहँ कोई । तहाँ गये कल्यान न होई ।।

(2) आवत ही हर्ष नहीं, नयनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह ।।

(3) मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता ।
तसि पूजा चाहिअ जस देवता ।। —तुलसी

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान-मान मनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहिं करिय पयान॥ **—रहीम**

(1) अतिथि-सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है।

(2) अतिथि-सत्कार मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। **—बाइबिल**

कोई अतिथि इतना श्रेष्ठ नहीं होता कि तीन दिन बाद भी मेज़बान को बुरा न लगे। **—प्लातियस**

आने वाले अतिथि का स्वागत करो, जाने वाले अतिथि को जल्दी जाने दो।
—पोप

किसी अतिथि को न आने देने की अपेक्षा उसको बुलाकर हटा देना कहीं अधिक बुरा है। **—ओविड**

पहले दिन अतिथि, दूसरे दिन बोझ और तीसरे दिन कटक है।
—लेबोया

पहले दिन पाहुना, दूसरे दिन मेंहुना, तीसरे दिन ठेंगुना।
(मेहमान एक दिन ही अच्छा लगता है। दूसरे दिन यह भार हो जाता है और तीसरे दिन भी रुके तो उसे घुटने से मार कर घर से निकाल देना चाहिए।)
—एक भोजपुरी कहावत

(1) जो मनुष्य योग्य अतिथि का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, उसके घर में निवास करने से लक्ष्मी को आह्लाद होता है।

(2) पुष्प सूँघने से मुरझा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिए एक निगाह ही काफ़ी है।

(3) घर में जब तक अतिथि हो, चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं पीना चाहिए।

(4) अतिथि का आदर-सत्कार करने में जो कभी नहीं चूकता, उस पर कभी कोई आपत्ति नहीं आती। **—तिरुवल्लुवर**

(1) गृहस्थ का धर्म है कि घर पर शत्रु भी आए तो उसका आदर-सत्कार करे, जैसे वृक्ष अपने काटने वाले को भी छाया देता है। आतिथ्य-सत्कार में चूकने वाला पतित होता है।

(2) धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं वाऽतिथिपूजनम्।
(अतिथि के पूजन में धन, कीर्ति, अवस्था या स्वर्ग प्राप्त होते हैं।)
—मनु (मनुस्मृति)

(1) कीर्ति चा वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतियेरश्नाति ।
(वह घर की कीर्ति और यश को खा जाता है, जो अतिथि से पहले खाता है ।)

(2) अतिथि के आहार ले लेने के बाद ही गृहस्थ को स्वयं आहार लेना चाहिए, पहले नही ।

(3) अतिथि जिसका अन्न खाता है उसके पाप धुल जाते हैं । —**अथर्ववेद**

यदि किसी को भूख-प्यास न लगती तो अतिथि-सत्कार का अवसर कैसे मिलता ? —**विनोबा**

अतिथि के सच्चे और हार्दिक स्वागत में वह शक्ति है कि जो साधारण से साधारण भोजन को अमृत और देवताओं का भोजन बना देती है ।

—**हाथोनी**

अतिथि सेव सम धर्म नहिं, निज बस मन सम मीत ।
नहिं सुबुद्धि सम बन्धु जग, जाहि करहु परतीति ।।

—**पतिराम कवि**

जिसके गृह से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसे वह अपने पाप देकर उसके शुभ कर्मो को ले जाता है । —**विष्णुपुराण**

घर पर आए हुए अतिथि को कदापि निराश नही करना चाहिए—यह एक व्रत है । उसके लिए जिस प्रकार भी हो, यथेष्ट विपुल अन्न जुटाना ही चाहिए । जो आहार तैयार किया जाता है, वह अतिथि के लिए ही किया जाता है—ऐसा पुरातन महर्षियों ने कहा है । —**तैत्तिरीय उपनिषद्**

अति परिचय

अतिपरिचयादवज्ञा भवति ।
(अधिक परिचय से अनादर होता है ।) —**एक संस्कृत लोकोक्ति**

अति परिचय ते होत है अतिहि अनादर भाय ।
मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय ।

—**पतिराम कवि**

अति भोजन

अति खाना और श्मशान जाना । —**एक मराठी कहावत**

तलवार से उतने नहीं मरते जितने अति भोजन से । — **एक चीनी कहावत**

बहुत खाने वाले मनुष्य का कभी आदर नहीं होता । —**सादी**



अतिशयोक्ति

'काव्य अतिशयोक्तिपूर्ण होने तथा असत्य वर्णनामय होने से त्याज्य है, यह बात नहीं।' काव्यों में वर्णनीय व्यक्ति या विषय के प्रति जो अर्थवाद या अतिशयोक्ति की जाती है, वह असंगत या असत्य नहीं है। इस प्रकार के अर्थवादपूर्ण वर्णन तो वेदों में, शास्त्रों में और लोक में भी पाये जाते हैं। **—राजशेखर**

जो अपनी बात बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं वे अपने को छोटा बनाते हैं।**—सिमन्स**

अतिशयोक्ति भी असत्य है। **—गाँधी**

अतीत

भविष्य का अनुमान लगाने के लिए अतीत का अध्ययन करो। **—कनफ़्यूशियस**

अतीत की चिंता मत करो, उसे भूल जाओ, बीती बातों को चिंता करने से सुधारा नहीं जा सकता। **—जेम्स डगलस**

मैं ऐसे भविष्य को नही चाहता, जो अतीत से मेरा सम्बन्ध छुड़ा दे।
—जार्ज इलियट

बीती ताहि बिसरि दे, आगे की सुधि लेय। **—एक हिंदी लोकोक्ति**

अतीत चाहे दुःखद ही क्यों न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं।**—प्रेमचन्द**

अतृप्ति

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु।
अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च ॥

(धन, जीवन, स्त्री और भोजन के विषय में सभी प्राणी अतृप्त होकर गये, जाते हैं और जाएँगे।) **—चाणक्य**

पक्षी चाहता है—'मै बादल होता'
बादल चाहता है—'मै पक्षी होता'। **—रवीन्द्र**

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस के प्रति और अपने दुःख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छा है।

अत्याचार/अत्याचारी

(1) मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ़ लड़े।

(2) अत्याचार करने से अत्याचार सहना कहीं बड़ा पाप है।

—सुभाषचन्द्र बोस

अत्याचार से घृणा करो, अत्याचारी से नहीं। —**महात्मा गांधी**

अत्याचार सहन करने का कुफल यही होता है। पौरुष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है। —**दिनकर**

(1) अत्याचारी से बढ़कर अभागा आदमी और कोई नही है, क्योंकि विपत्ति के समय उसका कोई मित्र नहीं होता।

(2) जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है। —**सादी**

गुलामों की अपेक्षा उन पर अत्याचार करने वाले की हालत ज्यादा ख़राब होती है। —**गाँधी**

जिसने किसी ऐसे व्यक्ति पर अत्याचार किया है जिसका भगवान् के सिवा कोई सहायक नहीं, तो उसे चाहिए कि सचेत रहे और अपने अत्याचार का फल शीघ्र न पाने से भ्रम में न पड़ जाए। —**इस्माइल-इब्न-अबूबकर**

अत्याचार करने वाला उतना दोषी नहीं है जितना उसे सहन करने वाला। —**तिलक**

समस्त अत्याचार क्रूरता एवं दुर्बलताओं से उत्पन्न होते हैं। —**सेनेका**

अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है। - **फ्रैंकलिन**

जब अत्याचारी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —**शेक्सपियर**

दुर्बल के प्रति अत्याचार करने में जिन्हें संकोच नहीं होता, सबल के तलवे चाटने में भी उन्हें ठीक उसी प्रकार सकोच नही होता। —**अज्ञात**

(1) जालिम मर जाता है पर जुल्म रह जाता है।

(2) अनाचार और अत्याचार को चुपचाप सिर झुकाकर वे ही सहन करते हैं जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव हुआ करता है। —**अज्ञात**

अत्युक्ति—दे० अतिशयोक्ति।

अर्थ

किसी शब्द के उच्चारण से जिसकी प्रतीति होती है, वही उसका अर्थ है। —**भर्तृहरि (वाक्यपदीय)**

किसी भी इन्द्रिय से ग्रहण किसी भी भाषिक इकाई को करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही अर्थ है। जिनसे किसी अर्थ की प्रतीति न हो वे निरर्थक होते हैं। —भोलानाथ तिवारी

अद्वैत, अद्वैतवाद

मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ। मैं मनुष्य की परम आवश्यक एकता में विश्वास करता हूँ। इसी कारण मुझे तो ऐसा यकीन है कि एक मनुष्य के आध्यात्मिक लाभ के साथ सारी दुनिया का लाभ होता है। इसी तरह एक मनुष्य के अधःपतन के साथ उस हद तक सारे संसार की अधोगति होती है।

—महात्मा गांधी

प्रकृति का आत्मा से पृथक्करण नहीं वरन् उसमें पर्यवसान अद्वैत है।

—नंददुलारी वाजपेयी

(1) अद्वैतवाद के अन्तर्गत दो प्रकार के द्वैत का त्याग लिया जाता है··· आत्मा और परमात्मा के द्वैत का तथा ब्रह्म और जड़ जगत् के द्वैत का। (मत और सिद्धांत, जा० ग्रं०)

(2) अद्वैतवाद के मूल में एक दार्शनिक सिद्धांत है; कवि-कल्पना या भावना नहीं। वह मनुष्य के बुद्धि-प्रयास या तत्त्व-चिंतन का फल है। वह ज्ञान-क्षेत्र की वस्तु है। (जायसी का रहस्यवाद, जा० ग्रं०)

(3) एकेश्वरवाद स्थूल देववाद है और अद्वैतवाद सूक्ष्म आत्मवाद या ब्रह्मवाद। अद्वैतवाद का मतलब है कि दृश्य जगत की तह में उसका आधार स्वरूप एक ही अखंड नित्य तत्त्व है और वही सत्य है। (मत और सिद्धांत, जा० ग्रं०)

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

अद्वैतवाद का अर्थ है अचूक द्वैतसिद्धि। —विनोवा भावे

अधर्म

जो अधर्म करते हैं चाहे उन्हें उसका फल तत्काल न मिले, पर धीरे-धीरे वह उनकी जड़ काट डालता है। —वेदव्यास

अधर्म पर स्थापित राज्य कभी नहीं टिकता। —सेनेका

जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप-रंग का नाश कर देता है उसी प्रकार अधर्म से लक्ष्मी का नाश हो जाता है। —स्वामी भजनानन्द

रहिमन वित्त अधर्म को, जरत न लागै बार।
चोरी करि होरी रची, भई तनिक में छार॥ —रहीम

अपने को न्यायी दिखलाना, जबकि ऐसा न हो, सबसे बड़ा अधर्म है।—प्लेटो

अधर्म से पहले तो मनुष्य बढ़ता है, कल्याण का अनुभव करता है, शत्रुओं पर विजय पाता है, किंतु अंततः समूल नष्ट हो जाता है। —मनु(4.1.74)

अधिकार

(1) अधिकारों का सच्चा स्रोत कर्त्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्त्तव्य पूरे करें तो अधिकारों को ढूंढ़ने कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा।

(2) ईश्वर द्वारा निर्मित हवा-पानी की तरह सब चीजों पर सबका समान अधिकार होना चाहिए।

(3) अधिकार बहुत बुरी चीज़ है। —**महात्मा गांधी**

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है॥

—**मैथिलीशरण गुप्त**

(1) नहर यह सोचना पसन्द करती है कि नदियाँ केवल उसे जल देने के लिए हैं।

(2) अधिकार जताने से अधिकार सिद्ध नहीं हो जाता। —**टैगोर**

अधिकार पाया जाता है, लिया जाता है, देता कोई नहीं।

—**श्रीराम शर्मा 'राम'**

संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है।

—**प्रेमचन्द**

अधिकार विनाशकारी प्लेग के समान है, जिसे भी छूता है नष्ट कर देता है।

—**शेली**

अधिकारमदं पीत्वा को न मुह्यात् पुनश्चिरम्।
(अधिकार रूपी मदिरा का पान कर कौन है जो चिरकाल तक उन्मत्त नहीं बना रहता।) —**शु क्राचार्य**

अपनत्व की अनुभूति ही तो अधिकारों की जननी है। —**अज्ञात**

अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है। —**जयशंकर प्रसाद**

अधिकार भ्रष्ट करता है, पूर्ण अधिकार पूर्ण रूप से। —**लार्ड आकटन**

बहुत अधिकार मिल जाने पर मनुष्य का विचार दूषित हो जाता है।

—**विलियम पिट चैथम**

अधिकार की वृद्धि के साथ, बुराइयाँ भी बढ़ती जाती हैं। —**एडमंड बर्क**

दुनिया में हमें नम्रता से, विवेक से चलना चाहिए; और हमारे जो अधिकार हों उनकी दृढ़ता से माँग करनी चाहिए। —**सरदार पटेल**

अधिकारी

अधिकारियों को आप जानते ही हैं, आँखें नहीं, केवल कान होते हैं।

—प्रेमचन्द

अधिकारियों को अधिकार के साथ-साथ अपने कर्तव्य के प्रति भी जागरूक होना चाहिए। —अज्ञात

अध्ययन

(1) शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं वैसे ही मानसिक रुकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं।

(2) अध्ययन हमें आनंदित करता है, हमारा आकर्षण बढ़ाता है और हमें योग्य बनाता है।

(3) धूर्त मनुष्य अध्ययन का तिरस्कार करते है, सरल मनुष्य उसकी प्रशंसा करते हैं और ज्ञानी पुरुष उसका उपयोग करते हैं।

(4) अध्ययन खंडन और असत्य सिद्ध करने के लिए न करो, न विश्वास करके मान लेने के लिए करो, न बातचीत और विवाद करने के लिए करो, बल्कि मनन और परिशीलन के लिए करो। —बेकन

एक जिप्सी अपने बेटे की नालायकी से चिढ़कर एक दिन बोला : "तुम एकदम निकम्मे हो, और आलस्य में अपने दिन बिताते हो। मैं कै बार तुम्हें समझा चुका हूँ कि तुम्हें कलाबाजियाँ दिखाना, कुत्तों को नये-नये करिश्मे सिखाना, रस्सी पर चलना, तथा और भी इसी तरह के दूसरे कामों में मन लगाना चाहिए। तभी तुम जीवन में काम के आदमी बन सकते हो। अब अगर तुम आइन्दा से मेरे कहने पर ध्यान न दोगे तो मैं तुम्हारी जिंदगी बरबाद करने के लिए तुम्हें किसी मकतब में भेज दूँगा, जहाँ तुम्हें कीड़ों द्वारा चाटा गया विज्ञान सीखना होगा। पढ़-लिखकर, अपने कुल में कलंक लगाकर, तुम जीवन-भर बेकार रहोगे और भूखों मरोगे।" —उबैद जाकानी

सद्ग्रंथ इस लोक की चिंतामणि हैं। उनके अध्ययन से सब कुचिंताएँ मिट जाती हैं। संशय-पिशाच भाग जाते हैं और मन में सद्भाव जागरित होकर परम शान्ति प्राप्त होती है। —शिवानन्द

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन से अधिक मनुष्य श्रेष्ठ बने हैं। —सिसरो

जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमको अपने अज्ञान का आभास होता जाता है। —शेली

जिसे अध्ययन का शौक है वह सभी जगह सुखी रह सकता है।—**महात्मा गांधी**

सबसे कम खर्चीला मनोरंजन होता है श्रेष्ठ पुस्तकों के अध्ययन से और वह स्थायी भी होता है। —**जॉर्ज बर्नार्ड शॉ**

मानव का सच्चा जीवन-साथी विद्या है। —**दयानंद सरस्वती**

जो पुस्तक तुम्हें सबसे अधिक सोचने पर मजबूर करे वही तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक है। —**जवाहरलाल नेहरू**

आज अध्ययन करना सभी जानते हैं, किंतु यह कोई नहीं जानता कि किसका अध्ययन करना चाहिए। —**जार्ज बर्नार्ड शॉ**

अध्यात्म

'अध्यात्म' शब्द की, मेरी समझ में, काव्य या कला के क्षेत्र में कही कोई ज़रूरत नही है। (काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था)—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

सर्वोत्तम अध्यात्म दिव्य ज्ञान की अपेक्षा दिव्य जीवन है। —**जैरेमी टेलर**

अध्यापक

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। —**महर्षि अरविन्द**

अध्यापक-जीवन का एक बड़ा भारी अभिशाप यह है कि आप को ऐसी सैकड़ों बातों को पढ़ना-पढ़ाना होगा जिन्हें आप न तो हृदय से स्वीकार करते हैं और न साहित्य के लिए हितकर मानते हैं। यहाँ आदमी को आपा खोकर ही सफलता मिलती है। —**हजारीप्रसाद द्विवेदी**

अनादर

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये, उपजै क्रोध ज्ञानिहू के हिये। —**तुलसी**

अनादरपूर्वक जीने से मर जाना ही अच्छा है। —**सोफ़ोक्लीज**

गुरुजनों का अनादर ही उनका वध कहलाता है। —**महाभारत**

अनासक्त अनासक्ति

कर्मफल और इंद्रिय-विषयों में मन न लगाकर कार्य करना ही अनासक्ति है। —**अरबिन्द**

अनासक्ति की कसौटी यह है कि फिर उस वस्तु के अभाव में हम कष्ट का अनुभव न करें। —**हरिभाऊ उपाध्याय**

अनासक्ति ही को तुम समझो भारतीय दर्शन का मूल।
वेदशास्त्र इसके उद्गम हैं, गीता इसका सुरभित फूल। —**शालिग्राम कवि**

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि वह भगवान की भक्ति है।
—**महात्मा गाँधी**

पहले भी अब से दूर बहुत दिल में हसरतें,
अब आरज़ू यह है कि काहे आरज़ू न हो! —**अकबर**

(1) आसक्ति दुख है अनासक्ति सुख।
(2) अनासक्त व्यक्ति कर्म करते हुए कर्म के बंधन में नहीं पड़ता।
—**योगवाशिष्ठ**

अनियमितता

काम की अधिकता नहीं अनियमितता आदमी को मार डालती है।
—**महात्मा गाँधी**

अगर अनियमितता कर जग में कोई मनुज शिकार हो गया।
तो उसका धन, स्वास्थ्य, परिश्रम औ जीवन बेकार हो गया॥
—**शालिग्राम कवि**

अनुकरण

अभी तक अनुकरण करके कोई भी व्यक्ति महान् नहीं हो पाया है।
—**सैमुअल जॉनसन**

अंधानुकरण से आत्मविश्वास के बजाय आत्मसंकोच होता है। —**अरविन्द**

मनुष्य अनुकरण करने वाला प्राणी है और जो सबसे आगे बढ़ जाता है वही समूह का नेतृत्व करता है। —**शिलर**

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

(सज्जन पुरुष जो कुछ अचारण करते हैं, उसी का अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। वे जिसे प्रमाण बनाते हैं, उसी का साधारण लोग अनुसरण करते हैं।)
—**महाभारत**

उपदेश की अपेक्षा कहीं अधिक हम अनुकरण करके ही सब कुछ सीखते हैं।
—**बर्क**

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम् ।
गतानुगतिको लोको न लोक: पारमार्थिक: ।।

(संसार में भेड़ियाधसान है। एक का अनुकरण करके दूसरा भी बुरा काम करने लगता है। लेकिन परमार्थ के काम का कोई भी अनुकरण नही करता।)

—पंचतंत्र

अनुग्रह

किसी के अनुग्रह की याचना करना अपनी आज़ादी बेचना है।

—महात्मा गांधी

किसी के अनुग्रह पर जीना मृत्यु से भी बुरा है। —अज्ञात

अनुभव (दे० 'अनुभूति' भी)

अनुभव द्वारा मनुष्य बहुत देर मे शिक्षा प्राप्त करता है वह भी बहुत भूले करने के बाद। —जे० ए० फ्राउड

अनुभव द्वारा मनुष्य ने जो कुछ भी शिक्षा प्राप्त की है उसके सिवा वह कुछ भी नहीं जानता। —वीलेंड

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अंधा है। — विवेकानन्द

यदि कोई केवल अनुभवों से ही बुद्धिमान हो जाता तो लन्दन के अजायब घर के पत्थर इतने समय बाद संसार के बड़े से बड़े बुद्धिमानों से भी अधिक बुद्धिमान होते। —बर्नार्ड शॉ

मेरे पास एक दीपक है जो मुझे मार्ग दिखलाता है और वह है मेरा अनुभव।

—पैट्रिक हैनरी

किसी भी मनुज के जीवन का यदि अनुभव आधार न होगा।
तो मैं दावे से कहता हूँ उसका बेड़ा पार न होगा।।

—शालिग्राम कवि

दूसरों के अनुभव जान लेना भी एक अनुभव है। —अज्ञात

अनुभव एक रत्न है और इसे ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि प्राय: यह अधिक मूल्य में खरीदा जाता है। —शेक्सपियर

आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछै बात।
जो गूंगा गुड़ खाइ कै, कहै कौन मुख स्वाद ।। —कबीर

अनुभव-प्राप्ति के लिए अत्यन्त अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है, परन्तु उससे जो शिक्षा मिलती है वह अन्य किसी साधन द्वारा नहीं मिल सकती।—कारलाइल

कष्ट सहने पर ही अनुभव होता है। **—महात्मा गाँधी**

अनुभाव

कहूँ कृपा कहुँ बचन ते, कहुँ चेष्टा ते देखि।
जी की गति जानी परै, सो अनुभाव विशेषि ॥ **—भिखारीदास**

थिर भाविन को और कौं प्रगटैं ते अनुभाव।
सचारी जेहि साथ है बहुत बढ़ावे दाव ॥ **—कुलपति**

अनुभूति

ज्यों गूँगे के सैन को, गूंगा ही पहिचान।
त्यों ज्ञानी के मुक्ख को ज्ञानी होय सो जान ॥ **—कबीर**

प्रत्यक्ष और वास्तविक अनुभूति (actual experience) के समय भी कभी-कभी हमारा हृदय मुक्त रहता है। अतः भावों की प्रत्यक्ष वास्तविक अनुभूति भी रसकोटि की हो सकती है और कभी-कभी होती है। ('प्रस्तुत रूप-विधान' र० मी०)
—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अनुभूति अपनी सीमा में जितनी सबल है उतनी बुद्धि नहीं। हमारे स्वयं जलने की हलकी अनूभूति भी दूसरे के राख हो जाने के ज्ञान से अधिक स्थायी रहती है। **— महादेवी वर्मा**

अनुवाद

स्रोत भाषा के संदेश को प्रथमतः अर्थ और द्वितीयतः शैली दोनों ही दृष्टियों से लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य रूप में अंतरित करना अनुवाद है।
—नाइडा

एक भाषा की पाठ-सामग्री के स्थान पर दूसरी भाषा की समतुल्य पाठ-सामग्री प्रतिस्थापित करना अनुवाद है। **—कैटफोर्ड**

(1) मेरा विचार है कि मैंने यद्यपि शब्दानुवाद नहीं किया है तथापि अनुवाद करने में जितना परिश्रम मैंने किया है, बहुत कम लोगों ने किया होगा। यदि अनुवादक मूल के सौंदर्य को सुरक्षित न रख सके तो कम-से-कम उस पर अपने जीवन की कुरूपता को तो आरोपित न करे। उसे यथासंभव सजीव तो बनाना ही चाहिए। भूसा भरे गीध की अपेक्षा जीवित गौरैया कहीं बेहतर है।

(2) मुझे विश्वास हो गया है कि अनुवादक को मूल रचना को अपनी रुचि के अनुसार ढालना चाहिए। जीवित कुत्ता मरे शेर से कहीं अच्छा होता है।

—**फ़िट्ज़गेराल्ड**

अनुवाद शब्दानुवाद न होकर स्वतंत्र होना चाहिए। —**होरेस**

अनुवाद पुनर्रचना नही, बल्कि समाभिव्यक्ति है। —**क्रोचे**

अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या यह है कि किसी भाषा के किसी शब्द का हू-ब-हू समानार्थी दूसरी भाषा में प्रायः नही मिलता। —**शापनहावर**

अनुवाद की अपूर्णता के विषय में चाहे जो भी कहा जाए, किंतु इसमें संदेह नही कि अनुवाद विश्व के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और महानतम कार्यो मे से एक है।

—**गेटे**

काव्य का गद्यानुवाद करने में आद्यंत न्यूनाधिक रूप से छूट लेनी पड़ती है, क्योंकि काफ़ी कुछ जो कविता में ठीक होता है, गद्य में जाकर गलत हो जाता है।

—**सैमुअल बटलर**

काव्यात्मक गद्य मे अनुवाद करने से ही मूल काव्यकृति के सौंदर्य और उसकी गरिमा की रक्षा हो सकती है। कुछ छंदों का तो छंदानुवाद हो सकता है, किंतु किसी पूरे महाकाव्य का, उसके लालित्य की रक्षा करते हुए स्पष्टता के साथ छदानुवाद अत्यंत दुष्कर कार्य है। सामान्य छंदों में अर्थ को तो स्पष्टतः लाया जा सकता है किंतु उसके ध्वन्यात्मक संगीत की रक्षा नही जा सकती।

—**रवीन्द्र नाथ टैगोर**

कविता का अनुवाद गद्य में करना कहीं अच्छा होता है। —**ब्लॉक**

एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को देखना किसी छपे कपड़े को उल्टी तरफ से देखने के समान है। —**सेरवांते**

कथ्य को अभिव्यक्ति से हमेशा अलगाया नहीं जा सकता—इस बात का ध्यान रखते हुए कि एक भाषा की किसी सामग्री के कथ्य को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है। —**फॉरेस्टेन**

अनुवाद एक व्याख्यात्मक कला है। — **रेमाटो पोगिआलो**

अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध मुख्यतः अर्थ को प्रतिमानित (पेटर्न्ड) प्रतीकों के एक समूह से दूसरे समूह में अंतरित करने से होता है। —**डॉटेस्ट**

कविता का अनुवाद असंभव है। क्या संगीत का अनुवाद कोई कर सकता है ? —**वाल्टेयर**

कविता इतनी सूक्ष्म स्पिरिट होती है कि एक भाषा से दूसरी में उंडेलते समय वह उड़ जाती है। **—सर जान डेनहाम**

यह असंभव है कि अनुवाद शब्द-प्रति-शब्द भी हो और अच्छा भी हो। ऐसा करना बेड़ियों से पैरों को जकड़ कर रस्सी पर नाचने के समान है। **—ड्राइडेन**

अनुवाद ऐसा सीमाशुल्कघर (कस्टम हाउस) है, जहाँ यदि अनुवादक रूपी सीमाशुल्क अधिकारी सावधान न रहे तो विदेशी मुहावरे का माल किसी भी अन्य स्रोत की तुलना में लक्ष्य भाषा में अधिक घुस आता है। **—रैबिन**

कविता का अनुवाद हो ही नही सकता। **—सैमुअल जानसन**

सारा अनुवाद कार्य असंभव को संभव बनाने का प्रयास है। **—हम्बोल्ट**

कविता को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने से सारा माधुर्य नष्ट हो जाता है। **—दाँते**

यदि कोई पिंडार के गीतों का शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद करे तो ऐसा लगेगा कि एक पागल ने दूसरे पागल की रचना का अनुवाद किया है। इसीलिए मैंने अपनी इच्छानुसार लिया, छोड़ा और जोड़ा है। **—कॉवले**

स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति के लालित्य को अनुवाद में सुरक्षित रख पाना असंभव है।···यदि मै शब्दश: अनुवाद करूँ तो अनुवाद अटपटा होगा, और यदि आवश्यकता से विवश होकर पदक्रम या शब्दावली में परिवर्तन करूँ तो ऐसा लगेगा कि मैंने अनुवादक का धर्म नहीं निभाया। **—सिसरो**

(1) अच्छा अनुवाद उसे कहते है, जिसमें मूल कृति के गुण पूरी तरह हों, ताकि अनुवाद को पढ़ने वाले लक्ष्य भाषा-भाषी उतनी ही स्पष्टता से उसे समझ सके और उतनी ही तीव्रता से उसका आस्वाद ले सकें, जितना उस मूल भाषा के जानने वाले मूल कृति को समझ सकते हों तथा उसका आस्वाद ले सकते हों।

(2) सामान्य अनुवादक मूल की शक्ति से दब जाता है और प्रतिभाशाली अनुवादक प्राय: उसमें ऊपर उठ जाता है। **—टाइटलर**

किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद उबाली हुई स्ट्राबेरी की तरह स्वाद-विहीन होता है। **—फ़ॉरेस्ट स्मिथ**

विचारों का अनुवाद तो किया जा सकता है किंतु शब्द और उनके साहचर्य (association) का नही। **—सिडनी**

अनुवाद पाप है। **—शावरमैन**

अनुवाद 'शब्दशः अनुवाद' और 'मुहावरेदार अनुवाद' के बीच एक समझौता मात्र है। —**बेनजामिन जावेट**

अनुवाद कार्य प्राय: मौलिक लेखन जितना ही प्राचीन है और उसका इतिहास उतना ही सम्मानजनक और जटिल है जितना साहित्य की किसी भी विधा को।
—**थियोडोर सेवरी**

लेखक ने जो कुछ कहा है, अनुवादक को उसके अनुवाद का तो प्रयास करना ही है, किंतु जिस ढंग से कहा है वह ढंग भी अपने अनुवाद मे लाने का प्रयास करना चाहिए। — **जॉन कनिंग्टन**

(1) अनुवाद अधिक-से-अधिक मूल के निकट हो सकता है किंतु यह भी प्राय: संभव नही होता।

(2) अनुवाद के रूप में कोई अनुवाद अच्छा हो सकता है, किंतु वह मूल का पूरा रूपांतरण नहीं हो सकता। —**जार्ज हैनरी लेविस**

कोई भी अनुवाद सटीक नही हो सकता। सभी अनुवाद मूल का गलत प्रतिनिधित्व करने के कारण पाठक को कुछ अंशों मे धोखा देते हैं।
—**एक इतालवी लोकोक्ति**

ईमानदारी से किए गए शाब्दिक अनुवाद मे सभी कुछ होगा, सिर्फ़ आत्मा की कमी रहेगी। —**जवाहरलाल नेहरू**

(1) अनुवाद अंततः अपूर्णता की ही अनुभूति देता है।

(2) भाषा विचारों और भावों का परिधान है और इस दृष्टि से एक विचारक या कवि की उपलब्धियाँ जिस भाषा में व्यक्त हुई हैं, उससे उन्हें दूसरी वेशभूषा में लाना असंभव नही तो दुष्कर अवश्य है। —**महादेवी वर्मा**

मूल की कला और सौंदर्य को अक्षुण्ण रखते हुए एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करना असंभव है। —**राजगोपालाचार्य**

(1) एक भाषा मे व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

(2) अनुवाद कथनतः और कथ्यत: निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन है।
—**भोलानाथ तिवारी**

अनुशासन

(1) अनुशासन शारीरिक और मानसिक दो प्रकार के होते हैं और किसी भी व्यक्ति के प्रशिक्षण के लिए ये दोनों ही ज़रूरी हैं।

(2) अनुशासन में रखने का प्रशिक्षण बचपन में और घर से ही शुरू होना चाहिए। अनुशासनहीन बालक आसानी से बिगड़ जाते हैं।

(3) अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है, न संस्था या राष्ट्र। वास्तव में अनुशासन ही संगठन की कुंजी और प्रगति की सीढ़ी है।

(4) अनुशासन केवल फौजों के लिए नहीं, जीवन के हर क्षेत्र के लिए है।

(5) अनुशासन का पालन तभी संभव है, जब मनुष्य को उस काम में अनुराग हो जिसमें वह लगा हुआ है। इसके बिना तो अनुशासन अनुकरण-मात्र होगा।

(6) किसी भी राष्ट्र का परिचय उसके अनुशासनबद्ध नागरिकों से मिल जाता है।

(7) बाहरी दुनिया की भांति अपने मन और शरीर को भी अनुशासन में रखना चाहिए।

(8) सारे अनुशासनों की जड़ व्यक्तिगत अनुशासन है। जब तक कोई भी व्यक्ति अपने-आप अनुशासन और नियम-पालन में बंध नहीं जाता, तब तक उसे दूसरे से वैसा कराने की आशा करना व्यर्थ है।

(9) यह सारी सृष्टि एक दैवी अनुशासन पर चलती है। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्र, आकाश, समुद्र, पर्वत और हमारे चतुर्दिक दृष्टमान नक्षत्रगण एक अनुशासन पर चलकर अपनी-अपनी मर्यादा पर कायम रहते हैं, वैसे ही मनुष्य को भी अपने चतुर्दिक के सभी कामों में अनुशासन का पालन अचूक और नियमित रूप से करना चाहिए। —**महात्मा गाँधी**

अनूठापन

अनूठापन काव्य के नित्य स्वरूप के अन्तर्गत नहीं है; एक अतिरिक्त गुण है जिससे मनोरंजन की मात्रा बढ़ जाती है। (काव्य में रहस्यवाद)

—**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

अन्न

अन्नं हि प्राणः। (अन्न ही प्राण है।) —**ऐतरेय ब्राह्मण** (33.1)

अन्नं वै विराट्। (अन्न ही विराट् तत्त्व है।) —**ऐतरेय ब्राह्मण** (1.6)

अन्नं हि भातानां ज्योष्ठम्। (सभी भौतिक पदार्थों में अन्न ही श्रेष्ठ है।)

—**तैत्तिरीय आरण्यक** (8.2)

अन्नं प्राणा नराणाम्। (अन्न ही व्यक्तियों के प्राण हैं।) —**महाभारत**

सर्वारंभा: तंडुल प्रस्थमूला: (जितने भी उद्योग हैं, सबकी जड़ में थोड़े-से चावल की शक्ति है।) —महाभारत

यदि रोटी हो तो सभी दुख झेले जा सकते हैं। —कर्वेंटीज

जैसा अन्न-जल खाइए तैसो ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए तैसी बान सोच। —कबीर

अन्याय

अन्याय सहने से अन्याय करना अधिक अच्छा है, कोई भी इस सिद्धान्त को स्वीकार नही करेगा। —अरस्तू

अन्याय सह लेनेवाला भी अपराधी होता है। यदि वह न सहा जाए तो फिर कोई किसी से अन्यायपूर्ण व्यवहार कर ही नहीं सकेगा। —टैगोर

(1) अन्याय को मिटाओ, लेकिन अपने-आपको मिटाकर नहीं।

(2) अन्याय के सामने जो छाती खोलकर खड़ा हो जाय वही सच्चा वीर है।

(3) अन्याय में सहयोग देना अन्याय करने के ही समान है। —प्रेमचन्द

अन्याय को सह जाने मे ही यदि कोई महत्त्व होता तो कसाई की छुरी तले पड़ी हुई गाय संसार में सबसे अधिक महत्त्वशालिनी होती। —अज्ञात

अन्याय का राज्य बालू की भीत है। (चित्राधार) —जयशंकर प्रसाद

अन्याय के आगे माथा टेक देने का परिणाम प्राय: उतना ही भयंकर होता है जितना कि स्वयं अन्याय करने का। —अज्ञात

अन्याय सहकर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी,
दण्ड देना धर्म है। —मैथिलीशरण गुप्त

अगर हम खुद ही अन्याय करने लगें, तो हम दूसरों से न्याय की माँग नही कर सकते। —सरदार पटेल

अन्याय और अत्याचार करने वाला उतना दोषी नहीं, जितना उसे सहन करने वाला। —बाल गंगाधर तिलक

जो अन्याय करने वाले हैं, उनके सामने मत झुको। —कुरान शरीफ़

अन्याय सहने वाले की अपेक्षा अन्याय करने वाला अधिक दु:खी होता है। —प्लेटो

अन्योक्ति

अन्योक्ति द्वारा अव्यक्त, परोक्ष या अज्ञात तथ्य की व्यंजना को हम कृत्रिम और काव्यगत सत्य (Poetic truth) के विरुद्ध समझते हैं। (काव्य में रहस्यवाद)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अपनत्व, अपना

निज कवित्त केहि लाग न नीका।
सरस होउ अथवा अति फीका॥ **—तुलसीदास**

अपने हाथ से लगाये हुए विषवृक्ष को भी अपने हाथ से काटना ठीक नहीं।

—कालिदास

जिसने अपनत्व खोया उसने सब कुछ खोया। **—महात्मा गाँधी**

अपना-पराया

जे पर ते पर यह समझ, अपनौ होय न कोय।
पालै पोखै काग तउ, पिक-सुत काग न होय॥ **—वृन्द**

अपभ्रंश

(1) अपभ्रंश के नाम से जिस भाषा के पद्य हेमचन्द्र के व्याकरण में तथा कुमार प्रतिबोध, प्रबंध चिंतामणि आदि काव्यों में मिलते हैं वह ज्यों की त्यों किसी एक स्थान की बोलचाल की भाषा नहीं है। कवि-समय सिद्ध सामान्य भाषा है। (बुद्धचरित)

(2) जब तक भाषा बोलचाल में थी तब तक भाषा या देशभाषा ही कहलाती रही, जब वह भी साहित्य की भाषा हो गई तब उसके लिए अपभ्रंश शब्द का व्यवहार होने लगा। (हि० सा० इ०)

(3) जब से प्राकृत, बोलचाल की भाषा न रह गई तभी से अपभ्रंश साहित्य का आविर्भाव समझना चाहिए। पहले जैसे 'गाथा' या 'गाहा' कहने से प्राकृत का बोध होता था, वैसे ही पीछे 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या लोक-प्रचलित काव्यभाषा का बोध होने लगा। (हि० सा० इ०)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अपमान

जद्यपि जग दारुन दुख नाना
सब ते कठिन जाति अवमाना। **—तुलसीदास**

अपमान को निगल जाना पतन की अंतिम सीमा है। —**प्रेमचन्द**

अपमानित जीवन से मौत अच्छी। —**एक हिंदी कहावत**

अपमान का डर कानून के डर से किसी तरह कम क्रियाशील नहीं होता। —**प्रेमचन्द**

धूल स्वयं अपमान सहन कर लेती है और बदले में फूलों का उपहार देती है। —**टैगोर**

शारीरिक कष्ट उतना दुःखदायी नही होता जितना कि अपमान। —**चेस्टर फ़ील्ड**

अकबर ने सुना है अहले ग़ैरत से यही—
जीना जिल्लत से हो तो मरना अच्छा है। —**अकबर**

ग़ैरत = शर्मदार, जिल्लत = अपमान

अपयश

सम्मानित कहुँ कहुँ अपजस लाहू।
मरन कोटि सम दारुन दाहू।

(सम्मानित व्यक्ति के लिए अपयश का मिलना (लाहू) करोड़ों मृत्यु के समान बहुत अधिक जलाने वाला होता है।) —**तुलसीदास**

लाभ-हानि, जीवन-मरण, यश-अपयश, विधि-हाथ। —**एक हिंदी लोकोक्ति**

अपराध, अपराधी

अपराध मनुष्य के मुह पर लिखा रहता है। —**गाँधी**

अपराध करने के बाद भय उत्पन्न होता है और यही उसका दण्ड है। —**वाल्टेयर**

छिपकर किया गया अपराध जीवन-पर्यन्त हृदय में काँटे की तरह चुभता रहता है। —**एक अरबी कहावत**

अपराध स्वयं बोलता है, हालाँकि उसके पास ज़बान नही होती। —**शेक्सपियर**

अपराध स्वीकार करके फाँसी के तख़्ते पर लटक जाने में बहादुरी है, लेकिन अपराध करके छिप जाने में तो कायरता है। —**सरदार पटेल**

ग़रीबी अपराधों की जननी है। —**ब्रूएयर**

अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। —डेल कारनेगी

(1) अपराधी मन सन्देह का अड्डा है—चोर को हर झाड़ी में पुलिस का भय बना रहता है।

(2) अपराधी मन बिच्छुओं से भरा होता है। —शेक्सपियर

अपरिचित

अनजाने जन को रतन कबहुँ न करि विश्वास।
वस्तु न ताकी षाइ कछु देइ न गेह निवास। —रत्नावली
बनिक फेरुआ भिच्छुकन जनि कबहूँ पतिआइ।
रतनावलि जेह रूप धरि ठगजन ठगत भ्रमाइ।। —रत्नावली

अबला (दे० नारी, स्त्री)

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।। —मैथिलीशरण गुप्त

का नहिं पावक जरि सकै का न समुद्र समाय।
का न करै अबला प्रबल का जग काल न खाय। (हम्मीररासो)
—जोधराज

अभय

अभय ही स्वर्गलोक है। —शतपथ ब्राह्मण

तू अभय की खोज कर। —गोपथ ब्राह्मण

सच्चा बलवान वह है जो किसी से डरता नहीं। —तैत्तिरीय ब्राह्मण

(1) भय तो कभी और कहीं करना ही नहीं चाहिए।

(2) अभय-व्रत का सर्वथा पालन लगभग अशक्य है। भय-मात्र से मुक्ति तो जिसे आत्मसाक्षात्कार हुआ हो, वही पा सकता है। अभय मोहररहित अवस्था की पराकाष्ठा है।

(3) जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो फिर भय किसका और किसलिए?

(4) सदा अभय रहने से मनुष्य का कोई, कभी कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

(5) सच्चा जवाँमर्द वही है, जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी से भी न डरे।

(6) अभय की गिनती गीता में दैवी सम्पत्ति प्रकरण में भगवान ने सर्वप्रथम की है।

(7) बिना अभय के अन्य दैवी सम्पदाएँ मिल ही नहीं सकतीं।

(8) अभय का मतलब है तमाम बाहरी भयों—डरों से मुक्ति।

(9) अभय में मोटे तौर पर मौत के डर, धन-दौलत लुटने के भय, कुटुम्ब-कबीले के बारे में डर, रोग के डर, हथियार चलने के डर, आकर जाने के डर, किसी को बुरा लगाने या चोट पहुँचाने के भय आदि से मुक्ति पा जाते हैं।

(10) अभय-व्रत का पूरा पालन जनसामान्य के लिए लगभग असम्भव है। परन्तु निश्चय करने, लगातार कोशिश करने और आत्मा में श्रद्धा रखने से अभय की भावना बढ़ती ही जाती है।

(11) बाहरी भयों से मुक्ति पा लेने पर भी भीतर के दुश्मनों—काम, क्रोध, मोह, और लोभ—से छुटकारा पाना और भी कठिन हो जाता है।

(12) दरअसल अगर देह की ममता छूट जाए, तो आसानी से अभय प्राप्त हो जाए।

(13) संसार के जितने भी भय हैं, वे हमारे खयाली पैदावार हैं। पैसे से, कुटुम्ब से, शरीर से 'मेरापन' की भावना दूर कर दें, तो फिर भय किसका और काहे का!

(14) भगवान ऐसे लोगों को अभय कर देते हैं, जो उनमें विश्वास रखते हैं।

(15) बल तो निर्भयता में है; शरीर में मांस बढ़ जाने मे नहीं।

(16) संसार में आधे से अधिक सक्षम लोग तो इसीलिए असफल हो जाते हैं कि समय पर उनमें साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।

(17) जो मनुष्य भयवश असत्य बोलता और झूठा आचरण करता है, वह पशु से भी बदतर है।

(18) निर्भय का लोहा शत्रु भी मानता है। —**महात्मा गांधी**

अभागा

अभागा और अदूरदर्शी दोनों ही शब्दों के एक ही अर्थ हैं।

—**एक फ्रांसीसी कहावत**

अभागा केवल वह है जो काम से जी चुराता है। —**एक चीनी कहावत**

अभागा वह है जिसके कई पत्नियाँ हों। —**उबैद जाकानी**

अभाव

अभाव का विश्व कठोर है सही, पर वही सत्य है। सुख, सफलता और संपत्ति का स्वप्न देखना अज्ञान है। —**सुमित्रानंदन पंत**

अभाव से संघर्ष की शक्ति मिलती है। —एक चीनी कहावत

जिसे कभी अभाव नहीं हुआ, वह इन्सान कैसे बना। —एक फ्रांसीसी कहावत

अभिधा

(1) अभिधा द्वारा ग्रहण दो प्रकार का होता है—बिम्ब ग्रहण और अर्थ ग्रहण। (काव्य में अभिव्यंजनावाद, चिन्ता०) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(2) शब्द के मुख्य अर्थ का बोध (सकेतग्रहण) कराने वाली शक्ति। (रस-मीमांसा, शब्द-शक्ति) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अभिमान

जरा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राण को, असूया धर्मचर्या को, क्रोध श्री को, काम लज्जा को और अभिमान सबको हरता है। —विदुर नीति

अभिमान नरक का मूल है। —महाभारत

कोयल दिव्य आम्ररस पीकर भी अभिमान नही करती, लेकिन मेंढक कीचड़ का पानी पीकर ही टर्राने लगता है। —प्रसंग रत्नावली

समस्त महान गलतियों की तह मे अभिमान ही होता है। —रस्किन

किसी भी हालत में अपनी शक्ति पर घमण्ड न कर, यह बहुरूपिया आसमान हर घड़ी हज़ारों रंग बदलता है। —हाफ़िज़

जिसे होश है वह कभी घमण्ड नही करता। —शेख सादी

(1) घमण्डी आदमी प्रायः शक्की हुआ करता है।

(2) आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नही। अभिमान किया, और दीन दुनिया से गया। —प्रेमचंद

(1) 'कबिरा' गर्व न कीजिए, लखि हँसिए नहिं कोय।
अजहूँ नाव समुद्र में, का जानै का होय।।

(2) लेने को सतनाम है, देने को अन-दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान।।

(3) आपा मैट्यां हरि मिलै। —कबीर

धन अरु जोबन को गरब, कबहूँ करिये नाहिं।
देखत ही मिटि जात है, ज्यों बादर की छाहिं।। —वृन्द

प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं। —तुलसीदास

किसी का भी अभिमान नही रहा । —गाँधीजी

घमंडी का सिर नीचा । —एक हिंदी लोकोक्ति

(1) अधिकार सम्बन्धी अभिमान अनौचित्य की सामर्थ्य का अधिक होता है । यदि अधिकार के अनुचित उपयोग की संभावना दूर कर दी जाये तो स्थान-स्थान पर अभिमान की जमी हुई मैल साफ़ हो जाए और समाज के कार्य-विभाग चमक जाएँ ।

(2) अभिमान एक व्यक्तिगत गुण है, उसे समाज के भिन्न-भिन्न व्यवसायों के साथ जोड़ना ठीक नही । (ईर्ष्या, चिंता) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

अभिमान टूटने के लिए ही होता है । —एक अरबी लोकोक्ति

मद करि मद्यप सरिस नर मतवारो है जात । —शंकर

रहिमन गली है साँकरी दूजो ना ठहराइ ।
आपु अहै तो हरि नही हरि तो आपुन नाहिं ।। —रहीम

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वह नर नही नर पशु निरा है और मृतक समान है ।।
—महावीर प्रसाद द्विवेदी

ज्यों-ज्यों अभिमान कम होता है, कीर्ति बढ़ती है । —यंग

अभिमान से देवता दानव बन जाते है और नम्रता से मानव देवता ।
—आगस्टाइन

जो अहंकारपूर्वक प्रातः जलपान करता है उसको सायंकाल का भोजन तिरस्कार से मिलता है । —फ्रैंकलिन

अभिलाषा

अभिलाषा सभी दुखों का मूल है । —भगवान बुद्ध

अभिलाषा ही घोड़ा बन सकती, तो प्रत्येक मनुष्य घुड़सवार हो जाता ।
—शेक्सपियर

कोई अभिलाषा यहाँ पूर्ण नही होती । —खलील जिब्रान

अभिलाषाओं से ऊपर उठ जाओ, वे पूरी हो जाएँगी ।
माँगोगे तो उनकी पूर्ति तुमसे और दूर जा पड़ेंगी ।।
—स्वामी रामतीर्थ

हमारी अभिलाषा जीवन-रूपी भाप को इंद्रधनुष का रंग दे देती है।—**टैगोर**

अभिवादन

(1) अभिवादन से प्रेम और सद्भावना में वृद्धि होती है।

(2) पहले अभिवादन करने वाला व्यक्ति ही अधिक सम्माननीय होता है।

(3) घर में आते ही अपने बच्चों और अपनी पत्नी को अभिवादन करो।

—**हजरत मोहम्मद**

अभिव्यंजना

'अभिव्यंजना ही कला या काव्य है' इसका अर्थ यहाँ तक कभी नही घसीटा जा सकता कि व्यंजना या व्यंजक उक्ति से भिन्न काव्यानुभूति कोई वस्तु ही नही। काव्यानुभूति ही वह प्रधान वृत्ति है जो व्यंजना की प्रेरणा करती है। ('काव्य में रहस्यवाद' चिन्ता०) —**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

अभिव्यंजनावाद

(1) 'अभिव्यंजनावाद' अनुभूति या प्रभाव का विचार छोड़ केवल वाग्वैचित्र्य को पकड़कर चला है; पर वाग्वैचित्र्य का हृदय की गंभीर वृत्तियों से कोई संबंध नही। वह केवल कुतूहल उत्पन्न करता है। ('काव्य में रहस्यवाद' चिन्ता०)

(2) 'अभिव्यंजनावाद' के कारण यूरोप के काव्य-क्षेत्र में उत्पन्न वक्रोक्ति या वैचित्र्य की प्रवृत्ति जो हिन्दी के वर्तमान काव्य-क्षेत्र मे आई उससे खड़ी बोली की कविता की व्यंजना-प्रणाली मे बहुत कुछ सजीवता और स्वच्छन्दता आई।

('काव्य मे अभिव्यंजनावाद' चिन्ता०)

(3) इस वाद मे तथ्य इतना ही है कि उक्ति ही कविता है, उसके भीतर जो छिपा अर्थ रहता है, वह स्वतः कविता नही।

(गद्य-साहित्य की वर्तमान गति, 'हि० सा० इ०')

(4) यूरोप का 'अभिव्यंजनावाद' हमारे यहाँ के पुराने 'वक्रोक्तिवाद'—'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्'—का ही नया रूप या विलायती उत्थान है। ('काव्य में रहस्यवाद' चिन्ता०) —**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

अभेद दृष्टि

'भेदों में अभेद' दृष्टि ही सच्ची तत्त्वदृष्टि है। इसी के द्वारा सत्ता का

आभास मिल सकता है। यही अभेद ज्ञान और धर्म दोनों का लक्ष्य है। विज्ञान इसी अभेद की खोज में है, धर्म इसी की ओर दिखा रहा है।

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

अभ्यास

यह रहीम निज संग ले जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस होत होत ही होय ॥ —रहीम

(1) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात है सिल पर होत निसान।

(2) कठिन कलाहू आइहै, करत-करत अभ्यास।
नट ज्यों चालत बरत पर, साधे बरस छमास ॥

—वृन्द

मस्तिष्क की शक्ति अभ्यास है, आराम नहीं। —पोप

मनुष्य-मात्र में बुद्धिगत ऐसा कोई दोष नहीं है जिसका प्रतिकार उचित अभ्यास के द्वारा न हो सकता हो। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए जैसे अनेक प्रकार के व्यायाम हैं, वैसे ही मानसिक रुकावटों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के अध्ययन हैं। —बेकन

बिना अभ्यास के कोई भी विद्या साध्य नहीं होती और सच्ची यश-प्राप्ति अभ्यास पर ही अवलम्बित है। —स्वामी विवेकानन्द

अभ्यास कुछ समय बाद मनुष्य का स्वभाव बन जाता है। —एनन

बिना अभ्यास के विद्या भूल जाती है। —एक संस्कृत लोकोक्ति

अमीर

कोई नागरिक इतना अमीर न हो कि दूसरे को ख़रीद सके या इतना ग़रीब न हो कि उसे अपने को बेचने के लिए बाध्य होना पड़े। —रूसो

किसी व्यक्ति को बहुत अमीर देखकर मुझे बहुत दुख होता है।

—विनोबा भावे

(1) अमीरों को चाहिए कि वे अपने धन को जनता की धरोहर समझकर खर्च करें।

(2) ट्रस्टीशिप का सिद्धांत इसी बात पर आधारित है कि जिसके पास धन है वह उसे अपना समझकर फ़ज़ूल ख़र्च न करे—थाती समझकर रखे और लोक-कल्याण में ख़र्च करे।

(3) धन को धरोहर समझकर सुरक्षित रखने वाले का काम कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उसमें ज़बर्दस्त आत्मनियंत्रण की शक्ति आती है।

(4) अमीर जिस तरह ग़रीबों से अपने को अलग और दूर रखते हैं, उससे उनका भविष्य अंधकारमय दीखता है।

(5) अमीरों को धन के गर्व में अपना मानसिक संतुलन नहीं खोना चाहिए, क्योंकि धन तो उनका है ही नही।

(6) यदि हमारे देश के धनाढ्य और राजा-रईस समय रहते चेत गए और काल की गति को पहचानते हुए अपना रुख़ बदल लिया, तो उनका भविष्य अंधकारमय नहीं होगा।

(7) हर अमीर और धनाढ्य को यह बात गाँठ बाँध रखनी चाहिए कि वह मनुष्य पहले है और सेठ-साहूकार बाद में।

(8) जैसे बन पड़े धनी होने की शिक्षा देना मानो विपरीत बुद्धि देना है।

(9) यह भी हो सकता है कि गरीबी पुण्य का फल हो और अमीरी पाप का।

—गाँधी जी

गरीब उदार होता है और अमीर लोभी। **—एक स्पेनी कहावत**

अमीर उस सूअर के समान है जो अपनी ही चर्बी से घुट मरता है।

—कनफ़्यूशियस

(1) जो अधिक धनी है वह अधिक अधीन है।

(2) अमीरी दिल की चीज़ है, दौलत की नहीं, जैसे बुज़ुर्गी अक़्ल की चीज़ है, उम्र की नही। **—शेख़ सादी**

अगर तू अमीर है तो तू कंगाल है, क्योंकि तू उस गदहे के समान है जिसकी कमर भार से दबी जा रही है। **—शेक्सपियर**

जिसकी ख़ुशी सबसे सस्ती है, वही आदमी सबसे अमीर है। **—थोरो**

अनियमित ग़रीबी से अनियमित अमीरी अधिक भयानक होती है।

—बोचर

अलंकार

काव्य के रूपक आदि अलंकारों का अन्य आचार्यों ने अनेक प्रकार से वर्णन किया है। स्त्री का सुन्दर मुख भी बिना भूषण के नहीं सजता। —भामह

जिसके द्वारा अलंकृत किया जाय (उसको अलंकार कहते हैं)। —कुन्तक

(1) काव्य; अलंकार के योग से ही उपादेय होता है।

(2) (काव्य में) सौन्दर्य (के आधायक तत्त्व) का नाम अलंकार है।

—आचार्य वामन

अर्थालंकार चार हैं—वास्तव, औपम्य, अतिशय और श्लेष। अन्य सम्पूर्ण रूपकादि अलंकार इन्हीं के विशेष रूप होते हैं। —रुद्रट

काव्य के सौन्दर्य-कारक धर्मो (विशिष्ट गुणों) को अलंकार कहते हैं। आज भी कवि लोग कल्पना के बल पर अलंकारों में विविध प्रकार की उद्भावनाएँ कर रहे हैं, अत: उनका पूर्ण रूप से वर्णन करने में कौन समर्थ हो सकता है?

—दण्डी

अलंकार ज्यों पुरुष को हारादिक मनि आनि।
प्रासोपम आदिक कवित अलंकार ज्यौं जानि॥ —चिंतामणि

कविता कामिनि सुखद पद, सुबरण सरस सुजाति।
अलंकार पहिरे अधिक अद्भुत रूप लखाति॥ —देव

कविता करने में, हमारी समझ में, अलंकारों को बलात् लाने का प्रयत्न न करना चाहिए। विषय-वर्णन के झोंके में जो कुछ मुख से निकले उसे ही नहीं लिख देना चाहिए। बलात् किसी अर्थ के लाने की चेष्टा करने की अपेक्षा प्रकृत भाव से जो कुछ आ जाए उसे ही पद्य-बद्ध कर देना अधिक सरल और आह्लादकारक होता है। —महावीरप्रसाद द्विवेदी

(1) अलंकार में रमणीयता होनी चाहिए। चमत्कार न कहकर रमणीयता हम इसलिए कहते हैं कि चमत्कार के अंतर्गत केवल भाव, रूप, गुण या क्रिया का उत्कर्ष ही नहीं, शब्द-कौतुक और अलंकार सामग्री की विलक्षणता भी ली जाती है। ('अलंकार-विधान', गो० तु०)

(2) जहाँ वस्तु या व्यापार अगोचर होता है, वहाँ अलंकार—पहले गोचर प्रत्यक्षीकरण करके बोधवृत्ति की कुछ सहायता करता है, तब फिर रागात्मिका वृत्ति को उत्तेजित करता है। —(अप्रस्तुत रूप-विधान, र० मी०)

(3) जिस प्रकार एक कुरूपा स्त्री अलंकार लादकर सुन्दर नहीं हो सकती उसी प्रकार प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की रमणीयता के अभाव में अलंकारों का ढेर काव्य का सजीव स्वरूप नहीं खड़ा कर सकता। —(कविता क्या है?, चिंता०)

(4) भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं का रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति ही अलंकार है। ('अलंकार-विधान', गो० तु०)

(5) **मैं अलंकार को केवल वर्णन-प्रणाली-मात्र मानता हूँ; जिसके अन्तर्गत** करके किसी वस्तु का वर्णन किया जा सकता है। वस्तुनिर्देश अलंकार का काम नही। (काव्य में प्राकृतिक दृश्य, चिता०)

(6) अधिकतर अलंकारों का विधान सादृश्य के आधार पर होता है। सादृश्य की योजना दो दृष्टियों से की जाती है—स्वरूप-बोध के लिए और भाव तीव्र करने के लिए। **(अप्रस्तुत रूप-विधान, र० मी०)**

(7) अलंकार चाहे अप्रस्तुत वस्तु योजना के रूप में हों चाहे वाक्य-वक्रता के रूप में, चाहे वर्णविन्यास के रूप में लाए जाते हैं वे प्रस्तुत भाव या भावना के उत्कर्ष-साधन के लिए ही। (रसमीमांसा)

(8) जिस प्रकार एक कुरूपा स्त्री अलंकार लादकर सुदर नही हो सकती, उसी प्रकार प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की रमणीयता के अभाव में अलंकारों का ढेर काव्य का सजीव रूप नही खड़ा कर सकता। (रसमीमांसा)

(9) यदि किसी वर्णन में उनसे (अलंकार से) इस प्रकार की कोई सहायता नही पहुँचती है, तो वे काव्यालंकार नही, भार मात्र हैं।

(10) अलंकारों द्वारा हृदय के भाव खुलते हैं, और नीरसता का भाव मिट जाता है। (चिंतामणि) **—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

जिस तरह मसालों के बाहुल्य से भोजन का स्वाद और उपयोगिता कम हो जाती है, उसी भाँति साहित्य भी अलंकारों के दुरुपयोग से विकृत हो जाता है।

—प्रेमचन्द

अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नही; वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए, राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान है। **—सुमित्रानन्दन पन्त**

अवकाश

छुट्टी नरक का दूसरा नाम है। दुःख पाने का सबसे बड़ा कारण वह अवकाश है जिसमें हम सोचें कि हम प्रसन्न हैं अथवा नही। **—बर्नर्ड शा**

यदि 'अवकाश' काम का न रहना है तो पता नही लोग कैसे पसंद करते हैं उसे। मुझे तो लगता है उस अवकाश और मृत्यु में कोई विशेष अंतर नही है।

—भोलानाथ तिवारी

अवगुण

जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है।

—भगवान बुद्ध

अवगुण नाव की पेंदी के छेद के समान है, वह छोटा हो या बड़ा एक दिन डुबो देगा ।
—कालिदास

हज़ारों गुणों के अर्जन से एक अवगुण को ठीक कर लेना कहीं कठिन है ।
—ब्रूयर

यदि राजा किसी अवगुण को पसन्द करे तो वह गुण हो जाता है । —सादी

गुन-दुरगुन छिपि सकहिं नहिं, करिये कोटि उपाय ।
तैल-बिन्दु जल माहिं ज्यौं, तुरत जात उतराय ।।
—रामचरित उपाध्याय

इक गुन तें शोभा लहैं, इक अवगुन अवरोह ।
सोभ उरोजन पीनता, त्यों कटि कृसता सोह ।। —वृन्द

गुन अवगुन जानत सब कोई ।
जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ।। —तुलसीदास

अपने गुण सभी देखते हैं, अवगुण कोई नहीं । —अबू उस्मान

अपने अवगुणों को अपने से पहले मर जाने दो । —फ्रैंकलिन

चरित्रवान अपने अवगुणो को सुनना पसंद करते हैं, किन्तु सामान्य व्यक्ति नही । —एमर्सन

अवतार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं धर्म के उत्थान के लिए अवतार धारण करता हूँ । साधुओं की रक्षा के लिए, पापियों के विनाश के लिए और धर्म की संस्थापना के लिए मैं युग-युग में अवतार लेता हूँ । (गीता)
—भगवान श्रीकृष्ण

जब-जब युग का परिवर्तन होता है, तब-तब मैं प्रजा की भलाई के लिए भिन्न-भिन्न योनियों में प्रतिष्ठित होकर, धर्म-मर्यादा की स्थापना करता हूँ । जब जिस योनि में अवतार लेता हूँ उस समय उसी की भाँति सारे आचार-विचार का पालन करता हूँ । —महाभारत में कृष्ण

अवतार से तात्पर्य है शरीरधारी पुरुष विशेष। जीवमात्र ईश्वर का अवतार है, परन्तु लौकिक भाषा में सबको हम अवतार नहीं कहते। जो पुरुष अपने युग में सबसे श्रेष्ठ और धर्मवान है उसी को भावी प्रजा अवतार-रूप से पूजती है।

—**महात्मा गाँधी**

जो अपने कर्मों को ईश्वर का कर्म समझकर करता है, वही ईश्वर का अवतार है।

—**जयशंकर प्रसाद (स्कंदगुप्त विक्रमादित्य)**

अवनति

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान।
ज्यों तपि-तपि मध्यान लौं, अस्त होत है भान॥

—**वृन्द**

धरा को प्रमान यही तुलसी,
जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना।

—**तुलसीदास**

जो चढ़ता है वह गिरता भी है और जो गिरता है वह चढ़ता भी है।

—**भोलानाथ तिवारी**

अवसर

(1) अवसर कौड़ी जो चुकै, बहुरि दिये का लाख।
दुइज न चंदा देखिए, उदौ कहा भरि पाख॥

(2) लाभ समय को पालिवो हानि समय की चूक।
सदा बिचारहि चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक॥

(3) ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहि सुलच्छन लोग॥

(4) तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।
का बरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने॥

—**तुलसीदास**

रहिमन चुप ह्वै बैठिये देखि दिनन को फेर।
जब दिन नीके आइहैं, बनत न लगिहैं बेर॥

—**रहीम**

मनुष्य के सारे व्यवहारों में ज्वार-भाटा का-सा चढ़ाव-उतार होता है। यदि मनुष्य बाढ़ को पकड़े तो भाग्य की ड्योढ़ी पर पहुँच जाए।

—**शेक्सपियर**

हरि व्यापक सर्वत्र समाना ।
प्रेम तें प्रगट होंहि मैं जाना ॥ —तुलसी

लोहे को बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि उसी समय पीटा जाय जब कि वह गर्म हो । —जान ड्राइडेन

ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दुबारा खटखटाएगा ।
—शैम्फोर्ट

अवसर मिलने पर उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए । —फ्रांसिस बेकन

अवसर बुद्धिमान के पक्ष में लड़ता है। —यूरीपेडीज़

(1) दीबो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम ।
खेती सूखे बरसिबो, घन को कौनो काम ॥

(2) अवसर बीते जतन कौ, करिबौ नहिं अभिराम ।
जैसे पानी बह गये, सेतबन्धु किहि काम ॥

(3) गुनी तऊ अवसर बिना, आदर करै न कोइ ।
हिय तें हार उतारिये, सपन समै जब होइ ॥

(4) फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय बिचारि ।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों बिबाह में गारि ॥

(5) नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात ।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात ॥ —वृन्द

साँई अवसर के पड़े, को न सहै दुःख द्वन्द ।
जाय बिकाने नीच घर, वै राजा हरिचन्द ॥ —गिरिधर

बुरे भले पर है न कछु, अवसर सबै प्रमान ।
चना लगै प्रिय भूख में, नहिं पीछे पकवान ॥ —दीनदयाल गिरि

अवसर उनकी सहायता कभी नहीं करता जो अपनी सहायता नहीं करते ।
—सफ़ोक्लीज़

मानव-जीवन की सफलता का रहस्य है अवसर की पहचान ।—डिज़रायली

मौक़े पर दुश्मन को न लगाया गया थप्पड़ अपने मुँह पर ही लगता है ।
—एक फारसी लोकोक्ति

अवसर तुम्हारा एक ही बार दरवाज़ा खटखटाते हैं ।
—एक यूनानी लोकोक्ति

असंतोष

(1) असंतोष अपने ऊपर अविश्वास का फल है, यह कमज़ोर इच्छा का रूप है।

(2) काल्पनिक क़िलों में रहने से अधिक सुख और संतोष मिलता है, परन्तु असंतोषी मनुष्यों के बनाये महलों में सुख नही। —एमर्सन

असन्तुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिनों तक जीवित नही रहते।—शेक्सपियर

आनन्द असन्तोषी से दूर ही रहता है। —एक फ्रांसीसी कहावत

संभव, असंभव से पूछता है—'तुम्हारा निवास-स्थान कहाँ है?'

उत्तर मिलता—'नामर्द के स्वप्नों में।' —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

बिना प्रयास सभी कुछ असंभव है और प्रयास करने पर असंभव भी संभव हो हो जाता है। —योगवाशिष्ठ

'असंभव' ऐसा शब्द है जो केवल मूर्खों के शब्द-कोश में पाया जाता है।
—नेपोलियन

प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है। —कार्लाइल

कायरों और संशयशील व्यक्तियों के लिए प्रत्येक वस्तु असम्भव है, क्योंकि उन्हे ऐसा ही प्रतीत होता है। —वाल्टर स्काट

कठिनाई मुझे ताकत देती है, असंभव मुझे ज़िन्दगी देता है, मगर क्षुद्रता, छोटापन मेरे लिए जहर हैं। —जवाहरलाल नेहरू

असत्य

(1) जहाँ लुटेरों के चंगुल मे फँस जाने पर झूठी शपथ खाने से छुटकारा मिलता हो, वहाँ झूठ बोलना ही ठीक है, बिना विचारे इसी को सत्य जानो।

(2) जहाँ सत्य का परिणाम असत् और असत्य का परिणाम सत् होता हो, वहाँ सत्य न बोलकर असत्य बोलना ही उचित है। —वेदव्यास (महाभारत)

नहिं असत्य सम पावक पुंजा।
गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥ —तुलसीदास

थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्य का नाश करता है जैसे दूध को एक बूंद जहर।
—गांधी जी

असत्य में शक्ति नहीं होती, उसे अपने अस्तित्व के लिए सत्य का सहारा लेना पड़ता है। —विनोबा भावे

असत्य बोलना तलवार के घाव की तरह है, घाव तो भर जाएगा परन्तु उसका चिह्न हमेशा बना रहेगा। —सादी

असत बैन नहिं बोलिये तातैं होत बिगार।
वै असत्य नहिं सत्य है जातैं ह्वै उपकार॥ —बुधजन सतसई

पाप के बहुत-से हथकंडे हैं, किंतु असत्य वह हैंडिल है जो उन सभी में फिट हो जाता है। —होम्स

असत्य विजयी हो जाय तो भी उसकी विजय अल्पकालिक होती है। —ल्योनार्ड

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है, जहाँ झूठ पहुँच जाता है वहाँ अधर्म राज्य की विजय-दुन्दुभी अवश्य बजती है। —सुदर्शन

असत्य वाणी का छेद है। —तांड्य ब्राह्मण

पृथ्वी कहती है, असत्य मे बढ़कर कोई अधर्म नही। मै सब कुछ सह सकती हूँ किंतु असत्यभाषी का भार नही। —भागवत

असफलता

उनकी जवानी के कोश में, जिनके भाग्य उज्ज्वल पराक्रम के लिए सुरक्षित हैं, 'असफलता' शब्द नही होता। —लिटन

सफलताओं की अपेक्षा असफलताओं द्वारा हममें कहीं अधिक बुद्धि आती है। संभवत: जिसने कभी भी कोई भूल नही की वह कभी भी कोई खोज न कर सका। —स्माइल्स

असफलता ही सफलता की कुंजी है। —टालस्टाय

असफलता का मुँह केवल वही नही देखते जो कुछ नहीं करते। —भोलानाथ तिवारी

असहयोग

(1) असहयोग कोई निष्क्रिय स्थिति नही है; यह अत्यन्त सक्रिय स्थिति है —शारीरिक प्रतिरोध या हिंसा से कहीं अधिक क्रियाशील।

(2) असहयोग का पालन तलवार की धार पर चलने के समान है।

(3) मैं जिस अर्थ में असहयोग शब्द का प्रयोग करता हूँ, उसमें उसे निश्चित रूप से अहिंसात्मक होना चाहिए।

(4) असहयोग अनुशासन और उत्सर्ग का कार्य है, और उसमें विरोधी विचारों के प्रति धैर्य और आदर रखने की आवश्यकता पड़ती है।

(5) मैं स्वीकार करता हूँ कि सब असहयोगियों की प्रेरणाशक्ति प्रेम नही, बल्कि एक अर्थहीन घृणा है।

(6) हमारा असहयोग भौतिक सभ्यता और तत्सम्बन्धी लोभ और दुर्बलों के उत्पीड़न से है।

(7) असहयोग मेरा कल्पद्रुम है।

(8) असहयोग मेरे जीवन-सिद्धान्त का अंग है, तथापि वह सहयोग का मंगलाचरणमात्र है।

(9) मैं काम करने के तरीकों, पद्धतियों और प्रणालियों से असहयोग करता हूँ, मनुष्यों से कदापि नही।

(10) हमारा असहयोग न अँग्रेज़ों से है, न पश्चिम से, हमारा असहयोग तो उस प्रणाली से है···भौतिक सभ्यता और तत्सम्बन्धी लोग और दुर्बलों के उत्पीडन से है।

(11) असहयोग एक बड़ा अस्त्र है।

(12) असहयोग के हथियार से व्यक्तिगत, घरेलू, सामाजिक और राष्ट्रगत समस्याओं का समाधान हो सकता है, किन्तु शर्त यह है कि उसका प्रयोग करने में गलती न हो।

(13) असहयोग शासक और शासित के शक्ति-सन्तुलन की कसौटी है।

(14) असहयोग में तो इतनी शक्ति है कि वह छोटी से छोटी इकाई—परिवार—को भंग कर देती है, फिर बड़ी इकाइयाँ, जिनमे असंख्य छोटी इकाइयाँ अंतर्भुक्त होती हैं, उसके सामने कैसे क़ायम रह सकती हैं! —**महात्मा गाँधी**

अस्पश्यता

(1) अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर कलंक है। जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटा भर दूध बिगड़ जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है।

(2) अस्पृश्यता स्वयं एक असत्य है। असत्य का समर्थन कभी सत्य से नहीं हुआ, जैसे कि सत्य का समर्थन असत्य से नही हो सकता। अगर होता, तो वह स्वयं असत्य हो जाता।

(3) मैं पुनर्जन्म की इच्छा नहीं रखता, पर मुझे फिर से जन्म लेना ही पड़े, तो मैं एक अछूत के घर जन्म लेना चाहता हूँ, जिससे मैं उनके कष्टों को बाँट सकूं।

(4) अस्पृश्यता से हिन्दू-धर्म ऐसे ही चौपट हो रहा है, जैसे संखिया से दूध।

(5) अगर आत्मा एक है और ईश्वर एक है, तो फिर अछूत और अस्पृश्य कोई हो ही नहीं सकता।

(6) यों तो माता भी जब तक बच्चे का मैला उठाकर नहाए या हाथ-पैर न धोए, तब तक अछूत है।

(7) अस्पृश्यता हिन्दू-जाति का कलंक है।

(8) अगर मैं एक दिन के लिए डिक्टेटर बनूं, तो वाइसराय को अस्तबल की तंग और अँधेरी झोंपड़ियों को साफ़ करने में लगा दूं।

(9) मेरी समझ मे नहीं आता कि इंसान और इंसान के बीच अस्पृश्यता की भावना विवेक के सामने क्योंकर टिकी रह सकती है?

(10) जहाँ अस्पृश्यता की भावना आ गई कि मानवता वहाँ से विदा हो जाती है। कोई व्यक्ति मानवता का दम्भ भी करे और अस्पृश्यता भी कायम रखना चाहे, तो वह ढोंगी है।

(11) अस्पृश्यता हिन्दुत्व में घुसी हुई सड़ाँध है।

(12) भंगी या अस्पृश्य कहे जाने वाले उसी प्रकार आदर के पात्र हैं, जिस प्रकार बचपन मे मल-मूत्र उठाने और धोने वाली माता।

(13) अस्पृश्यता हमारे राष्ट्र का अभिशाप है।

(14) अस्पृश्य वह है, जो झूठ बोले और पाखंड करे।

(15) अस्पृश्यता एक ऐसा सर्प है जिसके सहस्र मुख है और जिसके प्रत्येक मुख में जहरीले दाँत दिखाई पड़ते हैं। यह इतनी विस्तृत है कि इसकी परिभाषा नही की जा सकती। यह इतनी जबरदस्त है कि इसे अपना अस्तित्व क़ायम रखने के लिए मनु अथवा प्राचीन स्मृतिकारों की आवश्यकता नही पड़ती।

(16) जो ब्राह्मणत्व अस्पृश्यता को सहन नहीं कर सकता, उसकी दुर्गन्ध से मेरी नाक फटती है।

—महात्मा गांधी

(1) किसी भी आदमी को अछूत मानना पाप है। अस्पृश्यता-छुआछूत निरा भ्रम है। अगर कुत्ते को छूकर हमें नहाना नहीं पड़ता, बिल्ली को भी छूकर नहाना नहीं पड़ता, तो फिर जो हमारे जैसा मनुष्य है उसे छूकर हमें क्यों नहाना चाहिए? हिन्दुओ, तुम जागो। तुम अपने ही जैसे मनुष्यों को अछूत मानते हो, यह तुम्हारी भूल है।

(2) अस्पृश्यता-छुआछूत हिन्दू धर्म पर लगा हुआ कलंक है। वह धर्म के नाम पर चलने वाला निरा ढोंग है। उसे हमें मिटाना ही होगा। —सरदार पटेल

अहंकार

हार का द्वार अहंकार है। —शतपथ ब्राह्मण

(1) जहँ आपा तहँ आपदा, जहँ संसय तहँ सोग।
कह कबीर कैसे मिटैं, चारों दीरघ रोग॥
(2) कोटि परम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥ —कबीर

पूजनीय को पूज्य मानने में जो बाधा-भ्रम है, वही मनुज का अहंकार है, वही मनुज का भ्रम है। —दिनकर

मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।
—वाल्टेयर

यदि तुम्हें अपने में अहंकार पैदा करने वाली कोई चीज दीखे तो ज़रा नीचे उतर कर देखो तुम्हें बहुत-सी चीजें दीखेंगी जिनसे तुम्हारा सिर नीचा हो जाएगा। —सुकरात

यदि तुम्हारे मन से अहंकार चला गया तो किसी धर्मग्रंथ की एक पंक्ति पढ़े बिना, किसी देवालय में पैर रखे बिना तुम्हें मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।
—विवेकानन्द

नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यन्तिक क्षय। —महात्मा गाँधी

जो जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है।
—भोलानाथ तिवारी

(1) अहंकार समस्त महान् ग़लतियों की तह में होता है।
(2) ख़ुदी से आदमी फूल सकता है परन्तु स्वयं अपने को सहारा नहीं दे सकता। —रस्किन

अहंकार चीज हाथी-घोड़े जैसी नहीं है, उसे अत्यन्त कम ख़र्च और ख़ूराक के खूब मोटा-ताजा बनाये रखा जा सकता है। —टैगोर

(1) अहंकार चुम्बक की भाँति सदा एक ही वस्तु का निर्देश करता है—स्व का; परन्तु चुम्बक की भाँति वह अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता, बल्कि अपने से दूर हटा देता है।

(2) जो अपने को सबसे बुद्धिमान् समझता है वह सामान्यतः सबसे बड़ा मूर्ख होता है। —कोल्टन

अहंकार रूपी मेघ के हट जाने पर चैतन्य रूपी सूर्य के दर्शन होते हैं।
—योगवाशिष्ठ

'हौं' कहतै भये ओट, पियै खंड मो सों किएउ।
भये बहु फाटक कोट, 'मुहमद' अब कैसे मिलहिं? —जायसी

अहंकार से आदमी फूल सकता है फैल नहीं सकता। —रस्किन

ख़ुदी[1] को झाड़ दे दामन[2] से मर्दे-नाख़ुदा[3] हो जा। —एक उर्दू कवि

घोड़े और हाथी के लिए व्ययसाध्य चारा चाहिए, किन्तु अहंभाव के लिए किसी रसद की आवश्यकता नही होती। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

निरहंकारिता से सेवा की क़ीमत बढ़ती है और अहंकार से घटती है।
—विनोबा

अहंकारी मनुष्य में कृतज्ञता बहुत कम होती है, क्योंकि वह यही समझता है कि मैं जितना पाने योग्य हूँ उतना मुझे कभी प्राप्त नही होता।
—एच० डब्ल्यू० बीचर

जो स्वयं का प्रशंसक है, गुणों का प्रशंसक नहीं, वही मनुष्य अपने को औरों से उच्च समझता है। —प्लूटार्क

अहिंसा

अहिंसा परमो धर्मः (अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।) —वेद

जब कोई व्यक्ति अहिंसा की कसौटी पर पूरा उतर जाता है तो अन्य व्यक्ति स्वयं ही उसके पास आकर वैर-भाव भूल जाते हैं। —पंतजलि

जिस भाँति भौंरा फूलों की रक्षा करता हुआ मधु को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मनुष्य को हिंसा न करते हुए अर्थों को ग्रहण करना चाहिए। —विदुर

जो प्राणियों की हिंसा करता है, वह आर्य नहीं है।
—भगवान बुद्ध (धम्मपद)

अपने शत्रु से प्रेम करो। जो तुम्हें सताए उसके लिए प्रार्थना करो। —ईसा

परम धर्म स्रुति विदित अहिंसा। —तुलसी

1. अहंकार, 2. अंचल, 3. धार्मिक

जो कुछ प्राप्त करना हो उसे तलवार से नहीं मुसकान से प्राप्त कर।

—शेक्सपियर

अहिंसा का माने है अपने भाषण या कार्य से किसी का भी दिल न दुखाना, किसी का अनिष्ट तक न सोचना। —स्वामी विवेकानन्द

मैं बगुले को तीर का निशाना बनाने की बजाय उसे उड़ते देखना चाहता हूँ, किसी बुलबुल को खा जाने की बजाय उसे गाते सुनना चाहता हूँ। —रस्किन

(1) जो तुम्हारे बायें गाल पर मारे उसकी ओर दाहिना गाल भी फेर दो।

(2) अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना।

(3) अहिंसा एक महाव्रत है।

(4) धर्म के निचोड़ का दूसरा नाम अहिंसा है।

(5) अहिंसा प्रेम की पराकाष्ठा है।

(6) सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है।

(7) कायरता की अपेक्षा बहादुरी के साथ शरीर-बल का प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है।

(8) इस दुःखी जगत् की पीड़ा हटाने के लिए कठिन होने पर भी सिवा अहिंसा के और कोई सीधा रास्ता नही है।

(9) उस जीवन को नष्ट करने का हमे कोई अधिकार नहीं, जिसके बनाने की शक्ति हममें न हो।

(10) हिंसा के मुकाबले में लाचारी का भाव आना अहिंसा नहीं कायरता है। अहिंसा को कायरता के साथ नही मिलाना चाहिए।

(11) धोखेबाजी और जोरजब्र तो बीमारियाँ हैं, सत्य और अहिंसा स्वास्थ्य हैं।

(12) मैंने तो पुकार-पुकार कर कहा है कि अहिंसा-क्षमा वीर का लक्षण है।

(13) अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द है।

(14) अहिंसा मानो पूर्णतः निर्दोषता ही है। पूर्ण अहिंसा का मतलब है—प्राणि-मात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव।

(15) जो अहिंसा पर अन्त तक डटा रहा, वह विजयी होकर रहेगा।

(16) सत्य के बाद, असल में अहिंसा ही संसार में बड़ी से बड़ी सक्रिय शक्ति है।

(17) बिना अहिंसा के सत्य की खोज नामुमकिन है।

(18) किसी को कभी न मारना और न किसी तरह सताना अहिंसा है।

(19) जैसे हिंसा की तालीम में मारना सीखना पड़ता है, इसी तरह अहिंसा की तालीम में मरना सीखना पड़ता है।

(20) अहिंसा एक हद तक अशक्तों का शस्त्र भी हो सकती है, लेकिन एक हद तक ही। वह बुज़दिलों का शस्त्र तो हरगिज़ नही हो सकती।

(21) अहिंसा का परिणाम देर से निकलता है, हिंसा का शीघ्र निकल आता है।

(22) अहिंसा में इतनी ताक़त है कि वह विरोधियों को मित्र बना लेती है और उनका प्रेम प्राप्त कर लेती है।

(23) मेरा मतलब यह है कि हमारी अहिंसा उन कायरों की न हो जो लड़ाई से डरते हैं, खून से डरते हैं, हत्यारों की आवाज़ से जिनका दिल काँपता है। हमारी अहिंसा तो पठानो की अहिंसा होनी चाहिए।

(24) अहिंसा निर्बल और डरपोक का नही, वीर का धर्म है।

(25) अहिंसा क्षत्रिय का धर्म है। महावीर क्षत्रिय थे। बुद्ध क्षत्रिय थे। राम, कृष्ण आदि क्षत्रिय थे। ये सभी थोडे या बहुत अहिंसा के उपासक थे।

(26) अहिंसा की नाकामी, अहिंसा का उपभोग करने वाले की अयोग्यता की वजह से है।

(27) अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए और नम्र होना चाहिए।

(28) अहिंसा क्षत्रिय धर्म की परिसीमा है, क्योंकि उसमें अभय की सोलहों कलाएँ सोलह आने खिल पडती है।

(29) अहिंसा प्रचंड शस्त्र है। उसमे परम पुरुपार्थ है, वह भीरु से दूर भागती है। वह वीर पुरुप की शोभा है, उसका सर्वस्व है। वह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नही है। वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है।

(30) जहाँ अहिंसा है, वहाँ अपार धीरज, भीतरी शान्ति, भले-बुरे का ज्ञान, आत्मत्याग और जानकारी भी है।

(31) अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने-जैसा है, ज़रा-सी ग़फ़लत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करने वाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्याय के वश मे न हो। अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्यायी के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह ले।

(32) शस्त्रीकरण की दौड़ में शामिल होना हिन्दुस्तान के लिए आत्मघात करना है। भारत अगर अहिंसा को गँवा देता है, तो संसार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है। —महात्मा गांधी

अहिंसा असहयोग का प्राण है, हिंसा उसकी मृत्यु है। —सरदार पटेल

(1) अनेकों को जो एक रखती है, भेदों में अभेद को ढूंढ़ती है, वही अहिंसा

(2) दयाभाव+समता+निर्भयता=अहिंसा। —विनोबा

पानी आग बुझावत जान जहान।
अस विचारि सीतल रहु नित मतिमान।
ठण्डा लोहा गरमहि काटत जानु।
तत्त्व अहिंसा के तव क्यों नहि मानु। —महेशचन्द्र प्रसाद

आँख

आँखें सारे शरीर का दीपक है। —महात्मा गाँधी

अकेली आँखें ही यह बतला सकती है कि हृदय मे घृणा है अथवा प्रेम। —तिरुवल्लुर

मन सों कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहा दिवान।
दृगन देखि जेहि आदरैं, मन तेहि हाथ बिकान।। —रहीम

नैना देत बताय सब हिय को हेत अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत।। —वृन्द

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार।। —रसलीन

आँखें बाहर को तो देखती ही है, भीतर को दिखा भी देती है—भीतर करुणा आई तो नम हो गई, आनंदातिरेक हुआ चमक पड़ी, क्रोध हुआ जल उठी और शर्म आई झुक गई। ये हृदय का दर्पण है। जो बात वाणी बहुत कठिनाई से भी नहीं कह पाती, उसे आँखें आसानी से कह देती हैं। —भोलानाथ तिवारी

आँसू

स्त्री ! तूने अपने अथाह आँसुओं से संसार के हृदय को ऐसे घेर रखा है, जैसे समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए है। —टैगोर

मेरी यह प्रबल कामना है कि मैं हर आँख का हर आँसू पोंछ दूँ। —गाँधी

(18) किसी को कभी न मारना और न किसी तरह सताना अहिंसा है।

(19) जैसे हिंसा की तालीम में मारना सीखना पड़ता है, इसी तरह अहिंसा की तालीम में मरना सीखना पड़ता है।

(20) अहिंसा एक हद तक अशक्तों का शस्त्र भी हो सकती है, लेकिन एक हद तक ही। वह बुज़दिलों का शस्त्र तो हरगिज़ नही हो सकती।

(21) अहिंसा का परिणाम देर से निकलता है, हिंसा का शीघ्र निकल आता है।

(22) अहिंसा में इतनी ताक़त है कि वह विरोधियों को मित्र बना लेती है और उनका प्रेम प्राप्त कर लेती है।

(23) मेरा मतलब यह है कि हमारी अहिंसा उन कायरों की न हो जो लड़ाई से डरते हैं, खून से डरते हैं, हत्यारों की आवाज़ से जिनका दिल काँपता है। हमारी अहिंसा तो पठानों की अहिंसा होनी चाहिए।

(24) अहिंसा निर्बल और डरपोक का नही, वीर का धर्म है।

(25) अहिंसा क्षत्रिय का धर्म है। महावीर क्षत्रिय थे। बुद्ध क्षत्रिय थे। राम, कृष्ण आदि क्षत्रिय थे। ये सभी थोड़े या बहुत अहिंसा के उपासक थे।

(26) अहिंसा की नाकामी, अहिंसा का उपभोग करने वाले की अयोग्यता की वजह से है।

(27) अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए और नम्र होना चाहिए।

(28) अहिंसा क्षत्रिय धर्म की परिसीमा है, क्योंकि उसमें अभय की सोलहों कलाएँ सोलह आने खिल पड़ती हैं।

(29) अहिंसा प्रचंड शस्त्र है। उसमें परम पुरुषार्थ है, वह भीरु से दूर भागती है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। वह शुष्क, नीरस, जड़ पदार्थ नही है। वह चेतन है। वह आत्मा का विशेष गुण है।

(30) जहाँ अहिंसा है, वहाँ अपार धीरज, भीतरी शान्ति, भले-बुरे का ज्ञान, आत्मत्याग और जानकारी भी है।

(31) अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलने-जैसा है, ज़रा-सी ग़फ़लत हुई कि नीचे गिरे। घोर अन्याय करने वाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्याय के वश में न हो। अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर वह जो कष्ट दे उसे धैर्य के साथ और अन्यायी के लिए दिल में द्वेष रखे बिना सह ले।

(32) शस्त्रीकरण की दौड़ में शामिल होना हिन्दुस्तान के लिए आत्मघात करना है। भारत अगर अहिंसा को गँवा देता है, तो संसार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है। —महात्मा गांधी

अहिंसा असहयोग का प्राण है, हिंसा उसकी मृत्यु है। —सरदार पटेल

(1) अनेकों को जो एक रखती है, भेदों में अभेद को ढूँढ़ती है, वही अहिंसा है।

(2) दयाभाव + समता + निर्भयता = अहिंसा। —विनोबा

पानी आग बुझावत जान जहान।
अस विचारि सीतल रहु नित मतिमान।
ठण्डा लोहा गरमहिं काटत जानु।
तत्त्व अहिंसा के तव क्यों नहिं मानु। —महेशचन्द्र प्रसाद

आँख

आँखें सारे शरीर का दीपक है। —महात्मा गाँधी

अकेली आँखें ही यह बतला सकती है कि हृदय मे घृणा है अथवा प्रेम। —तिरुवल्लुर

मन सों कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहा दिवान।
दृगन देखि जेहि आदरैं, मन तेहि हाथ बिकान॥ —रहीम

नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत॥ —वृन्द

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार॥ —रसलीन

आँखें बाहर को तो देखती ही है, भीतर को दिखा भी देती है—भीतर करुणा आई तो नम हो गईं, आनंदातिरेक हुआ चमक पड़ी, क्रोध हुआ जल उठी और शर्म आई झुक गईं। ये हृदय का दर्पण है। जो बात वाणी बहुत कठिनाई से भी नहीं कह पाती, उसे आँखें आसानी से कह देती हैं। —भोलानाथ तिवारी

आँसू

स्त्री! तूने अपने अथाह आँसुओं से संसार के हृदय को ऐसे घेर रखा है, जैसे समुद्र पृथ्वी को घेरे हुए है। —टैगोर

मेरी यह प्रबल कामना है कि मैं हर आँख का हर आँसू पोंछ दूं। —गाँधी

सात सागरों के जल की अपेक्षा मानव के नेत्रों से कहीं अधिक आँसू बह चुके हैं। —बुद्ध

(1) जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छायी।
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी॥

(2) नारी के आँसू अपनी एक-एक बूँद में एक-एक बाढ़ लिए रहते हैं।
—जयशंकर प्रसाद

आँख के आँसू अमूल्य वस्तु हैं। प्रेम के, कृतज्ञता के, आनन्द के, दुःख के और पश्चात्ताप के आँसुओं से ही तो जीवन का बाग पनपता है। —साने गुरु जी

सौन्दर्य के आँसू उसकी मुस्कुराहट की अपेक्षा अधिक प्यारे होते हैं।
—कैम्पबेल

आँख का आँसू ढलकता देखकर,
जी तड़प करके हमारा रह गया।
क्या गया मोती किसी का है बिखर,
या हुआ पैदा रतन कोई नया।
या जिगर पर जो फफोला था पड़ा,
फूट करके वह अचानक बह गया।
हाय ! था अरमान जो इतना बड़ा,
आज वह कुछ बूँद बनकर रह गया। —हरिऔध

आँसुओं से छलछलाता प्रेम अत्यन्त लुभावना होता है। —वाल्टर स्काट

आग

बिना आग के धुआँ नहीं होता। —एक इटैलियन कहावत

अतिसय रगर करे जो कोई,
अनल प्रगट चंदन ते होई।
(बहुत रगड़ने से चंदन से भी आग पैदा हो जाती है।) —तुलसीदास

आग आग से नहीं पानी से शांत होती है। —प्रेमचंद

(1) बाहर की आग से भीतर की आग कहीं अधिक जलाने वाली होती है—चाहे वह दिल की हो, दिमाग की हो या पेट की।

(2) जो दूसरों को जलाता है, वह स्वयं भी जलकर राख हो जाता है—आग को देखो। —**भोलानाथ तिवारी**

आचार, आचरण

मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कायर, अथवा पवित्र है या अपवित्र। —**वाल्मीकि**

आचाराद‍ायुर्वर्धते कीर्तिश्च
(आचार से आयु बढ़ती है, और कीर्ति भी) —**कौटिल्य**

आचारः परमो धर्मः
(सदाचार ही सबसे बड़ा धर्म है।) —**मनुस्मृति**

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वस्तुतः वही विद्वान है। रोगियों के लिए भली-भाँति सोचकर निश्चित की गई ओषधि नाम-उच्चारण करने मात्र से (खिलाए बिना) किसी को नीरोग नहीं कर सकती। —**हितोपदेश**

जो कथनी कथै सो हमारा शिष्य,
जो वेद पढै सो हमारा प्रशिष्य,
जो रहनी रहे सो हमारा गुरु,
हम तो रहनी के साथी हैं। —**गोरखनाथ**

दूसरों से वैसा ही आचरण करो जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। —**ल्यूक**

आचरण एक दर्पण के सदृश है जिसमें हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है। —**गेटे**

जैसा देश वैसा भेष। —**एक हिन्दी कहावत**

(1) मनुष्य जिस समय पशु-तुल्य आचरण करता है, उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है।

(2) विचार जब स्वभाव के साथ घुल-मिलकर एक हो जाते हैं तो वे आचार बन जाते हैं। —**रवीन्द्रनाथ टैगोर**

सुन्दर आचरण, सुन्दर शरीर से अच्छा है, मूर्ति और चित्र की अपेक्षा यह उच्चकोटि का आनन्द देता है। यह कलाओं में सुन्दरतम कला है। —**एमर्सन**

बिना आचार के कोरा बौद्धिक ज्ञान वैसा ही है जैसा कि खुशबूदार मसाला लगाया हुआ मृतक। —**महात्मा गांधी**

(1) जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया
उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया।
(2) मन भर चर्चा से कन भर आचरण अच्छा है। —विनोबा भावे

सबसे संक्षिप्त उत्तर है करके दिखाना। —हर्बर्ट

(1) आचार क़ानून से कही अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, बहुत अंशों तक क़ानून उन्हीं पर आश्रित होता है।
(2) आचार मूल है तथा क़ानून उसकी शाखाएँ हैं। —होरेस मैन

आचार द्वारा क़ानून बनते भी हैं और बिगड़ते भी है। —जॉनसन

वस्तुतः मनुष्य मूलत: पशु ही है, आचार से वह मनुष्य बनता है।
—भोलानाथ तिवारी

आज, आज और कल

एक आज दो कल के बराबर है। —क्वार्ल्स

वही मानव सुखी है जो आज को अपना कह सके; जो निश्चितता के साथ कह सके, ओ कल ! तेरी शक्ति हो सो कर ले, आज मैंने जी भर कर जी लिया।
—ड्राइडेन

'आज' को चाहिए कि वह 'कल' को उधार न ले। (आज का काम कल पर नही छोड़ना चाहिए।) —एक जर्मनी कहावत

आलसी व्यक्ति 'आज' को छोड़कर सदा 'कल-कल' की रट लगाए रहता है।
—एक इतालवी कहावत

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल मे परलै होयगी, बहुरि करोगे कब ? —एक कवि

आज को भर पेट जी ले, क्या पता कल तू रहे न रहे। —भोलानाथ तिवारी

आज़ाद, आज़ादी

जिसके मन में यह निश्चय आ गया कि किसी से कुछ भी नही लेना है, सच्चे अर्थों में वही स्वतंत्र है। —स्वामी विवेकानन्द

आदमी आज़ाद पैदा हुआ मगर हर जगह वह ज़ंजीरों में है। —रूसो

(1) किसी की मेहरबानी माँगना अपनी आजादी खोना है।
(2) स्वतंत्र हुए मानो नया जन्म मिल गया। —महात्मा गांधी

बलवान व्यक्ति ही आज़ाद रहने के योग्य होता है, निर्बल नहीं।
—**जवाहरलाल नेहरू**

स्वतंत्रता का अर्थ है, स्वयं का स्वयं पर अधिकार। —**हीगल**

आज़ादी आदमी की पहली खुशी है। —**ड्राइडेन**

आज़ादी के लिए कोई भी क़ीमत बड़ी नहीं। —**यशपाल**

आज़ादी दो तरह की होती है—एक झूठी, जब इन्सान जो भी चाहे करने को आजाद है, दूसरी सच्ची, जब वह केवल वह करने को आज़ाद है जो उसे करना चाहिए। —**किंग्सले**

स्वतंत्रता की तड़प आत्मा का संगीत है। —**सुभाषचन्द्र बोस**

कानून आदमी को कभी आज़ाद नही बनाएगा, आदमी को ही क़ानून को आज़ाद बनाना होगा। —**थोरो**

अपने मुल्क मे गुलाम रहने से परदेस मे आज़ाद रहना अच्छा है।
—**एक जर्मन कहावत**

सद्ज्ञान और सदाचार के बिना स्वतंत्रता क्या है? सबसे बड़ा अभिशाप।
—**बर्क**

जो न तो किसी को प्रेम करते हैं, न किसी से घृणा, वे ही स्वतंत्र है।
—**धम्मपद**

जो इंद्रियों का दास है, वह स्वतंत्र नही हो सकता। —**सेनेका**

नौजवानो, बिना क़ुर्बानी दिए आजादी नही मिलती। —**पंडित परमानंद**

स्वर्ग में गुलाम बनने की अपेक्षा नरक में शासन करना अच्छा है।
—**मिल्टन**

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। —**बाल गंगाधर तिलक**

स्वतंत्रता जन्मसिद्ध हक़ नही, कर्मसिद्ध हक़ है —**विनोबा भावे**

मुझे स्वतंत्रता दो या मृत्यु। —**पेट्रिक हैनरी**

अपनी आजादी को बुद्ध, ईसा, कृष्ण या मुहम्मद के हाथ मत बेचो।
—**स्वामी रामतीर्थ**

आज्ञा, आज्ञापालन

दुष्ट भय से आज्ञा का पालन करते हैं, सज्जन प्रेम से। —**अरस्तू**

पहले आज्ञापालन करो फिर आज्ञा दो। —एक अंगरेजी कहावत

स्त्रियों की सर्वोत्तम शोभा आज्ञाकारिता है। —लुइस मॉरिस

आज्ञा पालन करना ही ऐसी कला है जिससे शासन करना भी आता है। —कारलाइल

आज्ञाकारिता द्वारा ही आदेश देने का अधिकार मिलता है। —इमर्सन

सच्ची आज्ञाकारिता ही वास्तविक स्वतंत्रता है। —वार्ड बीचर

जिसे आज्ञा पालन करना नहीं आता उसे आज्ञा देना भी नहीं आता। —एक फ्रांसीसी कहावत

अनुचित बचन न मानिए जदपि गुराइस गाढ़ि।
है 'रहीम' रघुनाथ ते सुजस भरत कौ बाढ़ि। —रहीम

जो आज्ञापालन न कर सकें और जो आज्ञापालन के सिवा कुछ न कर सकें —दोनों ही व्यर्थ होते हैं। —कर्टिस

आत्मकथा

किसी मनुष्य के लिए अपनी आत्म-कथा लिखना कठिन और नाजुक विषय है। यदि वह अपनी निन्दा करे तो उसके दिल में चोट-सी लगती है और यदि वह अपनी प्रशंसा करे तो पाठकों के कानों में उसकी बातें खटकती हैं। —अब्राहम काउले

प्रत्येक आत्मकथा पीड़ा का इतिहास है क्योंकि प्रत्येक जीवन महान् और छोटे दुर्भाग्य का क्रमिक विकसित रूप है। —शॉपेनहावर

अपने विषय में कुछ कहना प्रायः बहुत कठिन हो जाता है, क्योंकि अपने दोष देखना अपने आपको अप्रिय लगता है और उनको अनदेखा करना औरों को। —महादेवी वर्मा

प्रत्येक कलाकार अपनी ही आत्मकथा लिखता है। —एलिस

ईमानदारी से लिखी गई प्रत्येक आत्मकथा निश्चय ही रोचक होती है। —डॉ॰ राधाकृष्णन

कलाकार की वास्तविक आत्मकथा उसकी कृति ही होती है। —भोलानाथ तिवारी

आत्मज्ञान

तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः
(उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।) —ऋग्वेद

जिसने ख़ुद को पहचान लिया, उसने ख़ुदा को भी पहचान लिया।

—हज़रत मुहम्मद

जिसने अपने को समझ लिया वह दूसरों को समझाने नहीं जायगा।

—धम्मपद

ओ मनुष्य, अपने आपको पहचान, सारा का सारा ज्ञान वहीं केन्द्रीभूत है।

—यंग

जैसे स्वप्न में काटे गये सिर का दुःख बिना जागे दूर नहीं होता, इसी प्रकार इस संसार का दुःख बिना आत्मज्ञान हुए दूर नहीं होता। —स्वामी भजनानन्द

पीड़ा से दृष्टि मिलती है। इसलिए आत्मपीड़न ही आत्मदर्शन का माध्यम है। —अज्ञेय

आत्मज्ञानं परं ज्ञानम् (आत्मज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है।) —वेदव्यास

एन्थानी ने प्रेम में, ब्रूटस ने कीर्ति में और सीज़र ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूंढा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एवं प्रत्येक नष्ट हो गया। संसार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव के तराज़ू पर तोली गईं तो सबकी सब निकम्मी निकलीं, केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला। —स्वामी रामतीर्थ

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसंयम केवल ये ही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। —टेनीसन

संसार स्वप्न की तरह है। जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह संसार मिथ्या मालूम होता है।

—याज्ञवल्क्य

आत्मदर्शन

तुम अपने आपको नहीं देख सकते, जो तुम देख रहे हो वह तो तुम्हारी छाया है। —रवीन्द्र

आत्मनिर्भरता

किसी भी महत्त्वपूर्ण विषय में किसी पर निर्भर रहना सम्भव नहीं है। मनुष्य को अपनी जीवन-यात्रा एकाकी करनी है, दूसरों पर निर्भर रहना निराशा को आमंत्रित करना है। —जवाहरलाल नेहरू

जो अकेले चलते हैं वे तेज़ी से बढ़ते हैं। —नेपोलियन

चाहता जो व्यक्ति है संसार में रवि-सा चमकना ।
'आत्मनिर्भरता' बनावे वह प्रथम हथियार अपना ।।

—शालिग्राम कवि

स्वावलम्ब की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोष ।

—मैथिलीशरण गुप्त

परावलंबी मनुष्य जीवित की अपेक्षा मरा हुआ अच्छा ।

—स्वामी विवेकानन्द

आत्मपरिचय

मनुष्य अंत तक किसी तरह भी अपना पूरा-पूरा परिचय नहीं पा पाता ।

—शरत्चन्द्र

आत्म-प्रशंसा

प्रशंसा के भूखे यह साबित करते है कि वे योग्यता में कंगाल है । **—प्लुटार्क**

आत्मप्रशंसा अज्ञान की बच्ची है । **—फ्रेंकलिन**

महापुरुष हो जिसको बनना, आत्मप्रशंसा को विष जाने ।
अपनी उन्नति के मारग में, इसको भीषण रोड़ा माने ।

—शालिग्राम कवि

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय नष्ट न करो, बल्कि उसके गुणों को अपनाने का कष्ट करो । **—जॉनसन**

अपनी प्रभुता को सबै बोलत झूठ बनाय ।
बेस्या बरस घटावहीं, जोगी बरस बढ़ाय ।। **—वृन्द**

(1) बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बौलें बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल ।।

(2) ये रहीम फीके दोऊ जानि महा सन्तापु ।
ज्यौं तिय कुच आपन गहै, आप बड़ाई आपु ।। **—रहीम**

आत्मप्रशंसा ओछेपन का चिह्न है । **—महात्मा गांधी**

(1) गुणी मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते बल्कि दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनकर नम्र हो जाते हैं ।

(2) जिन्हें कहीं से प्रशंसा नहीं मिलती वे ही आत्मप्रशंसा करते हैं। —अज्ञात

आत्मबल, आत्मशक्ति

आत्मबल की सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि इतने युद्धों के बावजूद दुनिया अभी क़ायम है। —महात्मा गाँधी

जैसे कुश्ती से शरीर का बल बढ़ता है, कठिन प्रश्नों के हल करने से वुद्धि बढ़ती है, उसी तरह परिस्थितियों का शान्ति मे मुक़ाबला करने से आत्मबल बढ़ता है। —चैतन्य महाप्रभु

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊबकर क्षण-प्रतिक्षण अपने मन वदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं—उनमें आत्मवल नही होता। —सुभाषचंद्र बोस

इसकी हमें क्या चिंता कि बुद्ध अच्छे थे या मुहम्मद।…आओ हम अपनी ही ज़िम्मेदारी पर अच्छे बनें। —स्वामी विवेकानन्द

(1) जिसका आत्मशक्ति पर विश्वास है, उसकी हार नही होती।

(2) आत्मा की शक्ति को पहचानना ही आत्मज्ञान है। आत्मा तो बैठे-बैठे दुनिया को हिला सकती है।

(3) अनुचित इच्छाएँ तो उठनी ही रहेंगी। उनका हम ज्यों-ज्यों दमन करेंगे, त्यों-त्यों दृढ़ बनेंगे और हमारा आत्मबल बढ़ेगा। —महात्मा गाँधी

यदि तुम समझते हो कि ईसा, वुद्ध, कृष्ण या किसी अन्य महात्मा के नाम मे तुम्हारा उद्धार हो जाएगा, तो याद रखो कि वास्तविक गुण किसी दूसरे व्यक्ति में निहित नहीं है, असली शक्ति तो तुम्हारी आत्मा मे है। —स्वामी रामतीर्थ

आत्मरति

आत्मप्रेमी चापलूसों मे सबसे बड़ा चापलूस है। —रोशोको

आत्मरति वाला मनुष्य आत्मा में तृप्त होता है, आत्मसंतुष्ट के लिए कुछ भी कर्तव्य नही रह जाता। —गीता

आत्मविजय

आवेश और क्रोध को वश मे कर लेने पर शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित कर दिया जा सकता है। —महात्मा गांधी

जिसने अपने को जीत लिया है, उसकी जीत को देवता भी हार में नहीं बदल सकते। —भगवान् बुद्ध

जब मनुष्य का युद्ध अपने आपके साथ आरम्भ होता है तब उसका कुछ मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मविजय केवल यही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। —टेनीसन

शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा अपने-आपको जीत लेना कहीं बड़ी जीत है।
—धम्मपद

आत्मविश्वास

(1) आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढी है।

(2) जिसका अपने पर विश्वास नहीं, वही वस्तुतः नास्तिक है।

—स्वामी विवेकानन्द

(1) जिसमें आत्मबल और आत्मविश्वास अधिक है, वही आगे बढ़ता भी है और औरों को बढ़ाता भी है।

(2) अपने में अपना पूरा विश्वास रखो···तुम्हें कुछ भी विचलित नहीं कर सकता। —स्वामी रामतीर्थ

जिसमें आत्मविश्वास नहीं, उसमें अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है! —विवेकानन्द

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्मसंयम केवल यही तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं। —टेनीसन

मुझे करना है, इसलिए मैं कर सकता हूँ। —कांट

आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्यों-ज्यों तुम्हें सफलता मिलती जाएगी, तुम्हारा आत्म-विश्वास बढ़ता जाएगा। —डेल कारनेगी

यह आत्मविश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो।
—गोर्की

आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। —एमर्सन

(1) आशा और आत्मविश्वास ही वे वस्तुएँ हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं और हमारी उत्पादन-शक्ति को दुगना-तिगना बढ़ा देती हैं।

(2) हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारे आत्मविश्वास और धैर्य पर अवलम्बित रहती हैं।

(3) आत्मविश्वास में वह शक्ति है जो सहस्र विपत्तियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकती है। **—स्वेट मार्डेन**

आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय के द्वारा मनुष्य की कठिनाइयाँ सरल बन जाती हैं। **—मदन मोहन मालवीय**

(1) आत्मविश्वास पराक्रम का सार है।

(2) अपने ऊपर विश्वास रखो; यह विश्वास ही वह अटूट तार है जिसके सहारे हृदय स्पन्दित होता है।

(3) आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है।

(4) आत्मविश्वास ही सफलता का प्रथम रहस्य है। **—एमर्सन**

यदि तुम अपने पर विश्वास कर सको तो दूसरे भी तुम पर विश्वास करने लगेंगे। **—गेटे**

(1) आत्मविश्वासी व्यक्ति सूर्य के समान है। वह स्वयं भी चमकता है और दूसरों को भी चमकाता है।

(2) आत्मविश्वास की कमी ही हमें असफल बनाती है।

(3) जिसमें आत्मविश्वास नहीं वह शिक्षित होकर भी अशिक्षित है शक्तिशाली होकर भी कायर है और पंडित होकर भी मूर्ख है। **—भोलानाथ तिवारी**

आत्मविसर्जन

आपुहि खोये पिउ मिलै, पिउ खोये सब जाइ।
देखहु बूझि बिचार मन, लेहु न हेरि हेराइ॥ **—जायसी**

दूसरों को प्रसन्न करने के लिए तुम्हें स्वयं को भूलना पड़ सकता है।
—एविड

आत्मशक्ति

सहनशीलता और विश्वास आत्मशक्ति के लक्षण हैं। **—महात्मा गांधी**

आत्मशक्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है। जिसमें आत्मशक्ति नहीं उसकी शारीरिक शक्ति भी व्यर्थ हो जाती है। **—महाभारत**

आत्मसमर्पण

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर।। —कबीर

चित्तशुद्धि के अन्य साधनों को अगर मैं सोडा या साबुन की उपमा दूं तो ईश्वरार्पण को जल की उपमा दूंगा। सोडा-साबुन जल के बिना काम नहीं देते, लेकिन बिना सोडा-साबुन के भी शुद्ध जल से धोने का काम हो जाता है।
—विनोबा

आत्मसम्मान

बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्मसम्मान नहीं गँवाता।
—महात्मा गांधी

सभी बातों से पहले आत्मसम्मान। —पाइथागोरस

हमें सबसे पहले आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए। हम कायर और दब्बू हो गये हैं, अपमान और हानि चुपके से सह लेते हैं। ऐसे प्राणियों को तो स्वर्ग में भी सुख नहीं प्राप्त हो सकता। —प्रेमचन्द

जिस प्रकार दूसरों के अधिकार की प्रतिष्ठा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार से अपना सम्मान करना भी उसका कर्त्तव्य है। —स्पेन्सर

आत्मसम्मान पहला रूप है जिससे महानता प्रकट होती है। —एमर्सन

आत्महत्या

आत्महत्या करना कायरता है। —नेपोलियन

आत्महत्या का आवेश आँसुओं की शक्ति लेकर ही चढ़ता है।
—अमृतलाल नागर (बूंद और समुद्र)

आत्महत्या या स्वेच्छा से मरने के लिए प्रस्तुत होना—भगवान की अवज्ञा है। जिस प्रकार सुख दुःख उसके दान हैं—उन्हें मनुष्य झेलता है, उसी प्रकार प्राण भी उसी की धरोहर है। —जयशंकर प्रसाद (राज्यश्री)

आत्मा

(1) न जायते म्रियते वा विपश्चि-
न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

(नित्य चैतन्यरूप आत्मा न उत्पन्न होता है न मरता है; न यह किसी से हुआ है और न इससे कोई हुआ है—अर्थात् इसका कारण या कार्य नहीं है। यह अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है और पुराण है; शरीर के मारे जाने पर भी यह मरता नहीं है।)

(2) आत्मा को रथ में बैठा हुआ योद्धा जान, शरीर को रथ जान, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम जान। —कठोपनिषद्

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

(इस आत्मा को शस्त्र काट नही सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल इसे भिगो नहीं सकता और पवन इसे सुखा नही सकता।) —भगवान् श्रीकृष्ण

आत्मैवेदं सर्वम्। (आत्मा ही यह सब है।) —छान्दोग्य उपनिषद्

प्रधानतः मुझे इस दुनिया से दिलचस्पी है और इस (लौकिक) जीवन से, किसी दूसरी दुनिया या सम्भावित भावी जीवन मे नही। आत्मा जैसी कोई वस्तु है या नही, यह मैं नही जानता। और यद्यपि ये प्रश्न अपनी जगह पर महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु मुझे यह बिलकुल उद्विग्न नही करते। जिस वातावरण मे मै पला-बढ़ा हूँ उसमें आत्मा को, एक भावी जीवन को, कर्म-सिद्धान्त को और पुनर्जन्म को अटल सत्य के रूप मे स्वीकार किया जाता है। मै भी इससे प्रभावित हूँ। इसलिए एक प्रकार से म इन पूर्वाग्रहों के प्रति सहानुभूति रखता हूँ।

हो सकता है कि आत्मा जैसी कोई वस्तु हो जो स्थूल शरीर के अवसान के बाद भी जीवित रहती हो। जीवन के कार्य को निर्धारित करने वाला कारण-कार्य का सिद्धान्त भी पर्याप्त तर्कसम्मत जान पड़ता है, यद्यपि जब मूल कारण की कल्पना की जाती है तो कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती हैं। यदि आत्मा का अस्तित्व स्वीकारा जाए, तो पुनर्जन्म के सिद्धान्त में भी कुछ तर्क परिलक्षित होता है।

मैं इन सिद्धांतों या दूसरे सिद्धांतों तथा पूर्वधारणाओं में किसी धार्मिक आस्था के अर्थ में विश्वास नहीं रखता। मेरे लिए ये सब एक अज्ञात क्षेत्र हैं, जिनके सम्बन्ध में हमारा ज्ञान अभी न होने के बराबर है; बौद्धिक अनुमान-मात्र है। इसका मेरे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं है; और चाहे ये सिद्धांत आगे चलकर सही साबित हों या गलत, मेरे लिए कोई अन्तर नही पड़ेगा।

—जवाहरलाल नेहरू (भारत की खोज)

अयमात्मा ब्रह्म। (यह आत्मा ही ब्रह्म है।) —बृहदा० उपनिषद्

हमारी आत्मा अमर है। —सुकरात

जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, भूखरहित, प्यासरहित, सत्यकाम, सत्यसंकल्प है उसे खोजना चाहिए, उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए। —प्रेमचन्द

आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है। —उमर खैयाम

किसी मनुष्य की आत्मा का मूल्य उसकी उड़ान की ऊँचाई और उसकी गिरान की गहराई से मालूम होता है। —कुप्रिन

आत्मा एक चेतन तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक शरीर से दूसरे शरीर में जाता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है। —गेटे

(1) मैं तो आत्मा की अमरता पर विश्वास करता हूं। जीवन के सागर म हम सब बिन्दु-मात्र हैं और जीवन की वास्तविकता ही सत्य है, आत्मा है, परमात्मा है।

(2) सबकी आत्मा एक जैसी है। सबकी आत्मा की शक्ति समान है। मात्र कुछ की शक्ति प्रकट हो गई है, दूसरों की प्रकट होना बाकी है। —गाँधी

अगर मेरे पास सिर्फ दो रोटियाँ हों तो मैं एक के फूल खरीदूंगा ताकि रूह को गिज़ा मिल सके। —हज़रत मुहम्मद

क्या तुम नहीं जानते कि तुम ही 'ईश्वर का मन्दिर' हो और ईश्वर की आत्मा तुममें ही रहती है। —इंजील

मैं कौन हूँ और कौन नहीं हूँ, इसे जानने में मैंने बहुत-सी चीज़े जान ली हैं और वह कौन है कौन नही है, इसी को जानने में मैंने बहुत-सी चीजें खो दी है। —मौलाना रूम

आत्मा को न शस्त्र काट सकते है, न आग जला सकती है न जल भिगो सकता है और न हवा सुखा सकती है। —गीता

हिंदुओं की यह धारणा है कि आत्मा ऐसा वृत्त है जिसकी परिधि कहीं नहीं है, लेकिन जिसका केन्द्र शरीर में स्थित है और मृत्यु का अर्थ है इस केन्द्र का एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरित हो जाना। —स्वामी विवेकानन्द

जीव ब्रह्म ही है, ब्रह्म से पृथक् नही है। —उपनिषद्

देह ही आत्मा है। —माधवाचार्य (सर्वदर्शन संग्रह)

जो ग्रहण करता है, प्राप्त करता है, विषयों का भोग करता है और जो अमर है वही आत्मा है। —शंकराचार्य

जिस हस्ती को वेदांती ब्रह्म कहते हैं, उसी को योगी आत्मा कहते हैं और भक्त भगवान् कहते हैं। —**स्वामी रामकृष्ण परमहंस**

असली आत्मा परमेश्वर है। —**स्वामी रामतीर्थ**

ईश्वर अंश जीव अविनासी।
चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो माया बस भयउ गोसाईं।
बँधेउ कीर मरकट की नाईं ॥ —**तुलसीदास**

आत्मा-परमात्मा

एकहि तें दुइ होइ, दुइ सौं राज न चलि सकै।
बीचते आपुहि खोइ, 'मुहमद' एकै होइ रहु ॥ —**जायसी**

आत्माभिव्यक्ति

मनुष्य अपने रति, क्रोध आदि भावों को या तो सर्वथा मार डाले अथवा साधना के लिए उन्हें कभी-कभी ऐसे क्षेत्र में ले जाया करे जहाँ स्वार्थ की पहुँच न हो, तब जाकर सच्ची आत्माभिव्यक्ति होगी।

—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल (रसमीमांसा)**

आत्मीय

अपने सुहृद और आत्मीय जन जिसके शत्रु हैं उसकी आत्मा, उसका धर्म सभी एक अजेय शत्रु हैं। —**टैगोर**

आत्मोत्सर्ग

आत्मोत्सर्ग की पराकाष्ठा वही समझनी चाहिए जहाँ प्रेमी निराश होकर प्रिय के दर्शन का आग्रह भी छोड़ देता है।—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल (भ्र.गी. सार)**

आदत

आदत रस्सी के समान है। नित्य इसमें हम एक बट देते हैं और अंत में हम इसे तोड़ नहीं सकते। —**ऐचमैन**

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु,
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु। —**तुलसीदास**

(1) जाहि पर्यो जैसो बिसन, ता बिन रहत न सोय।
सुरा सुरापी ना तजै, जदपि बिकल गति होय।।

(2) कैसेहू छूटत नहीं, जामें परी कुबानि।
काग न कोयल ह्वै सकै, जौ बिधि सिखवै आनि।। —वृन्द

आदमी

असल में 'आदमी' जब 'किताब' बन जाने की कोशिश करता है तो उसमें से आदमी का अपना स्वाद जाता रहता है। —टैगोर

आदमी को मयस्सर कहाँ इन्साँ होना। —एक उर्दू शायर

आदमियत और शै है, इल्म है कुछ और चीज,
कितनो तोते को पढ़ाया, पर वो हैवाँ ही रहा। —एक उर्दू शायर

दुनिया कुछ नही, आदमी ही सब कुछ है। —एमर्सन

मनुष्य आश्चर्यजनक वस्तुओं से भरा हुआ है, किंतु मनुष्य से बड़ा कोई आश्चर्य नही। —सोफ़ोक्लीज़

आदमी खाना पकाने वाला जानवर है। —बर्क

आदर

जिससे एक अक्षर भी सीखा, उसका आदर करो —स्वामी दयानन्द सरस्वती

जो दूसरों का आदर करना जानते हैं, उन्ही का आदर दूसरे भी करते हैं। —भोलानाथ तिवारी

सुख संतोष से प्राप्त होता है और आदर सेवा से। —प्रेमचन्द

जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नही जानता, उसे दूसरों से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। —हजारीप्रसाद द्विवेदी

राख पत रखाव पत। —एक हिन्दी लोकोक्ति

अतिपरिचयादवज्ञा

अत्यधिक परिचय अनादर का कारण बनता है। —एक संस्कृत लोकोक्ति

बहुत जाइए, भरम गँवाइये। —एक हिंदी लोकोक्ति

दूर से ही अधिक आदर होता है। —टेसिटस

आदर्श

Great objects form great minds. (महान् आदर्श महान् मस्तिष्क का निर्माण करते हैं।) —**इमर्सन**

आदर्श की प्राप्ति समर्पण की पूर्णता पर निर्भर करती है। —**सुभाषचन्द्र बोस**

विचार या भाव ही मनुष्य को उत्तेजित करते हैं, आदर्श ही लोगों को मृत्यु तक का सामना करने को तैयार करते हैं। —**स्वामी विवेकानन्द**

आदर्श कभी नहीं मरते। —**सिस्टर निवेदिता**

Ideals are the worlds's masters. आदर्श विश्व के पथ-प्रदर्शक होते हैं। —**जे० जी० हॉलैन्ड**

(1) किसी ऊँचे आदर्श में आस्था होना, अपने जीवन को सार्थक करने और हमें बाँधे रखने के लिए आवश्यक है।

(2) इन्सान भले ही तारों तक न पहुँच पाए, लेकिन उनकी तरफ़ देखा तो करता ही है। तो सिर्फ़ इसलिए अपने आदर्शों को नीचे करना ठीक नहीं कि वे बहुत ऊँचे हैं भले ही उनको पूरा-पूरा हासिल न कर सकें। —**जवाहरलाल नेहरू**

जो आदर्श हमने सच्चे अन्तःकरण से बनाया है, मन, वचन और काया एक करके जिस आदर्श की सृष्टि की है, वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप में प्रकट होगा। —**स्वेट मार्डेन**

आधुनिक, आधुनिकता

पुरानी रौशनी में औ नई मे फर्क इतना है,
उसे किश्ती नही मिलती, इसे साहिल नही मिलता। —**अकबर इलाहाबादी**

साँप तुम सभ्य तो हुए नही
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ—(उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना···
विष कहाँ पाया? —**अज्ञेय**

(1) उन्नति का सूर्य जैसे-जैसे मध्य आकाश में आ रहा है वैसे-वैसे शहर रूपी कमल के दल खिल-खिलकर क्रमशः चारों तरफ़ व्याप्त हुए जा रहे हैं। बेचारी बसुन्धरा इस बढ़ते हुए सुर्खी चूने के गारे को रोकने में असमर्थ हो रही है।

(2) शिक्षा की नाव में हमने विलायती डाँड़ लगा लिए हैं, पतवार भी वहीं

की है, देखने में वह अच्छी लगती है, परंतु सारी नदी का स्रोत तो उल्टी तरफ़ है, इसलिए नाव अपने आप ही पीछे रह जाती है ।

(3) मनुष्य का सबसे उत्तम परिचय यह है कि मनुष्य स्रष्टा है, किन्तु आज की सभ्यता उसे मज़दूर बनाती है, मिस्त्री बनाती है, महाजन बनाती है, लोभ दिखाकर स्रष्टा को छोटा बनाती है। मनुष्य निर्माण करता है व्यवसाय के लिए, और सृष्टि करता है आत्मा की प्रेरणा से। व्यवसाय का प्रयोजन जब बहुत ज़्यादा बढ़ता जाता है तब आत्मा की वाणी रुक जाती है और धनी तब दिव्यधाम के पथ का चिह्न तक लुप्त कर देता है, सब रास्तों को वह बाजार की तरफ़ ले जाता है।

(4) यदि मुझसे कोई पूछे कि यह आधुनिकता क्या चीज़ है तो मैं कहूँगा कि विश्व को व्यक्तिगत आसक्त भाव से न देखकर निर्विकार तद्गत भाव से देखना ही आधुनिकता है। यह देखना ही उज्ज्वल है, विशुद्ध है; यह देखना ही विशुद्ध आनन्द है। आधुनिक विज्ञान जिस निरासक्त भाव से वास्तव का विश्लेषण करता है, काव्य भी ठीक वैसे ही निरासक्त चिन्ता से विश्व को समग्र दृष्टि से देखे, यही शाश्वत रूप से आधुनिकता है। -- रबीन्द्रनाथ टैगोर

आनन्द

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्—आनन्दाद् ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते—आनन्देन जातानि जीवन्ति—आनन्दं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति। (आनन्द ही ब्रह्म है, यह जान, आनन्द से ही सब प्राणी उत्पन्न होते है, उत्पन्न होने पर आनन्द से ही जीवित रहते हैं और मृत्यु से आनन्द में ही समा जाते हैं।)

—उपनिषद्

विज्ञानमानन्दं ब्रह्म। (विज्ञान और आनन्द ब्रह्म ही है।)

—बृहदारण्यक उपनिषद्

आनन्द वह खुशी है, जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता। —सुकरात

(1) केवल आत्मज्ञान ही हृदय को सच्चा आनन्द प्रदान करता है।

(2) एन्थोनी ने प्रेम में, ब्रूटस ने कीर्ति में और सीज़र ने साम्राज्य-शासन के विस्तार में आनन्द ढूंढ़ा। प्रथम को अपमान, द्वितीय को घृणा और तृतीय को कृतघ्नता मिली एवं प्रत्येक नष्ट हो गया। संसार की सभी वस्तुएँ जब अनुभव के तराजू पर तोली गयीं तो सबकी सब निकम्मी निकलीं अर्थात् सबके सब निस्सार प्रतीत हुए। केवल आत्मज्ञान ही हृदय को आनन्द देने वाला निकला।

—स्वामी रामतीर्थ

उन सभी लोगों को जो आनन्द चाहते हैं, आनन्द बाँटना चाहिए; क्योंकि आनन्द जुड़वाँ पैदा हुआ है। —बायरन

(1) क्षण-भर भी काम के बिना रहना ईश्वर की चोरी समझो, मैं दूसरा कोई और रास्ता भीतरी या बाहरी आनन्द का नही जानता।

(2) सुख-दुःख देने वाली बाहरी चीजों पर आनन्द का आधार नहीं है। आनन्द सुख से भिन्न वस्तु है। मुझे धन मिले और मैं उसमें सुख मानूं यह मोह है। मैं भिखारी होऊं, खाने का दुःख हो, फिर भी मेरे चोरी या किन्हीं दूसरे प्रलोभनों मे न पड़ने में जो बात मौजूद है वह मुझे आनन्द देती है।

—महात्मा गाँधी

हर बात में लज़्ज़त है अगर दिल मे मज़ा हो। —अमीर

शमा औ परवाने की हालत से ज़ाहिर हुआ यह—
जिन्दगी का लुत्फ़ कुछ-कुछ जल के मर जाने में है। —फ़ना

जिस आनंद के सहभागी सभी न हों, वह अधूरा होता है। —अरविन्द

(1) जहाँ मनुष्य अपने मौलिक यथार्थ, अकृत्रिम रूप मे है, वही आनन्द है।

(2) जो वस्तु आनन्द नही प्रदान कर सकती, वह सुन्दर नहीं हो सकती, और जो सुन्दर नही हो सकती वह सत्य भी नही हो सकती। जहाँ आनन्द है वही सत्य है। —प्रेमचन्द

हम स्वयं आनन्द की अनुभूति लेने की बजाय दूसरों को यह विश्वास दिलाने के लिए अधिक प्रयास करते हैं कि हम आनन्द में हैं। —कन्फ़्यूशियस

(1) आयु में आनन्द है। समग्र शरीर के मंगल में, स्वास्थ्य में एक आनन्द है। इसी आनन्द के दो भाग कर देने से दो वस्तुएँ प्राप्त होती हैं—एक ज्ञान और दूसरा प्रेम।

(2) आनन्द कल्पना मे है, वस्तु में नहीं। महाकुरूप गुड़िया को भी बच्चे कल्पना से सुन्दर बना लेते हैं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

आनन्द सर्वोत्तम मदिरा है। —जार्ज इलियट

आनन्द हर जगह है किन्तु उसका स्रोत हमारे ही दिलों में है। —रस्किन

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही सुगंध आपके भीतर समायेगी। —एमर्सन

(1) आनन्द को रस के प्रधान प्रवर्तक भावों में स्थान न देकर आचार्यों ने 'हर्ष' को केवल संचारी रूप में रखा है। (र० मी०)

(2) मेरी समझ में रसास्वादन का प्रकृत स्वरूप 'आनन्द' शब्द से व्यक्त नहीं होता।—इस आनन्द शब्द ने काव्य के महत्त्व को बहुत कुछ कम कर दिया है—उसे नाच-तमाशे की तरह बना दिया है। (र० मी०)

(3) विरह में आनन्द नष्ट नहीं हुआ करता, केवल आवृत्त रहता है।
(र० मी०)

(4) सत्, चित् और आनन्द—ब्रह्म के इन तीन स्वरूपों में से काव्य और भक्ति मार्ग 'आनन्द' स्वरूप को लेकर चले। विचार करने पर लोक में इस आनन्द की दो अवस्थाएँ पाई जाएँगी—साधनावस्था और सिद्धावस्था।
(चिन्ता—1)

(5) कवि हमारे सामने असौंदर्य, अमंगल, अत्याचार, क्लेश इत्यादि भी रखता है, रोष, हाहाकार और ध्वंस का दृश्य भी लाता है, पर सारे भाव, सारे रूप और सारे व्यापार भीतर-भीतर आनन्द-कला के विकास में ही योग देते पाए जाते हैं।

(6) 'आनन्द' शब्द ने जिस प्रकार काव्य की नीयत को बदनाम किया है, उसी प्रकार 'चमत्कार' शब्द ने उसके रूप को बहुत-कुछ बिगाड़ा है। (र० मी०)
—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

आपत्ति, आफ़त, विपत्ति

मनुष्य को आपत्ति का सामना करने के लिए सहायता देने में मुस्कान से बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है। —तिरुवल्लुवर

आपत्ति 'मनुष्य' बनाती है और सम्पत्ति 'राक्षस'। —विक्टर ह्यूगो

आपत्ति-काल में हमारी अजीब-अजीब लोगों से जान-पहचान हो जाती है, जो अन्यथा संभव नहीं। —शेक्सपियर

(1) पांच रूप पांडव भए, रथ-बाहक नलराज।
दुरदिन परै 'रहीम' कहि, बडेन किए घटि काज॥
(2) बिपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में जान परै सब कोय॥ —रहीम

विपत्तियाँ अकेले नहीं आतीं। —पंचतंत्र

मनुष्य आपत्तियों का लक्ष्य बनने के लिए ही जन्मा है, अतएव बुद्धिमान् मनुष्य को इनसे घबराना नहीं चाहिए। —कन्फ्यूशियस

अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति वीर पुरुष को। —सेनेका

(1) कसें कनकु मनि पारिखि पाए।
पुरुष परखियहि समय सुभाए ॥
(2) धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी ॥ —तुलसी

आपत्तियों पर विजय पाना ही जीवन के आनन्द की पराकाष्ठा का अनुभव करना है। —शोपेनहार

आपत्तियाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं। —जवाहरलाल नेहरू

रंज से ख़ूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गईं ॥ —ग़ालिब

(1) देवता पूज्य बनते है हथौड़ी का प्रहार सहकर।
(2) पत्थर भी हथौड़ी के प्रहार से देवता बन जाते हैं।
(3) विपत्तियाँ ही आदमी की कसौटी हैं। —भोलानाथ तिवारी

आभार

आभारी होना दासता है और दासता घृणास्पद है। —हाब्ज

आभार न मानना कृतघ्नता है। —शेक्सपियर

आभूषण, गहने, जेवर, भूषण

(1) गहनों का मर्ज़ न जाने इस दरिद्र देश में कैसे फैल गया। जिन लोगों को भोजन का ठिकाना नहीं, वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं।

(2) स्त्री का गहना रस है जो पेरने से ही निकलता है।

(3) अलंकार भावों के अभाव का आवरण है। —प्रेमचन्द

मौत ही स्त्री का सच्चा आभूषण है। —सोफ़ोक्लिज़

रैनि को भूषनु इंदु है, दिवस को भूषनु भानु
दास को भूषनु भक्ति है, भक्ति को भूषनु ज्ञानु
ज्ञानु को भूषनु ध्यानु है, ध्यानु को भूषनु त्याग
त्याग को भूषनु शांति-पद, तुलसी अमल अदाग। —तुलसीदास

नहीं मोहताज जेवर का जिसे ख़ूबी ख़ुदा देवे,
कि आख़िर बदनुमा लगता है देखो चाँद का गहना। —आबरू

कांतिशून्य अंगों पर अलंकार भी रोते हैं। —तुकाराम

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते हैं।
—संत तिरुवल्लवर

सुन्दर आकृतिवालों के लिए आभूषण की आवश्यकता नही है।
—कालिदास

(1) वाणी ही मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो अन्य भूषणों के समान कभी घिसता नही।

(2) ऐश्वर्यस्य विभूषण सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवतां धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

(ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्संयम, ज्ञान का शांति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का क्रोध न करना, बलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है।) —भर्तृहरि

स्त्रियों की शोभा आभूषण से नही होती है, वह होती है, रूप, शील और संकोच मे। —भोलानाथ तिवारी

आय-व्यय

जे न लाभ अनुसार जन मितव्यय करहिं विचारि।
ते पाछे पछतात अति रतन रंकता धारि॥ —रत्नावली

(1) मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता स्रोत है जिसमें सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है। (नमक का दारोग़ा)

(2) आदमी पर सबकी निगाह होती, ख़र्च कोई नहीं देखता। (बैर का अंत)

(3) सच्ची कमाई उन्हीं की है जो छाती फाड़कर धरती से धन निकालते हैं। (रंगभूमि) —प्रेमचंद

मन में भले विचारि के जैसी आमद होइ।
तैसो ही करिहै खरच भलो दिखावै सोइ॥ —जान

(1) हराम की कमाई हराम में जाई ।

(2) तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर ।   **—एक हिन्दी लोकोक्ति**

अल्पेन विभवेनैव व्ययाधिक्यं न युक्तित: (थोड़े धन में अधिक व्यय उचित नहीं ।)   **—एक संस्कृत लोकोक्ति**

आयु

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह ।
आयूषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः ।।

(दिन-रात लगातार बीत रहे हैं और संसार में सभी प्राणियों की आयु का तीव्र गति से नाश कर रहे हैं—ठीक उसी तरह, जैसे सूर्य की किरणें गर्मी में शीघ्रतापूर्वक जल को सुखाती रहती हैं ।)   **—वाल्मीकि**

बी‍ग ‍र्ष की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस वर्ष में बुद्धि, चालीस वर्ष में विवेक   **—फ्रैंकलिन**

आयु पूर्ण होने पर धन्वंतरि वैद्य भी क्या कर सकता है ? (अपि धन्वंतरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि)   **—एक संस्कृत लोकोक्ति**

जवानी बडी भल है, मनुष्यत्व संघर्ष है, बुढ़ापा पश्चात्ताप है ।

—डिज़राइली

बीस की आयु में संकल्प शासन करता है, तीस में बुद्धि, चालीस में निर्णयात्मकता और बाद में चरित्र का समानुपात (proportion) ।   **—हैनरी ग्रेटन**

सुबह होती है शाम होती है, उम्र यों ही तमाम होती है ।   **—एक उर्दू कवि**

आयु का एक क्षण भी संसार के सभी रत्नों से नहीं पाया जा सकता । उस आयु का व्यर्थ खोना मूर्खता है ।   **—योगवासिष्ठ**

आरम्भ

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ।।

नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पड़ने पर बीच में ही छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम लोग बारम्बार विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किए हुए काम को बीच में नहीं छोड़ते ।)   **—भर्तृहरि**

किसी कार्य का आरम्भ उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है। —प्लेटो

Well began is half-done (अच्छी शुरूआत हुई तो समझो कि आधा काम हो गया।) —एक अंग्रेज़ी लोकोक्ति

जिस काम को तुम कर सकते हो या कल्पना करते हो कि तुम कर सकोगे, उसको आरम्भ करो। साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। सिर्फ़ काम में जुट जाओ, तेज़ी आ जायगी। आरम्भ करो, कार्य समाप्त होगा। —गेटे

आराम

(1) आराम उनके प्रति विश्वासघात है जो इस संसार से चले गए हैं और जाते समय स्वतंत्रता का दीप सदा प्रज्वलित रखने के लिए हमें दे गये है। यह उस ध्येय के प्रति विश्वासघात है जिसे हमने अपनाया है और जिसे प्राप्त करने की हमने प्रतिज्ञा की है। यह उन लाखों के प्रति विश्वासघात है जो कभी आराम नही करते।

(2) आराम हराम है। —जवाहरलाल नेहरू

बहुत आराम से हमारे शरीर में ज़ंग लग जाता है —स्कॉट

छाया-पथ मे विश्राम नही, है केवल चलते जाना।।

—जयशंकर प्रसाद (लहर)

Strength of mind is exercise not rest. (मस्तिष्क की शक्ति अभ्यास है, आराम नहीं।) —पोप

बहुत ज्यादा आराम स्वयं दर्द बन जाता है। —होमर

हमारे बहुत-से आरामों की उत्पत्ति विपत्ति के समय होती है। —यंग

आर्य

जो जीवों की हिंसा करता है वह आर्य नही। —भगवान बुद्ध

न तु एव आर्यस्य दास भावः (आर्य दास नहीं हो सकता।) —चाणक्य

आर्त व्यक्ति (आरत)

(1) आरत काह न करइ कुकरमू

(2) आरत करहिं विचार न काऊ
सूझ जुआरिहि आपन दाऊँ।

(3) रहत न आरत के चित चेतू। —तुलसी

आलस्य

आलस्य दरिद्रता का मूल है । —यजुर्वेद

पानी में यदि सिवार हो तो मनुष्य उसमे अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता। इसी प्रकार, जिसका चित्त आलस्य से पूर्ण होता है वह अपना ही हित नही समझ सकता, दूसरों के हित क्या समझेगा ? —बुद्ध

(1) आलस्य एक प्रकार की हिंसा है।

(2) ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। आलसी पुरुष को वह मरने देना ही अधिक पसन्द करेगा । —गाँधी

आलस्य ही मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।

(आलस्य ही मनुष्य के शरीर मे रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नही है, जिसके करने से मनुष्य दुखी नहीं होता।) —भर्तृहरि

आलस्य जीवित मनुष्य की क़ब्र है। —कूपर

आलस्यं स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम् ।
संतोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्त्वस्य ॥

(आलस्य, स्त्री की सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, संतोष और डरपोकपन ये छः बातें उन्नति के लिए बाधक है।) —हितोपदेश

कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा ॥ —तुलसीदास

हम लोग शरीर से जितने आलसी रहते हैं उससे कही अधिक मस्तिष्क से भी रहते हैं। —ला रोशे

आलसी के पास समय नही होता । —एक इटैलियन कहावत

आलसी की कोई भी इच्छा कभी पूरी नही होती । —सर्वेण्टीज

जो कुछ नही करता केवल वह आलसी नहीं है, वह भी आलसी है जो अपने काम से भी अच्छा काम कर सकता था। —सुकरात

आलस्य मनुष्य का महान् शत्रु है । —पंचतंत्र

आलस्य मानव की कुप्रवृत्तियों को जन्म देता है । —अनातोले फ्रांस

आलस्य जीवित मनुष्य को दफ़ना देता है। —जेरेमी टेरल

आलस्य में दरिद्रता का वास है, मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रम में कमला का वास है। —संत तिरुवल्लुवर

In Idleness alone there is perpetual despair.
(आलस्य में ही लगातार निराशा रहती है।) —कार्लाइल

आलस्य दरिद्रता की कुंजी और सारे अवगुणों की जड़ है। —स्परजन

आलस्य वह राजरोग है जिसका रोगी कभी नहीं सँभलता। —प्रेमचन्द

आलस्य आपके लिए मृत्यु है और केवल उद्योग ही आपका जीवन है।
—स्वामी रामतीर्थ

दुनिया में आलस्य सरीखा दूसरा भयंकर पाप नहीं है। —विनोबा

अगर आप आलसी हैं तो अकेले मत रहिए, अगर आप अकेले हैं तो आलसी मत बनिए। —डॉ० जानसन

(1) आलस्य से सरल काम भी कठिन हो जाता है और कठिन काम तो ऐसा हो जाता है कि आलसी उसे कभी शुरू ही करने की हिम्मत ही नही जुटा पाता।

(2) प्रकृति ने हमें हाथ-पैर दिए। प्रकृति का इससे बड़ा अपमान भला क्या हो सकता है कि हम उनका उपयोग ही नही करें।

(3) कोई वस्तु काम में लाते रहने से उतनी जल्दी ख़राब नही होती जितनी काम में न लाने से। आलसी व्यक्ति मे भी ज़ंग लग जाता है और धीरे-धीरे वह निकम्मा हो जाता है। —भोलानाथ तिवारी

आलोचक, आलोचना

जब आपके अपने द्वार की सीढ़ियाँ मैली हैं तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी हुई गन्दगी का उलाहना मत दीजिए। —कनफ़्यूशियस

स्वयं भगवान भी मनुष्य के कर्मों का विचार उसकी मृत्यु के पहले नही करते। —डॉ० जानसन

(1) कभी-कभी मौन रह जाना ही सबसे तीखी आलोचना होती है।

(2) आलोचना व्यर्थ होती है, क्योंकि इससे दोषी प्रायः अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करने लगता है। आलोचना भयावह भी है, क्योंकि वह मनुष्य के बहुमूल्य स्वाभिमान पर घाव करती है, उसकी महत्ता के भाव को पीड़ा पहुँचाती है और उसके क्रोध को भड़काती है।

(3) आलोचना एक भयानक चिनगारी है—ऐसी चिनगारी जो अहंकार-रूपी बारूद के गोदाम में विस्फोट उत्पन्न कर सकती है और वह विस्फोट कभी-कभी मृत्यु को शीघ्र ले आता है। —डेल कारनेगी

किसी की आलोचना मत करो, जिससे तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे।

—लिंकन

मेरा पहला नियम यह है कि मैं छिद्रान्वेषी आलोचकों से दूर रहता हूँ।

—गेटे

दूसरों के दोष न निकालना, दूसरों को उन दोषों से उतना नहीं बचाता, जितना अपने को बचाता है। **—स्वामी रामतीर्थ**

गुणादान परः कश्चिद्दोषादान परोऽपरः
गुणेदोषाहृतित्यागपरः कश्चनभावकः

(कुछ आलोचक गुणग्राही होते हैं, कुछ दोषदर्शी होते हैं। कोई-कोई ही गुण-दोष के वर्णन से परे होते हैं।) **—राजशेखर**

आलोचना वृक्ष की शाखा से प्रायः फूल और कीड़े—दोनों को एक साथ ही पृथक कर देती है। **—रिश्टर**

आलोचक मनुष्य की बुराइयों को उसी प्रकार दूर करता है जिस प्रकार ब्रश कपड़ों की गंदगी को। **—फ्रांसिस बेकन**

(1) इधर दो-एक लेखकों की एक और प्रवृत्ति दिखाई पड़ रही है। वे यूरोप के कुछ कला-सम्बन्धी एकदेशीय और अत्युक्त मतों को सामने लाकर हिंदी वालों की आँखों में उसी प्रकार चकाचौंध उत्पन्न करना चाहते हैं जिस प्रकार कुछ लोग वहाँ के फैशन की तड़क-भड़क दिखाकर।···लेखों को यहाँ से वहाँ तक पढ़ जाइए, लेखकों के अपने किसी विचार का कहीं पता न लगेगा।···समालोचना के क्षेत्र में ऐसे विचारशून्य लेखों से कोई विशेष लाभ नहीं। ('गद्य-साहित्य की वर्तमान गति', हि० सा० इ०)

(2) लोग कहते हैं कि समालोचकगण अपनी बातें कहते ही रहते है, पर कवि लोग जैसी मौज होती है, वैसी रचना करते हैं। पर यह बात नहीं है। कवियों पर साहित्य-मीमांसकों का बहुत-कुछ प्रभाव पड़ता है। बहुतेरे कवि-विशेषतः नए उनके आदर्शों के अनुकूल चलने का प्रयत्न करने लगते हैं। (वही)

(3) ठीक-ठिकाने से चलने वाली समीक्षाओं को देख जितना सन्तोष होता है, किसी कवि की समीक्षा के नाम पर उसकी रचना से सर्वथा असंबद्ध चित्रमयी कल्पना और भावुकता की सजावट देख उतनी ही ग्लानि होती है। यह सजावट अंग्रेजी के अथवा बंगला के समीक्षा-क्षेत्र से कुछ विचित्र, कुछ विदग्ध, कुछ अति-रंजित चलते शब्द और वाक्य ला-लाकर खड़ी की जाती है। ('गद्य-साहित्य की वर्तमान गति', हि०सा० इ०)

(4) केवल निर्णयात्मक समालोचना की चाल बहुत कुछ उठ गई है। अपनी भली-बुरी रुचि के अनुसार कवियों की श्रेणी बाँधना, उन्हें नम्बर देना अब एक बेहूदा बात समझी जाती है। (गद्य-साहित्य का प्रसार', हि० सा० इ०)

(5) न रुचि के स्थान पर विद्वत्ता काम कर सकती है और न विद्वत्ता के स्थान पर रुचि। अतः विद्वत्ता से संबंध रखने वाली निर्णयात्मक आलोचना (Judicial criticism) और रुचि से संबंध रखने वाली प्रभावात्मक समीक्षा दोनों आवश्यक हैं। एक पुरुष है, दूसरी स्त्री। एक सक्रिय है, दूसरी निष्क्रिय। —(काव्य में रहस्यवाद)

(6) निर्णयात्मक आलोचना किसी रचना के गुण-दोष निरूपित करके उसका मूल्य निर्धारित करती है। उसमें लेखक या कवि की कहीं प्रशंसा होती है, कहीं निंदा। (गद्य-साहित्य का प्रसार)

(7) प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा कोई ठीक-ठिकाने की वस्तु ही नहीं। न ज्ञान के क्षेत्र में उसका कोई मूल्य है, न भाव के क्षेत्र में। उसे समीक्षा या आलोचना कहना ही व्यर्थ है। ('गद्य-साहित्य की वर्तमान गति', हि० सा० इ०)

(8) प्रभाववादियों की बात लें तो समालोचना कोई व्यवस्थित शास्त्र नहीं रह गया। वह एक कला की कृति से निकली हुई दूसरी कला की कृति, एक काव्य से निकला हुआ दूसरा काव्य, ही हुआ। ('गद्य-साहित्य की वर्तमान गति', हि० सा० इ०)

(9) बाह्य पद्धति के अंतर्गत ही कवि के जीवनक्रम और स्वभाव आदि के अध्ययन द्वारा उसकी अंतर्वृत्तियों का सूक्ष्म अनुसंधान भी है, जिसे 'मनोवैज्ञानिक आलोचना' (Psychological Criticism) कहते हैं। (गद्य-साहित्य का प्रसार', हि० सा०इ०)

(10) व्याख्यात्मक आलोचना किसी ग्रंथ में आई हुई बातों को एक व्यवस्थित रूप में सामने रखकर अनेक प्रकार से स्पष्टीकरण करती है। यह मूल्य निर्धारित करने नहीं जाती। ऐसी आलोचना अपने शुद्ध रूप में काव्य-वस्तु तक ही परिमित रहती है। (वही) —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(1) औरों की कमज़ोरियों की तरफ़ न देखें, औरों की नुक्ताचीनी न करें, अपनी तरफ़ देखें।

(2) दूसरों की ग़लतियों की आलोचनाएँ ज़रूर की जाएँ लेकिन हमें अपनी तरफ़ भी ज़रूर देखना चाहिए। —जवाहरलाल नेहरू

जब कोई मनुष्य दूसरे के दोषों की ओर उँगली उठाता है तो उसकी शेष उँगलियाँ उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं। —विश्वरायली

प्रत्येक व्यक्ति द्वारा की गई निंदा सुन लो किंतु अपना निर्णय सुरक्षित रखो।

—शेक्सपियर

(1) स्वस्थ आलोचना कठिन काम है। अधिकांश आलोचक केवल कसौटी का काम न करके छिद्रान्वेषी बनते देखे जाते हैं और परिणामतः अपने मित्र को भी शत्रु बना लेते हैं जिससे न तो उनका भला होता है और न उसका जिसकी आलोचना वे करते हैं, और साहित्य का भला तो नही ही होता। यों उर्दू का यह शेर भी कम सार्थक नहीं है—हो नही गर शायरी की लायकियत आप में, शायरों और मुंशियों की नुक्ताचीनी कीजिए।

(2) संतुलित आलोचना साहित्य में औषधि के समान है।

—भोलानाथ तिवारी

आवरण

पाँव के तलवे इस ढंग से बने थे कि उसके मुकाबिले ज़मीन पर खड़े-खडे चलने की ऐसी सुन्दर व्यवस्था और कुछ हो ही नही सकती थी। पर जिस दिन से हमने जूते पहनना शुरू कर दिया उसी दिन से तलवों को मिट्टी के संसर्ग से बचा-कर उनकी ज़रूरत को ही हमने मिट्टी में मिला दिया। **—रवीन्द्रनाथ टैगोर**

आवश्यकता

मेरा विश्वास है कि कोई भी आवश्यकता न होना ईश्वरीय है, और जिस मनुष्य की जितनी कम आवश्यकता होती है उतना ही वह ईश्वर के निकट होता है। **—सुकरात**

दौलत अधिक संग्रह मे नही वरन् थोड़ी आवश्यकता होने मे है।

—इपिक्यूरियस

खान से निकले रत्न को भी सोने मे जड़ने की आवश्यकता तो पडती ही है।

—कालिदास

(1) आवश्यकता कोई क़ानून नही जानती।

(2) आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

(3) जो वह खरीदता है जिसे उसको आवश्यकता नही है, उसे प्राय: वह बेचना पड़ता है जिसकी उसे आवश्यकता रहती है। **—अंग्रेजी लोकोक्तियाँ**

आवश्यकता के सामने कानून की परवाह नहीं की जाती।

—एक स्पेनी लोकोक्ति

जाको कछू न चाहिए सोई साहंसाह। **—कबीर**

अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर ।
बिन गरजै बोलै नहीं, गिरवरहूँ को मोर ।। —बृन्द

आवश्यकता उपयोगी कलाओं की जननी है, और विलासिता ललित कलाओं की । —शापेनहॉवर

यह आवश्यकता है, आनन्द नही जो हमें बाध्य करती है । —दांते

आवश्यकता कभी मुनाफ़े का सौदा नहीं करती । —फ्रैंकलिन

आवश्यकता कायर को भी वीर बना देती है । —सेलहास्ट

आवश्यकता तर्क के सम्मुख नही झुकती । —गेरीबाल्डी

आवश्यकता बहुधा प्रतिभा को प्रोत्साहित करती है । —बालजक

आवश्यकता अत्याचारियों का तर्क है, यह पराधीनों का मजहब है ।
—विलियम पिट

आवश्यकता ही संसार के व्यवहारों की दलाल है । —जयशंकर प्रसाद

आवश्यकता के सदृश कोई सद्गुण नही । —शेक्सपियर

जीवन में हमारी प्रमुख आवश्यकता यह है कि कोई हमसे वह कराए जो हम कर सकते हैं । —एमर्सन

आवश्यकता अत्याचारी होती है । —रवीन्द्रनाथ टैगोर

आवश्यकता ईमानदार को धूर्त बना देती है । —डैनियल डीफ़ो

आवागमन

आवागमन संसार का सहज धर्म है, इससे परमात्मा को भी अवकाश नहीं है । —अज्ञात

आकर चार लाख चौरासी ।
जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी ।
फिरत सदा माया कर प्रेरा ।
काल कर्म सुभाव गुन घेरा । —तुलसीदास

जीवन तो मृत्यु और पुनर्जन्म की परम्परा की कहानी है । हमें पुनर्जन्म पाने के लिए पहले मरना होगा । —रोमां रोलां

आशंका

(1) आशंका अनिश्चयात्मक वृत्ति है। ग्लानि की आशंका नही हो सकती, क्योंकि उसका संबंध अपने से कहीं बाहर की बुरी धारणा से तो होता नहीं, अपनी ही बुरी धारणा से होता है जिसमे अनिश्चय का भाव नहीं रह सकता। (चिन्ता०-1)

(2) दुःख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी संभावना मात्र के अनुमान से जो आवेगशून्य भय होता है, उसे आशंका कहते हैं।…दुःखात्मक भावों में आशंका की वही स्थिति समझनी चाहिए जो सुखात्मक भावों में आशा की। (चिन्ता०-1) —**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

जैसी हम आशंका करते हैं, वैसा हो गुजरता है। —**थोरो**

आशा, आशावाद

अस्माके संत्वाशिषः, सत्या नः सत्वाशिष ॥
(हम आशावादी बनें, हमारी आशाएँ सफल हों।)

—**यजुर्वेद**

(1) सुखं निराशः स्वपिति नैराश्यं परम सुखम् (जिसे किसी भी प्रकार की आशा नही है, वही सुख से सोता है। आशा न रखना परम सुख है।) (महाभारत)

(2) संसार में ऐसा कोई नही हुआ है जो आशा का पेट भर सके। मनुष्य की आशा समुद्र के समान है, वह कभी भरती ही नही। (महाभारत)—**वेदव्यास**

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरंगाकुला,
रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्त्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुंगचिन्तातटी,
तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः ॥

(आशा एक नदी है, उसमें इच्छारूपी जल है; तृष्णा उस नदी की तरंगे हैं, आसक्ति उसके मगर हैं, तर्क-वितर्क उसके पक्षी हैं, मोहरूपी भँवरों के कारण वह सुकुमार तथा गहरी है, चिन्ता ही उसके ऊँचे-ऊँचे किनारे हैं, धैर्यरूपी वृक्षों को वह नष्ट करने वाली है, जो शुद्धचित्त योगीश्वर उसके पार चले जाते हैं, वे आनन्द करते हैं।) —**भर्तृहरि**

(1) मानवस्योन्नतिः सर्वा साफल्यं जीवनस्य च।
चीरतार्थ्यं तथा सृष्टेराशावादे प्रतिष्ठितम् ॥

(मनुष्य की सब उन्नति, जीवन की सफलता और सृष्टि की चरितार्थता आशावाद में ही प्रतिष्ठित है।)

(2) आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्य शृंखला ।
यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पंगुवत् ।।

(मनुष्यों की आशा ऐसी आश्चर्ययुक्त जंजीर है जिससे बँधे हुए लोग दौड़ते हैं तथा रहित होने पर पंगु के समान खड़े रहते हैं।)

(3) आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य ।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ।।

(जो लोग आशा के दास हैं उन्हें सब लोगों का दास बनना पडता है और आशा जिनकी दासी है उनके सब लोग दास हो जाते हैं) —अज्ञात

आशया किमिव न क्रियते
(आशा से क्या नहीं किया जाता) —बाणाभट्ट (कादंबरी)

आशा हमसे सदैव कहती रहती है—'बढ़े चलो, बढ़े चलो' और इसी तरह हमें क़ब्र मे ला पटकती है। —मांटेन

अपनी आशाओं की मुर्गियों के पर काट दो, वरना वे तुम्हें अपने पीछे भगा-नचाकर तंग कर डालेंगी। —फ्रैंकलिन

जिसे हमने कुछ भी नही दिया है, उससे हमे भी आशा नही रखनी चाहिए। —हेनरी फ़ील्डिग

(1) प्रयत्नशील मनुष्य के लिए सदा आशा है।

(2) प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में निराश होने की अपेक्षा आशावान होना बेहतर है। —गेटे

(1) मेरी राय मानो, अपनी नाक से आगे न देखा करो। तुम्हे हमेशा मालूम होता रहेगा कि उससे आगे भी कुछ है और वह तुम्हें आशा और आनन्द से मस्त रखेगा।

(2) जिसने कभी आशा नहीं की वह कभी निराश भी नहीं हो सकता। —बर्नार्ड शा

आशा एक सुन्दर फूल है जिसका फल कड़वा होता है। —फ्रांसिस बेकन

(1) आशा और आत्मविश्वास ही वे वस्तुएं हैं जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं और हमारी उत्पादन शक्ति को दुगना-तिगुना बढ़ा देती हैं।

(2) आशावाद प्राणियों के लिए अमृत है। जैसे सूर्य से वनस्पतियों को जीवन प्राप्त होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यों में जीवनशक्ति का संचार होता है। —स्वेट मार्डेन

जहाँ कोई आशा नहीं है, वहाँ कोई प्रयत्न नहीं हो सकता। —जॉनसन

आशा उत्तम जलपान है किन्तु यह रात्रि का निकृष्ट भोजन है। —**बेकन**

आशाओं पर जीने वाला व्यक्ति, भूखो मर जाता है। —**बेंजामिन फ्रेंकलिन**

आशा जीवन का लंगर है, उसका सहारा छोड़ने से आदमी भव-सागर में बह जाता है, लेकिन बिना हाथ-पैर हिलाए केवल आशा करने से भी काम नहीं चल सकता। —**लुकमान**

जे आशा तो आपदा जे संसा तो सोग। —**गोरखनाथ**

माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया सरीर।
आसा तृष्णां नां मुई, यों कहि गया कबीर॥ —**कबीर**

तुलसी अद्भुत देवता आशा देवी नाम।
सेए सोक समर्पई विमुख भए अभिराम॥ —**तुलसी**

जासों ही कछु पाइए कीजै ताकी आस।
रीत सरवर पर गए कैसे बुझै पियास॥ —**रहीम**

जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस।
रीते सरवर पै गये, कैसे बुझत पियास॥ —**वृन्द**

आशा अमर है, उसकी आराधना कभी निष्फल नही होती। —**महात्मा गाँधी**

आशा अन्तिम श्वास तक साथ नही छोड़ती। —**सुदर्शन**

पेट जितना भी भरा रहे,
आशा कभी नहीं भरती। —**निराला**

कहते है जीते है उम्माद पर लोग
हमको जीने की भी उम्मीद नही। —**ग़ालिब**

जिसे कुछ आशा है वह एक तरह से सोचता है और जिसे आशा नहीं है, वह दूसरी तरह से सोचता है। (देवदास) —**शरत्चंद्र**

निरर्थक आशा से बँधा मानव अपना हृदय सुखा डालता है और आशा की कड़ी टूटते ही वह झट से विदा हो जाता है। —**रवीन्द्रनाथ टैगोर**

(1) आशा उत्साह की जननी है, आशा में तेज है, बल है, जीवन है, आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। (सवा सेर गेहूँ)

(2) आशा में ही सुधा का वास है। (गोदान)

(3) युवाकाल की आशा पुआल की आग है जिसके जलने और बुझने में देर नहीं लगती। (सेवासदन)

(4) आशा निर्बलता से उत्पन्न होती है, पर उसके गर्भ से शक्ति का जन्म होता है। (रंगभूमि)

(5) आशा से ज्यादा दीर्घजीवी कोई और वस्तु नहीं होती। (रंगभूमि)

(6) आशा मद है, निराशा मद का उतार।

(7) आशा जड़ की ओर ले जाती है, निराशा चैतन्य की ओर। आशा आँखें बंद कर देती है, निराशा आँखें खोल देती है। आशा सुलानेवाली थपकी है, निराशा जगानेवाला चाबुक। (रंगभूमि)

(8) आशाएं विष की गाँठ हैं। संसार इन्हीं इच्छाओं और आशाओं का दूसरा नाम है। जिसने इन्हें नैराश्यनद में प्रवाहित कर दिया, उसे संसार में समझना भ्रम है।

(9) आशाओं के बाग लगाने में हम कितने कुशल हैं ? यहाँ हम रक्तबीज बोकर सुधा के फल खाते हैं। अग्नि से पौधों को सींचकर शीतल छाँह में बैठते हैं। (माता का हृदय) —प्रेमचंद

जब लग स्वाँसा, तब लग आसा —एक हिन्दी लोकोक्ति

जितनी अधिक आशा, उतनी ही अधिक निराशा होगी।
—एक यूनानी कहावत

आशा की दृष्टि आगे होती है। दुखी भी आगे के संभावित प्रकाश की आशा में अपने दुख को भुला लेता है। आशा जीवन है और जीवन आशा है। किंतु निराधार आशा मूर्खों को ही खुश करती है। —भोलानाथ तिवारी

आश्चर्य

आश्चर्य ही दर्शन का प्रथम कारण है। —अरस्तू

सम्पूर्ण आश्चर्य नवीनता अथवा अज्ञानता का परिणाम होता है। —जानसन

आश्चर्य आराधना का आधार है। —कार्लाइल

आश्चर्य अनैच्छिक प्रशंसा है। —यंग

आश्चर्य अज्ञान का बेटा है। —जान फ्लेरियो

आश्रय

गुरुता लघुता पुरुष की, आश्रय बस ते होय।
करी बूंद में विंध्य सों दर्पण में लघु सोय। —बूंद

विनाश्रयं न शोभन्ते पंडिता वनिता लता:। (आश्रय के बिना पंडित, स्त्री, लता शोभा नहीं देते) —एक संस्कृत लोकोक्ति

आसक्ति

हर कहीं और हर किसी वस्तु में मन को मत लगा बैठिए।

—महावीर (उत्तराध्ययन)

स्त्री पर कौन आसक्त होगा, जो अनुराग करने वालों पर वैराग्य करती है। मैं तो उस मुक्ति को चाहता हूँ जो वैराग्य करने वालों पर अनुराग करती है।

—एक संस्कृत सूक्ति

(1) आसक्ति ही मनुष्य को नीच और दुर्बल बनानेवाली है।

(2) किसी से हम घृणा तभी करते हैं जब किसी अन्य वस्तु पर हमारी आसक्ति होती है।

(3) आसक्ति भय और चिन्ता की जड़ है।

(4) यदि तुमने आसक्ति का राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। **—स्वामी रामतीर्थ**

फूल चुनकर इकट्ठा करने के लिए मत ठहरो। आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ मे फूल निरंतर खिलते रहेंगे। **—रवीन्द्रनाथ टैगोर**

कहते हैं जिसको इश्क, ख़लल है दिमाग का। **—ग़ालिब**

सान्निध्य और संपर्क की प्रबल प्रवृत्ति जगाने वाली दशा, जिसे आसक्ति कहते है, माधुर्य-भावना के संचार से ही प्राप्त होती है। (र० मी०)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

आस्तिक

मैं तुझे ईश्वर को जानने वाला नहीं मानता, क्योंकि तुझसे अनेक हृदयों को दु:ख पहुँचाने वाले काम हुए हैं। (जफ़रनामो) **—गुरु गोविंदसिंह**

विद्वान हो लो लेकिन यदि हृदय मे ईश्वर को स्थान नही दिया तो कुछ नही किया। **—महात्मा गाँधी**

जिससे पाप होते हैं, यदि वह भी अपने को आस्तिक समझता है तो फिर नास्तिक कौन है? **—भोलानाथ तिवारी**

आस्था (दे० 'विश्वास')

आस्था तर्क से परे की चीज़ है। जब चारों ओर अँधेरा दिखाई पड़ता है और मनुष्य की बुद्धि काम करना बंद कर देती है उस समय आस्था की ज्योति प्रखर रूप से चमकती है और हमारी मदद को आती है। —महात्मा गांधी

आह

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों, सार भसम ह्वै जाय॥ —कबीर

निकल मत बाहर दुर्बल आह
लगेगा तुझे हँसी का शीत। —जयशंकर प्रसाद

(1) जहाँ तक हो किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो, ग़रीब की आह से संसार उलट-पलट सकता है।

(2) एक आह संसार को उजाड़ सकती है। —शेख सादी

आह जो दिल से निकाली जायगी।
क्या समझते हो कि ख़ाली जायगी। —अकबर इलाहाबादी

आहार

आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धि। (शुद्ध आहार से आदमी शुद्ध रहता है)
—छांदोग्य उपनिषद

अति आहार इंद्रियबल करै, नासै ग्यान मैथुन चित्त धरै। —गोरखनाथ

(1) आहार शरीर के लिए है, न कि शरीर आहार के लिए।

(2) संसार मे भूख से पीड़ित होकर उतने व्यक्ति नही मरते, जितने अधिक भोजन करने के कुपरिणामों से मरते हैं।

(3) चोरी करना एक बीमारी है और इसका कारण बुरा आहार भी हो सकता है।

(4) पशु-पक्षी न स्वाद के लिए भोजन करते हैं, न इतना खा लेते हैं कि पेट फटने लगे। वे अपने भोजन को पकाते नही—प्रकृति जैसा देती है, वैसा ही कर लेते हैं।

(5) भोजन सात्विक और सादा होना चाहिए। शराब, भाँग, अफ़ीम, तम्बाकू, चाय, कहवा, कोकीन, मसाले और चटनी आदि भोजन की चीज़ें नही हैं, न इन्हें स्वाभाविक पेय की ही संज्ञा दी जा सकती है।

(6) मनुष्य की शारीरिक बनावट देखकर यही प्रतीत होता है कि प्रकृति ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। मनुष्य और फलभक्षी जीवों के शारीरिक अवयवों में बहुत कम अन्तर है।

(7) अधिकांश डाक्टरों का कहना है कि 99 प्रतिशत व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खाते हैं।

(8) हम लोग अधिक भोजन करने के थोड़े-बहुत अपराधी हैं इसलिए धार्मिक दृष्टि से कभी-कभी व्रत रखने के नियम बनाए हैं। सचमुच स्वास्थ्य की दृष्टि से पक्ष में एक दिन व्रत-उपवास करना ज़रूरी है।

(9) आहार मानव-जीवन का रक्षक है, इसलिए उसका निर्णय करते समय विवेक रखने की ज़रूरत है।

(10) आहार मानव-जीवन की दैनिक आवश्यकताओं में से है, पर उसका नियंत्रण अनिवार्य है।

(11) यदि आहार में विवेक नहीं रहा, तो मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या है ?

(12) जब तक आहार में स्वाद की प्रधानता है, तब तक उसमे सात्विकता आ ही नही सकती। —महात्मा गाँधी

आहारे व्यवहारे लज्जा न कारे। (आहार-व्यवहार में लज्जा न करे)

—एक हिंदी लोकोक्ति

इन्द्रियाँ

जिसने इन्द्रियों को अपने वश में किया है, उसे स्त्री तृणतुल्य जान पड़ती है।

—चाणक्य

अविवेकी और चंचल आदमी की इन्द्रियाँ बेखबर सारथी के दुष्ट घोड़ों की तरह बेकाबू हो जाती हैं। —कठोपनिषद्

जैसे कछुआ अपने सब अंगों को समेट लेता है, उसी प्रकार जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों को विषयों में से खींच लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

—महाभारत

(1) वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।

(अपनी इन्द्रियाँ जिसके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है। वही विद्वान् और पण्डित है।)

(2) यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

(कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे ही जब पुरुष इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है।)

—गीता

कुरंगमातंगपतंगभृंगमीना हताः पंचभिरेव पंच।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यस्सेवते पंचभिरेव पंच॥

(हरिण गाने से, हाथी हस्तिनी से, पतंग दीपक से, भ्रमर गंध से, और मछलियाँ जीभ के स्वाद से मोहित होकर अपने प्राण खो देती हैं। फिर जिन्हें पाँच इन्द्रियाँ हैं और जो सभी विषयों की आसक्ति में फँसते हैं तो उनको मृत्यु भला क्यों छोड़ेगी ?) —**अज्ञात**

इन्द्रिय-संयम और मनःशुद्धि ऐसी दवा है कि इनसे शारीरिक स्वास्थ्य तो मिलता ही है, पारमार्थिक स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती है। —**एक संस्कृत सूक्ति**

इंद्रियो को वश में करना बुद्धिमानों का काम है, और उनके वश में हो जाना मूर्खों का। —**इपिक्टेट्स**

इन्द्रियो की गुलामी पराधीनता से भी कही दुःखदायिनी होती है। (सेवा०) —**प्रेमचन्द**

इच्छा

पुलुकामो हि मर्त्यः
(मानव विभिन्न कामनाओं मे घिरा रहता है) —**ऋग्वेद**

यद् यत् त्यजति कामानां तत् सुखस्याभिपूर्यते
कामस्य वशगो नित्यं दुःखमेव प्रपद्यते

(मनुष्य जिस-जिस कामना को छोड देता है उस-उस ओर से सुखी हो जाता है। कामना के वशीभूत होकर तो वह सदा दुख ही पाता है।) —**महाभारत**

यद्यद्धि कुरुते किंचित् तत्तत् कामस्य चेष्टितम्।
(मनुष्य जो कुछ भी करता है वह सब इच्छा के कारण ही) —**मनुस्मृति**

इच्छाएँ आकाश की तरह अनंत हैं। (उत्तराध्ययन) —**भगवान महावीर**

इच्छा से दुख आता है। —**भगवान् बुद्ध**

(1) चाह गई चिंता मिटी मनुवाँ बेपरवाह।
जाको कछू न चाहिए सोई साहंसाह।
(2) मनह मनोरथ छोड़ दे तेरा किया न होय। —**कबीर**

विजयों की सीमा है किंतु अभिलाषाओं की नहीं। (चंद्रगुप्त) —**जयशंकर प्रसाद**

दमे-मर्ग तक रहेंगी ख़्वाहिशें यह नीयत कोई आज भर जाएगी।
(दमे-मर्ग = मरने का समय) —**दाग़**

जब तक इच्छा का लवलेश भी विद्यमान है, ईश्वर का दर्शन नहीं हो सकता, इसलिए अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं और सम्यक् विचार एवं विवेक द्वारा बड़ी-बड़ी इच्छाओं का त्याग कर दो। —**स्वामी रामकृष्ण**

(1) जीने की इच्छा ही सब दुःखों की जननी है, मरने की तैयारी ही सब सुखों की जननी है।

(2) समस्त भय और चिंता इच्छाओं का परिणाम है।

(3) इच्छा एक रोग है। **—स्वामी रामतीर्थ**

इच्छाओं को त्यागने वाले यतियों का गुणगाना उतना ही असंभव है, जितना कि संसार में अब तक मरे हुओं की गिनती करना। **—सन्त तिरुवल्लुवर**

हमारी इच्छा, जीवन-रूपी भाप को, इंद्रधनुष का रंग दे देती है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

इन्द्रिय-विषयों का त्याग बिना इच्छा के त्याग के क्षणिक होता है, चाहे हम कैसा ही प्रयास क्यों न करें। **—महात्मा गांधी**

यह चाहता हूँ कि कुछ न चाहूँ। **—शेख सादी**

इच्छाओं को शांत करने से नहीं, अपितु उन्हें परिमित करने से शांति प्राप्त होती है। **—हेबर**

पतिंगे की नक्षत्र के लिए इच्छा, रात्रि की दिवस की चाह और अपने दुःख से एक अज्ञात सुख की कामना—यही तो जीवन की चिर-अतृप्त इच्छाएँ है।

—शेली

इच्छा ही घोड़ा बन सकती तो प्रत्येक मनुष्य घुड़सवार हो जाता।

—शेक्सपियर

इच्छा की प्यास कभी नही बुझती, न पूर्ण रूप से सन्तुष्ट ही होती है।

—सिसरो

(1) जैसी हमारी इच्छाएँ होती हैं, जैसे हमारे हार्दिक भाव होते हैं, ठीक उन्हीं की झलक हमारे मुखमंडल पर दिखाई देने लगती है।

(2) किसी काम को करने के पहले आप उस काम को करने की दृढ़ इच्छा मन में कर लें और सारी मानसिक शक्तियों को उस ओर झुका दे ताकि आपको बहुत अधिक सफलता प्राप्त हो।

(3) इच्छा तभी फलोत्पादक होती है जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है। **—स्वेट मार्डेन**

जिय चाहै सोई मिलै, जियत भलो प्रिय लागि।
प्यासो चाहत नीर को, कहा करै लै आगि॥ **—वृन्द**

इच्छा भी एक प्रकार का मनोवेग ही है, पर 'भाव' तक पहुँचता हुआ स्वतंत्र विधान नही। (र० मी०) **—आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

इच्छाओं के सामने आते ही सभी प्रतिज्ञाएँ ताक पर धरी रह जाती हैं।

—एक यूनानी लोकोक्ति

जिस इच्छा में शक्ति नहीं उसकी पूर्ति असंभव है। —एक लैटिन लोकोक्ति

इज़्ज़त

विश्व में इज़्ज़त के साथ रहने का सबसे सरल और शर्तिया इलाज यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखाना चाहते हैं, वास्तव में वैसा होने का यत्न करें।

—सुकरात

(1) प्रत्येक मनुष्य को अपना जीवन प्रिय होता है, परन्तु महान् पुरुष को अपनी इज़्ज़त जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान् और प्रिय होती है।

(2) मेरा सम्मान ही मेरा जीवन है। दोनों साथ-साथ बढ़ते हैं। मेरा सम्मान ले लो तो मेरे जीवन का अंत हो जाए। —शेक्सपियर

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून। —रहीम

अपनी इज़्ज़त को चोट पहुँचाने की अपेक्षा दस हज़ार बार मृत्यु अच्छी है।

— एडिसन

जो अपनी इज़्ज़त करते हैं, उनकी सब इज़्ज़त करेंगे ही। —बेकन्स फ़ील्ड

जो अपने को तुच्छ समझता है वह अपना ही मूल्य नहीं घटाता, अपितु समस्त मानव जाति को बेइज़्ज़त करता है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

इतिहास

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः॥

(इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं होता, किंतु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है।) —वेदव्यास

इतिहास स्वदेशाभिमान सिखाने का साधन है। —महात्मा गाँधी

इतिहास में सब कुछ यथार्थ होते हुए भी वह असत्य है, और कथा-साहित्य में सब कुछ काल्पनिक होते हुए भी वह सत्य है। —प्रेमचंद

अतीत के जिस अंश तक प्रमाण की किरणें पहुंच सकती हैं, उसे हम इतिहास की संज्ञा देते हैं। यह जीवन के स्पंदन से रहित इतिवृत्त मात्र होता है।

—महादेवी वर्मा

दुनिया को इंकलाब[1] की याद आ रही है आज।
तारीख़[2] अपने आपको दुहरा रही है आज। —फ़िराक़ गोरखपुरी

इतिहास के तजुर्बों से हम सबक नहीं लेते, इसीलिए इतिहास अपने को दुहराता है। —विनोबा

इतिहास मानव के अपराधों, मूर्खताओं और दुर्भाग्यों के रजिस्टर के सिवाय और कुछ नहीं है। —गिबन

इतिहास अंततः सच्चा काव्य है। —बासवेल

(1) जीवनियाँ ही केवल सच्चा इतिहास है।
(2) इतिहास अर्थात् अफवाह का आसव। —कार्लाइल

इतिहास बीती हुई राजनीति है और राजनीति वर्तमान इतिहास। —जॉन सीले

इतिहास पढ़ने से मनुष्य बुद्धिमान् बनता है। —बेकन

वास्तव में इतिहास कुछ नहीं, केवल जीवनचरित्र है। —एमर्सन

मानव-इतिहास वस्तुतः विचारों का इतिहास है। —एच० जी० वेल्स

इतिहास राजनीति की पाठशाला है। —शेली

इतिहास बतलाता है कि कुछेक व्यक्तियों ने लोगों पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए। —लिगार्ड

विश्व का इतिहास विश्व का न्यायालय है। —शेलिंग

इतिहास अपने को दुहराता है। —एक अँग्रेजी लोकोक्ति

इरादा

हम अपने अच्छे-से-अच्छे कार्यों के पीछे के वास्तविक इरादों को देखें तो हमें शर्म आएगी। —रोचो. फ़्रांकोइस

(1) केवल इरादे से कुछ नहीं होता जब तक व्यक्ति में कर्मठता और लगन न हो।

(2) कोई काम अच्छा है या बुरा, इसे उस काम या उसके परिणाम से अधिक उसके करने के पीछे करने वाले का जो इरादा हो उससे तौलना चाहिए। —भोलानाथ तिवारी

1. क्रांति, 2. इतिहास

ईमान, ईमानदार, ईमानदारी (दे० धर्म भी)

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। (Honesty is the best policy)—
—एक अँग्रेज़ी लोकोक्ति

(1) कोई संपत्ति, ईमानदारी के सदृश बहुमूल्य नहीं।
(2) ईमानदार होना दस हज़ार में एक होना है। —शेक्सपियर

प्रसिद्ध होने की तुलना में ईमानदार होना कहीं अच्छा है। —रूज़वेल्ट

मनुष्य की कसौटी मुसीबत ही है। इसके बिना उसे पता नहीं चल पाता कि वह कितना ईमानदार है। —एमर्सन

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है। —पोप, फ़्रीथिंकर

ईमानदार व्यक्ति को व्यर्थ की प्रशंसा से दुःख होता है। —ब्वॉयलो

कोई व्यक्ति सचाई, ईमानदारी तथा लोकहितकारिता के राजपथ पर दृढ़तापूर्वक चलता रहे तो उसे कोई भी बुराई क्षति नहीं पहुँचा सकती।
—हरिभाऊ उपाध्याय

बिगड़ी हुई आँखों के सदृश बिगड़े हुए ईमान में प्रकाश-ज्योति प्रवेश नहीं करती। —प्रेमचंद

ईर्ष्या

ईर्ष्यालु को मृत्यु-तुल्य दुःख भोगना पड़ता है। —वेदव्यास

प्राय: समानविद्या: परस्परयश: पुरोभागा:। (प्राय: एक विषय के लोग एक-दूसरे के यश से ईर्ष्या करते है) (मालविका०) —कालिदास

ईर्ष्या विवेक की विरोधी है। —कथासरित्सागर

ईर्ष्या करने वाले का सबसे बड़ा शत्रु स्वयं उसकी ईर्ष्या ही है। दूसरे शत्रु उसका अहित करने से बाज भी आएँ, परन्तु ईर्ष्या उसे हानि पहुँचाकर ही रहती है। —तिरुवल्लुवर

सिर्फ गूंगे ही बातूनों से ईर्ष्या करते हैं। —ख़लील जिब्रान

आम की प्रशंसा सुनकर नारियल भीतर से जलकर काला हो गया, कटहल के काँटे हो गए, फूट दो भागों में फट गया, केले का मुँह झुक गया, अंगूर छोटा

रह गया और जामुन जल-भुनकर काली हो गई। यह सब ईर्ष्या का ही दुष्परिणाम है। —**एक अज्ञातनाम संस्कृत कवि के एक श्लोक का अर्थ**

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वयं ही ईर्ष्याग्नि से जला करता है। उसे और जलाना व्यर्थ है। —**सादी**

ईर्ष्यालु कभी भी प्रसन्न नहीं रहता। —**फ़्रांसिस बेकन**

खिलाड़ी को केवल खिलाड़ी से और कवि को केवल कवि से ईर्ष्या होती है। —**हैज़लिट**

(1) राग रोष इरिषा मद मोह।
जनि सपनेहुँ इनके बस होहू॥
(2) ममता दादु कंडु इरषाई।
हरष विषाद गरह बहुताई॥
(3) सोई ज्ञानी सोइ गुनी, जग सोई दाता ध्यानि।
तुलसी जाके चित्त भई, राग द्वेष की हानि॥
(4) पर सुख-संपति देखि सुनि, जरहिं जे जड़ बिनु आगि।
तुलसी तिन के भाग ते, चलै भलाई भागि॥ —**तुलसीदास**

कह गिरिधर कविराय सुखी सो कैसे होवै।
तृष्णा रागरुद्वेष ईरषा मत्सर बोवै॥ —**गिरिधर कविराय**

इरषा के बस होहु ना जो चाहहु सुख सांति। —**एक कवि**

वह ईर्ष्या ही क्या जिसमें डंक न हो, विष न हो। —**प्रेमचंद**

(1) अभिमान हर घड़ी बड़ाई की भावना भोगने का दुर्व्यसन है और ईर्ष्या उसकी सहगामिनी है।···ईर्ष्या दूसरे की असम्पन्नता की इच्छा की अपूर्ति से उत्पन्न होती है। (चिन्ता० 1)

(2) ईर्ष्या अत्यन्त लज्जावती वृत्ति है। वह अपने धारणकर्त्ता स्वामी के सामने भी मुँह खोलकर नहीं आती।···वह कभी प्रत्यक्ष में समाज के सामने नहीं आती। उसका कोई प्रभाव बाहरी तौर पर धारणकर्ता पर नहीं दिखाई देता। (चिन्ता० 1)

(3) ईर्ष्या इतनी कुत्सित वृत्ति है कि सभा-समाज में, मित्रमंडली में, परिवार में, एकान्त कोठरी में, कहीं भी स्वीकार नहीं की जाती। (चिन्ता० 1)

(4) ईर्ष्या का दुःख प्रायः निष्फल हो जाता है। अधिकतर तो जिस बात की ईर्ष्या होती है वह ऐसी बात होती है जिस पर हमारा वश नहीं होता। (चिन्ता० 1)

(5) ईर्ष्या की सबसे अच्छी दवा है उद्योग और आशा। जिस वस्तु के लिए उद्योग और आशा निष्फल हो उस पर से अपना ध्यान हटाकर सृष्टि की अनन्तता से लाभ उठाना चाहिए। (चिन्ता० 1)

(6) ईर्ष्या धारण करनेवालों की दो दशाएँ होती हैं—असम्पन्न और सम्पन्न।...असम्पन्न दशा में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि हम दूसरे से घटकर न रहें, बराबर रहें, और सम्पन्न दिशा में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि हम दूसरे से बढ़कर रहें, उसके बराबर न रहें। (चिन्ता० 1)

(7) ईर्ष्या में प्रयत्नोत्पादिनी शक्ति बहुत कम होती है। उसमे वह वेग नहीं होता जो क्रोध आदि में होता है क्योंकि आलस्य और नैराश्य के आश्रय से तो उसकी उत्पत्ति ही होती है। (चिन्ता० 1)

(8) ईर्ष्या व्यक्तिगत होती है और स्पर्द्धा वस्तुगत। (चिन्ता ० 1)

(9) ईर्ष्या सामाजिक जीवन की कृत्रिमता से उत्पन्न एक विष है। इसके प्रभाव में हम दूसरे की बढ़ती से अपनी कोई वास्तविक हानि न देखकर भी व्यर्थ दुःखी होते हैं। (चिन्ता० 1)

(10) स्पर्द्धा संसार में गुणी, प्रतिष्ठित और सुखी लोगों की संख्या में कुछ बढ़ती करना चाहती है और ईर्ष्या कमी। (चिन्ता ० 1)—**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

ईर्ष्या हीन भावना की बेटी तथा दुख की जननी है। —**भोलानाथ तिवारी**

ईश्वर

रूपं-रूपं प्रतिरूपो बभूवात्। (ईश्वर ने प्रत्येक रूप के अनुरूप अपना रूप बना लिया।) —**ऋग्वेद**

न तस्य प्रतिमाऽस्ति। (उस ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं) —**यजुर्वेद**

इंद्रियेभ्यो मनः पूर्व बुद्धिः परतरा ततः
बुद्धे परतरं ज्ञान ज्ञानात् परतरं महन्

(इंद्रियों से मन श्रेष्ठ है, मन से बुद्धि श्रेष्ठ है, बुद्धि से ज्ञान श्रेष्ठ है और ज्ञान से परात्पर ब्रह्म श्रेष्ठ है।) —**महाभारत**

सब इन्द्रियों को वश मे रखकर, सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़, अचल और अचिंत्य, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए मुझे ही पाते हैं। —**गीता (महाभारत)**

ईशस्य हि वशे लोको योषा दारुमयी यथा। (ईश्वर के वश में सभी लोग कठपुतली-जैसे हैं।) —**भागवत**

ईश्वर एक है और वह एकता को पसन्द करता है। —हज़रत मुहम्मद

यदि ईश्वर नहीं है तो उसका आविष्कार कर लेना जरूरी है। —वाल्टेयर

आखिर ईश्वर है क्या ? एक शाश्वत बालक, जो एक शाश्वत बाग में शाश्वत खेल खेल रहा है। —अरविन्द

ईश्वर बड़े-बड़े साम्राज्यों से विमुख हो सकता है, लेकिन छोटे-छोटे फूलों से कभी खिन्न नहीं होता। —टैगोर

मैं ईश्वर से डरता हूँ, ईश्वर के बाद मुख्यतः उससे डरता हूँ जो ईश्वर से नहीं डरता। —शेख़ सादी

मैं और मेरा पिता एक है। —ईसा मसीह

अच्छाई और बुराई दोनों उसी अल्लाह ताला से आई हैं।

—क़ुरान शरीफ़

तुम ईश्वर और दुनिया की दौलत, दोनों को एक साथ पाने की आशा नहीं रख सकते। —इंजील

ईश्वर कहता है, जो मेरा जितना बनेगा मैं भी उसका उतना ही बनूँगा।

—वायजिद बस्तामी

अरे मनुष्यो, तुम जो हज को जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा प्रियतम तो यहीं है, वापस आओ।···(उसे) खोजने की आवश्यकता नहीं।

—शम्स तबरेज़ी

सभी वस्तुएँ खोजने से मिलती हैं, किन्तु ईश्वर के बारे में अजीब है कि जब तक तू उसे पा नहीं लेगा उसे खोजेगा भी नहीं। —सनाई

ईश्वर एक है और वह एकता को पसन्द करता है। —हजरत मुहम्मद

(1) भारी कहौं त बहु डरौं हलका कहूँ त झूठ।
मैं का जानौ राम कूँ नैनूँ कबहु न दीठ।

(2) कस्तूरी कुडलि बसै मृग ढूँढ़ै बन माँहि।
ऐसे घटि-घटि राम है दुनिया देखै नाँहि।

(3) दीठा है तो कस कहूँ कह्या न को पतियाइ
हरि जैसा है तैसा रहै तू हरषि हरषि गुन गाइ।

(4) कबीर हरि की भगति बिन ध्रिग जीमण संसार।
धूवाँ केरा धौलहर जात न लागै बार।

(5) जाको जेता निरमया ताकौं तेता होइ।
रत्ती घटै न तिल बढ़ै जो सिर कूटै कोइ।
(6) सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुण लिखा न जाइ। —कबीर

परगट गुपुत सकल महि-मंडल पूरि रहा सब ठाउँ।
जहाँ देखौं ओहि देखौं दोसर नहिं कहँ जाउँ। —जायसी

(1) बारि मथे घृत होइ बरु, सिकता तें बरु तेल।
बिनु हरि-भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल।
(2) बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु करम करइ विधि नाना।
आनन रहित सकल रसभोगी।
बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी॥
(3) परबस जीव स्वबस भगवंता। —तुलसीदास

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए सबको दाता राम। —मलूकदास

जाके एको एकहू जग व्यवसाय न कोय।
सो निदाघ फूलै-फलै आक डहडहो होय। —बिहारी

(1) प्रभु कौ चिन्ता सबन की, आपु न करिये ताहि।
जनम अगाऊ भरत हैं, दूध मातु-थन माँहि॥
(2) देत न प्रभु कछु बिन दिए, दिए देत यह बात।
लै तन्दुल धन दुर्जहि मुनि तृपत्त कियो भखि पात। —वृन्द

माया मोह मद राग पुन ममता दंभरु काम।
यह जामें नहिं पाइये सो परमेश्वर राम।
सो परमेश्वर राम सर्व का जाननहारा॥ —गिरिधर कविराय

ईश्वर की कोई बौद्धिक परिभाषा नहीं दी जा सकती। हाँ, उसका अनुभव आत्मा के सहारे किया जा सकता है। —राधाकृष्णन

ईश्वर सबमें है किन्तु सभी ईश्वर में नहीं हैं। इसीलिए वे दुखी हैं।
—रामकृष्ण परमहंस

(1) यदि तुम ईश्वर को देखना चाहते हो तो तुम्हें ईश्वर बन जाना पड़ेगा।

(2) ईश्वर चरम जीवन-शक्ति का नाम है। यह शक्ति समय के साथ बदलती रहती है। उस ईश्वर में विश्वास मत रखो जो समयानुसार ढाला न जा सके।

—बर्नर्ड शा

परमेश्वर ही परमेश्वर को समझ सकता है।

—यंग

मंदिर अथवा गिर्जाघर के जो जितना ही समीप रहता है, ईश्वर के प्रति उसकी उतनी ही कम श्रद्धा रहती है।

—बो० एल० एन्ड्रयूज़

हम ज्यों-ज्यों व्यष्टि को समझते जाते हैं, त्यों-त्यों समष्टि को समझते जाते हैं।

—स्पिनोज़ा

ईश्वर के दो स्थान है। एक वैकुंठ में और दूसरा नम्र और कृतज्ञ क़दमों में।

—वाट्सन

ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नही हिल सकता।

—एक हिंदी लोकोक्ति

(1) मेरे प्रभु के मेरे पास सहस्रों रूप है। कभी मैं उसका दर्शन चरखे में करता हूँ, कभी हिन्दू-मुस्लिम एकता में और कभी अस्पृश्यता निवारण में। मुझे जब मेरी भावना जिस रूप की ओर खीच ले जाती है तब उस रूप की ओर चला जाता हूँ और वही अपने प्रभु के साथ सान्निध्य कर लेता हूँ।

(2) जहाँ प्रेम है, वही ईश्वर है।

(3) मेरी खोज ने सिद्ध किया है कि 'ईश्वर सत्य है' के प्रचलित मंत्र के बजाय 'सत्य ही ईश्वर है' गहरा मंत्र है।

(4) ईश्वर के अस्तित्व के लिए बुद्धि से प्रमाण नही मिल सकता, क्योंकि ईश्वर बुद्धि से परे है।

(5) ईश्वर सभी अच्छी-बुरी बातों का हिसाब रखता है। दुनिया में इससे बड़ा हिसाबी दूसरा कोई नही है।

(6) हम ईश्वर से डरेंगे तो मनुष्य का भय नही रह जाएगा।

(7) पैसे में परमेश्वर को देखना परमेश्वर को भूलने जैसा है।

(8) जबान से ईश्वर, खुदा, सत्श्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह झूठा है अगर दिल में वह नाम नही है।

(9) मैं उस परमात्मा के अलावा और किसी ईश्वर को नहीं जानता, जो लाखों मूक प्राणियों के हृदय से निकलता है।

(10) हमारी गाड़ी चलाने वाला ईश्वर है। उसमें बैठे हम लोग जब तक श्रद्धा रखेंगे, वह जरूर चलती रहेगी।

(11) अगर यह विचार मान लिया जाए कि ईश्वर हमारी कल्पना की उपज है, तब तो कुछ भी सत्य नहीं है, सब कुछ हमारी कल्पना की उपज है। मेरे लिए तो मैंने जो आवाज़ सुनी वह मेरी हस्ती से भी ज़्यादा वास्तविक है।

(12) मानवता की सेवा द्वारा ही ईश्वर के साक्षात्कार का प्रयत्न मैं कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो स्वर्ग में है और न पाताल में, वह तो हर हृदय में है।

(13) ईश्वर न काबा में है, न काशी में। वह तो घर-घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है।

(14) ईश्वरीय नियमों का पालन ही उसका जप है।

(15) ईश्वर मनुष्य की कमजोरी दूर करता है, शैतान बढ़ा देता है।

(16) मेरी राय में राम, रहमान, अहुरमज़्द, गॉड या कृष्ण, ये सब उस अदृश्य शक्ति को, जो सब शक्तियों में बड़ी है, कोई नाम देने के मानव-प्रयत्न हैं।

(17) भगवान ने इंसान को अपनी ही तरह बनाया है, पर दुर्भाग्य से इंसान ने भगवान को अपने जैसा बना डाला।

(18) जब तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है, मारने वाला कितना भी बलवान हो, मार नहीं सकता। —**महात्मा गाँधी**

हम एक प्राणधारी ईश्वर चाहते हैं। ऐसे ईश्वर से क्या लाभ जो सुनता है किंतु उत्तर नहीं देता। —**मा० स० गोलवलकर**

ईश्वर हमारे ज्ञान में सबसे झूठा छलिया और मक्कार है। (शेखर)

—**अज्ञेय**

(1) लोग कहते हैं ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है। मेरे विचार में मनुष्य ने ही ईश्वर को बनाया है।

(2) ईश्वर मनुष्य की सर्वोत्तम कल्पना है। —**भोलानाथ तिवारी**

उक्ति

(1) किसी उक्ति की तह में, उसके प्रवर्तक के रूप में यदि कोई भाव या मार्मिक अन्तर्वृत्ति छिपी है, तो चाहे वैचित्र्य हो या नहीं, काव्य की सरसता बराबर पाई जाएगी। (चिन्ता०)

(2) अनूठी से अनूठी उक्ति काव्य तभी हो सकती है जबकि उसका सम्बन्ध कुछ दूर का सही—हृदय के किसी भाव या वृत्ति से होगा। (वही)

—**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

उग्रता

जहाँ नम्रता से काम निकल आये वहाँ उग्रता नहीं दिखानी चाहिए।

—**प्रेमचन्द**

उग्रता क्रोध का ही एक अवयव है, पर कभी-कभी सर्वांगपूर्ण क्रोध के न प्रकट होने पर भी उसका आविर्भाव होता है। (र० मी०)

—**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

उच्च

नर की औ नल नीर की गति एकै है सोय।
जेतो नीचो ह्वै चले तेतो ऊँचो होय। —**वृंद**

दया धर्म हिरदै बसै, बोले अमृत बैन।
तेई ऊचे जानिए जिनके ऊँचे नैन। —**मलूकदास**

(1) उच्च पदस्थ व्यक्ति तिगुने सेवक होते हैं—राजा के सेवक, यश के सेवक, शान्ति के सेवक।

(2) टेढ़ी-मेढ़ी सीढी के बिना ऊँचे पद तक नही पहुँचा जा सकता। —**बेकन**

उच्च व्यक्ति अपनी आत्मा से प्रेम करता है किन्तु नीच व्यक्ति अपने शरीर से। —**कन्फ्यूशियस**

उचित

परिस्थिति के अनुसार जीवन की पूर्णता के लिए जो अनुकूल है, वही उचित है। औचित्य की कोई धारणा शाश्वत नही। (झूठा सच) —**यशपाल**

न्यायसेवी व्यक्ति को चाहिए कि उचित कारण होने पर मानवकृत शास्त्र को भी ग्रहण कर ले और ऐसा न होने पर ऋषिकृत बातें भी छोड़ दे।

—**योगवासिष्ठ**

अनुचित उचित बिचारि कर जो नर कर निज काज।
सोई चतुर सुजान है कबहुँ न होइ अकाज। —**स्फुट**

उच्छृंखल

कोई भी हो और कही भी हो, वह ग़लती पर है, यदि उछंृखलता से पेश आता है —**मॉरिस**

गुरुजनों के नियंत्रण के अभाव में बालक उच्छंृखल हो जाता है।

—**कथासरित साग़र**

नदी और मनुष्य को अपनी सीमा का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। ऐसा न करने पर दोनों ही के पानी की हानि होती है। —**भोलानाथ तिवारी**

उतावला

(1) धीरा काम इंसान का, जल्दी काम शैतान का।
(2) उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा —**हिन्दी लोकोक्तियाँ**

(1) हड़बड़ी और जल्दबाजी में काम बिगड़ जाता है।
(2) जल्दी-जल्दी चलने वाला आदमी जल्द थक जाता है। —**सुलेमान**

उत्तर

एक चतुर भेड़िया एक भोली भेड़ से बोला—"क्या आप अपने आगमन से मेरा घर सम्मानित न करेंगी?"

भेड़ ने उत्तर दिया—"आपके घर जाकर मैं अवश्य सम्मानित होती, यदि वह घर आपके उदर में न होता।" —**खलील जिब्रान**

बारह ज्ञानी एक घंटे में जितने प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट में पूछ सकता है। —**लेनिन**

उत्तर देने से बात बढ़ जाने का भय है। कोई वाद जब विवाद का रूप धारण कर लेता है तो वह अपने लक्ष्य से दूर हो जाता है। वाद में नम्रता और विनय प्रबल युक्तियों से भी अधिक प्रभाव डालते हैं। (सेवासदन) —**प्रेमचंद**

उत्तरदायित्व

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है। —**प्रेमचन्द**

उत्तरदायित्व से शिक्षा मिलती है। (Responsibility educates)
—**वेन्डेल फ़िलिप**

उत्तरदायित्व, योग्यता और शक्ति के साथ-साथ चलता है।
—**जे० जी० हालैंड**

उत्तरदायित्व से बहुत बल प्राप्त होता है। जहाँ कहीं उत्तरदायित्व होता है, वहीं विकास भी होता है। —**मैकाले**

चुनाव के बाद जब तुम्हारा (नेहरू का) भव्य अभिनन्दन किया जा रहा था

तो तुम्हारे चेहरे को देखते-देखते मुझे लग रहा था कि मानो मैं एक साथ ही राजतिलक और सूली का दृश्य देख रही हूँ। वास्तव में कुछ परिस्थितियों और अवस्थाओं में ये दोनो एक-दूसरे से अभिन्न और लगभग पर्याय होते हैं। (नेहरू को लिखे गए एक पत्र में) **सरोजनी नायडू**

जो कार्य सबका होता है वह किसी का नहीं होता। **—मैकाले**

उत्थान-पतन

जो विधि वश था बना भूप से रंक भिखारी।
और नही था मित्र साथ बस थी लाचारी।
राजभवन क्या नही कही पर रही कुटी थी।
प्रबल शत्रु के हाथ सकल सपत्ति लुटी थी।
वही [illegible] फिर देखिए बना नृपति सिरमौर है।
दुनिया का है तौर ही आज और कल और है। **—स्नेही**

बसि ऊँचे कुल यों गुमन मन इतरैए नाहि।
यह विकास दिन द्वैक को मिलिहै माटी माँहि॥ **—दुलारे लाल भार्गव**

दर्प.कस्य न पाताय नोन्नत्यै कस्य नमता।
(अभिमान से किसका पतन नहीं होता और नम्रता से किसकी उन्नति नही होती ?) **—क्षेमेन्द्र**

मानव-जीवन मे भी सूर्योदय और सूर्यास्त होता है। **—क० म० मुंशी**

उठते-गिरते ही रहते है राजा हों या रंक।
अमिट है ये विधना के अंक। **—अमृतलाल नागर**

देवत्व कठिन दनुजत्व सुलभ है नर को।
नीचे से उठना सहज कहाँ ऊपर को। **—मैथिलीशरण गुप्त**

उत्साह

(1) उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्॥ (उत्साह ही बलवान होना है, उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नही है। उत्साही पुरुष के लिए संसार मे कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं।)

(2) उत्साहवन्त: पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु। (उत्साही मनुष्य कठिन से कठिन काम आ पड़ने पर भी हिम्मत नहीं हारते।)

(3) हताश न होना ही सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह

ही मनुष्य को सदा सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करने वाला है और जीव जो कुछ कर्म करता है, उसे उत्साह ही सफल बनाता है। —**वाल्मीकि**

बिना उत्साह विवेक की गति मन्द हो जाती है, किंतु बिना विवेक उत्साह उच्छृंखल हो जाता है। —**बर्नार्ड शा**

(1) अंधे उत्साह से क्षति ही क्षति होती है।

(2) हमारे माथे पर यदि झुर्रियाँ पड़नी ही है तो भी उन्हें दिल पर मत पड़ने दो। उत्साह को कभी भी बूढ़ा नही होना चाहिए। —**गार्फ़ील्ड**

मैं बुद्धिमत्ता की उदासीनता की अपेक्षा उत्साह की गलतियों को बेहतर मानता हूँ। —**अनातोले फ्रांस**

प्रतिभावान् की प्रत्येक कृति उत्साह की कृति होनी चाहिए। —**डिज़रायली**

उत्साह मनुष्य से कितनी शपथें कराता है। यह वह आग है जिसमें चमक बहुत है, गरमी कम है और जो बहुत जल्दी बुझ जाती है। —**शेक्सपियर**

(1) बिना उत्साह के कभी भी किसी महान् ध्येय की प्राप्ति नही हुई।

(2) विश्व के इतिहास में प्रत्येक महान् और महत्त्वपूर्ण आंदोलन उत्साह की सफलता है। —**एमर्सन**

उत्साह मनुष्य की भाग्यशीलता का पैमाना है। —**तिरुवल्लुवर**

(1) कर्म-भावना-प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ का ही एक प्रच्छन्न रूप है। (चिन्ता०)

(2) कर्म मात्र के संपादन में जो तत्परतापूर्ण आनंद देखा जाता है, वह भी उत्साह ही कहा जाना है। (चिन्ता०)

(3) जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनंद उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। (चिन्ता०)

(4) जिस आनंद से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनंद कर्म करते समय तक बराबर चला चलता है उसी का नाम उत्साह है। (चिन्ता०)

(5) दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द-वर्ग में उत्साह का है। (चिन्ता०)

(6) आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा में ही उत्साह का दर्शन होता है; केवल कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में नहीं। (चिन्ता०)

(7) साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं। (चिन्ता०) —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

उत्सुकता

उत्सुकता अंधी होती है। —एक यूनानी लोकोक्ति

उत्सुक व्यक्ति प्रतीक्षा नहीं कर पाता। —कर्णपूर

बच्चों की उत्सुकता ज्ञान की भूख मात्र होती है। जॉन लॉक

उदारता

'यह मेरा है, यह दूसरे का' ऐसा संकीर्ण हृदयवाले मानते हैं। उदार चित्त वाले तो सारे संसार को एक कुटुम्ब समझते हैं। —हितोपदेश

अगर किसी फ़कीर के पास एक रोटी होती है तो वह आधी रोटी खुद खाता है, आधी किसी गरीब को दे देता है; लेकिन अगर किसी बादशाह के पास एक मुल्क होना है तो वह एक मुल्क और चाहता है। —शेख़ सादी

चार तरह के लोग होते है—(1) मक्खीचूस, जो न आप खाएँ न दूसरों को दें, (2) कंजूस जो आप तो खाएँ पर दूसरों को न दें; (3) उदार, जो आप भी खाएँ दूसरों को भी दे; (4) दाता, जो आप न खाएँ और मात्र दूसरों को दें। सब लोग अगर दाता नहीं बन सकते तो उदार तो बन ही सकते हैं। —प्लेटो

सर्वत्र दाक्षिण्यं न कर्तव्यम्। (सर्वत्र उदारता नहीं दिखानी चाहिए) —भास

उदार व्यक्ति जब तक जीता है, आनन्द से जीता है, किन्तु अनुदार उम्र-भर दुखी ही रहता है। —क़ैस बिन इल ख़तीम

बनाकर कोटि सीमाएँ हृदय को बाँधती दुनिया।
विशद् विस्तार कर सकना बहुत मुश्किल हुआ जग में। —हरिकृष्ण प्रेमी

उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् (उदार चरितों के लिए तो वसुधा एक कुटुम्ब है) —पंचतंत्र

उदारता उच्च वंश से आती है। —कारनेल

उदार व्यक्ति दे-देकर अमीर बनता है, लोभी जोड़-जोड़कर अमीर बनता है। —एक जर्मन कहावत

उदार मन वाले विभिन्न धर्मों में सत्य देखते हैं; संकीर्ण मन वाले केवल अन्तर देखते है। —एक चीनी कहावत

उदार व्यक्ति ही सच्चे मित्र हो सकते हैं। —चार्ल्स

उदारता अधिक देने में नहीं, बल्कि समझदारी से देने में है। —फ्रैंकलिन

(1) भगवान उदार व्यक्ति से प्यार करता है।
(2) उदारता पापों को धो डालती है। —बाइबिल

अनुदार के प्रति उदारता ही सबसे बड़ी उदारता है। —बर्क

उदासीनता

उदासीनता मृत्यु की शून्यता से भी विकराल होती है।
—रवीन्द्रनाथ टैगोर

शाम से ही बुझा-सा रहता है,
दिल हुआ है चिराग मुफ़सिल का। —मीर

(1) उदासीनता वैराग्य का एक सूक्ष्म स्वरूप है जो थोड़ी देर के लिए मनुष्य को अपने जीवन पर विचार करने की क्षमता प्रदान कर देता है, उस समय पूर्व स्मृतियाँ हृदय में क्रीड़ा करने लगती हैं। (सेवा०)

(2) उदासीनता बहुधा अपराध से भी भयंकर होती है। (रंगभूमि)
—प्रेमचंद

उदाहरण

उदाहरण उपदेश से अधिक प्रभावी होते हैं। —डॉ० जानसन

नसीहत से नज़ीर अच्छी। —एक ईरानी लोकोक्ति

उदाहरण मनुष्य के लिए विद्यालय है। —बर्क

उद्देश्य

ऊँचे उद्देश्य वालों को आरामतलबी और लोकप्रियता से डरना चाहिए।
—एमर्सन

(1) बुरा उद्देश्य होना भी उद्देश्यहीनता से अच्छा है।

(2) अपने उद्देश्य को मत भूलो, नहीं तो जो कुछ मिल जाएगा, उसी में संतोष कर लोगे। —कार्लाइल

(1) वास्तविक जीवन उन्हीं का है जो किसी उद्देश्य के लिए जीते हैं।

(2) अपने सामने एक उद्देश्य रखना और उसी की प्राप्ति के लिए प्रयास करते रहने में वास्तविक आनन्द है। —शेख़ सादी

आरोहणमक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् (उन्नति करना और आगे बढ़ना ही जीव का उद्देश्य है) —अथर्ववेद

उद्यम, उद्योग

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।
(आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है। उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है, जिसके करने से मनुष्य दुखी नहीं होता।)
—भर्तृहरि

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगाः।
(कार्य उद्यम से ही सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा से नहीं। सिंह सोता रहे तो हिरन स्वयं जाकर उसके मुँह मे नहीं जाते।) —पंचतंत्र

अर्थस्य मूलमुत्थानमनर्थस्य विपर्ययः (उद्योग ही संपत्ति का मूल है और अनुद्योग अनर्थों की जड़ है।) (अर्थशास्त्र) —चाणक्य

आलसी और अनुद्योगी के सौ वर्ष के जीवन से भली-भाँति उद्योग करने वाले के जीवन का एक दिन श्रेष्ठ है। —धम्मपद

उद्योग सभी पर विजय प्राप्त कर लेता है। —वर्जिल

उद्योग के घर रिद्धि-सिद्धि पानी भरती हैं। —एक मराठी लोकोक्ति

इसी सीख पर तुम्हें ध्यान देना चाहिए—प्रयत्न करो, प्रयत्न करो, फिर प्रयत्न करो। यदि पहली बार तुम सफल नहीं हुए, तो फिर प्रयत्न करो, फिर प्रयत्न करो, फिर प्रयत्न करो। —हिक्सन

विश्राम में भी उद्यम की गति है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

(1) विद्या-धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखा को पौन॥
(2) हिलन-चलन की सकति है, तौलौ उद्यम ठानि।
अजगर लौ मृगपति-बदन, मृग न परत है आनि॥
(3) कहा होय उद्यम किये, जौ प्रभु ही प्रतिकूल।
जैसे उपजे खेत कौ, करत सलभ निरमूल॥ —वृन्द

(1) उद्यम ही जीवन है, वास्तविक आनन्द का स्रोत है, आलस्य मृत्यु है और दुःख का कारण भी है।

(2) मूर्ख को चुपचाप बैठना अच्छा लगता है और कुछ करना बुरा लगता

है, किन्तु बुद्धिमान की स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है।

—भोलानाथ तिवारी

बुद्धिमान मनुष्य बैठकर कभी हानि के लिए रोते नहीं, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक अपने कष्टों को दूर करने का उपाय ढूंढ़ते हैं। —शेक्सपियर

चलना हमें स्वर्ग तक पहुँचाएगा, बोलना नहीं। —हेनरी

पुरुष सिंह जो उद्यमी लछिमी ताकी चेरि। —एक कवि

उद्यम कीजै जगत में मिलै भाग्य अनुसार।
मोती मिलै कि संख कर सागर गोता मार॥ —गिरिधरदास

उद्योगी को ऊसरों में मिलता है रत्न।
किसी काल मे हो नही जीवन रहित प्रयत्न॥ —हरिऔध

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य, अतः प्रयत्न-देवता की उपासना करनी चाहिए। —समर्थ गुरु रामदास

पुरुषार्थी भाग्य की रेखाएँ मिटा देता है। —अज्ञात

काल्ह करे सो आज कर आज करे तो अब।
पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब। —कबीर

जो उद्योग नही करता वह चोरी का अन्न खाता है। —महात्मा गांधी

तूने नरक नहीं देखा। समझ ले कि उद्यम ही स्वर्ग है और आलस्य नरक।

—सनाई

उधार, ऋण, कर्ज

न उधार दो, न लो; क्योंकि उधार देने से प्रायः पैसा और मित्र दोनों खो जाते हैं और उधार लेने से किफ़ायतीशारी कुण्ठित हो जाती है। —शेक्सपियर

उधार वह मेहमान है जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।

—प्रेमचन्द

जिसे कभी उधार लेने का अवसर नहीं आता, उसी को लोग उधार देने को उत्सुक रहते हैं। —गोल्डस्मिथ

(1) उधार खाना और फूस का तापना बराबर है।
(2) उधार प्रेम की क़ैंची है। —हिंदी लोकोक्तियां

लेखनी पुस्तकं स्त्री परहस्ते गता गता।
कदाचित् पुनरा याता नष्टा भ्रष्टा च चुंबिता।

(लेखनी, पुस्तक और स्त्री दूसरे के हाथ गई तो गई ही समझो। यदि ये वापिस आती भी हैं तो क्रमश: नष्ट-भ्रष्ट और चुंबित होकर) —अज्ञात

ऋण देना और लेना दोनों अनुचित हैं। —वेमना

मित्र को ऋण मत दो वरना मित्रता की समाप्ति समझो। —सुकरात

बार-बार आनेवाले किसी व्यक्ति से अपना पिंड छुड़ाना चाहते हो तो उसे कुछ पैसे उधार दे दो। —फ्रैंकलिन

उधार माँगना भीख माँगने से कुछ बहुत अच्छा नहीं है। —लैसिंग

उन्नति

हे मानव तू ऊपर चढ़, नीचे मत गिर। —अथर्ववेद

(1) धन बढ़ाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है।

(2) उन्नति छ: प्रकार की होती है: अपनी वृद्धि, मित्र की वृद्धि, मित्र के मित्र की वृद्धि, शत्रु की हानि, शत्रु के मित्र की हानि, शत्रु के मित्र के मित्र की हानि। —वेदव्यास

उन्नति चाहने वाले व्यक्ति को निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध आलस्य और दीर्घ-सूत्रता ये अवगुण त्याग देने चाहिए। —हितोपदेश

दिन दिन ऊँचे होय सो जेहि ऊँचे पर चाव। -जायसी

(1) उन्नति वही कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है।

(2) जो पढ़ते हो, उसका अमल सीखो। यही उन्नति का उपाय है।

—स्वामी रामतीर्थ

यदि एक मनुष्य की उन्नति होती है तो उसके साथ पूरे संसार की उन्नति होती है; और यदि एक व्यक्ति का पतन होता है तो पूरे संसार का भी पतन होता है। —महात्मा गाँधी

त्रुटियों के संशोधन का नाम उन्नति है। —लाला लाजपतराय

हृदय की विशालता ही उन्नति की नींव है। —जवाहरलाल नेहरू

उन्नति से तात्पर्य उस स्थिति से है जिससे हममें दृढ़ता और कर्म-शक्ति उत्पन्न हो, जिससे हमें अपनी दु:खावस्था की अनुभूति हो, हम देखें कि किन अन्तर्बाह्य कारणों से हम इस निर्जीवता और ह्रास की अवस्था को पहुँच गए, और उन्हें दूर करने की कोशिश करें। —प्रेमचंद

जो पावै अति उच्च पद, ताको पतन निदान।
ज्यों तपि तपि मध्यान लौ, अस्त होत है भान ।। —वृन्द

उपकार

जिसने पहले तुम्हारा उपकार किया हो, वह यदि बड़ा अपराध करे तो भी उसके उपकार की याद करके उसका अपराध क्षमा कर दो। —वेद व्यास

(1) सद्भावार्द्रः फलति न चिरेणोपकारो महत्सु।
(सज्जनों के ऊपर किये गये सद्भावसूचक उपकार का फल मिलने कुछ भी देर नहीं लगती।)

(2) अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं,
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् ।।
(वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहन करता है, परन्तु अपनी छाया से दूसरों की गर्मी से रक्षा करता है।) —कालिदास

(3) न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय।
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किम्पुनर्यस्तथोच्चैः।
(अपने ऊपर उपकार करने वाला मित्र यदि दैवयोग से अपने घर आ जाय तो नीचात्मा भी भक्तिभाव-पूर्वक उसका आदर करते हैं, उससे विमुख नहीं होते—उच्चात्माओं का तो कहना ही क्या है?) कालिदास

उपकुर्यान्निराकांक्षी यः स साधुरितीर्यते।
साकांक्षमुपकुर्याद्यः साधुत्वे तस्य को गुणः।।
(जो निष्काम भाव से किसी का उपकार करता है, वही साधु कहलाता है, जो किसी वस्तु की इच्छा से उपकार करता है, उसकी साधुता में भला कौन-सा गुण है? वह निरर्थक है।) —अज्ञात

(1) कर भला हो भला।
(2) तलवार मारे एक बार, उपकार मारे बार-बार।
(3) नेकी कर और कुएँ में डाल। —हिंदी लोकोक्तियां

परोपकारः परमोधर्मः (परोपकार परम धर्म है।) —महाभारत

पर-उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ। —तुलसी

(1) तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पानि।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजानि।।

(2) यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
बाँटनवारे के लगै, ज्यों मेंहदी के रंग॥ **—रहीम**

(1) भले बुरेहू सो करत, उपकारी उपकार।
तरुवर छाया करत है, नीच न ऊँच बिचार॥

(2) उपकारी उपकार जग, सबसों करत प्रकास।
ज्यों कटु मधुरे तरु मलय, मलयज करत सुवास॥ **—वृन्द**

अगर तू किसी एक आदमी की भी तकलीफ़ दूर करे तो यह ज़्यादा अच्छा काम है, बजाय इसके कि तू हज्ज को जाए और रास्ते की हर मंज़िल पर एक-एक हज़ार रकअत नमाज पढ़ता जाए। **—शेख़ सादी**

जो मनुष्य दूसरे का उपकार करता है वह अपना भी उपकार न केवल परिणाम में अपितु उसी कर्म में करता है, क्योंकि अच्छा कर्म करने का भाव ही स्वयं के लिए उचित पुरस्कार है। **—सेनेका**

मनुष्य दूसरे के साथ केवल भलाई करके ही अपने को देवतुल्य बनाते हैं। **—सिसरो**

(1) जिसमें उपकारवृत्ति नही, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

(2) उपकारी की सम्पत्ति बढ़नी ही रहती है। कहा भी है—पुण्य की जड़ पाताल तक जाती है।

(3) उपकार करने वाले मे स्वार्थ की भावना नही होनी चाहिए।

(4) उपकार करने की वृत्ति रखने वाला संमार में दुःखी नहीं हो सकता।

(5) उपकार कभी व्यर्थ नही जाता।

(6) परोपकार न कर सको तो कोई बात नही, पर किसी का अपकार हरगिज़ न सोचो, न करो।

(7) उपकार करके उसके बदले की आशा रखना अपने सत्कर्म पर ख़ाक डालने के समान है।

(8) उपकार करने से मनुष्य की आत्मा उन्नत और प्रफुल्लित बनती है। **—महात्मा गाँधी**

जो दूसरो पर उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है, जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिए द्वार खुले हैं। **—रवीन्द्रनाथ टैगोर**

(1) उपकार के लिए यदि कुछ जाल भी करना पड़े तो उससे आत्मा की हत्या नहीं होती।

(2) नेकी नेकी करने वाले के दिल में रहे तो नेकी है, बाहर निकल आए तो बदी है। —**प्रेमचंद**

नीच के प्रति किया गया उपकार बालू पर मूत्रत्याग करने के समान है। —**हितोपदेश**

रतन करहु उपकार पर चहहु न प्रति-उपकार।
लहहिं न बदलो साधु जन बदलो लघु व्यौहार —**रत्नावली**

उपदेश

परोपदेशेषु सर्वो भवति पंडित:। (दूसरों को उपदेश देने के लिए सभी विद्वान् होते हैं।) —**क्षेमेन्द्र**

मूर्खो को दिया गया उपदेश उनके क्रोध का कारण ही बनता है, जैसे साँप को दूध पिलाने से विष ही बढ़ता है। —**पंचतंत्र**

परोपदेशवेलायां शिष्टा: सर्वे भवन्ति वै।
विस्मरन्तीह शिष्टत्वं स्वकार्ये समुपस्थिते ॥
(दूसरे को उपदेश देने के समय सभी सज्जन हो जाते हैं, किन्तु जब स्वयं वैसा आचरण करने का अवसर आ पड़ता है तो सज्जनता भूल जाते है।) —**अज्ञात**

(1) मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

(2) जो नसीहत नही सुनता, उसे लानत-मलामत सुनने का शौक है। —**शेख सादी**

जिसने कालचक्र से कोई उपदेश नही लिया उसे बेचरवाहे के ऊँटों के साथ चरना चाहिए। —**सलाहुद्दीन सफ़री**

जिसने स्वयं को समझ लिया है, वह दूसरों को समझाने नही जाएगा। —**धम्मपद**

हम उपदेश सुनते हैं मन-भर, देते हैं टन-भर, पर ग्रहण करते हैं कन-भर। —**अलज़र**

लोगों की समझ-शक्ति के मुताबिक ही उपदेश दो। —**हबीस**

उपदेश देना सरल है, उपाय बताना कठिन। —**रवीन्द्रनाथ टैगोर**

रासि पराई राषतां खाया घर का खेत।
औरों को परबोधता मुख में पड़िया रेत॥ —**कबीर**

(1) बुध के मृदु उपदेश को खल त्यागें ततकाल ।
तुरत बिनासै तोरि कपि जथा सुमन की माल ।।
(2) मूरख खल कौ साधु जन उपदेसत न विचार ।
कपि कौ दीन्ही सीख खग कीन्यो गेह उजार ।। —स्फुट

पर उपदेश कुशल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे । —तुलसीदास

बुरै लगत सिख के बचन हिये बिचारो आप ।
करुई भेषज बिन पिये मिटै न तन को ताप ।। —वृन्द

(1) वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं अपने को उपदेश देता है ।
(2) शब्दों की अपेक्षा कर्म ही अधिक पुकार-पुकार कर उपदेश देते हैं ।
—स्वामी रामतीर्थ

जो तुम दूसरों से चाहते हो उसे स्वयं करो । —रामकृष्ण परमहंस

उपदेश चाहे जिसको नही, समझ-बूझ कर देना चाहिए । —अज्ञात

चीटी से अच्छा कोई उपदेश नही देता, क्योंकि वह मौन रहती है ।
—फ्रैंकलिन

उपदेश इसलिए मत दो कि तुम्हें उपदेश देना है, बल्कि इसलिए दो कि तुम्हें कुछ कहना है । —आर० डब्ल्यू आर्कबिशप

यदि उपदेशक इस संसार में एक क़दम भी चलेगा तो उसे सुनने वाले दो क़दम चलेंगे । —सेलिस

प्रत्येक का उपदेश सुनो, परन्तु अपना उपदेश कुछ ही व्यक्तियों को दो ।
—शेक्सपियर

पेट भरे होने पर उपवास का उपदेश देना सरल है ।
—एक इतालवी लोकोक्ति

परोपदेशे पांडित्यं (दूसरे को उपदेश देने को सभी पंडित होते है)
—एक संस्कृत लोकोक्ति

बिना माँगे किसी को उपदेश न दो । —एक जर्मन लोकोक्ति

उपनिषद

उपनिषद भारत के ब्रह्मज्ञान की वनस्पति है । वह केवल सुंदर, श्यामल, छायामय ही नहीं है, गहन और कठिन भी है । —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

उपनिषदों की बातें बेहोशों और मूर्च्छितों की बातें नहीं हैं, स्वाभाविक पद्धति से तत्त्व-चिन्तन करने वाले ऋषियों की बातें हैं। (सूर०1)

—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

उपन्यास

उपन्यास मिठाइयाँ हैं। साहित्य के भूखे स्त्री-पुरुष इनकी चाह में रहते हैं।

—**थैकरे**

उपन्यास का प्रेम इंद्रियों पर भावना की वरीयता है। —**एमर्सन**

उपन्यास अपने पाठक को पाप करने को बाध्य नहीं करते, किन्तु केवल यह बताते हैं कि पाप कैसे किया जाता है। —**जमीरमन**

(1) मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्रमात्र समझता हूँ। मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल-तत्त्व है। (कु० वि०)

(2) भविष्य उन्हीं उपन्यासों का है जो अनुभूति पर खड़े हों। (कु० वि०)

(3) उपन्यास घटनाओं, पात्रों और चरित्रों का समूह है। आख्यायिका केवल एक घटना है, अन्य बातें सब उसी घटना के अन्तर्गत होती हैं। (कु० वि०)

(4) जिस उपन्यास को समाप्त करने के बाद पाठक अपने अंदर उत्कर्ष का अनुभव करे, उसमें सद्‌भाव जगे, वही सफल उपन्यास है। (कु० वि०)

—**प्रेमचंद**

(1) उपन्यास के पुराने ढाँचे के बारे में एक बात कहना चाहता हूँ। वह यह कि वह कुछ बुरा न था। उसमें हमारे भारतीय कथात्मक गद्य-प्रबन्धों के स्वरूप का भी आभास रहता था। (चिन्ता० 2)

(2) वर्तमान जगत् में उपन्यासों की बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है, उसके भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही हैं, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते हैं। (हि० सा० इ०)

(3) हमारे उपन्यासकारों को देश के वर्तमान जीवन के भीतर अपनी दृष्टि गड़ाकर देखना चाहिए, केवल राजनीतिक दलों की बातों को लेकर ही न चलना चाहिए। साहित्य को राजनीति के ऊपर रहना चाहिए, सदा उसके इशारों पर ही नहीं नाचना चाहिए। (हि० सा० इ०) —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

उपमा

काव्य में उपमा का उद्देश्य भावानुभूति को तीव्र करना है, नैयायिकों के 'गोसदशो गवयः' के समान ज्ञान उत्पन्न कराना नहीं। (र० मी०)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

उपवास

जो व्यक्ति प्रातःकाल और सायंकाल केवल दो समय भोजन करता है, और बीच में कुछ नही खाता, वह सदा उपवासी होता है। (अनुशासन पर्व, 93-10)

—महाभारत

अग्नि आहार को पचाती है और उपवास दोषों को पचाता है। **—आयुर्वेद**

(1) सच्चे उपवास का अर्थ है कि हम अपनी व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण इच्छाओं और क्रिया-कलापो से मुक्त हो जायँ।

(2) उपवास तो केवल हमारी सहायता के लिए है, उसका हम पर आधिपत्य नही होना चाहिए। लोग प्रायः उपवास इसलिए करते हैं कि उसके लिए बाध्य किए जाते है। **—स्वामी रामतीर्थ**

(1) आरोग्य-रक्षा का मुख्य उपाय है उपवास।

(2) यदि शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक हो सकता है।

(3) स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उपवास किया जाता है, परन्तु अपने या समाज के द्वारा की गई गलतियो के प्रायश्चित्त के रूप मे इसका अधिक महत्त्व है। किन्तु इस प्रकार का अनशन अहिंसा का पुजारी ही कर सकता है।

(4) उपवास से शारीरिक और आत्मिक दोनों संशोधित हो जाते हैं।

(5) सच्चा उपवास इन्द्रियों का दमन करता है, और उस हद तक आत्मा को मुक्त करता है।

(6) उपवास मन और शरीर की शुद्धि के लिए है। उसका अन्य रूप में दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। वह सत्याग्रह शास्त्र का अन्तिम और अमोध अस्त्र है।

(7) उपवास सत्य-शोधन का साधन तो है ही, वह शरीर-शोधन का उपाय भी है।

(8) उपवास शारीरिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आवश्यक अवलम्ब है।

(9) उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है।

(10) उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में महान् शक्तिशाली अस्त्र है। इसको हर कोई नहीं चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता इसके लिए कोई योग्यता नही।

(11) उपवास शुद्धि का एक ज़बरदस्त साधन है और मानव समाज में उपवास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य होना चाहिए। —**महात्मा गाँधी**

उपवास शब्द का मूल अर्थ है दुर्गुणों एवं दोषों से बचकर आत्मा अथवा गुणों के साथ वास अर्थात् निवास। अनुभव से देखा जा सकता है कि पाप अथवा कलुषित भावनाओं से मुक्त होकर चित्तवृत्तियों को आत्मा अथवा सद्गुणों में सन्निविष्ट करने की प्रेरणा उपवास के समय सर्वाधिक होती है। —**अज्ञात**

उपहार

जिन उपहारों की बड़ी आस लगी रहती है, वे भेंट नही किए जाते, चुकाए जाते हैं। —**फ्रैंकलिन**

शत्रु को उपहार देने योग्य सर्वोत्तम वस्तु है क्षमा; विरोधी को सहनशीलता, मित्र को अपना हृदय, बालक को उत्तम दृष्टान्त, पिता को आदर, माता को अपना ऐसा आचरण जिससे वह तुम पर गौरव कर सके; अपने को प्रतिष्ठा, और सभी मनुष्यों को उपकार। —**बालफ़ोर**

उपहार लेना स्वतंत्रता खोना है। —**शेख़ सादी**

जो उपहार स्वीकार कर लेता है, वह स्वयं को बेच डालता है।

—**एक इटैलियन कहावत**

ख़रीदी हुई प्रत्येक वस्तु किसी उपकार से सस्ती पड़ती है।

—**एक पुर्तगाली कहावत**

जो कुछ भी नही स्वीकारता उसे कुछ लौटाना भी नही पड़ता।

—**एक जर्मन कहावत**

देने वाले का हृदय उपहार को प्रिय और मूल्यवान् बना देता है। —**लूथर**

किसी वस्तु के देने का तरीका उपहार से अधिक उपहार देने वाले के चरित्र को बताता है। —**लवाटर**

अभिमान और आडम्बर के साथ दी हुई वस्तु उदारता ही नहीं वरन् महत्त्वाकांक्षा की सूचक है। —**सेनेका**

उपाधि

अभी तक हम उपाधियों के ही मोह से मुक्त नहीं हुए हैं।···हमारे नेता भी योग्यता, सदुत्साह, लगन का उतना सम्मान नही करते जितना उपाधियों का।

—**प्रेमचंद**

उपाधि मनुष्य के सम्मान की सूचक नहीं है वरन् मनुष्य ही उपाधि के सम्मान का सूचक है। —**मैकियावेली**

तीन जो सबसे बड़ी उपाधियाँ किसी मनुष्य को दी जा सकती हैं, वे हैं शहीद वीर और संत। —**ग्लैडस्टक**

उपाय

जो काम उपाय से हो सकता है, वह पराक्रम से नही हो पाता।

—**हितोपदेश**

एक काम के लिए दो उपाय किए जाने पर उसका फल भी दूना होता है।

—**राजशेखर (का० मी०)**

उपासना

हिंदू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावै परम पद जहँ देहुरा न ससीत। —**गोरखनाथ**

(1) कबीर दुनियाँ देहुरा सीस नवावइ जाइ।
हिरदा भीतर हरि बसै तू ताही सौं लौ लाइ।

(2) पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार। —**कबीरदास**

गँवारों की धर्म-पिपासा ईंट-पत्थर पूजने से शांत हो जाती है। भद्रजनों की भक्तिसिद्ध पुरुषों की सेवा से। —**प्रेमचंद**

(1) अव्यक्त, निर्गुण, निर्विशेष (Absolute) ब्रह्म उपासना के व्यवहार में सगुण ईश्वर हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि उपासना जब होगी तब व्यक्त और सगुण की ही होगी; अव्यक्त और निर्गुण की नहीं। (चिंता०)

(2) जो वस्तु हमसे अलग है, हमसे दूर प्रतीत होती है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामीप्य का अनुभव करना ही उपासना है। (चिंता०)

—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

(1) पूजा या प्रार्थना वाणी से नहीं, हृदय से करने की चीज है।

(2) पूजा पैर से हो सकती है, हाथ से हो सकती है, जिह्वा से हो सकती है। पूजा सच्ची होनी चाहिए। —**महात्मा गांधी**

जिंदगी ख़ुद ही इबादत है, मगर होश नहीं। —**जिगर**

(1) जेता चलूँ तेती प्रदक्षना, जो कुछ करूँ सो पूजा। गृह उद्यान एक सम जान्यो नाव मिटाइयो दूजा।

(2) उपासना उस अवस्था का नाम है जहाँ रोम-रोम में राम रम जाए, मन अमृत में भीग जाए, दिल आनंद में डूब जाए। —**स्वामी रामतीर्थ**

दीन-दुखियों की सेवा ही प्रभु की पूजा है। —**तुकाराम**

उपास्य बनने का प्रयत्न करो। **अरविंद**

विश्व को वंचित रखकर उपासना नहीं हो सकती। —**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

भक्ति ज्ञान से भिन्न नही है। —**मध्वाचार्य**

उपेक्षा

स्वदेशजातस्य परस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा।
निजांगना यद्यपि रूपराशिः तथापि लोकः परदारासक्तः।

(अपने देश मे पैदा गुणवान की भी उपेक्षा होती है, अपनी पत्नी अत्यत रूपवती हो, फिर भी लोग दूसरी स्त्री पर आसक्त होते है) —**अज्ञात**

प्रेम सब कुछ सह लेता है परन्तु उपेक्षा नहीं सह सकता।
—**एक चीनी लोकोक्ति**

ऐसे व्यक्तियो द्वारा की गयी उपेक्षा अपराध है जिन पर पूरा विश्वास किया गया हो। —**शेक्सपियर**

नोपेक्षेत स्त्रियं बाल रोगं दासं पशू धनम्।
विद्याभ्यासं क्षणमपि सत्सेवां बुद्धिमान्नरः।

(स्त्री, बालक, रोग, दास, पशु, धन, विद्याभ्यास और सज्जनों की सेवा के विषय मे एक क्षण भर भी उपेक्षा नही करना चाहिए।) **शुक्रनीति**

रोग, साँप, आग और शत्रु को छोटा या तुच्छ समझकर उनकी कभी भी उपेक्षा नही करनी चाहिए। —**एक संस्कृत सुभाषित**

(1) गाँव का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध।
(2) घर की मुर्गी दाल बराबर।
(3) ब्याह पीछे पत्तल भारी। —**हिंदी लोकोक्तियाँ**

उम्र (दे० अवस्था, आयु)

उम्र बढ़ने के साथ सब कुछ बदल जाता है। (पटरानी) —**विमल मिश्र**

साधू उम्र बढ़ावही वेश्या उमर घटाय। —**एक हिंदी लोकोक्ति**

(1) आज की उर्दू भाषा में भी, जो सम्पूर्णतया एक भारतआर्यीय भाषा है, सम्भवत: 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत से लिए गए हैं। बहुधा यह निश्चय करना कठिन होता है कि (उर्दू का) कोई शब्द संस्कृत से आया है अथवा फ़ारसी से, क्योंकि इन दोनों आर्य भाषाओं के मूल शब्द समान हैं। (भारत की खोज)

(2) ताज्जुब है कि हमारे मुल्क में कितनी सारी चीज़ों को मज़हबी जामा पहना दिया जाता है। कुछ समझ में नही आता कि उर्दू को मुसलमान लोग ख़ास अपनी चीज़ क्या समझते हैं? मैं दूसरों के ख्यालात की इज्ज़त करना जानता हूँ, लेकिन मैं इस दावे को तसलीम करने के लिए तैयार नही हूँ कि उर्दू किसी फ़िरके की जबान है। मैं उर्दू को अपनी जबान समझता हूँ, जो मैं अपने छुटपन से बोलता आ रहा हूँ। (डा० महमूद के नाम पत्र) —**जवाहरलाल नेहरू**

खड़ी बोली को लेकर उर्दू साहित्य खड़ा हुआ, जिसमें आगे चलकर विदेशी भाषा के शब्दों का मेल भी बराबर बढ़ता गया और जिसका आदर्श भी विदेशी होता गया। (हि० सा० इ०) —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

उर्दू वह हिंदुस्तानी ज़बान है जिसमें फ़ारसी अरबी के लफ्ज ज्यादा हों। (कु० वि०) —**प्रेमचंद**

कीजै न जमील उर्दू का सिंगार अब ईरानी तलमीहों से।
पहनेगी विदेशी गहने क्यों, यह बेटी भारत माता की।

—**जमील मज़हरी**

ऊँच-नीच

एक बिंदु से सृष्टि रची है, को बाम्हन को सूद्रा। —**कबीर**

से असइ उच्चागोए असइँ नीआगोए नो हीणं नो अइरित्ते।

(यह जीव कई बार उच्चगोत्र और नीच गोत्र में जन्म ले चुका है। ऊँचे-नीचे गोत्रों में जन्म लेने से कोई ऊँचा या नीचा नहीं होता।) —**महावीर स्वामी**

ऋण (दे० उधार और क़र्ज़ भी)

दोस्त को क़र्ज़ न दो, वर्ना मुहब्बत का ख़ात्मा समझो। —**सुकरात**

अरज गरज माने नहीं रहिमन ये जन चारि।
रिनिया राजा, माँगता, काम आतुरी नारि ॥ —रहीम

स्वजन सखी सों जनि करहु कबहूँ ऋन व्यवहार।
ऋन सों प्रीति प्रतीति तिय रतन होति सब छार ॥ —रत्नावली

(1) न उधार दो न लो, क्योंकि उधार देने से अक्सर पैसा और मित्र दोनों खो जाते हैं और उधार खाने से मितव्ययिता कुंठित हो जाती है।

(2) कर्ज लेना और देना दोनों ही बुरा हैं क्योंकि इससे मैत्री खत्म हो जाती है। —शेक्सपियर

उधार माँगना भीख माँगने से अच्छा नहीं है। —रनसिंग

सब काहू कौं भूल के करज दीजिए नाहिं।
दीजै तो ना कीजिए झगरौ आपुन माहिं ॥ —जान

(1) आग खाए मुँह जरे, उधार खाए पेट जरे।
(2) कर्जदार सिर पर सवार।
(3) उधार दीजे, दुश्मन कीजे। —हिंदी लोकोक्तियाँ

पावक, बैरी, रोग, ऋण, शेषहुँ रखिए नाहिं।
ये थोरे हूँ बढ़हिं पुनि, महायतन सों जाहिं ॥ —गिरिधर दास

एक

एकहि साधे सब सधै सब साधे सब जाय। —तुलसी

एक ही देव की पूजा करनी चाहिए (कृष्ण या शिव), एक ही मित्र बनाना चाहिए (राजा या तपस्वी) एक ही स्थान पर रहना चाहिए (शहर या जंगल) और एक से ही विलास करना चाहिए (सुंदरी अथवा कंदरा)। —भर्तृहरि

एकता

संघे शक्ति. कलियुगे। (कलयुग में एकता में ही शक्ति है।) —महाभारत

बहूनामल्पसाराणां समवायो हि दुर्जयः।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जुः बध्यन्ते तेन दन्तिनः ॥
(बहुत-से क्षुद्र और कमज़ोर लोगों की एकता भी अजेय बन जाती है। कमज़ोर तिनकों से बनायी गयी रस्सी बड़े-बड़े हाथियों को भी बाँध लेती है।) —अज्ञात

यदि चिड़ियाँ एका कर लें तो शेर की खाल खींच सकती हैं। —शेख सादी

(1) एकता चापलूसी से कायम नहीं की जा सकती।

(2) जब तक जीव-मात्र के साथ एकता महसूस न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप-तप सब थोथी बातें हैं। —**महात्मा गाँधी**

सबको हाथ की पाँच उँगलियों की तरह रहना चाहिए। हाथ की पाँचों उँगलियाँ समान थोड़े ही हैं? कोई छोटी है, कोई बड़ी, लेकिन हाथ से किसी चीज़ को उठाना होता है तब पाँचों इकट्ठी होकर उठाती हैं। हैं तो पाँच लेकिन काम हज़ारों का कर लेती हैं, क्योंकि उनमें एका है। —**विनोबा**

एकांत

मुझे एकांत से बढ़कर योग्य साथी कभी नहीं मिला। —**थोरो**

घास पृथ्वी पर अपने सहचरों की खोज करती है, वृक्ष आकाश में एकांत का अनुसंधान करते हैं। —**रवीन्द्रनाथ टैगोर**

एकांतवास शोक-ज्वाला के लिए समीर के समान है। —**प्रेमचन्द**

एकान्त प्रायः सर्वोत्तम संगति है। —**मिल्टन**

जो एकान्त में खुश रहता है, वह या तो पशु है या देवता। —**अज्ञात**

बातचीत बुद्धि को मूल्यवान बना देती है, परन्तु एकान्त तो प्रतिभा की पाठशाला है। —**गिबन**

हे एकान्त! तुम्हारा वह आकर्षण कहाँ है जिसे ऋषियों ने तुममें देखा है? —**काउपर**

एकान्त मूर्ख के लिए क़ैदख़ाना है, ज्ञानी के लिए स्वर्ग। —**अज्ञात**

बाहरी एकांत वास्तविक एकांत नहीं है। मन में चिंता और शंका का प्रवेश न होना ही सच्चा एकांत है। —**आविस**

एकान्त हमें बताता है कि हमें कैसा होना चाहिए, समाज हमें बताता है कि हम क्या हैं। —**सिसिल**

एकान्त में रहना महान आत्माओं का ही भाग्य है। —**शॉपेनहार**

एकांत भगवान से भरा हुआ होता है। —**एक सर्बियन लोकोक्ति**

एकाग्रता

(1) अपनी अभिलाषाओं को वशीभूत कर लेने के बाद मन को जितनी देर

तक चाहो एकाग्र किया जा सकता है।

(2) जब तक आशा लगी हुई है तब तक एकाग्रता नहीं हो सकती।

—स्वामी रामतीर्थ

झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार आदि दुराचारों की वृत्तियों के नष्ट हुए बिना चित्त का एकाग्र होना कठिन है और चित्त एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि भी कठिन है। —मनु

एकता शक्ति और एकाग्रता महाशक्ति है। —भोलानाथ तिवारी

संसार के प्रत्येक कार्य में विजय पाने के लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है। जो लोग चित्त को चारों ओर बिखेरकर काम करते हैं उन्हें सैकड़ों वर्षों तक सफलता का मूल्य मालूम नहीं होता। —मार्ले

(1) मन में एकाग्र शक्ति प्राप्त करने वाले मनुष्य संसार में किसी समय असफल नहीं होते।

(2) तुम्हारी विजयशक्ति है—मन की एकाग्रता। यह शक्ति मनुष्य-जीवन की समस्त ताकतों को समेटकर मानसिक क्रांति उत्पन्न करती है। —अज्ञात

चित्त की एकाग्रता योग की समाप्ति नहीं है। वहाँ से योग की शुरूआत है।

—विनोबा भावे

यदि जीवन में प्रगति करने और बुद्धिमत्ता की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई ख़राब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना।

—एमर्सन

ऐश्वर्य

कदम पीछे न हटानेवाला ही ऐश्वर्य को जीतता है। —ऋग्वेद

ऐश्वर्य पिशाचपन के बिना असंभव है। —चाणक्य

स्वयं को हीन माननेवाले को उत्तम प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त नहीं होते।

—महाभारत

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता।

(ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता है) (नीति०) —भर्तृहरि

ऐश्वर्य ममतामयी माँ है, किंतु वह अंधी है जो अपने बच्चों को बिगाड़ देती है। —एक अँग्रेज़ी लोकोक्ति

ऐश्वर्य उपाधि में नहीं, बल्कि इस चेतना में है कि हम उसके योग्य हैं।

—अरस्तू

ऐश्वर्य का मदिरा-विलास किसे स्थिर रहने देता है ? (व्रतभंग)

—जयशंकर प्रसाद

ऐश्वर्य का सुख विहार और विलास तो नहीं, यह तो ऐश्वर्य का दुरुपयोग है। (कायाकल्प) **—प्रेमचन्द**

धन न भी हो तो भी आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जन-मैत्री तथा स्वाधीनता मनुष्य के महान् ऐश्वर्य हैं। **—अज्ञात**

औपचारिकता

उपचारः कर्तव्यो यावदनुत्पन्न सौहृदाः पुरुषाः
उत्पन्न सौहृदानाम् उपचारं कैतवं भवति।

(औपचारिकता तब तक निभानी चाहिए जब तक आपस में सौहार्द न उत्पन्न हो जाए। उत्पन्न हो जाने पर तो औपचारिकता छल बन जाती है।)

—अज्ञात

औरत (दे० नारी, स्त्री)

बेअकली का नाम औरत। **—एक हिंदी लोकोक्ति**

(1) औरतों की छाती फटे तो फटे किंतु मुँह नहीं फटता।

(2) यदि कहीं कठोर अत्याचार और अनाचार के बदले भी स्नेह और प्रेम हो सकता है तो यह स्त्रियों में ही हो सकता है। **—शरच्चंद्र**

(1) औरत उसी को प्यार करती है जो दिलावर हो, निडर हो, आग में कूद पड़े। (रंगभूमि)

(2) यह बेहूदा रिवाज यहीं के लोगों में है कि औरत को इतना ज़लील समझते हैं, नहीं तो और सब मुल्कों में औरतें आज़ाद हैं, अपनी पसन्द से शादी करती हैं और जब उसे रास नहीं आती तो तलाक दे देती हैं। लेकिन हम सब वही पुरानी लकीर पीटे जा रही हैं। (सेवासदन) **—प्रेमचन्द**

स्त्री अहिंसा की मूर्ति है। अहिंसा का अर्थ है अनंत प्रेम और उसका अर्थ है कष्ट सहने की अनंत शक्ति। पुरुष की माता स्त्री से बढ़कर इस शक्ति का परिचय अधिक-से-अधिक मात्रा में भला किससे मिलता है? **—महात्मा गाँधी**

औषधि

औषधि भी तभी काम करती है जब आयु शेष हो। —कालिदास

औषधि रोगानुसार ही होती है। —दिङ्नाग

कंजूस, कंजूसी

कृपणेन समोदाता न भूतो न भविष्यति ।
असृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति ।

(कृपण की तरह कोई दाता न तो कभी हुआ न होगा । वह तो अपने धन को अपने लिए छूता भी नहीं और सभी कुछ दूसरों के लिए छोड़ देता है ।)

—**अज्ञात**

(1) कृपणता मनुष्य के मन तथा संकल्प को मलिन कर देती है ।

(2) हे कंजूसी ! मैं तुझे जानता हूँ, तू विनाश करनेवाली और व्यथा देने वाली है । —**अथर्ववेद**

संसार मे सबसे दयनीय कौन है ? जो धनवान होकर भी कंजूस है ।

—**विद्यापति**

(1) अगर खुदा कंजूस आदमी की ख्वाहिश पूरी करने में लग जाए और अगर किस्मत उसकी गुलाम हो जाए, अगर उसके हाथ कारूँ का खजाना लग जाए और सारी दुनिया उसके क़ब्जे मे आ जाए, तो भी कंजूस आदमी इस क़ाबिल नही कि तू उसका नाम ले ।

(2) कंजूस की चाँदी उस समय ज़मीन से बाहर आती है जब वह खुद ज़मीन के अंदर चला जाता है ।

(3) दानी अपने दान से मीठा फल खाते हैं, कंजूस अपने चाँदी-सोने का गम खाते हैं । —**शेख सादी**

(1) नारी पूछत सूम कूँ, कहा ने बदन मलीन ।
कहा गाँठ से गिर पर्यो, कहा किसी को दीन ।।
(2) नही गाँठ से गिर पड़ो, नही किसी को दीन ।
देता देख्यो और को, याते बदन मलीन ।। —**कबीर**

पति मूरख वेस्या सलज अविनय सुत सठ मित्र ।
सूम स्वामि सेवक बधिर सुखद न राम चरित्र ।। —**रामचरित उपाध्याय**

कंजूस का गड़ा हुआ धन धरती से बाहर तभी निकलता है जब वे स्वय धरती में गाड़ दिए जाते हैं । —**एक फ़ारसी लोकोक्ति**

जिस प्रकार दानशीलता मनुष्य के दुर्गुणों को छिपा लेती है, उसी तरह कृपणता उसके सद्गुणों पर परदा डाल देती है । —**प्रेमचंद**

कंजूस आदमी एक पाई के लिए उतना ही उत्तेजित हो जाता है, जितना कि महत्त्वाकांक्षी एक राज्य की विजय के लिए । —**एडम स्मिथ**

हमारे क़फ़न में जेबें नही लगाई जाती। —एक इटैलियन कहावत

कंजूस लोग अपने धन को न तो खाते हैं, न किसी अन्य कार्य में खर्च करते हैं और न किसी को दान देते हैं। उनका धन आखिर में चोर ही ले जाते हैं।

—अज्ञात

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए —एक हिंदी लोकोक्ति

कंबल

कमरी थोरे दाम की आवै बहुतै काम।
खासा मलमल बाफता उनकर राखै मान॥
उनकर राखै मान बुन्द जहँ आड़े आवै।
बकुचा बाँधे मोट रात को झारि बिछावै॥
कह गिरिधर कविराय मिलन है थोरे दमरी।
सब दिन राखै साथ बड़ी मर्यादा कमरी॥ —गिरिधर कविराय

कटाई

(1) बुध बउनी। सुक लउनी।
(2) लाग बसन्त। ऊख पकन्त।
(3) सात सेवाती। धान उपाठ।
(4) कन्या धाने मीन जौ। जहाँ चाहै तहाँ लौ।
(5) चना अधपका जौ पका काटै।
गेहूँ बाली लटका काटै॥ —घाघ

कटु वाणी

पंडित भया त का भया जो नहिं बोल बिचार।
हने पराई आतमा लिए जीभ तरवार। —कबीर

बाण से भी वचन का होता भयंकर घाव है। (रंग में भंग)

—मैथिलीशरण गुप्त

तलवार का घाव भर जाता है पर बात का घाव नही भरता।

—एक हिंदी लोकोक्ति

कठिनाई

(1) कठिनाइयाँ हमें आत्मज्ञान कराती हैं, वे हमें बताती हैं कि हम किस

मिट्टी के बने हैं।

(2) कठिनाई मुझे ताक़त देती है, असम्भव मुझे जिन्दगी देता है; मगर क्षुद्रता, छोटापन, मेरे लिए ज़हर हैं। —जवाहरलाल नेहरू

रंज से ख़ूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज,
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गईं। —ग़ालिब
(ख़ूगर=अभ्यस्त)

जैसे श्रम से शरीर बलवान होता है, उसी प्रकार कठिनाइयों से मन।
—सेनेका

न तो रगड़ के बिना रत्न पर पॉलिश होती है न कठिनाइयों के बिना मनुष्य में पूर्णता आती है। —लाओत्से

भगवान कोई ऐसी कठिनाई नही भेजता जो पार न की जा सके।
—एक इतालवी लोकोक्ति

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे-हवादिस से,
अगर आसानियाँ हों ज़िंदगी दुशवार हो जाये!
(मौजे-हवादिस=अकस्मात आ जाने वाली लहरें) —असग़र

कठिनाइयों पर विजय पाने का अर्थ है विश्व के आनंद का पूर्ण रूप मे अनुभव करना। —शॉपेनहॉर

हे जगद्गुरो, यत्र तत्र सर्वत्र हम पर विपत्तियाँ आती रहें ताकि आपका दर्शन हुआ करे। —भागवत

जो आपत्तियों को आपत्ति नही समझते वे आपत्तियों को ही आपत्ति मे डाल कर उन्हे वापस भेज देते हैं। —तिरुवल्लुवर

रहिमन विपदा हूँ भली जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में जान परे सब कोय। —रहीम

संपत्ति महान् शिक्षिका है किंतु विपत्ति उससे भी बड़ी है। —हैज़लिट

सुबह का रास्ता रात से होकर जाता है। —ख़लील जिब्रान

कथनी-करनी (दे० करनी)

का भा जोग-कहानी कथें। निकसे न घिव बाजु दधि मथें॥ —जायसी

पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरें ते नर न घनेरे। —तुलसीदास

कथनी नाहिन पाइये पाइए करनी सोय
बातन दीपक ना बटे बाटे दीपक होय । **—नंददास**

यह कितनी ग़लत बात है कि हम मैले रहें और दूसरों को साफ़ रहने की सलाह दें । **—महात्मा गाँधी**

कहना आसान है, करना कठिन । **—एक हिन्दी लोकोक्ति**

कथा-साहित्य

इतिहास में सब कुछ यथार्थ होते हुए भी वह असत्य है, और कथा-साहित्य में सब कुछ काल्पनिक होते हुए भी वह सत्य है । **—प्रेमचन्द**

कन्या

अनुज बधू भगिनी सुत-नारी ।
सुनु सठ ए कन्या सम चारी ।।
इन्हहिं कुदिष्ट बिलोकइ जोई ।
ताहि बधे कछु पाप न होई ।। **—तुलसीदास**

(1) बाल बैस ही सों धरो दया धरम कुल कानि ।
बड़े भये रत्नावली कठिन परैगी बानि ।।

(2) वारेपन सों मातु पितु जैसी डारति बानि ।
सो न छुटाए पुनि छुटत रतन भयेहुँ सयानि ।।

(3) नाच विषय रस गीत गँधि भूषन भ्रमर विचारु ।
अंगराग आलस रतन कन्यहि हित न सिगारु ।। **—रत्नावली**

बेटी रहहु मात घर जब लौं । गुन विद्या ढंग सीखौ तब लौं ।
—रामप्रसाद तिवारी

कपट

(1) कबिरा तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत ।
जानो कली अनार की, तन राता मन स्वेत ।।

(2) हेत प्रीति से जो मिलै, ताको मिलिए धाय ।
अंतर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय ।। **—कबीर**

(1) हृदय कपट बर वेष धरि, बचन कहहिं गढ़ि छोलि ।
अब के लोग मयूर ज्यों, क्यों मिलिए मन खोलि ।।

(2) जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति की रीति भलि।
बिलग होइ रस जाय, कपट खटाई परत ही ॥ —तुलसीदास

रहिमन वहाँ न जाइये जहाँ कपट को हेत। —रहीम

(1) ऊपर दरसै सुमिल सी, अन्तर अनमिल आँक।
कपटी जन की प्रीति है, खीरा की सी फाँक ॥

(2) फेर न ह्वै है कपट सों जो कीजै व्यापार।
जैसे हाँडी काठ की चढ़ै न दूजी बार ॥ —वृन्द

कपड़ा

इस नारियल में गूदा नही, इस व्यक्ति की आत्मा कपड़ों में है।
—शेक्सपियर

कपड़ा अंग ढकने के लिए है, सर्दी-गर्मी से उसकी रक्षा के लिए है, उसे सजाने के लिए नही। —महात्मा गाँधी

जैसी धजा तैसा आदर। —एक हिन्दी लोकोक्ति

अपने को प्रसन्न करने के लिए भोजन करो, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए कपड़ा पहनो। —फ्रैंकलिन

भड़कीले कपड़ों से मनुष्य मूर्खों और स्त्रियों के अतिरिक्त और किसी का आदरपात्र नही बन सकता। —वाल्टर रैले

कपूत

वम सपूत एकै भलो, सौ कपूत भल नाहिं।
कौरव-पांडव कौ अजौं, जस-अपजस जग माहिं ॥ —रामचरित उपाध्याय

हज़ारों तारों से उतना प्रकाश नहीं होता जितना एक चाँद से।
—एक हिन्दी लोकोक्ति

कमज़ोर, कमज़ोरी

दैवोऽपि दुर्बल-घातकः (कमज़ोरों को भगवान् भी मारता है।)
—हितोपदेश

दुर्बल तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक नुक्ताचीनी किया करते हैं।
—स्वामी रामतीर्थ

कमज़ोर वह नहीं है जो कमज़ोर कहलाता है, बल्कि वह है जो अपने को कमज़ोर समझता है। **—महात्मा गाँधी**

तीखे और कड़वे शब्द कमज़ोर पक्ष की निशानी होते हैं। **—विक्टर ह्यूगो**

Frailty thy name is woman
कमज़ोरी : तुम्हारा नाम स्त्री है। **—शेक्सपियर**

कमजोरी का इलाज कमज़ोरी की चिन्ता करना नहीं बल्कि शक्ति का विचार करना है। **—स्वामी विवेकानन्द**

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों, सार भसम हो जाय।। **—कबीर**

कर

गोपालेन प्रजाधेनो वित्तदुग्धं शनैः शनैः।
पालनोत्पोषणाद् ग्राह्यं न्याय्यां वृत्ति समाचरेत् ।।

(जिस तरह ग्वाला गाय को धीरे-धीरे दुहता है और उसका पालन-पोषण भी करता रहता है, उसी प्रकार राजा को भी प्रजारूपी धेनु से धीरे-धीरे वित्तरूपी दूध निकालना चाहिए और उसका पालन-पोषण भी करना चाहिए। कर के रूप में प्रजा का वित्त ग्रहण कर उसके बदले उसके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।) **--अज्ञात**

चोर रात में लूटते है और कर वसूलने वाले दिन मे। **—जातक**

(1) बरखत हरखत लोग सब करखत लखत न कोय।
तुलसी भूपति भानु सम प्रजा भाग बस होय।।

(2) सुधा सुनाज कुनाज पल आम असन सम जानि।
सुप्रभु प्रजाहित लेहि कर सामादिक अनुमानि।।

(3) पाके पकये विटप दल उत्तम मध्यम नीच।
कर नर लहै नरेस त्यौ करि बिचारि मन बीच।। **—तुलसी**

करना (दे० 'कथनी-करनी', 'करनी')

(1) सुनिये सबही की कही, करिये स्वहित .बचार।
सर्वलोक राजी रहैं, सो कीजै उपचार।।

(2) जो करिये सो कीजिए, पहले करि निरधार।
पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलौ बिचार।।

(3) पीछे कारज कीजिए, पहिले यतन बिचार।
बड़े कहत है बाँधिये, पानी पहिले बार॥ —वृन्द

'मान' करहु जो करि सकहु, कथनी अकथ अपार।
कथे न कर कछु आवई, करनी करतब सार॥ —उसमान

वहुपि चे सहितं भासमानो
न तक्करो होति नरो पमत्तो।
गोपा व गावो गणय परेसं
न भागवा सामञ्जस्स होति॥

(धर्म-ग्रन्थों का कितना ही पाठ करे, लेकिन यदि प्रमाद के कारण मनुष्य उन धर्म-ग्रन्थों के अनुसार आचरण नहीं करता, तो दूसरों की गौवें गिनने वाले ग्वालों की तरह वह श्रमणत्व का भागी नहीं होता।) —धम्मपद

मनुष्य अपनी करनी से ही पहचाना जाता है। —हीगेल

करुणा

जब हमारे करुणा के नेत्र खुल जाते है तो व्यक्ति अपने को दूसरों में और दूसरों को अपने में देख सकने में समर्थ हो जाता है। —राजगोपालाचारी

(1) मनुष्य के अन्तःकरण में सात्विकता की ज्योति जगाने वाली यही करुणा है।

(2) जिस पर करुणा की जाती है वह बदले में करुणा करने वाले पर भी करुणा नहीं करता —जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है—बल्कि कृतज्ञ होता अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है।

(3) दुःख की श्रेणी में प्रवृत्ति के विचार से करुणा का उल्टा क्रोध है। क्रोध जिसके प्रति उत्पन्न होता है उसकी हानि की चेष्टा की जाती है। करुणा जिसके प्रति उत्पन्न होती है उसकी भलाई का उद्योग किया जाता है। (चिता०)

(4) दुःखी व्यक्ति जितना ही अधिक असहाय और असमर्थ होगा उतनी ही अधिक उसके प्रति हमारी करुणा होगी। (चिंता०)

(5) दूसरों के दुःख के परिज्ञान से जो दुःख होता है वह करुणा, दया आदि नामों से पुकारा जाता है। (चिंता०) —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आर्द्र कर देती है। —सुदर्शन

कर्ज़ दे० ऋण

कर्त्तव्य

अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
कर्तव्यमेव कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ।

(जो अकरणीय है उसे प्राण संकट में आने पर भी नहीं करना चाहिए, और जो करणीय है प्राण-संकट उपस्थित होने पर भी करना चाहिए।) —अज्ञात

(1) अधिकारों का सच्चा स्रोत कर्त्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्त्तव्य पूरे करें तो अधिकारों को ढूंढ़ने कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा।

(2) तेरी बुद्धि को और हृदय को जो सच मालूम हो वही तेरा कर्त्तव्य है।

—महात्मा गाँधी

कुछ न कुछ कर बैठने को ही कर्त्तव्य नहीं कहा जा सकता। कोई समय ऐसा भी होता है, जब कुछ न करना ही कर्त्तव्य माना जाता है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

(1) मनुष्य की सेवा मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है।

(2) कर्त्तव्यहीनता से कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, पर कर्त्तव्य से अकर्त्तव्य श्रेष्ठ है।

—विनोबा भावे

जो कर्त्तव्य से बचता है लाभ से भी वंचित रहता है। —थ्योडोर पार्कर

संसार में कर्त्तव्यहीन मनुष्य न तो पुरुष है न स्त्री। —रानी विदुला

चुपचाप अपना कर्त्तव्य पालन करते रहने से हम सरकार के मन पर जो असर डाल सकेंगे, वह सैकड़ों कलमों या जबानों से भी नहीं डाल सकेंगे।

—सरदार पटेल

(1) बदनामी के डर से, जो आदमी अपने कर्त्तव्य से मुँह फेर ले, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं। सूर्य को सिद्ध करने के लिए प्रकाश की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(2) जब हम अपने किसी कर्त्तव्य से मुंह मोड़ते हैं तो दोष से बचने के लिए ऐसी प्रबल युक्तियाँ निकालते हैं कि कोई मुँह न खोल सके। उस समय हम संकोच छोड़कर अपने सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी बातें कह डालते हैं कि जिनके गुप्त रहने ही में हमारा कल्याण है। —प्रेमचन्द

कर्म

मेरे दायें हाथ में कर्म है और बायें हाथ में जय। -अथर्ववेद

मन:कृतं कृतं मन्ये न शरीरकृतं कृतम् ।
येनैवालिंगिता कान्ता तेनैवालिंगिता सुता ।।

(मन से किया गया कर्म ही यथार्थ होता है, शरीर से किया गया नही। जिस शरीर से पत्नी को गले लगाया जाता है उसी शरीर से पुत्री को भी गले लगाते हैं, पर मन का भाव भिन्न होने के कारण दोनों में अन्तर रहता है।)

—अज्ञात

(1) तस्मादसक्त: सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष: ।।

(फल की इच्छा छोडकर निरन्तर कर्त्तव्य-कर्म करो । जो फल की अभिलाषा छोडकर कर्म करते हैं उन्हें अवश्य मोक्ष-पद प्राप्त होता है।)

(2) संन्यास: कर्मयोगश्च नि:श्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ।।

(कर्मों का त्याग और योग दोनों मोक्ष देने वाले है। उनमे भी कर्म संन्यास मे कर्मयोग बढ़कर है।)

(3) न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै: ।।

(किसी अवस्था में कोई भी प्राणी शारीरिक, मानसिक व वाचिक कर्म किये बिना एक क्षण भी नही रह सकता, क्योंकि प्रकृति के राग-द्वेषादि गुण के वश होकर सब प्राणियों को कर्म करना ही पड़ता है।)

—गीता

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च ।
स्वं कालं नातिवर्तन्ते तथा कर्मपुरा कृतम् ।।

(जैसे फूल और फल किसी की प्रेरणा के बिना ही अपने समय पर वृक्षों मे लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किए हुए कर्म भी अपने फल-भोग के समय का उल्लंघन नही करते।)

—महाभारत

(1) काम काम सब कोई कहै, काम न चीन्है कोय ।
जेती मन की कल्पना, काम कहावै सोय ।।

(2) करता था सो क्यों किया, अब करि क्यों पछिताय ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते खाय ।।

—कबीर

(1) करम प्रधान बिस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा ।।

(2) कर्म प्रधान सत्य कह लोगू।

(3) करै जो कर्म पाव फल सोई।

(4) जीव कर्मवश दुख सुख भागी।

—तुलसी

(1) अस करनी तू करि रतन सुजन सराहैं तोहि ।

(2) जो जाको करतब सहज रतन करि सकै सोय ।
पावा उचरतु ओंठ सों हाहा गल सों होय ।। —**रत्नावली**

कर्म के बिना कोई भी दाता नही । —**ज्ञानेश्वरी**

(1) बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय ।।
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै ।
खान-पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ।।
कह गिरिधर कविराय दुख कछु टरत न टारै ।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारै ।।

(2) बैरी तेरो और नहिं बैरी इक बदफेल

(3) साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोइ ।
तब लग मन में राखिये जब लग कारज होइ ।।
जब लग कारज होइ भूलि कबहूँ नहिं कहिए ।
दुरजन हँसै न कोय आप सियरे ह्वै रहिए ।। —**गिरिधर कविराय**

(1) अपनी पहुँच बिचारि कै करतब करिए दौर ।
तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर ।।

(2) सुनिये सब ही की कही करिये स्वहित विचार ।
सर्व लोक राजी रहै सो कीजै उपचार ।। —**वृन्द**

(1) कर्म वह आईना है, जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है । अतएव हमें कर्म का एहसानमन्द होना चाहिए ।

(2) कर्म ज्ञान का ईंधन है ।

(3) काम का आरंभ न करो और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोड़ो । —**विनोबा भावे**

निष्काम कर्म ईश्वर को ऋणी बना देता है, और ईश्वर उसको सूद सहित वापस करने के लिए बाध्य हो जाता है । —**स्वामी रामतीर्थ**

जो तुम दूसरों से चाहते हो उसे स्वयं करो । —**रामकृष्ण परमहंस**

अमल से ज़िंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी,
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है । —**इक़बाल**

(नूरी—प्रकाश का भागी । नारी—आग का भागी ।)

जब मुझे सूझ नहीं पड़ता कि करूँ या न करूँ तो मैं हमेशा करता हूँ।

—नेल्सन

अगर कोई काम नहीं करता तो उसे खाना भी नहीं चाहिए। —बाइबिल

(1) किये हुए कर्म को अनकिया नहीं किया जा सकता।
(2) कर्म बोलता है। —शेक्सपियर

अभाग्य से हमारा धन, नीचता से हमारा यश, मुसीबत से हमारा जोश, रोग से हमारा स्वास्थ्य, मृत्यु से हमारे मित्र हमसे छीने जा सकते है; किन्तु हमारे कर्म मृत्यु के बाद भी हमारा पीछा करेंगे। —कोल्टन

हर अच्छा काम पहले असम्भव दीखता है। —कार्लाइल

जीवन का महान् उद्देश्य ज्ञान नही कर्म है। —हक्सले

हे कर्म, तुम्हीं मेरी कामना हो, मेरी प्रसन्नता हो, मेरे आनन्द हो, मुझे दुःखों से मुक्त करना भी तुम्हारे ही हाथ में है। —एलेक्जेंडर ड्यूमा

दिल की कोई भी ऐसी गुप्त बात नहीं होती, जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों। —मोलियर

किसी मनुष्य के सही विचारों को जानने के लिए उसके शब्दों से भी अधिक उसके कर्मों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। —डेकार्ट्स

(1) किसी कार्य को ख़ूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए।
(2) मैंने कर्म से ही अपने को कई गुना कर लिया है। —नैपोलियन

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे अच्छी व्याख्या है। —लॉक

कर्म सदैव सुख न ला सके परन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता।

—डिज़रायली

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो विश्वास न करो—भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना है उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो। —लांगफ़ेलो

कर्मनिष्ठ लोग शायद ही कभी उदास रहते हों—कर्मनिष्ठता और उदासी दोनों साथ-साथ नहीं रहतीं। —बोवी

"फलासक्ति छोड़ो और कर्म करो", "आशारहित होकर कर्म करो", "निष्काम होकर कर्म करो" यह गीता की वह ध्वनि है, जो भुलायी नही जा

सकती। जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढ़ता है। —**महात्मा गाँधी**

(1) व्यक्ति के विचार और कर्म मे जितना ज़्यादा परस्पर सम्बन्ध और समन्वय होगा, वे उतने ही ज्यादा प्रभावशाली होंगे, और उतने ही ज्यादा आप सुखी होंगे।

(2) बिना कर्म के सिद्धांत दिमागी ऐयाशी है, बिना सिद्धांत के कार्य अन्धे की टटोल है।

(3) कोई काम गुप्तरूप मे न करो, जिसे दूसरों से छिपाने की जरूरत हो।

(4) मैंने बहुत दिनों से कर्म की पुकार सुनी है, ऐसे कर्म की, जो विचार मे असंपृक्त नही, बल्कि उससे धारावत् प्रवाहित होता है। और जब कभी, किसी विरले क्षण मे, दोनों के बीच पूर्ण सामंजस्य रहा है, अर्थात् जब विचार कर्म मे परिणत होकर उसमें अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ है; और कर्म फिर विचार को उद्दीप्त करके सम्यक् बोध का कारण बना है, तब अस्तित्व के उस क्षण में मैंने जीवन मे एक विशेष परिपूर्णता और गहन सप्राणता का अनुभव किया है। (भारत की खोज)

(5) संसार में सबसे सुखी व्यक्ति वही है, जिसके विचार और कर्म मे पारस्परिक सामंजस्य हो।

(6) अपने बारे मे बड़ी-बड़ी बाते बनाने की आदत डाल लेना आसान है, लेकिन हम जानते है कि कभी-कभी बड़े अच्छे शब्द निकृष्टतम व्यक्तियों की जबान पर चढ़ जाते है और उनका कुछ भी अर्थ नही होता। हम देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की चर्चा करते हैं और बहुधा तथाकथित देशभक्त नीचतापूर्ण कार्यों मे भाग लेते है। इसलिए इस बात का कुछ अधिक महत्त्व नहीं है कि मै कितनी सुन्दर भाषा का प्रयोग करता हूँ। अंतिम कसौटी कर्म है। (ससद में भाषण, 1951)

(7) कर्म के बिना विचार गर्भपात के समान है, और विचार के बिना कर्म निपट मूर्खता! (भाषण, 1952) —**जवाहरलाल नेहरू**

अगर दाढ़ी ही सब कुछ होती तो बकरा शेख़ हो गया होता।

—**एक डेनिश कहावत**

शरीर के लिए काम ढूंढ़ लो मन को खुशी आपसे आप मिल जायगी।

—**एक अरबी कहावत**

कर्मों की ध्वनि शब्दों से कही ऊँची होती है। (Action speaks louder than words.) —**एक अंग्रेजी कहावत**

आप काज महाकाज —एक हिंदी लोकोक्ति

अधूरा काम और अपराजित शत्रु दोनों अनबुझी आग हैं और कभी भी आकर धर दबाएँगे। —चाणक्य

कर्मों में बात करो, शब्दों का समय चला गया। —ह्विटर

कार्य की अधिकता से घबराने वाला कभी भी बड़ा काम नहीं कर सकता। —अब्राहम लिंकन

कर्म से पुरुष स्त्री हो जाता है और स्त्री पुरुष। —मृच्छकटिक (शूद्रक)

वह करो जिसे करके पछताना न पड़े। —धम्मपद

कर्म ही सबसे बड़ा शिक्षक है। —सैमुअल स्माइल

कर्मठ (दे० कर्म)

जिंदगी कर्मठ जीवन के लिए है, उसी से तेरा मूल्य आँका जा सकता है। —फिचटे

कर्मफल

मनुष्य अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगता है। —नारद पुराण

आकाश मे फेंकी हुई कीचड़ फेंकने वाले के ऊपर जरूर पड़ती है। —कथा सरित्सागर

यथा बीजं तथा निष्पत्तिः (जैसा बीज वैसा फल) —चाणक्य सूत्र

यः कुरुते स भुंक्ते। (जो कर्म करता है, वही उसका फल भी भोगता है।) —एक संस्कृत लोकोक्ति

करता था सो क्यों किया अब कर क्यूँ पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय॥ —कबीर

कल

न श्वः श्वमुपासीत को हि मनुष्यस्य श्वो वेद। (कल के भरोसे मत बैठो। मनुष्य का कल भला कौन जानता है।) —ऋग्वेद

आज ही विवेकी बन, कदाचित कल का सूर्य तू देख ही न पावे। —पाइथागोरस

आज नहीं कल—यह आलसियों का गीत है। —बेकन

श्वो मयूरादद्य कपोतो वर: (कल के मोर से आज का कबूतर अच्छा)
—चाणक्य

न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति।
अत: श्व: करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥
(यह कोई नहीं जानता है कि कल किसको क्या होगा, अत: बुद्धिमान् को कल जो करना हो सो आज ही कर लेना चाहिए।) —अज्ञात

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करोगे कब्ब॥ —कबीर

कल कभी नहीं आता। —एक अँग्रेजी लोकोक्ति

जो कार्य तुम आज कर सकते हो उसको कल पर कदापि मत छोड़ो।
—फ्रैंकलिन

हम अक्सर अपने बीतने वाले कल से अपने आने वाले कल का ऋण चुकाने के लिए उधार लेते हैं। —खलील जिब्रान

क़लम

विश्व में दो ही शक्तियाँ है, तलवार और क़लम, और अंत मे तलवार सदा ही क़लम से हार जाती है। —नैपोलियन बोनापार्ट

क़लम ईश्वर से भी अधिक शक्तिशाली है। आख़िर ईश्वर को विभिन्न देशों और संस्कृतियों में किसने बनाया है—क़लम ने ही तो। —भोलानाथ तिवारी

क़लम तलवार से अधिक बलवान है। —बुलवर लिटन

कला (दे० कलाकार भी)

(1) जीवन में सबसे बड़ी कला तपस्या है।

(2) भारतीय कलाकार ने अपनी कला को मन्दिरों में और गुफाओं में प्रकट करके सार्वजनिक बना दिया है।

(3) जो कला आत्मा को आत्म-दर्शन करने की शिक्षा नहीं देती, वह कला ही नही है।

(4) कला जो आत्मा को सत्यदर्शन करने की शिक्षा नही देती, वह कला नहीं है।

(5) कला, कला के लिए कहना व्यर्थ है, कला तो जीवन के लिए (उपयोगी) होनी चाहिए।

(6) जो कला जनता के हित में न होकर केवल गिने-चुने भाग्यवानों के लिए होती है, वह निरुपयोगी है।

(7) कला मानव में दैवी अभिव्यक्ति है।

(8) कला वही है, जो नयनाभिराम और कर्णतृप्ति ही न दे. बल्कि आत्मा को भी ऊपर उठाए।

(9) कला वही है, जो जीवन में उतारी जा सके।

(10) हिन्दुस्तान की कला में कल्पना भरी हुई है; यूरोप की कला में प्रकृति का अनुकरण है।

(11) कला मुझे उसी अंश तक स्वीकार्य है, जिस अंश तक वह कल्याणकारी है।

(12) जिसमे आत्मा का बिलकुल ही अभाव हो, वह कला नही होगी, वह केवल कृति ही बनकर रह जाएगी और क्षणभंगुर होगी।

(13) जीवन समस्त कलाओं से श्रेष्ठ है। मैं तो समझता हूँ कि जो अच्छी तरह जीना जानता है, वही सच्चा कलाकार है।

(14) जीवन ही कला है।

(15) कला जीवन की दासी है और उसका काम यही है कि वह जीवन की सेवा करे।

(16) सर्वोत्कृष्ट कला व्यक्तिभोग्या नही होगी और कला जब बाह्य साधनों से अधिक से अधिक मुक्त होगी, तभी वह सर्वभोग्या बन सकेगी।···इस निर्दोष सर्वभोग्या कला का मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में बहुत बड़ा स्थान है।

(17) बाह्य साधनों पर अथवा इन्द्रिय-ज्ञान पर आधारित कला में जितनी आत्मा होती है, उतने ही अंशों में वह अमृतकला के समान बनती है।

(18) जो अंतर को देखता है, बाह्य को नही, वही सच्चा कलाकार है।

—महात्मा गांधी

समस्त कला अनुकरण-मात्र है। —अरस्तू

कला का सत्य जीवन की परिधि में सौंदर्य के माध्यम द्वारा व्यक्त अखंड सत्य है। —महादेवी वर्मा

(1) इधर हमारी हिंदी में भी काव्य-समीक्षा के प्रसंग में 'कला' शब्द की बहुत अधिक उद्धरणी होने लगी है। मेरे देखने में तो हमारे काव्य-समीक्षा-क्षेत्र से जितनी जल्दी यह शब्द निकले उतना ही अच्छा। इसका जड़ पकड़ना ठीक नही। (काव्य में अभिव्यंजनावाद)

(2) 'कला कला ही के लिए' वाली बात को जीर्ण होकर मरे हुए बहुत दिन

हुए। एक क्या कई क्रोचे उसे फिर जिला नहीं सकते। (वही)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

मक्सूदे हुनर सोज़े हयाते अबदी है,
यह एक नफ़स या दो नफ़स मिस्ले शरर क्या ?
शायर की नवा हो कि मुग़न्नी का नफ़स हो,
जिससे चमन अफ़मुर्दा हो वह बादे सहर क्या ?

(कला का उद्देश्य जीवन को स्थायी गर्मी प्रदान करना है। चिनगारी के समान एक या दो क्षण की गर्मी कोई चीज़ नहीं। कवि की वाणी हो या गायक की तान दोनों व्यर्थ हैं, यदि वे बुझे हृदय को सदा के लिए जीवन की गर्मी न प्रदान करें। वह प्रभात-समीर क्या जिससे चमन मुरझा जाए !) —इक़बाल

(1) कला का रहस्य भ्रांति है; पर वह भ्रांति जिस पर यथार्थ का आवरण पड़ा हो।

(2) कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दीखती तो यथार्थ है पर यथार्थ होती नहीं। उसकी खूबी यही है कि वह यथार्थ मालूम हो।

(3) कला का सबसे सुन्दर रूप छिपाव है, दिखाव नहीं।

(4) कला केवल मनोभावों के व्यक्तीकरण का नाम है; चाहे उन भावों से व्यक्ति या समाज पर कैसा ही असर क्यों न पड़े। —प्रेमचंद

जो असुन्दर है, जो अनैतिक है, जो अकल्याण है, वह किसी भी तरह कला नहीं है, धर्म नहीं है। कला कला के लिए, की उक्ति भी किसी तरह सत्य नहीं है।

—शरत्चंद्र

(1) कला में वही यथार्थ है जिसमें संबद्ध और संपृक्त हुआ जा सके।

(2) कला अपर्याप्तता के प्रति विद्रोह है। —अज्ञेय

(1) भावुकता और कल्पना ही मनुष्य को कला की ओर प्रेरित करती है। इसी में उसके कल्याण का रहस्य है, पूर्णता है। (कामना)

(2) 'कला' शब्द का भारतीय व्यवहार पाश्चात्य व्यवहार से भिन्न है। यहाँ कला केवल छंद-रचना के अर्थ में व्यवहृत हुई, इसीलिए काव्य नहीं समस्यापूर्ति की गणना कला में की गई। काव्य केवल 'समस्यापूर्ति' नहीं है, समस्यापूर्ति या छंद तो उसका वाहन मात्र है। (काव्य और···पृ० 16) —जयशंकर प्रसाद

प्रकृति ईश्वर का प्रकट रूप है, कला मनुष्य का। —लांगफ़ैलो

कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य है। —गेटे

प्राप्त अनुभूति को जागरित कर रेखा, रंग, स्वर या शब्दों आदि के द्वारा

इस प्रकार व्यक्त करना जिससे श्रोता, पाठक या दर्शक वैसी ही अनुभूति प्राप्त कर सके, कला है। —टालस्टाय

कला ईश्वर की पौत्री है। —दांते

कला का शत्रु अज्ञान है। —बेन जानसन

कला प्रकृति द्वारा देखा हुआ जीवन है। —एमिल ज़ोला

कला अनुकरण नहीं करती, परंतु व्याख्या करती है। —मेजिनी

सच्ची कला दैवी सिद्धि का केवल प्रतिबिम्ब होती है, ईश्वर की पूर्णता की छाया होती है। —माइकेल एंजिलो

(1) कला विचार को मूर्ति में परिणत करती है।

(2) कला एक ईर्ष्यालु स्वामिनी है। —एमर्सन

कला कला के लिए है। —विकटर कोज़न

सम्पूर्ण कला केवल प्रकृति का ही अनुकरण है। —सेनेका

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी। —टैगोर

(1) प्रत्येक राष्ट्र के गुणावगुण सदा उसकी कला में अंकित रहते हैं।

(2) जब लगन और प्रवीणता परस्पर मिलकर कार्य करें तो एक अति उत्तम कला की अपेक्षा करो।

(3) मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रोके नहीं रुकता, तभी वह कला के रूप में फूट पड़ता है। —रस्किन

(1) कला में अतुल शक्ति है। वह मरे को भी अमरता प्रदान करती है। राम को वाल्मीकि और तुलसी की कला ने ही अमर किया है।

(2) जो सुंदर है वही कला है और जो वास्तविक रूप में कला है वह अवश्य सुंदर होगी। —भोलानाथ तिवारी

कलाकार (दे० कला)

(1) जो अंतर को देखता है बाह्य को नहीं, वही सच्चा कलाकार है।

(2) जिसने उत्तम जीना जाना, वही कलाकार है।

(3) भारतीय कलाकारों ने अपनी कला को मंदिरों और गुफाओं में प्रकट करके सार्वजनिक कर दिया है। —महात्मा गांधी

रचनात्मक कार्य करने वाले कलाकारों के अल्पसंख्यक वर्ग—और कलाकारों का वर्ग हमेशा अल्पसंख्यक ही होता है—और बहुसंख्यक जनता के बीच सीधा संबंध रहना चाहिए। यदि यह संबंध टूट जाए तो संस्कृति अनिवार्यतः ह्रासोन्मुख होगी, समाज में एकता का अभाव होगा और अंततोगत्वा कलाकारों का अल्पसंख्यक वर्ग भी अपनी रचनात्मक शक्तियों से वंचित होकर पंगु और निष्क्रिय हो जाएगा अथवा किसी नई रचनात्मक सजीव शक्ति के लिए, जो उसी समाज में से उत्पन्न होगी, जगह खाली कर देगा। (भारत की खोज)

—**जवाहरलाल नेहरू**

(1) निर्माण युग में जो कलासृष्टि अमृत की संजीवनी देकर ही सफल हो सकती थी वही पतन युग में मदिरा की उत्तेजना-मात्र बनकर विकासशील मानी गई।

(2) जब समाज कलाकार के किसी भी स्वप्न का मूल्य नहीं आँकता, किसी भी आदर्श को जीवन की कसौटी पर परखना स्वीकार नहीं करता, तब साधारण कलाकार तो सब कुछ धूल में फेंककर रूठे बालक के समान क्षोभ प्रकट कर देता है और महान समाज की उपस्थिति ही भुलाने लगता है।

(3) कलाकार तो जीवन का ऐसा संगी है जो अपनी आत्मकहानी में, हृदय-हृदय की कथा कहता है और स्वयं चलकर पग-पग के लिए पथ प्रशस्त करता है। काँटा चुभाकर काँटे का ज्ञान तो संसार दे ही देगा परंतु कलाकार बिना काँटा चुभाने की पीड़ा दिये हुए ही उसकी कसक की तीव्र मधुर अनुभूति दूसरे तक पहुंचाने में समर्थ है।

(4) कलाकार के निर्माण का लक्ष्य छिपा रहता है।

(5) कलाकार न किसी को आदेश दे सकता है, न उपदेश और यदि देने की नासमझी करता भी है तो दूसरे उसे न मानकर समझदारी का परिचय देते हैं।

—**महादेवी वर्मा**

प्रत्येक कलाकार आरंभ में नौसिखिया होता है। —**एमरसन**

कलाकार प्रकृति का प्रेमी है, अतएव वह उसका दास भी है और स्वामी भी।

—**टैगोर**

कलाकार के लिए कला की अंतःशक्ति के उद्बोध के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण विभूति है कला के प्रति एक पवित्र आदर भाव। (शेखर) —**अज्ञेय**

कलाकार अपनी प्रवृत्तियों से भी विशाल है। उसकी भाव-राशि अथाह एवं अचिन्त्य है। — **मैक्सिम गोर्की**

कलियुग

द्विज लंपट, कपटी, जती, अति कायर महिपाल।
निपढ़े कवि, रोगी बयद, सब भिखारि कलि-काल ॥

—रामचरित उपाध्याय

कलियुग में मनुष्यों की स्वाभाविक रुचि अधर्म और तामसिक विचारों की हो जाती है। **—मत्स्यपुराण**

(1) मन, क्रम, बचन लबार तेइ बक्ता कलिकाल महुँ।
(2) कलि कर एक पुनीत प्रतापा।
मानस पुन्य होइ नहि पापा। **—तुलसी**

कूर भये कुँवर, मजूर भये मालदार, सूर भये गुपत, असूर भये जबरे।
दाता भये कृपन, अदाता कहै दाता हम, धनी भये निधन, निधन भये गबरे ॥
साँचन की बात न पत्यात कोऊ जग माँझ, राजदरबारन बुलैये लोग लबरे।
भनत 'प्रबीन' अब छीन भई हिम्मत, सो कलयुग अदलि बदलि डारे सिगरे ॥

—प्रबीन कवि

कल्पना

मानसिक रूप-विधाना का नाम ही संभावना या कल्पना है। (चि० 1)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(1) जिस व्यक्ति मे कल्पना है पर विद्वत्ता नही, उसके पंख है परन्तु पैर नही।

(2) कल्पना आत्मा का नेत्र है। **—जोबर्ट**

(1) 'कल्पना' काव्य का बोध-पक्ष है। 'कल्पना' मे आई हुई रूप-व्यापार-योजना का कवि या श्रोता को अन्तःसाक्षात्कार या बोध होता है। (चिन्ता० 1)

(2) कल्पना के दो प्रकार—(1) नाटकीय कल्पना, (2) प्रगीतात्मक या अंतर्भावात्मक कल्पना। तदनुसार कवि लोग या तो सापेक्ष दृष्टि के होते हैं या निरपेक्ष दृष्टि के। (र० मी०)

(3) कल्पना दो प्रकार की होती है—विधायक और ग्राहक। कवि में विधायक कल्पना अपेक्षित होती है और श्रोता या पाठक मे अधिकतर ग्राहक। (चिन्ता० 1)

(4) काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है। (चिन्ता० 1)

(5) काव्य-वस्तु का सारा रूप-विधान इसी की क्रिया से होता है। (चिन्ता० 1)

(6) भाषा-शैली को अधिक व्यंजक, मार्मिक और चमत्कारपूर्ण बनाने में भी कल्पना ही काम करती है। कल्पना की सहायता यहाँ भाषा की लक्षणा और व्यंजना नाम की शक्तियाँ करती हैं। (चिन्ता० 1)

(7) मानसिक रूप-विधान का नाम ही संभावना या कल्पना है। (चिन्ता० 1) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

चित्त जिस रूप की कल्पना करता है, वैसा हो जाता है। आज जैसा वह है, वैसी उसने कल्पना की थी। —योगवाशिष्ठ

कल्पना विश्व पर शासन करती है। —नैपोलियन

पागल, प्रेमी और कवि इनकी कल्पनाएँ एक-सी होती है। —शेक्सपियर

असल में सत्य-घटना भाव-स्रोत को पत्थर की तरह दबा रखती है, कल्पना ही उसका मार्ग खोल देती है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

भूत या प्रेत का जामा उन्हें धारण करना पड़ता है जो अपनी ही कल्पनाओं के गुलाम होते हैं। —स्वामी रामतीर्थ

कल्पना के मोहक और प्रिय प्रतीत होते हुए भी इसकी यथार्थ बातें सदा प्रिय नहीं होतीं। —रस्किन

कवि (दे० कविता, काव्य)

कविर्मनीषी परिभूः स्वयभू।
यथातथ्यतोर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्य. सभाभ्य.।

(कवि मन का स्वामी, विश्व-प्रेम से भरा हुआ, आत्मनिष्ठ, यथार्थभाषी और शाश्वत काल पर दृष्टि रखने वाला होता है।) —ईशावास्योपनिषद्

अपार काव्य-संसार में कवि ही ब्रह्मा है। उसको जैसा रुचिकर लगता है, उसी प्रकार इस विश्व को वह परिवर्तित कर देता है। —अग्निपुराण

(1) तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो ह्यर्थे विनापीश्वराः।
कुत्स्याः स्युः कुपीक्षका न मणयो यैरर्घतः पातिताः॥

(कवि लोग बिना धन के ही श्रेष्ठ हैं, और वह राजा उस जौहरी के समान मूर्ख है जो मणि को न पहचान कर उसका मूल्य घटाता है।)

(2) जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्॥

(रस परिपाक में सिद्धहस्त वे सुकृती कवीश्वर ही सर्वोच्च हैं, जिनके यशः शरीर को बुढ़ापे या मृत्यु का भय नहीं है।) —भर्तृहरि

कविः करोति काव्यानि स्वादु जानन्ति पण्डिताः।
सुन्दर्या अति लावण्यं पतिर्जानाति नो पिता॥

(कवि काव्य रचता है पर स्वाद पंडित जानता है। जैसे, सुन्दरी स्त्री के लावण्य को उसका पति जानता है, पिता नहीं।) —अज्ञात

कवि को प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनों की समान रूप से आवश्यकता है। इन दोनों से युक्त कवि ही कवि है। —राजशेखर

कस्तत्वं भोः कविरस्मि काप्यभिनवा सूक्तिः सखे पठ्यतां
त्यक्ता काव्यकथैव सम्प्रति मया कस्मादिदं श्रूयताम्।
यः सम्यग्विविनक्ति दोषगुणयोः सारं स्वयं सत्कविः
सोऽस्मिन्भावक एव नास्त्यथ भवेद्दैवान्न निर्मत्सरः॥

(तुम कौन हो? मै कवि हूँ। सखे! कोई नयी सूक्ति पढ़ो। मैंने तो कविता की बात ही छोड़ दी। क्यों? सुनो, जो सत्कवि कविता के गुण और दोष के तत्त्वों को स्वयं समझ सकता है, वह उसका आलोचक नही है। और यदि है भी, तो वह ईर्ष्या-रहित नही है।) —अज्ञात

हमारी अन्तस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने का सामर्थ्य जिसमें होता है वह कवि है। —महात्मा गाँधी

(1) जिसका आनंद बाहरी जगत् में मर्यादित है वह कवि नही है। कवि आत्मनिष्ठ है, कवि स्वयंभू है।

(2) पामर दुनिया विषय-सुख में झूमती है, कवि आत्मानंद में डोलता है। लोगों को भोजन का आनंद मिलता है, कवि को आनंद का भोजन मिलता है।

(3) कवि विश्व-सम्राट् होता है, कारण वह हृदय-सम्राट् होता है।

(4) कवि माने मन का मालिक। जिसने मन नहीं जीता, वह ईश्वर की सृष्टि का रहस्य नहीं समझ सकता।

(5) पत्थर में ईश्वर के दर्शन करना काव्य का काम है। इसके लिए व्यापक प्रेम की आवश्यकता है। ज्ञानेश्वर महाराज भैंसे की आवाज में भी वेद श्रवण कर सके, इसलिए वे कवि हैं। —विनोबा

(1) ईश्वरीय सौन्दर्य को, प्राकृतिक कविता को, भाषा की छटा द्वारा संसार को दरसाना कवि का कर्त्तव्य है।

(2) संसार के पदार्थों और घटनाओं को सभी देखते हैं, परन्तु जिन आँखों से उन्हें कवि देखता है वे निराली ही होती हैं। —पुरुषोत्तमदास टंडन

(1) कवि वह सँपेरा है जिसकी पिटारी में सर्पों के स्थान में हृदय बन्द होते हैं।

(2) धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहाँ जरा भी आकर्षण नही है। उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ, मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं। जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यों से केवल विनोद करता है कवि उनमें लय हो जाता है। —**प्रेमचन्द**

मुझको शायर न कहो 'मीर' कि साहब मैंने
दर्दोगम किये जमा तो दीवान किया। —**मीर**

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान॥ —**पंत**

सत्कवि अतीत का गौरव-गायक, वर्तमान का चित्रकार और भविष्य का सूक्ष्म द्रष्टा होता है। —**एक रूसी आलोचक**

(1) कवि का लक्ष्य 'बिम्ब-ग्रहण' कराने का रहता है, केवल 'अर्थ-ग्रहण' कराने का नहीं। (चिन्ता० 2)

(2) कवि की दृष्टि तो सौन्दर्य की ओर जाती है, वह चाहे जहाँ हो—वस्तुओं के रूप-रंग में अथवा मनुष्यों के मन, वचन और कर्म में। (चिन्ता० 1)

(3) कवि की पूर्ण भावुकता इसमें है कि वह प्रत्येक मानवस्थिति में अपने को डालकर उसके अनुरूप भाव का अनुभव करे। (गो० तु०)

(4) कवि को अपने कार्य में अन्तःकरण की तीन वृत्तियों से काम लेना पड़ता है—कल्पना, वासना और बुद्धि। इनमें से बुद्धि का स्थान बहुत गौण है। (र० मी०)

(5) कवि लोग अर्थ और वर्ण-विन्यास के विचार से जिस प्रकार शब्द-शोधन करते हैं, उसी प्रकार अधिक मर्मस्पर्शी और प्रभावोत्पादक दृश्य उपस्थित करने के लिए व्यापार-शोधन भी करते है। (गो० तु०)

(6) किसी काल में जो सैकड़ों कवि प्रसिद्ध होते है उनमें सच्चे कवि—ऐसे कवि जिनकी तीव्र अनुभूति ही वास्तव में कल्पना को अनुकूल रूप-विधान में तत्पर करती है—दस-पाँच ही होते हैं। (चिन्ता० 1)

(7) तार्किक जिस प्रकार श्रोता को अपनी विचार-पद्धति पर लाना चाहता

है उसी प्रकार कवि अपनी भाव-पद्धति पर। (भ्र० गी० सा०)

(8) साधारण के बीच में यथास्थान असाधारण की योजना करना सहृदय और कलाकुशल कवि का ही काम है। साधारण-असाधारण अनेक वस्तुओं के मेल से एक विस्तृत और पूर्ण चित्र संघटित करने वाले ही कवि कहे जाने के अधिकारी हैं। (चिन्ता० 2)

(9) किसी कवि का यश उसकी रचनाओं के परिमाण के हिसाब से नहीं होता, गुण के हिसाब से होता है। (हि० सा० इ०)

(10) अपनी व्यक्तिगत सत्ता की अलग भावना से हटाकर निज के योगक्षेम के संबंध से मुक्त करके, जगत् के वास्तविक दृश्यों और जीवन की वास्तविक दशाओं में जो हृदय समय-समय पर रमता रहता है, वही सच्चा कवि-हृदय है। (गो० तु०)

(11) अनंत रूपों में प्रकृति हमारे सामने आती है। कहीं मधुर, सुसज्जित या सुन्दर रूप में, कहीं रूखे, बेडौल आदर्श रूप में, कहीं भव्य, विशाल या विचित्र रूप में, कहीं उग्र, कराल या भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उसके इन सब रूपों में लीन होता है, क्योंकि उसके अनुराग का कारण अपना खास सुख भोग नहीं, बल्कि चिर साहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना है। (र० मी०)

(12) सच्चा कवि वही है जिसे लोक-हृदय की पहचान हो, जो अनेक विशेषताओं के बीच मनुष्य जाति के सामान्य हृदय को देख सके। (चिन्ता० 1)

(13) कवि सौन्दर्य से प्रभावित रहता है और दूसरों को भी प्रभावित करना चाहता है।

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(1) जिसका लगना सबको लगे वह कवि है, जिसका लगना सिर्फ उसे ही लगे औरों को नहीं, वह पागल है। लगने-लगने में भेद है। जो सबको लगे वह अर्थ है जो एक को लगे वह अनर्थ है। अर्थ सामाजिक होता है।

(2) कवि जिस समय कविता करता है, वह अलौकिक पुरुष बन जाता है।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

(1) कवि लिखने के लिए तब तक क़लम नहीं उठाता जब तक कि उसकी स्याही प्रेम की आहों में सराबोर न हो।

(2) सौन्दर्य-मद में झूमती हुई कवि की दृष्टि स्वर्ग से भूलोक और भूलोक से स्वर्ग तक विचरती रहती है।

(3) कवि की तन्मय आँखें पृथ्वी से आकाश और आकाश से पृथ्वी की ओर डोलती रहती हैं। ज्यों-ज्यों कल्पना अपरिचित वस्तुओं का निर्माण करती जाती है कवि की लेखनी उनकी रूपरेखा चित्रित करती रहती है, वह इन्हीं मानसिक बुद-बुदों को साकार बनाकर, उन्हें प्रतिष्ठित कर, उनका नामकरण करती चलती है।

पागल, प्रेमी तथा कवि कल्पना से ही समन्वित हैं **—शेक्सपियर**

गौरवपूर्ण काव्य-रचना करने के लिए यह आवश्यक है कि कवि का जीवन स्वयं एक सुन्दर कविता की प्रतिमा स्वरूप हो। **—मिल्टन**

(1) कवि हमें हिला देता है और पिघला देता है, फिर भी हम नही जानते कि कहाँ से और क्यों कर ?

(2) कवि वह बुलबुल है जो अन्धकार में बैठकर अपने ही एकान्त को मधुर ध्वनियों से प्रसन्न करने के लिए गाता है। **—शैली**

जो किसी लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिक समाज का महान् कवि बनने की महत्त्वाकांक्षा रखता है, उसे सबसे पहले एक छोटा-सा बच्चा बनना पड़ेगा।

—मैकाले

बिना सभ्य मनुष्य हुए कोई अच्छा कवि नहीं हो सकता।

—बेन जानसन

कवि देश काल की परिवर्तनशील वस्तुओं से विरक्त हो अक्षय तथा सार्वलौकिक भावनाओं का विवेचन करता है। **—सैमुएल जॉनसन**

(1) कवि अपनी कविता से मानव वर्ग को सम्बोधित करता है। उसमें भावों से प्रभावित होने की शक्ति, करुणा, मानव-हृदय, ज्ञान तथा एक व्यापक आत्मा होती है। वह अपनी विचार-तरंगों से आनन्दित रहता है और स्वयं चिंतन में तल्लीन होकर उस व्यापक शक्ति का अनुभव करता है, जिस शक्ति का अंश उसमें भी निहित है। साधारण मनुष्यों के विपरीत उसमें अनुभव तथा अभिव्यक्ति की शक्ति अधिक रहती है।

(2) मानव-हृदय तथा बाह्य संसार के सम्पर्क की क्रिया तथा प्रतिक्रिया पर कवि विचारपूर्वक सुख-दुख के मिश्रित क्षणों का चिन्तन करता है। इसी चिन्तन से तथा अपनी व्यापक सहानुभूति द्वारा वह एक अलौकिक आनन्द का प्रसार करता है।

(3) हम कविजन अपनी युवावस्था में आह्लादमय रहते हैं, किन्तु उससे अन्त में निराशा और विक्षिप्तता ही हाथ लगती है। **—वर्ड्सवर्थ**

कोई बुरा आदमी अच्छा कवि नही हो सकता। **—बोरिस पेस्तरनाक**

(1) आदर्श कवि वही है जो मनुष्य की सम्पूर्ण आत्मा को उत्तेजित तथा विकसित करे। उसके स्वभाव के अन्य गुणों तथा इसी विकसित आत्मा में सामंजस्य प्रस्तुत करना उसका प्रधान कार्य है।

जीवन के सबसे गौरवपूर्ण, प्रफुल्लित तथा आनन्ददायक स्थलों अथवा गुणों

का वर्णन कवि का श्रेष्ठ धर्म है।

(2) हर बड़े कवि में एक दार्शनिक के गुण उपस्थित रहते हैं।

(3) गद्य अर्थात् अपने सर्वश्रेष्ठ क्रम में शब्द और कविता अर्थात् सर्वश्रेष्ठ क्रम में सर्वश्रेष्ठ शब्द। —कॉलरिज

(1) कवि का मुख्य उद्देश्य सौन्दर्य होता है, दार्शनिक का सत्य।

(2) सच्चा दार्शनिक और सच्चा कवि एक ही हैं, सुन्दर सत्य और सच्चा सौन्दर्य दोनों का ही उद्देश्य है। —एमर्सन

सभी देशों के महान कवियों मे जो कुछ सर्वोत्तम है, वह वह नही है जो राष्ट्रीय है, अपितु वह है जो सार्वभौम है। —लांगफेलो

कवि की उँगलियों के स्पर्शमात्र से शब्द चमक उठते हैं। —जोवर्ट

(1) कवि महान् और ज्ञान की बातें करते हैं, जिनको कि वे स्वयं नहीं समझते।

(2) इतिहास की अपेक्षा कविता सत्य के अधिक निकट आती है।

—प्लेटो

जो बात जीवन-व्यवहार मे घटित होती है, व्यवहार के दायित्व से मुक्त होने के आभास से उसका कल्पना द्वारा उपयोग करना ही कविता का लक्ष्य है।

—टैगोर

कवि केवल देखते और जानने ही नही, प्रकाश भी करते है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मंदिर की परिक्रमा करते समय भक्त जैसे देवता को ही सब ओर देखता है, मंदिर की दीवारों को नहीं, वैसे ही सच्चा कवि जीवन को ही केन्द्र में देखता है। —महादेवी वर्मा

(1) कवि का काव्य ही उसकी आत्मा का सत्य है।

(2) कवि ने गीत लिखे नये-नये बार-बार
पर उसी एक विषय को देता रहा विस्तार
जिसे कभी पूरा पकड़ पाया नही। —अज्ञेय

कविता का महान् लक्ष्य है कि वह लोगों की चिन्ताओं को शान्त करने और उनके विचारों को उन्नत करने मे मित्र का काम करे। —कीट्स

सभी कवि पागल हुआ करते हैं। —राबर्ट बर्टन

कवि बनने के लिए आवश्यक है कि उसका हृदय सुविचारों से ओत-प्रोत है।

—गेटे

जो प्रेम करते हैं, सत्य का अनुभव करते हैं और अन्त में उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करते हैं, वे सभी कवि हैं। —बैले

भली भाँति सोचना तथा समझना बहुतों को आता है, पर सोची-समझी हुई बातों को सुचारु रूप से व्यक्त करने वाला व्यक्ति ही कवि कहलाता है।

—गीबेल

जो व्यक्ति जाग्रत और साहित्यिक समाज में महान कवि होने की अभिलाषा रखता है, उसे पहले एक छोटा बालक बनना चाहिए। —मैकाले

(1) ज्ञानी-दानी-सूर-कवि, गति चारहुँ की एक।
सोक न व्यापत सपनहूँ, मरतहुँ मरत छिनेक ।।
(2) धन, धरती, सेनादि सब, रहे हाथ नरनाथ।
तऊ तासु जग माहि जस, केवल कवि के हाथ ।।

—रामचरित उपाध्याय

(1) विज्ञान जहाँ तक घूमता-फिरता है, यदि विश्व वही तक समाप्त है तो मेरे कवि, कविता बनाना अब छोड़ दे। तू विज्ञान का अनुचर नहीं, उसका पूरक है।

(2) कवि और चित्रकार मे भेद है। कवि अपने स्वर मे और चित्रकार अपनी रेखा मे जीवन के सत्य और सौन्दर्य का राग भरता है।

(3) तत्ववेत्ता और कवि मे अन्तर है। तत्त्ववेत्ता मस्तिष्क का निवासी है और कवि हृदय का।

(4) कवि और शब्द की विचित्र महिमा है। शब्द कवि को अमर बना देते हैं और कवि शब्द को भाग्यवान।

(5) जहाँ न पहुँचे रवि, तहाँ पहुँचे कवि। —अज्ञात

कर्म कविता का नही इससे बडा है / कुछ अबोलों को बोला दे. / कर्म कवि का भी नहीं इनसे बड़ा है / कुछ अबोलो की कथाओं से / किसी के प्राण, मन, जीवन शिरा को / थरथरा दे। / —हरिवंशराय 'बच्चन'

बड़े वही कविराज है, और सभी कवि व्यर्थ।
श्रोता जिनके काव्य का, समझ न पावे अर्थ ।। —काका हाथरसी

(1) हमारी अन्तस्थ सुप्त भावनाओं को जाग्रत करने की सामर्थ्य जिसमें होती है, वह कवि है।

(2) सच्चा कवि स्तुति-निंदा से परे है। वह तो प्रभु स्फूर्ति दे तो उसका उत्त र देता है। —महात्मा गांधी

देखता हूँ कि हर राष्ट्र में कवि का एक ही स्वरूप है—वर्तमान का आनन्द लेना, भविष्यत् के प्रति असावधानी, समझदार की सी बातें, मूर्ख की सी हरकतें।

—गोल्डस्मिथ

न स शब्दो न तद्वाच्यं न स न्यायो न सा कला।
जायते यन्न काव्यांग महो भारो महान् कवे: ॥

(वह शब्द नहीं, वह अर्थ नहीं, वह कला नहीं, जो काव्य का अंग न बने। कवि का दायित्व कितना बड़ा है?) —भामह

कविता (काव्य)

'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुन: क्वापि।' (दोषरहित, गुणयुक्त तथा कहीं-कहीं अलंकार-रहित शब्दार्थ ही 'काव्य' है।) —मम्मट (काव्यप्रकाश)

रीतिरात्मा काव्यस्य। विशिष्ट पदरचना रीतिः। विशेषो गुणात्मा।

(काव्य की आत्मा रीति है। विशिष्ट पदरचना रीति कहलाती है। विशेष गुण स्वरूप है।) —वामन

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बंधे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि।

(कवि के कल्पना-पूर्ण कौशल से युक्त सहृदयों को आनंद देने वाली चमत्कारपूर्ण सुन्दर (वक्र) उक्ति 'काव्य' है।) —कुन्तक (वक्रोतिजीवितम्)

प्राचीन आचार्यों ने काव्यों के शरीर तथा अलंकारों का दिग्दर्शन कराया है। इष्ट (अभीप्सित अथवा मनोरम) अर्थ से विभूषित पद-समूह ही काव्य-शरीर है।

—दण्डी

विभावादि के संयोजन वाला (तथा) रस की अव्यभिचारी रूप से सर्वत्र अभिव्यक्ति करने वाला कवि-व्यापार काव्य कहलाता है। उसके दो भेद हैं—अभिनेय (दृश्य) और अनभिनेय (श्रव्य)। —महिम भट्ट

अदोषं गुणवत्काव्यमलंकारैरलंकृतम्।
रसान्वितं कवि: कुर्वन् कीर्ति प्रीतिं च विन्दति ॥

('काव्य' वह शब्दार्थ-युगल है जो दोषरहित, गुणयुक्त, अलंकारों से अलंकृत और रसयुक्त हो।) —भोजराज (सरस्वती कंठाभरण)

निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषिता।
सालंकाररसानेकवृत्तिवक्काव्यनामभाक् ॥

(दोषरहित, अक्षरसंहति, शोभादि लक्षणों से युक्त, रीति, गुण से विभूषित

तथा अलंकार, रस, वृत्ति आदि से समन्वित वाणी का नाम 'काव्य' है ।)

—**जयदेव (चंद्रालोक)**

(1) गुणवदलंकृत च वाक्यमेव काव्यम् । (गुणों और अलंकारों से युक्त वाक्य का नाम काव्य है ।)

(2) प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनों संयुक्त रूप से काव्य-रचना में उपकारिणी होती हैं । जैसे, लावण्य के बिना सुन्दर रूप फीका प्रतीत होता है और रूप-सम्पति के बिना लावण्य भी अधिक आकर्षक नहीं सोता । —**राजशेखर**

ननु शब्दार्थौ काव्यम् । ('शब्द और अर्थ ही 'काव्य' है ।')

—**रुद्रट (काव्यालंकार)**

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् । ('शब्द और अर्थ का सहित भाव ही 'काव्य' है ।') —**भामह (काव्यालंकार)**

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।'
('रसात्मक वाक्य ही 'काव्य' है ।') —**विश्वनाथ (साहित्यदर्पण)**

'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'
(रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही 'काव्य' है ।)

—**पंडितराज जगन्नाथ (रसगंगाधर)**

सरल कवित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ।। —**तुलसीदास**

लोग है लागि कवित्त बनावत,
मोंहि तो मेरे कवित्त बनावत । —**घनानन्द**

छन्द निबद्ध सुपद्य कहि, गद्य होत बिन छन्द ।
भाषा छन्द निबद्ध सुनि सुकवि होत सानंद ।।
सुगुनालंकारन सहित दोष रहित जो होइ ।
शब्द अर्थ ताको कवित कहत विबुध सब कोइ ।। —**चिन्तामणि**

कीरति भनिति भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई ।। —**गोस्वामी तुलसीदास**

शब्द अर्थ बिन दोष गुन अलंकार रसवान ।
ताको काव्य बखानिये श्रीपति परम सुजान ।। —**श्रीपति**

जग तें अद्भुत सुख सदन शब्दरु अर्थ कवित्त ।
यह लच्छन मैंने कियो समुझि ग्रंथ बहु चित्त ।। —**कुलपति**

सगुन पदारथ दोष बिनु पिंगल मत अविरुद्ध ।
भूषन जुत कवि कर्म जो सो कवित्त कहि सुद्ध ॥ —सोमनाथ

(1) बानी लता अनूप, काव्य अमृत फल सु फल्यो ।
प्रगट करै कवि भूप, स्वाद वेदता रसिक जन ॥

(2) आगे के सुकवि रीझिहै तौ कविताई
न तौ राधिका कन्हाई सुमिरन कौ बहानो है । —भिखारीदास

(1) शब्द सुमति मुख तें कढ़ै, लै पद बचननि अर्थ ।
छन्द, भाव, भूषण सरस, सो कहि काव्य समर्थ ।

(2) काव्य सार शब्दार्थ को रस तेहि काव्य सुमार । —देव

प्रत्येक मनुष्य का काव्य उत्कृष्ट तभी होता है, जब वह सच्चा होता है । सच्ची कविता तभी बनती है, जब कवि जो उस पर बीते, अथवा जो उमंगे उसके चित्त मे उठें, या जो भाव उसके चित्त में भरे हों, उन्ही का वर्णन करे ।

—मिश्रबन्धु

काव्य के लिए यह आवश्यक नही है कि वह किसी प्रकार के ज्ञान की अवगति करावे । उसके लिए सबसे आवश्यक और विशेष बात यही है कि वह अपने विषय तथा वर्णन शैली से पढ़ने वालों के हृदय मे उस आनन्द का प्रवाह बहाए जो रसानुभव या रसपरिपाक से उत्पन्न है । अथवा दूसरे शब्दों मे इस तरह कह सकते हैं कि काव्य वह है जो हृदय मे अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करे । — श्यामसुन्दर दास

(1) अर्थ-सौरस्य ही कविता का प्राण है । जिस पद्य मे अर्थ का चमत्कार नही, वह कविता नही । कवि जिस विषय का वर्णन करे उस विषय से उसका तादात्म्य हो जाना चाहिए । ऐसा न होने से अर्थ-सौरस्य नहीं आ सकता । विलाप-वर्णन करने मे कवि के मन में यह भावना होनी चाहिए कि वह स्वयं विलाप कर रहा है और वर्णित दुःख का स्वयं अनुभव कर रहा है ।

(2) कविता का अच्छा और बुरा होना विशेषतः अच्छे अर्थ और रस-बाहुल्य पर अवलम्बित है ।

(3) कविता लिखते समय कवि के सामने एक ऊँचा उद्देश्य अवश्य रहना चाहिए । केवल कविता ही के लिए कविता करना एक तमाशा है ।

(4) रस ही कविता का सबसे बड़ा गुण है ।

(5) सैकड़ों अलंकारों से अलंकृत होकर भी, शब्द-शास्त्र के उच्चासन पर अधिरूढ़ होकर भी और सब प्रकार सौष्ठव को धारण करके भी, रस रूपी

अभिषेक के बिना, कोई भी प्रबन्ध काव्याधिराज पदवी को नहीं पहुँचता ।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

(1) काव्य की यह खूबी है कि वह कवि से भी आगे बढ़ जाता है।

(2) जिस सत्य का कवि अपनी तन्मयता में उच्चारण करता है, वह सत्य उसके जीवन मे अक्सर नही पाया जाता ।

(3) वही काव्य और वही साहित्य चिरंजीवी रहेगा, जिसे लोग सुगमता मे पढ़ सकेंगे, जिसे वे आसानी से पचा सकेंगे ।

(4) काव्य वही है, जो मानव-हृदय को अपने काबू में कर ले ।

(5) काव्य का ध्येय केवल मनोरंजन न होकर हित-संवर्द्धन और राष्ट्र-निर्माण होना चाहिए ।

(6) वह काव्य जो मानव-जीवन को ऊँचा न उठाए और उसमें नई आशाएँ और संभावनाएँ न भरे, कला नही कहा जा सकता ।

(7) कवि जिस ग्रंथ की रचना करता है उसके सब अर्थों की कल्पना नहीं कर लेता ।

(8) काल के अन्त मे कल्पना-शक्ति अर्थात् काव्य मनुष्य के विकास में अपना उपयोगी और आवश्यक कार्य जरूर करेगा । —महात्मा गाँधी

परमाणु मे कविता है, विराट रूप मे कविता है, बिन्दु में कविता है, सागर में कविता है, रेणु में कविता है··· जिधर देखो कविता ही का साम्राज्य है। प्रकृति काव्यमय है, सारा ब्रह्माड एक अद्भुत महाकाव्य है। —पुरुषोत्तमदास टंडन

(1) कविता वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। अधकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबध कौन कराती है ? कविता ही न ? (स्कन्दगुप्त)

(2) काव्य आत्मा की सकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण विकल्प या विज्ञान से नही है। आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति की दो धाराएँ है—एक काव्य धारा और दूसरी वैज्ञानिक, शास्त्रीय या दार्शनिक धारा। (काव्य और···)

(3) विज्ञान या दर्शन मे श्रेय रूप से ही सत्य का संकलन किया जाता है और काव्य में प्रेम रूप की प्रधानता है, किन्तु श्रेय और प्रेय दोनों ही आत्मा के अभिन्न अंग हैं । (काव्य और···)

(4) काव्य को संकल्पात्मक मूल अनुभूति कहने से मेरा जो तात्पर्य है··· आत्मा की मनन शक्ति की वह असाधारण अवस्था, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारुत्व में सहसा ग्रहण कर लेती है, काव्य में संकल्पनात्मक मूल अनुभूति कही जा सकती है। (काव्य और···)

(5) सत्य की अभिव्यक्ति हमारे वाङ्मय में दो प्रकार से मानी गई है—काव्य और शास्त्र। शास्त्र में श्रेय का आज्ञात्मक, ऐहिक और आमुष्मिक विवेचन होता है और काव्य में श्रेय और प्रेय दोनों का सामंजस्य होता है।

(6) कवित्व को आत्मा की अनुभूति कहते हैं। मनन-शक्ति और मनन से उत्पन्न हुई अथवा ग्रहण की गई निर्वचन करने की वाक्-शक्ति और इनके सामंजस्य को स्थिर करने वाली सजीवत: अविज्ञात प्राण शक्ति ये तीनों आत्मा की मौलिक क्रियाएँ हैं।...काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेय-मयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान-धारा है। विश्लेषणात्मक तर्कों से और विकल्प के आरोप से मिलन न होने के कारण आत्मा की मनन-क्रिया जो वाङ्मय-रूप में अभिव्यक्त होती है वह नि:सन्देह प्राणमयी और सत्य के उभय लक्षण प्रेय और श्रेय दोनों से परिपूर्ण होती है। —जयशंकर प्रसाद

कविता सच्ची भावनाओं का चित्र है, और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दु:ख की हों या सुख की, उसी समय उत्पन्न होती है जब हम दुख या सुख का अनुभव करते है। —प्रेमचन्द

(1) अन्त:प्रकृति में मनुष्यता को समय-समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ लगी चली आ रही है और चली चलेगी। जानवरों को इसकी जरूरत नहीं। (चिन्ता० 1)

(2) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है। (चिन्ता० 1)

(3) कविता ही हृदय को प्रकृत दिशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमश: उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। (चिन्ता० 1)

(4) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है उसे कविता कहते है। (चिन्ता० 1)

(5) यह धारणा कि काव्य व्यवहार का बाधक है, उसके अनुशीलन से अकर्मण्यता आती है, ठीक नहीं। कविता तो भाव-प्रसार द्वारा कर्मण्य के लिए कर्मक्षेत्र का और विस्तार कर देती है। (चिन्ता० 1)

(6) सुन्दर और कुरूप—काव्य में बस ये ही दो पक्ष हैं। भला-बुरा, शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य, मंगल-अमंगल, उपयोगी-अनुपयोगी—ये सब शब्द, काव्य-क्षेत्र के बाहर के हैं। (चिन्ता० 1)

(7) मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में, किसी-न-किसी रूप में, पाई जाती है। चाहे इतिहास न हो, विज्ञान न हो, दर्शन न हो, पर कविता का प्रचार अवश्य रहेगा। (चिन्ता० 1)

(8) कविता का संबंध ब्रह्म की व्यक्त सत्ता से है, चारों ओर फैले हुए गोचर जगत् से है, अव्यक्त सत्ता से नहीं। जगत् भी अभिव्यक्ति है, काव्य भी अभिव्यक्ति है। जगत् अव्यक्त की अभिव्यक्ति है और काव्य इस अभिव्यक्ति की भी अभिव्यक्ति है। (चिन्ता० 2)

(9) काव्य एक बहुत ही व्यापक कला है। जिस प्रकार मूर्त विधान के लिए कविता चित्र-विद्या की प्रणाली का अनुसरण करती है उसी प्रकार नाद-सौष्ठव के लिए वह संगीत का कुछ-कुछ सहारा लेती है। (चिन्ता० 1)

(10) काव्य का काम है कल्पना में 'बिम्ब' (images) या मूर्त भावना उपस्थित करना, बुद्धि के सामने कोई विचार (Concept) लाना नहीं। 'बिम्ब' जब होगा तब विशेष या व्यक्ति का ही होगा, सामान्य या जाति का नहीं।

(चिन्ता० 1)

(11) काव्य का चरम लक्ष्य सर्वभूत को आत्मभूत कराके अनुभव कराना है (दर्शन के समान केवल ज्ञान कराना नहीं)। उसके साधन में भी अहंकार का त्याग आवश्यक है। (र० मी०)

(12) काव्य का विषय सदा 'विशेष' होता है, 'सामान्य' नहीं है; वह 'व्यक्ति' सामने लाता है, 'जाति' नहीं। (चिन्ता० 1)

(13) सच्चे काव्य में सहज भाव प्रधान होता है, आरोपित नहीं। उसमें कवि, पात्र और श्रोता तीनों के हृदय का समन्वय होता है जिससे काव्य का जो प्रकृत लक्ष्य है, पदार्थों के साथ भावों के प्रकृत संबंध का प्रत्यक्षीकरण—जगत् के साथ हमारी रागात्मिका वृत्ति का सामंजस्य—वह सिद्ध हो जाता है।

(र० मी०)

(14) स्वप्न और जागरण दोनों काव्य के पक्ष हैं। इन दोनों पक्षों का सामंजस्य काव्य का चरम उत्कर्ष है। '(काव्य में रहस्यवाद, चिन्ता० 2)

(15) काव्य क्षेत्र में किसी 'वाद' का प्रचार धीरे-धीरे उसकी सारसत्ता को ही चर जाता है। कुछ दिनों में लोग कविता न लिखकर वाद लिखने लगते है।

(चिन्ता० 1)

(16) 'विदग्धता' वहीं तक काव्योपयोगी हो सकती है जहाँ तक वह भाव-

प्रेरित हो—जहाँ तक उसका कारण कोई भाव या कम से कम कोई रागात्मक दशा हो। (भ्र० गी० सा०)

(17) जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे, वह तो है काव्य। जो उक्ति केवल कथन के ढंग के अनूठेपन, रचना-वैचित्र्य, चमत्कार, कवि के श्रम या निपुणता के विचार में ही प्रवृत्त करे, वह है सूक्ति। (चिन्ता० 1)

(18) कविता का अंतिम लक्ष्य जगत् के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य-हृदय का सामंजस्य स्थापन है। (र० मी०)

(19) कविता पढ़ते समय मनोरंजन अवश्य होता है, पर उसके उपरांत कुछ और भी होता है और वही सब कुछ है। (र० मी०)

(20) अनूठी से अनूठी उक्ति काव्य तभी हो सकती है जबकि उसका संबंध कुछ दूर का ही नहीं, हृदय के किसी भाव या वृत्ति से हो।

(21) हृदय पर नित्य प्रभाव रखने वाले रूपों और व्यापारों को भावना के सामने लाकर कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अंतःप्रकृति का सामंजस्य घटित करती हुई उसकी भावात्मक सत्ता के प्रसार का प्रयास करती है। यदि अपने भावों को समेट कर मनुष्य अपने हृदय को शेष सृष्टि से किनारे कर ले या स्वार्थ की पशु वृत्ति में ही लिप्त रखे, तो उसकी मनुष्यता कहाँ रहेगी?

(र० मी०)

(22) जब तक कोई अपनी पृथक् सत्ता की भावना को ऊपर किए इस क्षेत्र (जगत्) के नाना रूपों और व्यापारों को अपने योग-क्षेम, हानि-लाभ, सुख-दुख आदि से संबद्ध करके देखता रहता है तब तक उसका हृदय एक प्रकार से बद्ध रहता है। इन रूपों और व्यापारों के सामने जब कभी वह अपनी पृथक् सत्ता की धारणा से छूटकर—अपने आपको बिलकुल भूलकर—विशुद्ध अनुभूति मात्र रह जाता है, तब वह मुक्त हृदय हो जाता है। जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं। (र० मी०)

(23) नीति के अधिकांश दोहे (जैसे वृंद के) काव्याभास के ही अंतर्गत आ सकते हैं।

(24) कवि की उक्ति तीन प्रकार की हो सकती है—

(1) जिसमें केवल चमत्कार या वैलक्षण्य हो।

(2) जिसमें केवल रस या भावुकता हो।

(3) जिसमें रस और चमत्कार दोनों हों।

इनमें से प्रकृत काव्य हम केवल पिछली दो उक्तियों में ही मान सकते हैं, प्रथम में केवल काव्याभास मानेंगे।

(25) सच्चे काव्य में सहज भाव प्रधान होता है, आरोपित नहीं। उसमें कवि, पात्र और श्रोता तीनों के हृदय का समन्वय होता है, जिससे काव्य का जो प्रकृत लक्ष्य है, पदार्थों के साथ भावों के प्रकृत सम्बन्ध का प्रत्यक्षीकरण—जगत के साथ हमारी रागात्मिकता वृत्ति का सामंजस्य—वह सिद्ध हो जाता है। ऐसे ही काव्य अमर या चिरस्थायी हो। हैं, जिनमें मनुष्य मात्र अपने भावों के आलंबन पाते हैं। —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

मैंने पीड़ा को रूप दिया, जग समझा मैंने कविता की। —**बच्चन**

आत्मा की गूढ़ और छिपी हुई सौन्दर्य-राशि की भावना के आलोक से प्रकाशित हो उठना ही कविता है। —**रामकुमार वर्मा**

सीना रौशन हो तो है सोज़े सुख़न ऐने हयात,
हो न रौशन तो सुख़न मर्गे दवाम ऐ साकी।

(कवि की वाणी में यदि हृदय प्रकाशमान हो तो कविता की गर्मी वास्तविक है, और यदि हृदय प्रकाशमान न हो तो उसकी कविता सदा के लिए मृत है।)

—**इक़बाल**

(1) बहुत से लोग मेरे पास आकर पूछते हैं—तुम जो गाते हो क्या उसका अर्थ भी है? उस समय मैं क्या कहूँ? कुछ बोल नहीं पाता। फिर, जब मैं उत्तर देता हूँ—'अर्थ क्या जानूँ।' तब वे लोग हँसकर चले जाते हैं और तुम भी बैठे-बैठे मुस्कराते रहते हो।

(2) काव्य मात्र भावना या अभिव्यक्ति नहीं, यह तो रूप की रचना है। कवि के अन्दर सूक्ष्म क्रियात्मक कौशल के कारण विचार आकार ग्रहण करते हैं। यह सर्जनात्मक शक्ति काव्य का उद्गम है। इन्द्रियानुभूति, भावनाएँ और भाषा तो इसके केवल उपादान कारण हैं। —**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

जो कविता के रस को नहीं समझता, वह मनुष्य नहीं है। —विमल मित्र

कविता शब्दों में उतनी नहीं होती जितनी शब्दों के बीच विरामों में होती है। —अज्ञेय

(1) गद्य जहाँ असमर्थ हो जाता है वहाँ कविता जन्म लेती है।

(2) कविता गाकर रिझाने के लिए नहीं, समझकर खो जाने के लिए है!

—अज्ञात

काव्य प्रकृत मानव-अनुभूतियों का, नैसर्गिक कल्पना के सहारे ऐसा सौन्दर्य-मय चित्रण है जो मनुष्य-मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छ्वास और सौन्दर्य-संवेदन उत्पन्न करता है। —नन्ददुलारे वाजपेयी

(1) कविता मानवता की उच्चतम अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

(2) कविता का क्षेत्र वहाँ से आरम्भ होता है, जहाँ दुनियावी प्रयोजन की सीमा समाप्त हो जाती है। —हजारी प्रसाद द्विवेदी

कविता के लिए चित्रभाषा अनिवार्य है। —सुमित्रानंदन पंत

(1) मेरे लिए तो मनुष्य एक सजीव कविता है। कविता की कृति सजीव कविता का शब्दचित्र मात्र है, जिससे उसका व्यक्तित्व और समाज के साथ उसकी एकता जानी जाती है। वह संसार में रहता है और उससे अपने भीतर एक और इस संसार से सुन्दर, अधिक सुकुमार, संसार बसा रखा है।

(2) सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है।

(3) कविता हमारे व्यष्टि-सीमित जीवन को समष्टि-व्यापक जीवन तक फैलाने के लिए ही व्यापक सत्य को अपनी परिधि में बाँधती है। साहित्य के अन्य अंग भी ऐसा करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु न उनमे सामंजस्य की ऐसी परिणति होती है न आयास-हीनता। जीवन की विविधता मे सामंजस्य को खोज लेने के कारण ही कविता उन ललित कलाओं में उत्कृष्टतम स्थान पा सकी है जो गति की विभिन्नता, स्वरो की अनेकरूपता या रेखाओं की विषमता के सामंजस्य पर स्थित है। —महादेवी वर्मा

इतिहास की अपेक्षा कविता सत्य के अधिक निकट आती है। —प्लेटो

(1) कविता एक कला है, जिसका मूल सिद्धांत है अनुकरण—भाषा के माध्यम से किया गया अनुकरण।

(2) कविता का उद्देश्य भूतकाल की घटनाओं का वर्णन नही है, उसका उद्देश्य है ऐसी घटनाओं का वर्णन जो भविष्य में संभव अथवा वांछनीय हों। इतिहास लेखक तथा कवि मे अन्तर इस बात का नही है कि पहिला गद्य मे और दूसरा पद्य में रचना करता है, क्योंकि यदि हेरांडोटस लिखित इतिहास पद्य में भी होता तो भी इतिहास ही रहता।

वास्तव मे अन्तर तो यह है कि एक भूतकाल की घटनाओं का वर्णन करता है और दूसरा उन घटनाओं का जो आगे चलकर संभव होंगी। इसी कारण काव्य अधिक दार्शनिकता से युक्त तथा महत्त्वपूर्ण होता है। इतिहास हमे केवल एक ही युग का परिचय देता है, परन्तु काव्य की दी हुई व्याख्या सार्वकालिक होती है।

कवि की श्रेष्ठता उसकी अनुकरण कला पर निर्भर है; जितनी ही उसमें अनुकरण कला की अधिकता होगी उतना ही वह कवि श्रेष्ठ होगा।

—अरस्तू

कष्टपूर्ण अनुभवों के बाद के विचारों से कविता का जन्म होता है।

—बालज़ाक

(कविता के रूप मे) कल्पना साक्षात् हो उठती है, कवि की लेखनी अज्ञात वस्तुओं, वायवी अनस्तित्वों को मूर्त बनाती और उन्हें नाम-ग्राम प्रदान करती है।

—शेक्सपियर

कविता का बाना पहनकर सत्य और भी चमक उठता है। —पोप

(1) सर्वोत्तम क्रम मे विन्यस्त सर्वोत्तम शब्दों की संज्ञा ही कविता है।

(2) कविता रचना का वह प्रकार है जो विज्ञान के प्रतिकूल है, क्योंकि उसका तात्कालिक उद्देश्य सत्य न होकर आनंद है। —कॉलरिज

(1) कविता सशक्त मनोवेगों का स्वतः स्फूर्त उफान है।

(2) कविता संपूर्ण ज्ञान का सार है, प्राण है।

(3) पुरुष तथा प्रकृति का प्रतिबिम्ब काव्य है।

(4) जीवन की केवल यथार्थ भावनाओं का निरूपण ही काव्य नहीं, अपितु इस निरूपण के साथ-साथ भावनाओं का परिष्कार तथा अक्षय प्रकृति का जीवन से सजीव सामंजस्य ही श्रेष्ठ काव्य है। —विलियम वर्ड्सवर्थ

(1) कविता कल्पना की वह अभिव्यक्ति है जो आनंद से ओत-प्रोत होती है।

(2) कविता प्रसन्नतम और श्रेष्ठतम मस्तिष्क के श्रेष्ठतम और प्रसन्नतम क्षणों का चित्रण है।

(3) काव्य कला वास्तव मे ईश्वरीय देन है। श्रेष्ठ तथा उत्फुल्ल जीवन के सर्वश्रेष्ठ आनन्दपूर्ण क्षणों का संग्रह काव्य है।

(4) काव्य कल्पना की अभिव्यक्ति है।

(5) संसार के ओझल सौन्दर्य पर से आवरण हटाने का काम कविता करती है और कविता ही अपरिचित को परिचित बनाती है। —शैली

(1) कविता का महान् उद्देश्य यह है कि वह लोगों की चिन्ताओं को शान्त करने और उनके विचारों को उन्नत करने मे मित्र जैसा कार्य करे।

(2) यदि कविता में स्वाभाविकता का पुट न हो तो अच्छा है कि वह बनाई ही न जाए।

(3) पृथ्वी की कविता कभी मरती नही। —कीट्स

(1) कविता मानव भाषा के शब्दों का चरम आह्लादपूर्ण तथा पूर्ण रूप है।

(2) कविता जीवन की आलोचना है।

(3) कविता जीवन की सौन्दर्य तथा आनन्दपूर्ण व्याख्या है।

—मैथ्यू आर्नल्ड

भूतकाल का यथार्थ वर्णन इतिहास लेखकों का आदर्श है, परन्तु कार्यात्मिक सत्य का सजीव विवेचन कवियों का ध्येय है। काव्य की आत्मा सांसारिक पदार्थों में रह कर भी मानव के मस्तिष्क में निवास करती है।

—सर डब्ल्यू डेवनेंट

भावमय तथा लयपूर्ण भाषा में मानव-हृदय की साकार तथा कलापूर्ण अभिव्यक्ति काव्य है। डंटन

(1) कविता मेरे लिए कुछ और न होकर केवल भावुकता है।

(2) सौन्दर्य की लयपूर्ण सृष्टि काव्य है। —एडगर ऐलेन पो

कविता वह कला है जिसमें कल्पना-शक्ति विवेक की सहायक होकर सत्य और आनन्द का परस्पर संयोग कराती है। —जॉनसन

(1) काव्य केवल निर्माण की एक शैली विशेष है। इसका अध्ययन जीवन को नियम तथा आनन्द प्रदान करता है। काव्य हमारी युवावस्था को उपदेश तथा वृद्धावस्था को आनन्द देता है। वह हमारे सौभाग्य को आभूषण, दुर्भाग्य को सान्त्वना और हमारे घरेलू जीवन को आनन्द तथा हमारे भ्रमण को रजकता प्रदान करता है। बुद्धिमान तथा ज्ञानी पुरुषों की दृष्टि में काव्य हमारे आचार-विचार का स्वामी है तथा हमें धर्माचरण में पूर्णतया अनुरक्त रखता है।

(2) काव्य का प्रथम उद्देश्य जीवन-यापन के आदर्श नियमों का निरूपण है।

—बेन जॉनसन

(1) काव्य का अनवरत-प्रयास, जड़ शरीर की ओट में छिपी आध्यात्मिक रहस्य की अभिव्यक्ति है।

(2) कविता विश्वास है। —इमर्सन

काव्य संगीतमय विचार है। —कारलाइल

कविता में प्रारंभ करने जैसा कठिन कुछ नहीं है—संभवत् उसके अन्त को छोड़कर। —**बायरन**

कविता कल्पना और मनोभावों की भाषा है। —**हैज़लिट**

'काव्य' कल्पना और भावना के माध्यम से जीवन की व्याख्या है।

—**हडसन**

कल्पना तथा चयन-शक्ति के सहयोग एवं भाषा के विशिष्ट प्रयोग से सत्यं, शिवं, सुन्दरं की अभिव्यक्ति की लालसा काव्य है। —**हंट**

कविता भावों की भाषा है। —**विंटर**

कविता अनुकरणमूलक कला है। आलंकारिक रूप में कहा जा सकता है कि वह बोलती तस्वीर है और उसका उद्देश्य है शिक्षा देना और मनोरंजन करना।

—**सिडनी**

कविता दुःख की बहिन है, प्रत्येक मनुष्य जो दुःख सहता है और रुदन करता है, कवि है, प्रत्येक आँसू छंद है, और प्रत्येक हृदय एक कविता है।

—**एंड्री**

कविता की पुस्तक का प्रकाशन छपना है जैसे गुलाब के फूल की एक पंखुड़ी उद्यान में नीचे गिर पड़े और प्रतिध्वनि की प्रतीक्षा करे।

—**डान मारक्विस**

कल्पना कविता का प्राण है और मधुर उच्छ्वास ही उसकी पृष्टभूमि है।

—**रस्किन**

चित्रकारों के रंगों के प्रयोग के समान, शाब्दिक प्रयोग से कल्पना की भित्ति पर माया का आवरण डालना काव्य है। —**मकॉले**

जो कुछ गद्य नहीं है, वह सब कविता ही है। —**केब**

कविता सभी कलाओं की बड़ी बहन और कुछ की संरक्षिका है।

—**कानग्रेव**

कविता का सत्य सौन्दर्य में निहित है। —**गिलफ़िलेन**

सबसे अच्छी कविता वह है जो हृदय को सबसे अधिक झंझोड़ दे।

—**लेवेटर**

कविता भावना का संगीत है, जो हमको शब्दों के संगीत द्वारा मिलता है।

—**चैटफ़ील्ड**

कविता आत्मा का संगीत है। —बाल्टेयर

कविता जब संगीत से बहुत दूर निकल जाती है तो दम तोड़ने लगती है।
—एज़रा पाउंड

कविता का जन्म जीवन से हुआ है। जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है और जीवन के लिए ही उसका अस्तित्व है। —हडसन

कष्ट (दुःख, विपत्ति)

ईश्वर जिसे प्यार करता है उसे रगड़ कर साफ करता है। --इंजील

हमारा कष्ट पापों का प्रायश्चित्त है। ---हज़रत मुहम्मद

कष्ट हृदय की कसौटी है। ---जयशंकर प्रसाद

(1) सत्य कष्ट का पुत्र है।

(2) सुख की अभिलाषा मेरे दुःख का अंश है। ---खलील जिब्रान

आज के कष्टों का सामना करने वाले के पास आगामी कल के कष्ट आते हुए झिझकते हैं। —अज्ञात

सच्चा कष्ट यदि सच्चाई के साथ सहन किया जाय तो वह पत्थर जैसे हृदय को भी पानी-पानी कर डालता है। कष्ट-सहन की अर्थात् तपस्या की महिमा ऐसी ही है और यही सत्याग्रह की कुंजी है। —महात्मा गांधी

दुःख का कारण क्या है, ममता? —स्वामी शंकराचार्य

दुःख एक प्रकार का छूत का रोग है। हम यदि लटका हुआ मुँह लेकर किसी से मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है। —स्वामी विवेकानन्द

दुःख की उपेक्षा करने से वह कम हो जाता है। —चैतन्य

यदि चाहते हो कि दुःख पुनः न आये, तो तत्काल सुनो कि वह क्या सिखा रहा है। —बर्ग

जिसने कभी दुःख नहीं उठाया वह सबसे भारी दुखिया है और जिसने कभी पीर नहीं सही वह बड़ा बेपीर है। —मेनसियम

जब तक कष्ट सहने को तैयार नहीं, तब तक हमें कुछ भी नहीं मिल सकता।
—बालगंगाधर तिलक

ईश्वर जो कष्ट भेजे उससे बच निकलने का प्रयास न करो, वरन् उससे भी बड़ा कष्ट अपने सामने खड़ा पाओगे। —एस० फ़िलिप नेरी

कहना (कथनी)

मान करहु जो करि सकहु, कथनी अकथ अपार।
कथे न कर कछु आवइ, करनी करतब सार॥ —उसमान

कहानी

(1) कला का रहस्य भ्रांति है। पर वह भ्रान्ति, जिस पर यथार्थ का आवरण पड़ा हो। तत्त्वहीन कहानी से मनोरंजन भले ही हो जाए, पर मानसिक तृप्ति नही होती।

(2) कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफ़िल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण मे चित्त को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है, जितना रात-भर गाना सुनने से भी नही होता।

(3) गल्प का आधार अब घटना नही, मनोविज्ञान की अनुभूति है। —प्रेमचन्द

पढ़कर आनन्द के अतिरेक मे आँखें यदि गीली न हो जायें तो वह कहानी कैसी? —शरत्चन्द

कविता सुनने वाला कहता है, 'ज़रा फिर तो कहिए।' कहानी सुनने वाला कहता है—'हाँ! तब क्या हुआ?' —रामचन्द्र शुक्ल

कल्पना सत्य की बड़ी बहन है। स्पष्टत. जब तक किसी ने कहानी नहीं कही थी तब तक संसार मे कोई नही जानता था कि सत्य क्या है। अतः यह सबसे प्राचीन कला है, यह इतिहास की जननी है। —किपलिंग

कहावत (लोकोक्ति)

कहावतें दैनिक अनुभवों की बेटियाँ हैं। —एक डच कहावत

कहावत युगों का सद्ज्ञान है। —एक जर्मन कहावत

किसी राष्ट्र की प्रतिभा, कुशाग्रता और आत्मा का पता उसकी कहावतों से लगता है। —बेकन

कहावत ऐसे कथन हैं जिनके कहने वाले का पता नहीं। —अज्ञात

शब्द की बूंद में व्यक्त अनुभवों के समुद्र को कहावत कहते हैं। —कॉलिसन

लंबे अनुभव के आधार पर बने संक्षिप्त कथन कहावत कहलाते हैं।

—सर बेंटिस

कान

कानों के दुरुपयोग से मन बहुत अशान्त और कलुषित हो जाता है। कान इसका अनुभव नहीं कर पाते। —महात्मा गाँधी

दो भले कान सौ ज़बानों को मुखाकर खुश्क कर सकते हैं। —फ्रेंकलिन

क़ानून

क़ानून मनोविकार से मुक्त तर्क है। —अरस्तू

(1) हर प्रकार के राज्य (सरकार) में वहाँ की जनता ही वास्तविक क़ानून की बनाने वाली होती है।

(2) खराब क़ानून निकृष्ट प्रकार का ज़ुल्म है। —बर्क

क़ानून का न जाननेवाला, क्षमा नहीं किया जाता। —जान सेल्डेन

जरूरतमंद क़ानून की परवाह नहीं करता। —क्रामवेल

जहाँ क़ानून का अन्त होता है वहाँ कुशासन प्रारम्भ होता है।

—विलियम पिट

जनहित सबसे बड़ा क़ानून है —सिसरो

कानून अच्छा है यदि व्यक्ति उसे क़ानूनी तौर पर प्रयोग मे लाये।

—बाइबिल

यहाँ क़ानून निर्धनों पर शासन करते हैं और धनवान् क़ानूनों पर शासन करते हैं। —गोल्डस्मिथ

क़ानून, क़ानून बना सकने वाले या क़ानून पर प्रभाव डाल सकने वाले वर्ग के ही पक्ष में रहता है। —यशपाल

क़ानून दुष्टों द्वारा दुष्टों के लिए बनाये जाते हैं।

—एक इटालियन कहावत

काफ़िर

काफ़िर वह है, जो दूसरे का हक़ छीन ले, जो ग़रीबों को सताये, दग़ाबाज़ हो, ख़ुदगरज हो। क़ाफ़िर वह नहीं, जो मिट्टी या पत्थर के टुकड़े में ख़ुदा का नूर देखता है। जो नदियों और पहाड़ों में, दरख्तों और झाड़ियों में ख़ुदा का जलवा पाता है। वह हमसे और तुझसे ज्यादा ख़ुदापरस्त है, जो मस्जिद में ख़ुदा को बन्दा समझते है। —प्रेमचन्द

काम

काम, काम और काम ही हमारा जीवन-सूत्र होना चाहिए।

—महात्मा गाँधी

वही काम करना ठीक है जिसे करके पछताना न पड़े, और जिसके फल को प्रसन्न मन से भोग सकें। —बुद्ध

यदि कोई काम नहीं करता तो उसे खाना भी नहीं चाहिए। —बाइबल

किसी भी काम को खूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए। —नैपोलियन

बिना कार्य के सिद्धान्त दिमागी ऐयाशी है, बिना सिद्धान्त के कार्य अंधे की टटोल है। जवाहरलाल नेहरू

(1) काम परेई जानिये, जो नर जैसो होय।
बिन ताये खोटो खरो, गहनौ लखै न कोय॥

(2) कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै, केतक सींचौ नीर॥

(3) फल बिचारि कारज करौ, करहु न व्यर्थ अमेल।
तिल ज्यों बारू पेरिये, नाहीं निकसै तेल॥ —वृन्द

(1) करने का कौशल करने से आता है।

(2) जिस कार्य को न कर सको उसे कभी मत प्रारंभ करो। —इमर्सन

वह कार्य सर्वश्रेष्ठ है जिसके द्वारा अधिक व्यक्तियों का अधिकतम मात्रा में कल्याण हो सके। —फ्रांसिस हचसन

(1) काम करने वालों को रोटियों की कमी नहीं।

(2) काम सबको प्यारा होता है, चाम प्यारा नहीं होता।

(3) जो काम अच्छी नीयत से किया जाता है, वह ईश्वरार्थ होता है।

——प्रेमचन्द

सर्वोत्तम कर्म वही होता है, जो अकर्तृ स्वभाव से किया जाता है।
—स्वामी रामतीर्थ

कामना (इच्छा, अभिलाषा)

जैसे कच्ची छत में जल भरता है वैसे ही अज्ञानी के मन में कामनाएँ जमा होती हैं। —गौतम बुद्ध

(1) विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

(जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं का त्यागकर निस्पृह हो जाता है और ममता तथा अहंकार को छोड़ देता है वही शांति पाता है।)

(2) आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। —गीता

कामना सागर की भाँति अतृप्त है, ज्यों-ज्यों हम उसकी आवश्यकता पूरी करते हैं त्यों-त्यों उसका कोलाहल बढ़ता है। —स्वामी विवेकानन्द

(1) कामनाओं को इष्ट बनाना बंधन को स्वीकार करना है।

(2) कामनाएँ साँप के जहरीले दाँत के समान है। —स्वामी रामतीर्थ

कामना वाले के लिए क्रोध अनिवार्य है, क्योंकि कामना कभी तृप्त नहीं होती। —महात्मा गाँधी

जब तक कामना है तब तक सुख के दर्शन स्वप्न में भी नहीं होंगे। —कुरान

काम-वासना

विषय-सुख की कामना मनुष्य को अंधा बना देती है। —महाभारत

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥

(काम, क्रोध और लोभ ये तीनों नरक के द्वार हैं, ये ही तीनों आत्मा को नष्ट कर देते हैं, इन तीनों को त्यागना उचित है।) —गीता

(1) न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते।

(काम की शांति कभी काम के उपभोग से नहीं हो सकती। वह तो इससे आग में घी डालने के समान अधिक बढ़ता है।)

(2) काम क्रोध ग्राहवतीं पंचेन्द्रियजलां नदीम्।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर॥

(काम और क्रोध मगर के समान हैं, पाँचों इन्द्रियाँ जलरूप हैं और जन्मों

की श्रृंखला दुर्गरूप है। इस दुस्तर नदी को पार करने के लिए धैर्यरूपी नाव ही काम दे सकती है।)

(3) कामातुराणां न भयं न लज्जा—
(कामी व्यक्तियों को न भय लगता है, न लज्जा।) —अज्ञात

कामार्ता: हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।
(काम से जो पुरुष पीड़ित हैं वे जड़ और चेतन में भेद नहीं कर सकते।)
—कालिदास

(1) काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान।
तब लगि पडित मूर्खहु दोनों एक समान॥
(2) जहाँ काम तहँ नाम नहिं, जहाँ नाम नहिं काम।
दोनों कबहूँ ना मिलैं, रवि रजनी इक ठाम॥
(3) नारि नसावै तीनि सुख, जा नर पासै होइ।
भगति मुकति निज ग्यान मे, पैसि न सकई कोइ॥ —कबीर

(1) काम क्रोध मद लोभ सब, प्रबल मोह की धार।
तिन महँ अति दारुण दुःखद, मायारूपी नार॥
(2) तात तीन अति प्रबल खल, काम, क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहि निमिष महुं छोभ॥
(3) जे कामी लोलुप जगमाही, कुटिल काक इव सबहि डेराही॥
(4) काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ। —तुलसी

रतनावलि उपभोग सों होत विषय नहिं सांत।
ज्यो-ज्यों हवि होमे अनल, त्यों-त्यों बढ़त नितांत। —रत्नावली

देखि पराई नारि कौ भूलि न तू अभिलाष।
सील फँधा ते ना छुटहि, जतन करहि जौ लाष॥ —जान

नारि-नेह दुख-मूल परनारी औरउ दुखद। —एक कवि

काम-वासना पवन का द्वार है। अगर हमारी यह नस्ल अपनी उद्देश्य पूर्ति नहीं कर सकी तो इसका कारण केवल सांसारिक इच्छायें हैं, जिनमें कामेच्छा मुख्य है। —टालस्टाय

वह निकृष्ट दास है जिस पर काम शासन करता है। —ब्रूक

काम यद्यपि एक निकृष्ट प्रबन्धक है तथापि एक शक्तिशाली स्रोत है।
—एमर्सन

उल्लू को दिन में नहीं दीखता, कौए को रात में नहीं दीखता। मगर कामी ऐसा अन्धा होता है जिसे न दिन में सूझता है और न रात में। —अज्ञात

कामिनी (स्त्री)

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन और ईमान को गारत कर सकते हैं, उतनी ही आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते है। —प्रेमचन्द

कामी दे० काम-वासना

कायर, कायरता

(1) कायरता की अपेक्षा बहादुरी के साथ शरीर बल का प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है।

(2) हिंसा श्रेष्ठ कभी नहीं कही जा सकती। उसमें भलाई सिर्फ इतनी ही है कि वह कायरता से कुछ उच्च बुराई है।

(3) जहाँ सिर्फ़ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो वहाँ मैं हिंसा के पक्ष में राय दूंगा।

(4) मैं कायरता तो किसी हालत में सहन नही कर सकता। आप कायरता से मरें, इसकी बजाय बहादुरी से प्रहार करते हुए और प्रहार सहते हुए मरना मैं कहीं बेहतर समझूंगा।

(5) कुरीति के अधीन होना कायरता है और उसका विरोध करना पुरुषार्थ।

(6) मैं कायरता तो किसी दशा मे सहन नही कर सकता। आप कायरता से मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरी से प्रहार करते हुए और प्रहार सहते हुए मरना मैं कही बेहतर समझूँगा।

(7) कायरता से कही ज्यादा अच्छा है लड़ते-लड़ते मर जाना।

(8) कायर होने के कारण ही हम दूसरों के ख़ून का विचार करते हैं।

—महात्मा गाँधी

(1) कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव दैव आलसी पुकारा।।

(2) सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रिपु पाइ रन, कायर करहिं प्रलापु।। —तुलसीदास

डरपोक प्राणियों में सत्य भी गूंगा हो जाता है। —प्रेमचन्द

भय जब स्वभावगत हो जाता है तब कायरता या भीरुता कहलाता है। (चिन्ता० 1) —**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

मनुष्य जितना ही चाहता है, उतनी ही उसकी प्राप्त करने की शक्ति बढ़ती है। अभाव पर विजय पाना ही जीवन की सफलता है। उसे स्वीकार करके उसकी गुलामी करना ही कायरपन है। —**शरत्चन्द्र**

जो दूसरों की स्वाधीनता छीनते हैं, वास्तव में वे कायर हैं। —**अब्राहम लिंकन**

कायर व्यक्ति अपनी मृत्यु के पूर्व भी कई बार मरते हैं, किन्तु वीर पुरुष मृत्यु का एक बार ही अभिनन्दन करते हैं। —**शेक्सपियर**

केवल कायर ही झूठ बोलते है। —**मरफ़ी**

कार्य-व्यस्तता

व्यग्न मनुष्य को आँसू बहाने के लिए अवकाश नहीं। —**बायरन**

बन के मार्ग मे जब प्यासा पथिक सरोवर की ओर दौड़ता है तब अगर उसके सिर पर सूखे पत्ते झड़-झड़कर गिरते हों तो क्या वह उस तरफ़ ध्यान देता है ? —**टैगोर**

काल

कालो हि सर्वस्येश्वरः। (काल ही सब विश्व का स्वामी है।) —**अथर्ववेद**

नात्मनः कामकारोहि पुरुषोऽयमनीश्वरः।
इतश्चेतरतश्चैनं कृतान्तः परिकर्षति ॥

(मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नही कर सकता, क्योंकि यह पराधीन होने के कारण असमर्थ है। काल इसे इधर-उधर खीचता रहता है।) —**वाल्मीकि**

लंघ्यते न खलु कालनियोगः। (काल की आज्ञा अनुल्लंघनीय है।) —**भारवि**

(1) कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल।
पाछै कछू न होइगा जौ सिर पर आवै काल ॥
(2) कबीर कहा गरबियौ, काल गहै कर केस।
ना जाणौ कहां मारिसी, कै घरि कै परदेस ॥ —**कबीरदास**

केते भये यादव सगर सुत केते भये जातहू न जाने ज्यों तरैया परभात की।
बलि बेनु अंबरीष मानधाता प्रह्लाद कहाँ लौं गिनाओं कथा रावन ययात की।
तेऊ न बचन पाये कालकौतुकी के हाथ भाँति-भाँति सेना रची घने दुख घात की।

चार-चार दिना को चाबउ चाहै करै कोऊ अंत लुटि जैहैं जैसे पूतरी बरात की।
—अज्ञात

कॉलिज

कॉलिज पत्थर के टुकड़ों को तो समझदार बनाते हैं, किन्तु हीरों पर जंग, चढ़ा देते हैं। **—इंगरसोल**

कॉलिज विद्या का मंदिर होता है। राजनीति से अपवित्र कर देने पर उसकी अर्थवत्ता समाप्तप्राय हो जाती है। **—भोलानाथ तिवारी**

काव्य दे० कविता

काव्य-बिंब

(1) काव्य-बिम्ब केवल अलंकरण का रूप न होकर भाषा का अन्तःप्रेरक तत्त्व है।

(2) बिम्ब कवि के अवचेतन के भावों का प्रतिरूप और कविता का प्राण है। **—एस० के० कॉफ़मैन**

बिम्ब जब प्रबल आवेग का संशोधित रूप मे अथवा उस आवेग से प्राप्त विचार या बिम्ब का चित्रण करते हैं, तभी वे मूल प्रतिभा का प्रमाण बन जाते हैं। **—कॉलरिज**

चित्रमयता कविता का अविच्छिन्न और एकमात्र शाश्वत गुण है।
—दिनकर

कविता वह है जो निरे शब्दों से निरे अर्थ से आगे जाकर ध्वनियों और अन्तर्ध्वनियों, स्वरों और अन्तःस्वरों से उलझती है। **—अज्ञेय**

बिना चित्रों, प्रतीकों, रूपकों और बिम्बों की सहायता के मानव अभिव्यक्ति का अस्तित्व ही असम्भव है। **—केदारनाथ सिंह**

शब्द के विस्तार में कला-सृजन को पाषाण की मूर्तिमत्ता, रंगरेखा की सजीवता, स्वर का माधुर्य सब कुछ एकत्र कर लेने की सुविधा प्राप्त हो गयी।
—महादेवी वर्मा

बिम्ब एक प्रकार का चित्र है जो किसी पदार्थ के साथ विभिन्न इंद्रियों के सन्निकर्ष से प्रमाता के चित्र में उद्बुद्ध हो जाता है। **—नगेन्द्र**

बिम्ब भाषा का चित्र-धर्म है, जिससे किसी वस्तु या घटना के अनुकरण द्वारा वक्तव्य विषय का प्रांजल रूप से प्रकाश किया जाता है। **—पं० रामवहिन मिश्र**

काव्य-भाषा

(1) कविता एक अपूर्व रसायन है। उसके रस की सिद्धि के लिए बड़ी सावधानी, बड़ी मनोयोगिता और बड़ी चतुराई आवश्यक होती है। रसायन सिद्ध करने में आँच के न्यूनाधिक होने से जैसे रस बिगड़ जाता है, वैसे ही यथोचित शब्दों का उपयोग न करने से काव्य-रूपी रस भी बिगड़ जाता है। किसी-किसी स्थल-विशेष पर रुक्षाक्षर वाले शब्द अच्छे लगते हैं, परन्तु और सर्वत्र ललित और मधुर शब्दों ही का प्रयोग करना उचित है। शब्द चुनने में अक्षर-मैत्री का विशेष विचार रखना चाहिये। अर्थ का द्योतक न होकर भी कोई-कोई पद्य केवल अपनी मधुरता ही से पढ़ने वालों के अन्त:करण को द्रवीभूत कर देता है।

(2) कवि को ऐसी भाषा लिखनी चाहिए जिसे सब कोई सहज में समझ ले और अर्थ को हृदयंगम कर सके। —**महावीर प्रसाद द्विवेदी**

(1) भाषा का, और मुख्यत: कविता की भाषा का, प्राण राग है। राग के ही पंखों की अबाध उन्मुक्त उड़ान मे लयमान होकर कविता सान्त को अनन्त से मिलाती है।

(2) जहाँ भाव और भाषा में मैत्री अथवा ऐक्य नही रहता, वहाँ स्वरो के पावस में केवल शब्दों के 'बटु-समुदाय' ही, दादुरों की तरह, इधर-उधर कूदते, फुदकने तथा साम-ध्वनि करते सुनाई देते हैं।

(3) कविता के लिए चित्र-भाषा की आवश्यकता पड़ती है, उसके शब्द सस्वर होने चाहिए, जो बोलते हों, सेव की तरह जिनके रस की मधुर लालिमा भीतर न समा सकने के कारण बाहर झलक पड़े। —**सुमित्रानन्दन पन्त**

कविता की कला शब्दों के चयन में है। —**मैकाले**

सर्वोत्तम क्रम में सर्वोत्तम शब्दों की रचना काव्य है। —**कॉलरिज**

लेखक जिस शैली में लिखता है, उसी शैली में बात करना उसके लिए हास्य-कर है। यदि वह ऐसा करता है तो उस पर विद्याभिमान का दोष लगाया जायेगा। —**हैज़लिट**

लिखित भाषा की खूबी यही है कि वह बोलचाल की भाषा से मिले। इस आदर्श से वह जितनी दूर होती है उतनी ही अस्वाभाविक हो जाती है।

—**प्रेमचन्द**

काव्यहेतु

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम्।
अमन्दश्चाऽभियोगोऽस्या: कारणं काव्यसम्पद:॥

(सहज प्रतिभा, पूरा शास्त्र-ज्ञान और अच्छा अभ्यास ये तीन काव्य-हेतु हैं।)
(काव्यादर्श) —दंडी

शक्तिर्निपुणता लोककाव्यशास्त्राद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाऽभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥

"शक्ति, लोक, काव्य, काव्यशास्त्र आदि के अध्ययन द्वारा प्राप्त निपुणता, तथा काव्य के मर्मज्ञ व्यक्तियों से प्राप्त शिक्षा के द्वारा अभ्यास (इन तीनों का समन्वित रूप) काव्य-रचना का हेतु है।" (काव्य प्रकाश 1.3) —मम्मट

काहिल, काहिली (सुस्त, सुस्ती)

काहिली और मन की पवित्रता एक साथ नहीं रह सकती। —महात्मा गाँधी

काहिली मनुष्य को चिथड़े पहना देती है —बाइबिल

काहिली सारी बुराइयों की जड़ है। —एक जर्मन कहावत

काहिली निर्धनता की जननी है। —एक यूनानी कहावत

काहिली दरिद्रता के द्वार की कुंजी है। —एक जर्मन कहावत

काहिली आरम्भ में मकड़ी का जाला होती है, अंत में फौलादी जंज़ीर बन जाती है। —एक चीनी कहावत

काहिल मनुष्य साँस तो लेता है, किन्तु जीता नहीं। —सिसरो

बहुत से आलसी हैं जिन्हें माँगा हुआ पैसा कमाये हुए रुपये से मीठा लगता है। —डी० जैरोल्ड

काहिल के पास समय नहीं होता। —एक इटालियन कहावत

व्यस्त व्यक्ति को केवल एक शैतान सताता है, काहिल को हज़ार।
—एक स्पेनी कहावत

किताब (पुस्तक, ग्रंथ)

यदि कोई पुस्तक पढ़ने योग्य है तो वह खरीदने योग्य भी है। —रस्किन

पुस्तकों से विहीन घर खिड़कियों से विहीन कमरे के समान है। —होरेस मैन

ग्रन्थरहित कमरा आत्मारहित शरीर के सदृश है। —सिसरो

सद्ग्रंथ महान् आत्मा का मूल्यवान् जीवन-रक्त है जो ध्येय-स्वरूप आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और संचित रखा गया है। —**मिल्टन**

पुस्तक जेब में रखा हुआ बगीचा है। —**एक अरबी कहावत**

पुस्तकों पर अधिकार प्राप्त करो, किन्तु उन्हें अपने ऊपर अधिकार प्राप्त न करने दो। जीवित रहने के लिए अध्ययन करो, न कि अध्ययन करने के लिए जियो। —**लिटन**

ग्रंथ-प्रेमी सबसे धनवान और सुखी है, उसकी श्रेणी या स्थान कुछ भी क्यों न हो। —**जे० ए० लांगफ़ोर्ड**

जो ग्रंथ तुम्हे सबसे अधिक सोचने के लिए विवश करते हैं, तुम्हारे सबसे बड़े सहायक हैं। —**थोडोर पार्कर**

पुस्तकें महान प्रतिभा द्वारा मानव जाति के लिए छोड़ी गई पैतृक संपत्ति हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी को सौंपे जाने के लिए हैं, मानो वे अभी अजन्मे व्यक्तियों के लिए दिए गए उपहार हों। —**एडीसन**

बिना ग्रन्थ के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लँगड़ा है, शब्द गूँगे हैं और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं। —**बार्थोलिन**

कुछ पुस्तकें चखी जाती हैं, कुछ निगली जाती हैं, और कुछ चबा-चबाकर खायी और पचायी जाती हैं। —**बेकन**

ग्रन्थ समय के महासमुद्र में प्रकाशगृह की तरह है। —**ई० पी० विपिल**

ग्रन्थ ऐसे शिक्षक हैं जो बिना बेंत मारे, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना वस्त्र और धन लिए हमें शिक्षा देते हैं। —**रिचर्ड डी बरी**

बुरी पुस्तक से बढ़कर कोई डाकू नही। —**एक इटालियन कहावत**

अच्छी पुस्तक वह है जो आशा से खोली जाए और लाभ से बन्द की जाए। —**आलकॉट**

यदि यूरोप के सब ताज हमें इस शर्त पर पेश किये जायें कि मैं अपनी पुस्तकें पढ़ना छोड़ दूं, तो मैं उन ताजों को ठुकराकर फेंक दूंगा और पुस्तकों की तरफ़-दारी करूँगा। —**फ़ेनेलिन**

मानव जाति ने जो कुछ किया, सोचा और पाया है वह पुस्तकों के जादू-भरे पृष्ठों में सुरक्षित है। —**कारलायल**

ज्ञान को अधिकतम लाभ उन्हीं पुस्तकों से हुआ है जिनसे प्रकाशकों को हानि हुई है। —टामस फ़ुलर

किफ़ायत

यदि तुम जितना अर्जित करते हो उससे कम खर्चना जानते हो, तो तुम्हारे पास पारस पत्थर है। फ्रैंकलिन

किफ़ायत बुद्धिमत्ता की पुत्री, संयम की बहन और स्वतंत्रता की माता कही जा सकती है। ख़र्चीला व्यक्ति जल्दी ही गरीब हो जाता है और ग़रीबी भ्रष्टाचार को निमंत्रित करती है। —डॉ० जानसन

निर्धनों को मितव्ययिता का उपदेश भोंड़ा और अपमानजनक है —आस्कर वाइल्ड

किशोरावस्था

(1) ठीक इसी उम्र मे ऐसे लड़कों के मन में प्रेम के लिए सीमा से कुछ ज्यादा व्याकुलता पैदा हो जाती है।

(2) सच पूछा जाए तो तेरह-चौहद वर्ष के लडके के बराबर कोई दूसरी बला ही नहीं। न तो उसके प्रति स्नेह ही उमड़ता है और न उसके संग सुख की कोई ख़ास चीज़ ही होती है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

एक तो वैसे ही मनुष्य की मानसिक गति-विधि बहुत ही दुर्जेय होती है, और फिर किशोर-किशोरी के मन का भाव तो बिल्कुल ही अज्ञेय है। —शरत्

किसान, किसानी (कृषक, खेती, कृषि)

(1) बाढ़ै पूत पिता के धर्मा। खेती उपजै अपने कर्मा।

(2) आलस नीद किसानै नासै।

(3) उत्तम खेती जो हर गहा। मध्यम खेती जो संग रहा॥
जो पूछेसि हरवाहा कहाँ। बीज बूड़िगे तिनके तहाँ॥

(4) परहथ वनिज सँदेसे खेती।
... ...
ये चारो मिलि पीटैं छाती।

(5) खेती पाती बीनती और घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये लाख लोग हों संग॥ —घाघ

हिन्दुस्तान में किसान राष्ट्र की आत्मा है। —**लोकमान्य तिलक**

(1) अगर भारत को शान्तिपूर्ण सच्ची तरक्की करनी है, तो पैसे वाले यह समझें कि किसानों में भी आत्मा है।

(2) किसानों को शहर के कृत्रिम जीवन और लकदक के मोह में नहीं पड़ना चाहिए। उनकी सादगी और सरलता ही उनका भूषण है।

(3) किसान का शहर की ओर भागना उसकी असफलता का ढिंढोरा है। ऐसा करके वह न घर का रहेगा न घाट का। —**महात्मा गाँधी**

इस धरती पर अगर किसी को सीना तानकर चलने का अधिकार है, तो वह धरती से धन-धान्य पैदा करने वाले किसान को ही है। —**सरदार पटेल**

(1) भोले-भाले किसानों को ईश्वर अपने खुले दीदार का दर्शन देता है।

(2) अन्न पैदा करने में किसान ब्रह्मा के समान है। खेती उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। उसका सारा जीवन पत्ते-पत्ते मे, फूल-फूल मे, फल-फल मे, बिखर रहा है। —**सरदार पूर्णसिंह**

क़िस्मत (भाग्य, तकदीर)

जो कायर है, जिसमे पराक्रम का नाम नही है, वही दैव का भरोसा करता है। —**वाल्मीकि**

मनुष्यों की अपनी वृद्धि और क्षय का एकमात्र कारण भाग्य ही है। —**भर्तृहरि**

भाग्य को पुरुषार्थ के द्वारा कौन मिटा सकता है? —**वेदव्यास**

भाग्य की गति जानी नही जाती। —**हर्ष**

(1) भाग्य की कल्पना मूढ़ लोग ही करते हैं और भाग्य पर आश्रित होकर वे अपना नाश कर लेते हैं। बुद्धिमान लोग तो पुरुषार्थ द्वारा ही उत्कृष्ट पद को प्राप्त करते हैं।

(2) भाग्य कुछ भी नही करता है, यह तो केवल कल्पना है। —**योगवासिष्ठ**

भाग्य विचित्र होता है। —**बाणभट्ट**

भाग्य का लेख कौन टाल सकता है। —**कर्णपूर**

ललाट में लिखी गयी लिपि को ईश्वर भी नहीं मिटा सकता। —**अभिनंद**

पिता रत्नाकरो यस्य लक्ष्मीर्यस्य सहोदरी।
शंखो भिक्षाटनं कुर्यात् भाग्यानुसारतः॥
(शंख का पिता रत्नाकर है और बहिन लक्ष्मी है। फिर भी शंख भिक्षाटन करता है। सत्य है कि फल भाग्यानुसार ही होता है।) —अज्ञात

दैवं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्। (भाग्य ही सर्वत्र फलीभूत होता है, न विद्या फलित होती है और न पौरुष।) —संस्कृत लोकोक्ति

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा॥ —तुलसीदास

जो 'रहीम' भावी कहूँ होति आपने हाथ।
राम न जाते हरिन सँग, सीय न रावन साथ॥ —रहीम

दाता के द्वार सभी आते हैं। अपना-अपना भाग्य है, किसी को एक चुटकी मिलती है, किसी को पूरा थाल। —प्रेमचंद

लाख तदबीर एक तरफ़ एक तक़दीर एक तरफ़। —एक हिन्दी लोकोक्ति

दो बातें असम्भव हैं, भाग्य में जितना लिखा है उससे अधिक आहार लेना और निश्चित समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त होना। —शेख सादी

आज का जो पुरुषार्थ है कल का वही भाग्य है। —पालशिरस

प्रत्येक मानव अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। —सैलस्ट

कीर्ति (यश)

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥ —तुलसी

(1) भाग्यशाली है वह जिसका यश वास्तविकता को पार नहीं कर जाता।
(2) क्या नदी अपने झाग पर कुछ भी ध्यान देती है? कीर्ति जीवन की नदी का झाग है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

कीर्तिवान् होने की सबसे छोटी राह अन्तरात्मा के अनुसार चलना है। —होम

सर्वोत्तम कीर्ति, प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गयी प्रशंसा है। —टामसयोर

सहस्रों वर्ष का यश एक दिन के चरित्र पर निर्भर रह सकता है। —एक चीनी कहावत

कुकर्म

(1) ताज़ा दुहा हुआ दूध जिस प्रकार शीघ्र नहीं बिगड़ता उसी प्रकार कुकर्मों का फल भी शीघ्र नही मालूम होता; किन्तु वह राख में दबी हुई अग्नि की तरह विद्यमान् है ।

(2) कुकर्म करते समय फल मीठे और सुखदायी लगते हैं और कर्मफल भोगते समय दुःखदायी । —**महात्मा बुद्ध**

यदि तुम वह करते हो जो तुम्हें नही करना चाहिये, तो तुम्हें वह सहना पड़ेगा जो तुम्हे नहीं सहना पड़ता । —**फ्रैंकलिन**

कुटुंब दे० कुल

क़ुदरत (प्रकृति)

क़ुदरत कमज़ोरी से घृणा करती है । —**महात्मा गाँधी**

प्रकृति ईश्वरीय कला है । —**दाँते**

प्रकृति को भला-बुरा न कहो, उसने अपना कर्तव्य पूरा किया और तुम अपना करो । —**मिल्टन**

जो प्रकृति के प्रतिकूल है, वह ईश्वर के प्रतिकूल है । —**हैबल**

प्रकृति के सब कार्य धीरे-धीरे होते है । —**बेकन**

क़ुदरत के नियम न्याय ही नहीं भयंकर है। उनमें दुर्बल के लिए दया नही है । —**लांगफ़ैलो**

प्रकृति एक बात कहे और बुद्धिमत्ता दूसरी, ऐसा नही हुआ, नहीं-नहीं, कभी नहीं । —**एडमंड बर्क**

प्रकृति ने हमें दो कान दिए हैं किन्तु मुख एक ही । —**डिज़रायली**

प्रकृति को अपना शिक्षक बनाओ । —**वर्ड्सवर्थ**

प्रकृति कोई कार्य व्यर्थ नही करती । —**सर थामस ब्राउन**

प्रकृति और विवेक सदा एक ही बात कहते हैं । —**जुवैनल**

अपने ही सुख-दुख के रंग में रँगकर प्रकृति को देखा तो क्या देखा ? मनुष्य ही सब कुछ नहीं है । प्रकृति का अपना रूप भी है। —**रामचन्द्र शुक्ल**

पढ़े फ़ारसी बेचैं तेल । यह देखो कुदरत का खेल ।। —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

कुपुत्र

एकेन शुष्कवृक्षेण दह्यमानेन वह्निना ।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ।।

(आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त बन इस प्रकार जल जाता है, जैसे एक ही कुपुत्र से सम्पूर्ण कुल ।) —**चाणक्य**

जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसंगति माहिं ।
मूरख सो सुत अधम है, तेहि जनमे सुख नाहिं ।। —**विदुर**

ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय ।। —**रहीम**

उपजे कहा कपूत के, बरुक नास निज होय ।
धूम बनत बारिद बरसि, नासत अनल भिजोय ।। —**रामचरित उपाध्याय**

कुमति

(1) जहाँ कुमति तहँ बिपति निधाना ।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ।
(2) कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी ।। —**तुलसी**

संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध ।
राखेहु मेलि कपूर में, हीग न होत सुगंध ।। —**बिहारी**

कुरूप, कुरूपता

कुरूपता शील से युक्त होने पर शोभित होती है । —**चाणक्य**

मेरे दोस्त ! किसी चीज को कुरूप न कहो, सिवा उस भय के जिसकी मारी कोई आत्मा स्वयं अपनी स्मृतियों से डरने लगे । —**ख़लील जिब्रान**

कुरूप मन से कुरूप चेहरा अच्छा है । —**जेक्स एलिस**

कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है जिसे हम अपने सद्गुणों द्वारा दूर कर सकते हैं । —**बर्क**

कुर्सी

यह रत्नजटित मुकुट तुम्हें भगवान ने इसलिए नहीं दिया कि लाखों सिरों को पैरों से ठुकराओ । (राज्यश्री) —**जयशंकर प्रसाद**

मुकुट काँटों का होता है, उसे निभाना आसान नहीं ।
—**एक फ्रांसीसी कहावत**

पद पाने से पद का निर्वाह कहीं कठिन होता है।

—एक इतालवी कहावत

कुल (कुटुंब, परिवार, वंश)

(1) कुल खोया कुल ऊबरै, कुल राख्या कुल जाइ।
राम निकुल कुल भेंटि लै, सब कुल रह्या समाइ ॥
(2) कबीर कुल तौ सो भला, जिहि मे उपजै दास।
जिहि कुल दास न ऊपजै सो कुल आक पलास ॥ —कबीर

काहू के कुल तन न विचारत।
अविगत की गति कहि न परत है व्याध अजामिल तारत।
कौन जाति अरु पाँति विदुर की, ताही के पग धारत।
भोजन करत माँगि घर उनके, राज मान-मद टारत ॥ —सूरदास

(1) बिन गुन कुल जाने बिना, मान न करि मनुहारि।
ठगत फिरत सब जगत को, भेप भक्त को धारि ॥
(2) कुल बल जैसो होय सो, तैसी करिहै बात।
बनिक-पुत्र जानै कहा, गढ़ लेवे की घात ॥
(3) कुल मारग छोड़े न कोउ, होहु किते की हानि।
गज इक मारत दूसरो, चढ़त महावत आनि ॥
(4) बिना सिखाये लेत है, जेहि कुल जैसी रीति।
जनमत सिंहिनि को तनय, गज पर चढ़त अभीत ॥
(5) गुनतें संग्रह सब करै, कुल न विचारै कोय।
हरिहू मृगमद को तिलक, करत लेत जग मोय ॥
(6) भले बंस सन्तति भलौ, कबहूँ नीच न होय।
ज्यों कंचन की खान मै, काँच न उपजै कोय ॥ —वृन्द

गुन तैं महिमा बढ़ति है, कुल आवत नहिं काम।
क्यौं हूँ नहिं सीपी बिकै, कहुँ मोती के दाम ॥ —रामचरित उपाध्याय

कुलीन, कुलीनता

(1) छिन्नोपि चन्दनतरुर्न जहाति गन्धं।
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम् ॥
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः।
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान्कुलीनः ॥
(जैसे काटा हुआ चन्दन का वृक्ष गन्ध को नहीं छोड़ता, बूढ़ा हो जाने पर

भी गजराज अपनी मन्दगति को नहीं छोड़ता, कोल्हू में पेरी हुई ईख मधुरता नही छोड़ती, उसी प्रकार दरिद्र हो जाने पर भी कुलीन व्यक्ति सुशीलता आदि गुणों को नही छोड़ता।)

(2) वरये कुलजां प्राज्ञो विरूपामपि कन्यकाम्।
रूपशीलां न नीचस्य विवाहः सदृशे कुले ।।

(कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो, सुन्दर किन्तु नीच संस्कारों वाली से कभी विवाह न करो।) —चाणक्य

सच्चे कुलीन सज्जन में ये चार गुण पाये जाते हैं—हँसमुख चेहरा, उदार हाथ, मृदु भाषण और स्निग्ध निरभिमान। —तिरुवल्लुवर

बुरो होय तउ सुकुल को, तासों बुरी न होय।
जदपि धुवाँ है अगर को, करत सुगन्धित सोय ।। —वृन्द

महान और उच्चवंश से उत्पत्ति स्वयं ही एक बड़ा सम्मान और विशेष अधिकार है। जो इन्ही के अनुसार जीवन व्यतीत करता है सर्वोच्च आदर का पात्र होता है और जो नही करता वह सबसे बड़ी अपकीर्ति का पात्र होता है। —कोल्टन

कुलीनता वही सबसे अधिक प्रदर्शित होती है जहाँ वह साधारण मनुष्य को कम-से-कम दीखती है। —एडीसन

मैं कुलीन पैदा हुआ हूँ, जिसे कोई अपनी सम्पत्ति नही बना सकता, जिस पर कोई शासन नहीं कर सकता; विश्व के किसी भी राज्य का मैं कठपुतली या नमकहलाल सेवक सिद्ध नही हो सकता। —थोरो

कुल मर्यादा में आत्मरक्षा की बड़ी शक्ति होती है। —प्रेमचन्द

आक्रोपितोऽपि कुलजो न वदत्यवाच्यं।
(कुलीन पुरुष क्रोध दिलाने पर भी अवाच्य नही कहता।) —अज्ञात

मैं नही जानता कि मेरे बाबा कौन थे। मुझे यह जानने की अधिक चिन्ता है कि उनका पौत्र क्या बनेगा। —अब्राहम लिंकन

कुसंग, कुसंगति

को न कुसंगति पाइ नसाई। —तुलसी

(1) रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समझहिं सब ताहि ।।

(2) बसि कुसंग चाहत कुशल यह रहीम अपसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन बस्यो परोस ॥
(3) रहिमन, नीच प्रसंग ते, नित प्रति लाभ विकार।
नीर चोरावैं संपुटी, मारु सहै घरिआर। —रहीम

संगति सुमति न पावहीं, परे कुमति के धंध। —बिहारी

कबहुँ कुसंग न कीजिए, किए प्रकृति की हानि।
गूँगे को समझाइयो, गूँग की गति आनि ॥ —वृन्द

नीच संग तें सुजन की, मान-हानि ह्वै जाय।
लोह कुटिल के संग तें, सहै अगिन घन घाय। —दीनदयाल गिरि

एकौ पल खल-संग नहिं, सुखदायक लखु तात।
परि कुधातु कै संग मैं, पावक पीट्यौ जात ॥ —रामचरित उपाध्याय

कुसमय (असमय)

(1) रहिमन असमय के परे हित अनहित ह्वै जाय।
(2) रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै बेर ॥ —रहीम

समय के फेर ते सुमेरु होत माटी को। —अज्ञात

कूटनीति

घृणिततम बात को अति सुन्दर ढंग से कहना और करना ही कूटनीति है।
—गोल्डबर्ग

कूटनीति मानवीय गुणों के विरुद्ध एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने दुनिया के बहुत बड़े भाग को गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ रखा है और जो मानवता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है। —रोमाँ रोलाँ

कृतघ्नता

कृतघ्न आदमी से कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। —शेख सादी

कृतघन कबहुँ न मानहीं कोटि करै जो कोय।
सर्बस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ॥
तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै।
काम काढ़ि चुप रहै फेरि तेहि नहिं पहिचानै ॥

कह गिरिधर कबिराय रहत नित ही निर्भय मन।
मित्र शत्रु सब एक दाम के लालच कृतघन ।। —गिरिधर कविराय

कृतघ्न पुत्र का होना, सर्प के दाँतों से भी ज्यादा तेज़ होता है।
—शेक्सपियर

संसार में छल, प्रवञ्चना और हत्याओं को देख कर कभी-कभी मान ही लेना पड़ता है कि यह जगत ही नरक है, कृतघ्नता और पाखंड का साम्राज्य यही है।
—जयशंकर प्रसाद

अभिमानी मनुष्य को कृतघ्नता से जितना दुःख होता है उतना और किसी बात से नही होता। वह चाहे अपने उपकारों के लिए कृतज्ञता का भूखा न हो, चाहे उसने नेकी करके दरिया ही मे डाल दी हो...। (से० स०) —प्रेमचन्द

कृतघ्न के साथ भलाई करना उसी प्रकार है जिस प्रकार कि गुलाब-जल को समुद्र में छोड़ना। —एक फ़ारसी कहावत

कृतज्ञता

मनुष्य जीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले बल्कि उसके उपकार से भी बढ़कर उसका उपकार कर दे। —वेदव्यास

एहसान न मानने वाला प्राणी पृथ्वी पर बोझ के समान है।
—गिरिधरदास

पशु-पक्षी भी उपकार मानते हैं। —भास

कृतज्ञता शब्दों में आकर शिष्टता का रूप धारण कर लेती है। उसका मौलिक रूप वही है जो आँखों से बाहर निकलते हुए काँपता और लजाता है। (काया०) —प्रेमचंद

जब कुत्ते में भी कृतज्ञता अकथनीय है पाई जाती।
तब सुसभ्य मानव से यह क्यों नहीं हाय ! अपनाई जाती ।।
—शालिग्राम कवि

यदि तुम किसी भूख से पीड़ित कुत्ते को उठा लो और उसको देख-भाल मे खुश करो, तो वह तुम्हें कभी नहीं काटेगा। मनुष्य और कुत्ते में यही प्रधान अन्तर है। —मार्कस्वेन

कृतज्ञता एक कर्त्तव्य है जिसे पूरा करना चाहिए लेकिन जिसे पाने का किसी को अधिकार नहीं है। —रूसो

कृतज्ञता समस्त गुणों की जननी है। —सिसरो

कृतज्ञता साक्षात स्वर्गलोक है। —ब्लेक

किसी दार्शनिक को शब्दों की इतनी कमी कभी महसूस नहीं हुई जितनी कि कृतज्ञ को। —कोल्टन

कृपण, कृपणता दे० कंजूस, कंजूसी

कृतज्ञ मानव को उसकी याचना से ज्यादा दो। —एक पुर्तगाली कहावत

कृपया और धन्यवाद

'कृपया' और 'धन्यवाद'—ये छोटी रेज़गारी है जिनके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते है। ये ऐसे साधारण शिष्टाचार हैं जिनके द्वारा हम जीवन-यन्त्र को स्नेह-युक्त और सुचालित रखते हैं। —गार्डनर

कृपा

रिपु पर कृपा परम कदराई। —तुलसीदास

कृपक दे० किसान

कृषि दे० किसान

कोशिश (प्रयास, प्रयत्न, यत्न)

वैभव तो प्रयास में है पुरस्कार मे नही। —मिलनर

हमें कोशिश से संतुष्ट रहना चाहिए यदि वह सही हो और यथाशक्ति की जा रही हो। —महात्मा गाँधी

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य है। —समर्थ रामदास

प्रयास में ईश्वर का निवास है। —ब्रह्म चैतन्य

क्रांति

(1) मृत्यु जो कि शाश्वत सत्य है, क्रन्ति है और जन्म तथा जीवन धीरे-धीरे और स्थिर रूप से होने वाला विकास है। मनुष्य की उन्नति के लिए स्वयं जीवन जितना आवश्यक है उतनी ही आवश्यक क्रान्ति है।

(2) राष्ट्र की प्रगति विकास और क्रान्ति दोनों ही तरह से होती है और ये दोनों आवश्यक हैं।

(3) क्रान्ति की प्रशंसा मैं तभी करूँगा, यदि वह अहिंसक हो। हिंसात्मक क्रान्तियाँ अनेक देशों में हुई हैं, पर उनका परिणाम अच्छा नहीं हुआ। उन्हें सुधरने में दशाब्दियाँ लग गईं।

(4) क्रान्ति तो युगों के बाद आती है और वह मनुष्य को सजग करने—सुधारने के लिए आती है।

(5) राष्ट्रों की प्रगति विकास से भी हुई है और क्रान्ति से भी। दोनों ही समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। मृत्यु को एक क्रान्ति कह सकते हैं और जीवन को विकास।
—**महात्मा गाँधी**

जब आर्थिक परिवर्तन की प्रगति बहुत अधिक बढ़ जाती है, पर शासन-तन्त्र जैसे का तैसा बना रहता है, तब दोनों के बीच बहुत बड़ा अन्तर पड़ जाता है। प्रायः यह अन्तर एक आकस्मिक परिवर्तन से दूर होता है, जिसे क्रान्ति कहते हैं।
—**जवाहरलाल नेहरू**

क्रान्ति तन्त्र से नही, मंत्र से होती है। —**विनोबा भावे**

क्रान्ति शान्ति नहीं है। उसे हिंसा में से ही चलना पड़ता है,—यही उसका घर है और यही उसका अभिशाप। —**शरत्चन्द्र**

जो क्रान्ति एक दिशा मे तभी बढ़ती है जब दूसरे मार्ग बंद कर ले, वह क्रान्ति नही है। हम जो इतनी हलचल के बाद भी आगे नहीं बढ़ पाते उसका यही कारण है कि हम प्रगति को कृत्रिम प्रणालियों में बहाना चाहते है। (शेखर) —**अज्ञेय**

मेरा दृढ़ विश्वास है कि क्रान्ति कभी भी नही रोकी जा सकती।
—**बेंजामिन डिसराइल**

क्रान्ति अति हानिकारक कूड़े के ढेर के सदृश है, जिससे अति उत्तम वानस्पतिक पैदावार होती है। —**नैपोलियन**

क्रान्ति सभ्यता की जननी है। —**विक्टर ह्यूगो**

(1) राजनीतिक विप्लव विश्व के विकास में एक नया युग लाता है।

(2) क्रान्ति बनायी नहीं जाती, वह स्वयं आती है। —**वेंडेल फिलिप्स**

क्रान्ति सदैव द्रुतिगामिनी होती है। —**वाल्टेयर**

क्रान्ति कभी पीछे की ओर नहीं जाती। —**एमर्सन**

क्रोध

(1) संचितस्यापि महतो वत्स क्लेशेन मानवैः।
यशसस्तपसश्चैव क्रोधो नाशकरः परः॥

(वत्स ! मनुष्य के द्वारा बहुत क्लेश से सञ्चित किये हुए यश और तप को भी क्रोध पूर्णत: विनष्ट कर डालता है।)

(2) मूढानामेव भवति क्रोधोज्ञानवतां कुतः ।

मूर्खो को ही क्रोध आता है, ज्ञानियों को नहीं) —विष्णु पुराण

क्रोध यमराज है । —चाणक्य

(1) यदि न स्युर्मानुषेषु क्षमिणः पृथिवीसमाः ।
न स्यात् संधिर्मनुष्याणां क्रोधमूलोहि विग्रहः ।।

(यदि मनुष्यों मे पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हों तो मानवों में कभी सन्धि हो ही नहीं सकती, क्योंकि झगड़े की जड़ तो क्रोध ही है ।)

(2) किसी के प्रति मन में क्रोध लिए रहने की अपेक्षा उसको तत्काल प्रकट कर देना अधिक उत्तम है, जैसे पल-भर में जल जाना देर तक सुलगने से ज्यादा अच्छा है : —वेदव्यास

(1) क्रोधाद्भवति संमोह : संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।

(क्रोध मे मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से बुद्धि का नाश हो जाता है, और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है ।)

(2) काम, क्रोध और लोभ ये नरक के तीन दरवाजे हैं। —गीता

अक्क्रोधेन जिने क्रोधं, असाधुं साधुना जिने ।

(मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से जीते ।)

—गौतम बुद्ध

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्ब को जला डालती है। —संत तिरुवल्लुर

कामक्रोधग्राहवती पंचेन्द्रियजलां नदीम् ।
नावं धृतिमयी कृत्वा जन्मदुर्गाणि सन्तर ।।

(काम और क्रोध मगर के समान हैं, पाँचों इन्द्रियाँ जलरूप हैं और जन्मों की शृंखला दुर्गरूप है। इस दुस्तर नदी को पार करने के लिए धैर्यरूपी नाव ही काम दे सकती है।) —अज्ञात

काम क्रोध अहंकार निवारो तो सबै दिसंतर कीया। —गोरखनाथ

(1) काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान।
तब लगि पंडित मूर्खहू दोनों एक समान ।।

(2) जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छमा तहँ आप॥
(3) काम क्रोध त्रिष्णां तजै ताहि मिलै भगवान।
(4) कामी क्रोधी लालची, इनतैं भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥ —कबीर

(1) काम क्रोध मद लोभ सब, प्रबल मोह की धार।
तिन महँ अति दारुण दुःखद, मायारूपी नार॥
(2) तात तीन अति प्रबल खल, काम, क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहिं निमिष महुँ छोभ॥
(3) राग रोष इरिषा मदु मोहू।
जनि सपनेहुँ इनके बस होहू॥
(4) काम क्रोध मद लोभ सब,
नाथ नरक के पंथ।
(5) उपज क्रोध ज्ञानिहु के हिये।
(6) केहि कर हृदय क्रोध नहिं दहा।
(7) लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं विश्व प्रतिकूल॥

(लक्ष्मण ने मुस्करा कर परशुराम से कहा—हे मुनि! क्रोध पाप की जड़ है। क्रोध के प्रभाव में मानव गलत काम कर बैठते हैं और विश्व में क्रोध से अनर्थ हो जाता है।) —गोस्वामी तुलसीदास

कोप न करै महान हिय, पाय खलन तें दूप।
लौन सीचि कर पीड़िए तऊ मधुर रस ऊख॥ —दीनदयालु गिरि

रिसु के बस ना हूजिए कीजै बात विचार।
पुनि पछिताए ह्वै कहा जो ह्वै जाइ बिगार॥ —जान

(1) रोस मिटै कैसे कहत रिस उपजावन बात।
ईंधन डारै आग महँ कैसे आग बुझात॥

(1) विषहूँ ते सर-सी लगै, रिस में रस की भाख।
जैसे पित्त ज्वरीन को, करवी लागति दाख॥ —वृन्द

अपने तें जो छुद्र अति नेहि पर करिय न क्रोध।
सोभा कबहु न देइगो केहरि ससक विरोध॥ —रामचरित उपाध्याय

(1) क्रोध और वैर का भेद केवल कालकृत है। दुःख पहुँचाने के साथ ही दुःख-दाता को पीड़ित करने की प्रेरणा करनेवाला मनोविकार क्रोध और कुछ

काल बीत जाने पर प्रेरणा करने वाला भाव वैर है। (चिन्ता०-1)

(2) क्रोध का एक हल्का रूप है चिड़चिड़ाहट, जिसकी व्यंजना प्रायः शब्दों ही तक रहती है। (चिन्ता०-1)

(3) क्रोध दुःख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। साक्षात्कार के समय दुःख और उसके कारण के सम्बन्ध का परिज्ञान आवश्यक है। (चिन्ता०-1)

(4) क्रोध शांति भंग करनेवाला मनोविकार है। एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का संचार करता है। (चिन्ता०-1)

(5) क्रोध सब मनोविकारों में फुर्तीला है। इसी से अवसर पड़ने पर यह और दूसरे मनोविकारों का भी साथ देकर उनकी तुष्टि का साधक होता है। (चिन्ता०-1)

(6) वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। (चिन्ता०-1)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(1) व्यंग्य और क्रोध में आग और तेल का संबंध है।

(2) निर्बल क्रोध उदार हृदय में करुणा का भाव उत्पन्न कर देता है। किसी भिक्षुक के मुँह से गाली खाकर सज्जन मनुष्य चुप रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

(3) क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है।

(4) क्रोध और ग्लानि से सद्‌भावनाएँ विकृत हो जाती हैं, जैसे कोई मैली वस्तु निर्मल वस्तु को दूषित कर देती है। —प्रेमचन्द

स्वर्ग उन लोगों के लिए है जो अपने क्रोध को वश में रखते हैं।

—कुरान शरीफ

क्रोध से क्रोध का शमन नहीं होता, इसके लिए क्षमा की आवश्यकता है। क्रोधी मानव के अकारण शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं। —ज्ञानेश्वर

क्रोध से भली-भाँति वह बचा रहता है जो स्मरण रखता है कि ईश्वर उसे हर समय देख रहा है। —प्लेटो

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है। —सुकरात

(1) क्रोधी मानव का स्वभाव ऐसे तिनके के समान होता है जिसे क्रोध की आँधी कभी भी उड़ा ले जा सकती है।

(2) क्रोध सागर की तरह बहरा, अग्नि की तरह उतावला है।

—शेक्सपियर

ग़ुस्सा होना दूसरे की ग़लती का अपने से बदला लेना है। —पोप

क्रोध समझदारी को घर से बाहर निकाल देता है और द्वार की चटखनी लगा देता है। —प्ल्युटार्क

क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।

—पाइथागोरस

जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो। —कन्फ्यूशियस

जो मानव अपने क्रोध पर क़ाबू नहीं पा सकता, उसे समझना चाहिए कि वह विश्व में किसी काम के योग्य नही है। —चैस्टरफ़ील्ड

क्रोध क्षणिक पागलपन है, इसे वश में करो, अन्यथा यह तुम्हे वश मे कर लेगा। —होरेस

क्रोधी मानव का मुख तो खुला रहता है, किन्तु नेत्र बन्द रहने हैं। —कैटो

क्रोध के सिंहासन पर बैठने पर बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है। —हैनरी

क्रोधी मनुष्य को एक बार पुनः अपने ऊपर क्रोध आना है, जब उसे समझ आती है। —पब्लियस साइरस

क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औषधि विलम्ब है। —सेनेका

क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है। —इंगरसोल

जब तुम अत्यधिक क्रोध में हो तब यह विचार करो कि मानव-जीवन कितना क्षणिक है। —मार्क्स आरेलियस

जब क्रोध में हो तो दस बार सोचकर बोलो, जब अत्यधिक क्रोध में हो तो सहस्र बार सोचो। —जेफ़रसन

घमण्डी का कोई ईश्वर नही, ईर्ष्यालु का कोई पड़ोसी नहीं, और क्रोधी का तो वह स्वयं भी नहीं। —बिशप हॉल

(1) जिस अग्नि को तुम शत्रु के लिए जलाते हो वह बहुधा तुम्हें ही अधिक जलाती है।

(2) जब तुम क्रोध में हो तो उस समय किसी पत्र का उत्तर न लिखो।

—चीनी कहावत

क्रोध ज्ञानी पुरुष के हृदय में झाँक सकता है, परन्तु वह केवल मूर्खों के हृदय में ही निवास करता है। **—एक हिब्रू कहावत**

(1) हम कीड़े-मकोड़ों और रेंगनेवाले जन्तुओं को तो मार डालते हैं, पर अपने सीने में छिपे हुए क्रोध को नहीं मारते, जो सचमुच मारने की चीज है।

(2) क्रोध से बदले की भावना बढ़ती है और उसके भयंकर परिणाम होते है।

(3) क्रोधहीन मनुष्य देवता है।

(4) क्रोध से मनुष्य उसकी ही बेइज्ज़ती नही करता, जिस पर क्रोध करता है, बल्कि स्वयं अपनी प्रतिष्ठा भी गँवाता है।

(5) क्रोध ऐसा दावानल है, जो उस व्यक्ति को ही जलाता है जिसमे वह उत्पन्न होता है।

(6) क्रोध का सबसे अच्छा इलाज मौन है।

(7) जैसे ताप संचित रहकर शक्ति में परिवर्तित होता है उसी प्रकार क्रोध को अधीन रखकर ऐसी शक्ति मे परिवर्तित किया जा सकता है जो विश्व को हिला दे।

(8) आवेग और क्रोध को वश में कर लेने से शक्ति बढ़ती है और आवेग आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

(9) क्रोध एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है।

(10) कामना वाले के लिए क्रोध अनिवार्य है, क्योंकि कामना कभी तृप्त नहीं होती।

(11) क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है। जो मनुष्य इस अग्नि को वश मे कर सकता है वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश मे नही कर सकता वह स्वयं अपने को जला लेगा। **—महात्मा गाँधी**

क्षमा

अलंकारोहि नारीणां क्षमा तु पुरुषस्य वा।
(स्त्री अथवा पुरुष के लिए क्षमा ही अलंकार है।) **—वाल्मीकि**

क्षमा तो सभी तपस्याओं का मूल है।

—बाणभट्ट

(1) क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदाः क्षमा श्रुतम्।
य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति॥

(क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस प्रकार जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है।)

(2) क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रखा है।

—**महाभारत**

वृक्ष अपने काटनेवाले को भी छाया देता है। —**चैतन्य**

क्षमा कर देना दुश्मन पर विजय प्राप्त कर लेना है। —**हज़रत अली**

दूसरे का अपराध सहन कर अपराधी पर उपकार करना, यह क्षमा का गुण पृथ्वी से सीखना और पृथ्वी पर सदा परोपकाररत रहनेवाले पर्वत और वृक्षों से परोपकार की दीक्षा लेना। —**गीता**

कोकिलानाम् स्वरो रूपं नारी रूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्।

(कोकिलाओं का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूप मनुष्य का रूप विद्या होती है और तपस्वियों का रूप क्षमा है।) —**चाणक्य**

छमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात॥ —**कबीर**

नर भूपन सब दिन क्षमा विक्रम अरि घनघेर।
ज्यों तिय भूषन लाज है निलज सुरत की बेर॥ —**वृन्द**

(1) क्षमा से बढ़कर दंड नहीं। (अजात०)

(2) क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नहीं मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है। (स्कंदगुप्त)

(3) सब स्थानों पर क्षमा की एक सीमा होती है। (राज्यश्री)

—**जयशंकर प्रसाद**

क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम्। —**महात्मा गांधी**

ग़लती करना मानवोचित है, क्षमा करना भगवानोचित है।

—**एक अँग्रेज़ी कहावत**

छिद्रान्वेषी

जब तक तुममें दूसरों को व्यवस्था देने, दूसरों के अवगुण ढूँढ़ने, दूसरों के

दोष ही देखने की आदत मौजूद है, तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात् करना अत्यन्त कठिन है। —**स्वामी रामतीर्थ**

सबमे अवगुण वही ढूंढ़ता है जिसके मन मे हीनग्रथि होती है। —**कन्फ्यूशियस**

क्षुद्र, क्षुद्रता (नीच, नीचता)

छोटी प्रकृति के लोग सम्पत्ति के कण को भी पाकर तराजू के समान ऊपर उठ जाते हैं। —**बाणभट्ट**

छोटी नदियाँ शोर करती हैं और बड़ी नदियाँ शान्त चुपचाप बहती हैं। —**सुत्त निपात**

(1) रहिमन छोटे नरन सों, होत बड़ो नहिं काम।
मढ़ो दमामों जात है कहुँ चूहे के चाम॥
(2) रहिमन ओछे नरन सों, वैर भलो ना प्रीति।
काटे चाटे स्वान के, दुहूँ भाँति बिपरीति॥ —**रहीम**

कबहुँ न ओछे नरन सों, सरत बड़न को काम। —**बिहारी**

(1) ओछे की प्रीत, वालू की भीत।
(2) ओछे के घर खाना, जनम-जनम का ताना। —**हिन्दी लोकोक्तियाँ**

ख़तरा

खतरा हमारी छिपी हुई हिम्मतों की कुजी है। —**प्रेमचंद**

ख़र्च

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक ख़र्च करे तो कंगाल हो जाता है। —**चाणक्य**

रुपये ने कहा, मेरी चिन्ता न कर पाई की चिन्ता कर। —**चेस्टरफ़ील्ड**

धन पैदा करने की अपेक्षा उसके ख़र्च करने का काम कही कठिन है। —**एक अरबी लोकोक्ति**

छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहो। थोडा-थोड़ा जल रिसते बडे-बड़े जहाज़ डूब जाते हैं। —**अज्ञात**

खाँसी

झगड़े की जड़ हाँसी, रोग की जड़ खाँसी। —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

खाद

(1) खाद परै तो खेत । नही त कूड़ा-रेत ।

(2) खादै कूड़ा ना टरै करम लिखा टरि जाय । —घाघ

खादी

(1) मैं (या कोई दूसरा) जिस एक उपाय का अवलम्बन करा सकता हूँ, वह है त्याग-भाव से जन-समाज की सेवा करना और ऐसी सेवा सिर्फ़ खादी के ज़रिए ही हो सकती है ।

(2) कठिनाइयाँ सहकर भी खादी पहनो ।

(3) खादी महँगी होने पर भी सस्ती है ।

(4) गाँव की ज़रूरत की हर चीज़ गाँव में ही बननी चाहिए । खादी इसकी पहली सीढ़ी है ।

(5) चरखे से निकलने वाला कच्चा धागा करोड़ों स्त्री-पुरुषों मै प्रेम का अटूट सम्बन्ध बाँध देता है ।

(6) स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए श्वास जितनी ही आवश्यक है ।

(7) खादी छोड़ने के मानी होगे भारतीय जनता को बेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना ।

(8) खादी का मतलब है, देश के सभी लोगों की आर्थिक स्वतन्त्रता और समानता का आरम्भ ।

(9) खादीवृत्ति का अर्थ है, जीवन के लिए जरूरी चीज़ों की उत्पत्ति और उनके बँटवारे का विकेन्द्रीकरण ।

(10) जिस तरह हम अपने ही घर का बनाया भोजन पसन्द करते हैं, वैसे ही हमें हाथकता और हाथबुना कपड़ा (खादी) पहनना चाहिए ।

(11) खेती किसान का धड़ है और चरखा हाथ-पैर । —महात्मा गांधी

खादी पहनने से हम अपने नादान, गरीब, नंगे, भूखे भाइयों की झोंपड़ियों में उम्मीदों से भरी हुई झलक चमका सकते हैं । —जवाहरलाल नेहरू

(1) खादी द्वारा कला की—जीवित कला की उपासना होती है ।

(2) खादी न खरीदना करोड़ों 'लोगों' के मुँह का 'कौर' छीन लेने के बराबर है ।

(3) खादी में गुप्तदान सिद्ध होता है । —विनोबा

ख़ातिरदारी

ख़ातिरदारी जैसी चीज में मिठास ज़रूर है, पर उसका ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही। —शरत्चन्द्र

ख़ानदान

धुआँ आकाश से शेखी बघारता है और राख धरती से कि वे अग्नि के ख़ानदान वाले हैं। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जिस ख़ानदान की रग-रग में सनीचर बैठ गया है, उसे बचा कौन सकता है ? —विमल मित्र

ख़ामोशी

ख़ामोश रहो, या ऐसी बात कहो जो ख़ामोशी से अच्छी हो। —पाइथागोरस

जबकि बोलना चाहिए, उस समय ख़ामोश रहने से लोगों का खात्मा हो सकता है; जबकि ख़ामोश रहना चाहिए, उस समय बोलने से हम अपने शब्दों को व्यर्थ खर्च करते हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति सावधानीपूर्वक दोनों ग़लतियों से बचता है। —कन्फ्यूशियस

जब कहने से कुछ नहीं होता, तब पवित्र निर्दोषिता की ख़ामोशी, बहुधा प्रभावशाली होती है। —शेक्सपियर

ख़ाली

ख़ाली बैठना विश्राम नहीं है, बिल्कुल शून्य मस्तिष्क एक पीड़ित मस्तिष्क है। काउपर

ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर। —एक हिंदी लोकोक्ति

ख़िताब

मूर्ख को वास्तव में ख़िताब की आवश्यकता है; उससे लोग 'रायबहादुर' और 'सर' कहना सीख जाते हैं और उसके असली नाम, 'मूर्ख' को भूल जाते हैं। —क्राउन

ख़िताब मनुष्यों की शोभा नहीं बढ़ाते, अपितु ख़िताबों की शोभा मनुष्यों से है। —मैकियाबेली

ख़ुदगर्ज़ी

स्वार्थ में सद्गुण ऐसे खो जाते हैं जैसे सागर में नदियाँ। —रोश

शैतान केवल अपना स्वार्थ देखता है। —गेटे

स्वार्थ ही कारावास है जो आत्मा को बन्दी बना सकता है।
—हैनरी वान डायक

स्वार्थ के कारण मानव सुख से दूर हटता जाता है। —जेम्स एगल

खुदी

खुदी को कर बुलंद इतना, कि हर तकदीर से पहले
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है? —इक़बाल

खुशमिज़ाजी

खुशमिज़ाजी, सभा-सोसाइटी में धारण करने के लिए बढ़िया पोशाक है।
—थैकरे

खुशमिज़ाजी स्वास्थ्य है, उदासीनता बीमारी। —हैलिवर्टन

खुशामद (चाटुकारिता, चापलूसी)

(1) खुशामद से ही आमद है, सबसे बड़ी खुशामद है।
(2) जिहि की खाई, तिहि की गाई।
(3) ऊँट बिलाई ले गयी, 'हाँ जी, हाँ जी' कीजै। —हिन्दी लोकोक्तियाँ

जो खुशामद करे, खल्क उससे सदा राज़ी है,
सच तो यह है कि खुशामद से खुदा राज़ी है। —नज़ीर

खुशामद और शुद्ध सेवा में इतना अन्तर है जितना झूठ और सच में है।
—महात्मा गाँधी

जिन्हें खुशामद प्रिय होती है, उन्हें सच्ची बात मीठी भाषा में कही जाए, तो भी कड़वी लगती है। —सरदार पटेल

स्वार्थसिद्धि के लिए प्रशंसा करना दाता के हाथ में स्वाभिमान को बेचना है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

चापलूस सबसे बुरे दुश्मन होते है। —टैनिसन

(1) खुशामद से जो चीज़ मिलती है उससे काया को सुख और आत्मा को दुःख होता है।
(2) कमीना आदमी एक ही है, और वह है खुशामदी। —अज्ञात

खून

न जोश खाय जो ग़ैरत से वह लहू क्या है ? —चकबस्त

खेत, खेती (दे० किसान भी)

पाही खेती लगन बड़ि ऋण कुब्याज मगु खेत । —तुलसी

खेती पाती बीनती परमेश्वर कर जाप।
पर हाथन मत कीजिए, निउर कीजिए आप ।। —गिरिधर कवि

(1) खेत बेपनिया बूढ़ा बैल ।
सो किसान साँझै गहै गैल ।।

(2) उत्तम खेती मध्यम बान । निषिध चाकरी भीख निदान ।। —घाघ

खेती से राष्ट्र के लिए धन प्राप्त करना एकमात्र ईमानदारी का तरीका है ।
—फ्रैंकलिन

(1) जमीन का मालिक तो वही है, जो उस पर मेहनत करता है।

(2) हिन्दुस्तान के लोग अगर खेती की तरक्की न कर सके, तो वे और कोई भी काम नहीं कर सकते ।

(3) जिस धन्धे पर देश के 78 फीसदी लोगों की आजीविका चलती है, उसकी उपेक्षा आत्मघात के समान है ।

(4) खेती को अगर सहकारी पद्धति पर ठीक रीति से चलाया जाए, तो उसका सुपरिणाम किसानों के लिए ही नहीं, सारे देश के लिए होगा ।

(5) खेती एक ऐसी कला है, जिसका उत्पादन-कार्य अपने हाथों सम्पन्न होता है ।

(6) मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जब हम अपनी ज़मीन भी सामुदायिक या सहकारी पद्धति से जोतेंगे, तभी उससे पूरा फ़ायदा उठा सकेंगे ।

(7) बनिस्बत इसके कि गाँव की खेती अलग-अलग सौ टुकड़ों में बँट जाए, क्या यह बेहतर नहीं है कि सौ कुटुम्ब सारे गाँव की खेती सहयोग से करें ?

(8) सृष्टि के अधिकांश सचराचर जीवों की गुज़र-बसर खेती-बाड़ी की ही बदौलत होती है । कल-कारखानों के उत्पादन तो गौण उपयोग की वस्तुएँ हैं ।

(9) 'सबै भूमि गोपाल की' है । —महात्मा गाँधी

खेल

खेलो, ताकि तुम गंभीर बन सको । —अनाकार्सिस

खेल में हम प्रकट करते हैं कि हम किस प्रकार के लोग हैं । —ओविड

अमरीका में तो खेल ही जनता की अफ़ीम है। **—रसेल बेकर**

खोज

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूड़न डरा रहा किनारे बैठ॥ **—कबीर**

ख्याति

(1) किसी पुरानी ख्याति का उत्तराधिकार पाना ख़तरा मोल लेना है।
(2) ख्याति जीवन का झाग है। **—टैगोर**

ख्याति केवल जनता की साँस है और वह प्राय: अस्वास्थ्यकारी है। **—रूसो**

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती। वह अगस्त्य ऋषि की भाँति सागर को पीकर भी शान्त नहीं होती। **—प्रेमचन्द**

ख्याति नदी के प्रवाह के समान है। जैसे नदी के प्रवाह में हल्की तथा फूली हुई वस्तु ऊपर तैरा करती है और भारी नीचे डूब जाती है, उसी प्रकार प्रशंसा रूपी प्रवाह में उत्तमोत्तम गुण डूबे रहते हैं, केवल छोटे-छोटे गुण ऊपर दिखलाई देते हैं। **—बेकन**

ख्याति नदी की भाँति है, जो अपने उद्गम मे सँकरी होती है और जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाती है, विस्तृत होती जाती है। **—डेविनेंट**

ख्याति की अभिलाषा वह अंतिम पोशाक है जिसे ज्ञानी मनुष्य भी अन्त में उतार देते हैं। **—एक अरबी कहावत**

ख्याति अपने को बढ़ाकर दिखाने वाला शीशा है। **—एक अंग्रेज़ी कहावत**

गंदगी

मनुष्य स्वभाव से गन्दगी छिपाने की प्रवृत्ति रखता है। **—महात्मा गाँधी**

गवाह

आँखों देखा एक गवाह कानों सुने दस गवाहों से कही अच्छा है।
—एक हिंदी कहावत

गति

छाया पथ में विश्राम नहीं,
है केवल चलते आना। **—जयशंकर प्रसाद**

धीमे चलने से न डर, सिर्फ़ डर चुपचाप खड़ा रहने से।—**एक चीनी कहावत**

गति का अर्थ है—एक समय और एक स्थान से दूसरे समय और स्थान में प्रवेश करना, अर्थात् परिवर्तन। यह परिवर्तन ही गति है और गति ही जीवन है। अमरता का अर्थ है—अपरिवर्तन गतिहीनता। —**यशपाल**

जमी को रौदते हुए, सफ़ों को चीरते हुए
बढ़े चलो! बढ़े चलो! यह वक़्त की पुकार है। —**'जिगर' मुरादाबादी**

जलधारा, यौवन, समय, संसार—सब केवल आगे ही चलते रहते हैं, पीछे लौटना नही जानते। केवल मनुष्य का मन ही इनसे विपरीत है जो बारम्बार भूत पर भी निगाह डालता है। —**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

गद्य

गद्यं कवीनां निकषं वदंति।
(गद्य कवियों की कसौटी है) —**एक संस्कृत लोकोक्ति**

शब्दों की सर्वोत्तम व्यवस्था गद्य है और सर्वोत्तम शब्दों की सर्वोत्तम व्यवस्था कविता है। —**कॉलरिज**

ग़रीब (कंगाल दरिद्र, निर्धन)

(1) सभी महान् धार्मिक नेताओं ने गरीबी को जानबूझकर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है।

(2) ग़रीबी दूर करने का भार शासन और समाज दोनों हा पर है।

(3) हो सकता है कि गरीबी पुण्य का फल हो और अमीरी पाप का।

—**महात्मा गाँधी**

(1) ज्ञान गरीबी, हरि भजन, कोमल वचन अदोष
तुलसी कबहुँ न छाड़िए, क्षमा शील संतोष

(2) नहिं दरिद्र सम दुख जग माही। —**तुलसीदास**

(1) दिव्य दीनता के रसहिं, का जानै जग अन्धु।
भली विचारी दीनता, दीनबन्धु से बन्धु॥

(2) दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥

(3) बरु रहीम कानन भलो बास करिय फल भोग।
बन्धु मध्य धनहीन ह्वै बसिबो उचित न योग॥ —**रहीम**

(1) ग़रीब वह है जिसका व्यय आय से अधिक है।
(2) ग़रीबी अपराधों की जननी है। —ब्रूएयर

अमीरों की ज़रूरतें गरीबों से ज़्यादा होती हैं, इसीलिए वे ग़रीबों की अपेक्षा ग़रीब भी ज़्यादा हैं। —सादी

साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कंजर के पग बेड़ियाँ चीटी फिरै निसंक।। —सहजोबाई

लखि दरिद्र को दूर तें लोग करें अपमान।
जाचक जन ज्यों देखि के भूंकत हैं बहु स्वान।। —दीनदयाल गिरि

एक आदमी जल और स्थल के सारे रत्न पाकर भी ग़रीब रह सकता है, परन्तु दूसरा आदमी फटे कपड़ो और सूखी रोटियों पर धनी रह सकता है—सिर्फ़ विचारों पर नियंत्रण करके। —प्रेमचन्द

दरिद्र वे लोग हैं जो अपने को दरिद्र मानते हैं, दरिद्रता दरिद्र समझने में ही रहती है। —एमर्सन

उस मनुष्य से अधिक गरीब कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है। —एडविन पग

धनवान् होते हुए भी जिसकी धनेच्छा दूर नहीं हुई है, वह सबसे अधिक ग़रीब है। —इब्राहिम आदम

वह मनुष्य ग़रीब नहीं है जो अपने को वैसा नहीं समझता। —जेरमी टेलर

ग़रीब वह नहीं है जिसके पास कम है, अपितु वह है जो अधिक चाहता है। —डैनियल

ग़रीबी (कंगाली, दरिद्रता, निर्धनता)

निर्धनता में मनुष्य को लज्जा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट हो जाता है, पराक्रम न होने में अपमान होता है, अपमान होने में दुःख मिलता है, दुःख से शोक होता है, शोक में बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है। निर्धनता ही सब आपत्तियों का घर है। —हितोपदेश

गरीबी दैवी अभिशाप नहीं, मानवीय सृष्टि है। —गाँधी जी

दरिद्रता प्रकट करना दरिद्र होने से अधिक दुखदायी है। —प्रेमचन्द

ग़रीबी मेरा अभिमान है। —हज़रत मुहम्मद

निर्धनता स्वयं को निर्धन मानने में है। —**एमर्सन**

किसी प्रकार की भी गरीबी हमारा ईश्वर से उचित सम्बन्ध जोड़ देती है, जबकि हर प्रकार की अमीरी, मन या धन की, हमारा उससे विच्छेद करा देती है। —**फ्रैंक क्रॉसले**

गरीबी स्वयं अपमानजनक नहीं है, केवल उस गरीबी के अतिरिक्त जो आलस्य, व्यसन, फ़िजूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो। —**प्लूटार्क**

गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है। —**हैज़लिट**

निर्धनतैव पाप कारणम् (निर्धनता पाप की जड़ है) —**एक संस्कृत कहावत**

(1) दरिद्रता कलह की जड़ है।

(2) गरीबी तंदुरुस्ती की माँ है।

(3) गरीबी लज्जा की बात नहीं, लज्जा की बात गरीबी से लज्जित होने में है।

(4) गरीबी दोस्तों की परख है।

(5) गरीबी दोस्तों को अलग कर देती है। —**अंग्रेज़ी लोकोक्तियाँ**

गरीबी आलस्य का इनाम है। —**एक डच कहावत**

तवंगिरी बदिलस्त न ब माल।
बुजुर्गी न अक्लस्त न ब साल।
(कोई आदमी गरीब है या धनी उसके धन से नहीं उसके दिल से देखो और कोई आदमी बुजुर्ग है या नहीं उसकी अक्ल में देखो, उम्र से नहीं।)
—**एक फ़ारसी कहावत**

(1) व्यक्ति की गरीबी के लिए व्यक्ति और परिवार से अधिक समाज ज़िम्मेदार है।

(2) मानसिक दरिद्रता भौतिक दरिद्रता से भी कहीं अधिक दुखदायी होती है। —**भोलानाथ तिवारी**

गर्व दे० 'अभिमान', 'घमंड'

गर्वशून्यता

सधन सगुण सधरम सगण सजन सुसबल महीप।
तुलसी जे अभिमान बिन ते त्रिभुवन के दीप।। —**तुलसी**

नृप गरबी, अविनीत सुत लोभी गुरु तिय चंच।
रोगयुक्त काया सदा मूल जान ये पंच।। —**एक कवि**

ग़लती

(1) ग़लती करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई ग़लती को मान लेना और इस प्रकार आचरण करना कि वह फिर न होने पाए, मर्दानगी है।

(2) क़ुदरत ने हमें ऐसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख सकते और उसे दूसरे ही देख पाते हैं। इसलिए दूसरा जो कुछ देखता है, उससे हमें फ़ायदा उठाना चाहिए।

(3) मेरे निजी अनुभवों ने तो मुझे यही सिखाया है कि हम नम्रतापूर्वक इस बात को जानें और मानें कि ग़लतियों के साथ संग्राम करना ही जीवन है।

(4) हम यह सोचने की गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते।

(5) ग़लती हर इंसान मे होती है, लेकिन जब इंसान अपनी ग़लती को छिपाता है, तो वह ख़तरनाक बन जाती है।

(6) भूल को तर्क से सही नहीं साबित किया जा सकता।

(7) ग़लती हर इंसान से होती है। पता चलते ही गलती या पाप को क़बूल कर लेने के माने हैं उसे बाहर निकाल फेंकना।

(8) गलती मान लेना, झाड़ू लगाने का सा काम है। यह गन्दगी को बुहार-कर, सतह को साफ़ कर देता है।

(9) भूल करके आदमी सीखता तो है, पर उसका यह मतलब नही कि जीवन-भर भूल ही करता जाए और कहे कि हम सीख रहे है।

(10) ग़लती से इंसान बहुत कुछ सीख सकता है बशर्ते कि वह इसके लिए तैयार हो।

(11) सच्चा मनुष्य वही है, जो अपनी गलती को मान ले और फिर उसे त्यागकर अपने-आप में सुधार कर ले। **—महात्मा गाँधी**

ग़लती तो हमारे मानवीय चिंतन की साथी है। **—अरविन्द**

अगर तुम ग़लतियों को रोकने के लिए दरवाज़े बन्द कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा। **—टैगोर**

(1) हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं है बल्कि प्रत्येक बार उठने में है जब कभी भी हम गिरें।

(2) जो जान गया कि उससे ग़लती हो गई और उसे ठीक नहीं करता, वह एक और ग़लती कर रहा है। **—कनफ़्यूशियस**

वह मनुष्य जो ग़लतियाँ नहीं करता, प्राय: कुछ नही कर पाता।

—एडवर्ड जान फ़ेल्प्स

सर्वोत्तम मनुष्य त्रुटियों से ढलकर निकलते हैं। —शेक्सपियर

एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना लज्जाजनक है। —प्लूटार्क

बुद्धिमान् मनुष्य दूसरे की ग़लतियों से अपनी ग़लती सुधारते हैं। —प्यूब्लियस साइरस

(1) मैने जो ज़रा दुनिया देखी है उससे यही सीखा है कि दूसरे की ग़लतियों पर अफ़सोस करूँ न कि क्रोध।

(2) हम प्रायः दूसरे के गुणों की अपेक्षा उसकी ग़लतियों से अधिक सीख लेते हैं। **—लांगफ़ैलो**

बहुत-सी तथा बड़ी ग़लतियाँ किए बिना कोई भी व्यक्ति बड़ा और महान् नही बनता। **—ग्लेडस्टोन**

गलती कोई भी मनुष्य कर सकता है परन्तु मूर्ख के अतिरिक्त कोई उसको जारी नही रखेगा। **—सिसरो**

हर कुप्पी से उसकी मदिरा की दुर्गन्ध आती है।

—एक स्पेनी और पुर्तगाली कहावत

गलती यद्यपि स्वयं अन्धी है तथापि वह ऐसो सतान उत्पन्न करती है जो देख सकती है। **—एक अंग्रेज़ी कहावत**

गाँव दे० ग्राम

गाय

गाँ मा हिंसीरदिति विराजम्।
(गौ तेजस्वी और अवध्य है, इसलिए इसकी हत्या मत कर।) **—यजुर्वेद**

(1) गाय मूर्तिमंत करुणामयी कविता है।
(2) गो के समान करुणा की मूर्ति और कोई जीवधारी भूमंडल पर नहीं है।
(3) यह ईश्वर के द्वारा करुणा पर लिखी गई कविता है। **—महात्मा गाँधी**

गाय का दूध, माय (माँ) का दूध। **—एक हिन्दी लोकोक्ति**

गाली

गाली देकर सिर्फ़ अपमान ही किया जा सकता है, अपनी बात मनवाई नहीं जा सकती। कठोर बात ही दुनिया में सबसे ज्यादा कमजोर होती है।

—शरच्चन्द्र

गीत

मोहक गीत में कल्पनाओं को जगाने की बड़ी शक्ति होती है । —**प्रेमचंद**

गीत गाने दो मुझे तो वेदना को रोकने को । --**सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**

रुदन का हँसना ही तो गान । —**मैथिलीशरण गुप्त**

(1) साधारणत: गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दु:खदायक अनुभूति का वह शब्दरूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके ।

(2) सुख-दु:ख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर-साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है । —**महादेवी वर्मा**

मेरे गीत किन्हीं गालों पर रुके हुए दो आँसू कन हैं ।

—**गिरिजाकुमार माथुर**

हमारे मधुरतम गीत वे ही होते हैं, जिनमें हमारी गहन संवेदना अभिव्यंजित होती है । —**शेली**

भावना से प्रेम, प्रेम से आनन्द और आनन्दातिरेक से गीतों की सृष्टि होती है । —**रस्किन**

गीता

गीता विवेकरूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है । यह सब सुखों की नींव है । सिद्धान्त-रत्नों का भण्डार है । नवरसरूपी अमृत से भरा हुआ समुद्र है । खुला हुआ परमधाम है । —**संत ज्ञानेश्वर**

गीता हमारे धर्मग्रन्थों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है ।

—**लोकमान्य तिलक**

गीता जिस कर्म का प्रतिपादन करती है, वह मानव कर्म नहीं अपितु दिव्य कर्म है । —**अरविन्द**

गीता वह तैलजन्य दीपक है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान मंदिर में प्रकाश करता रहेगा । —**महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर**

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति —तीनों योगों की न्याययुक्त व्याख्या है, अन्य किसी भी ग्रन्थ में ऐसा सामंजस्य नहीं हैं । —**बंकिमचन्द्र**

(1) गीता विश्वधर्म की एक पुस्तक है ।···वह हमारे लिए सद्गुरु रूप है, मातारूप है ।

(2) मुझे राजनीति में गीता से मार्गदर्शन मिला है।

(3) गीता मेरे लिए शाश्वत मार्गदर्शिका है। अपने ही काम के लिए मैं गीता में से आधार खोजता हूँ और यदि नहीं मिलता है, तो उस कार्य को करते हुए रुक जाता हूँ या अनिश्चित रहता हूँ।

(4) मेरे लिए तो गीता आचार की एक प्रौढ़ मार्गदर्शिका बन गई है। वह मेरा धार्मिक कोश हो गई है।

(5) मेरे लिए तो गीता ही संसार के सब धर्मों की कुंजी है। संसार के सब धर्मग्रंथों में गहरे से गहरे जो रहस्य भरे हुए हैं, उन सबको यह मेरे लिए खोल कर रख देती है।

(6) यदि कोई मुझसे कहे कि संसार की किसी एक सर्वश्रेष्ठ पुस्तक को चुन लो, तो मैं गीता को ही हाथ लगाऊँगा। —**महात्मा गाँधी**

मैं प्रतिदिन भगवद्गीता के जल में स्नान करता हूँ। वर्तमान काल की कृतियों से वह कहीं बढ़-चढ़कर है। जिस काल में यह लिखी गयी, वह सचमुच निराला ही समय रहा होगा। —**थोरो**

अशांत मन के लिए अभीष्ट ऐसा कुछ भी नहीं है जो गीता में न आया हो।
—**भगिनी निवेदिता**

गुण, गुणी

(1) गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते पितृवंशो निरर्थकः।
वासुदेवं नमस्यन्ति वसुदेव न ते जनाः ॥

(गुणों का ही सर्वत्र सम्मान होता है, गुणी के वंश का नहीं। लोग वासुदेव (कृष्ण) की ही वन्दना करते है, उनके पिता वसुदेव की नहीं।)

(2) गुणाः सर्वत्र पूज्यंते न महत्योपि संपदः।
पुर्णेन्दुः किं तथा वंद्यो निष्कलंको यथा कृशः ॥

(गुण की पूजा सर्वत्र होती है, बड़ी सम्पत्ति की नहीं। जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा वैसा वंदनीय नहीं है जैसा निर्दोष द्वितीया का क्षीण चन्द्रमा।)

(3) शत्रु के भी गुण ले ले, गुरु के अवगुण त्याग दे। —**चाणक्य**

कमिवेशते रमयितुं न गुणाः।
(गुण किसे प्रसन्न करने में समर्थ नहीं होते ?) —**भारवि**

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवांक

(जहाँ बहुत-से गुण हों वहाँ यदि एक-आध अवगुण भी आ जाय तो उसका

वैसे ही पता नहीं चल पाता जैसे चन्द्रमा की किरणों में उसका कलंक ।)

—कालिदास

यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ह्यभ्यागतो यत्र न तत्र लक्ष्मीः ।
उभौ च तौ यत्र न तत्र विद्या नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः ॥

(जहाँ लक्ष्मी रहती है वहाँ नम्रता नहीं है, और जहाँ अतिथि समागम है वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती है। और जहाँ दोनों ही हैं वहाँ विद्या का ही अभाव रहता है, अतः यह निश्चित है—एक जगह सब गुण समूह नहीं रहते ।) —अज्ञात

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते (गुण सर्वत्र पूजे जाते है ।) —एक संस्कृत लोकोक्ति

जब गुण कूं गाहक मिलै तब गुण लाख बिकाइ ।
जब गुणा कौ ग्राहक नहीं तब कौड़ी बदलै जाइ ॥ —कबीर

(1) जड़ चेतन गुन दोष मय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार ॥
(2) गुन अवगुन जानत सब कोई ।
जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥ —तुलसीदास

(1) दुख पाये बिनहूँ कहूँ गुन पावत है कोइ ।
सहै वेध बन्धन सुमन तब गुन संयुत होइ ॥
(2) मूरख गुन समुझै नही तौ न गुनी मे चूक ।
कहा भयो दिन को बिभौ देखी जौ न उलूक ॥
(3) कहूँ-कहूँ गुन तें अधिक उपजत दोष सरीर ।
मधुरी बानी बोलि कै परत पींजरा कीर ॥
(4) कहुँ अवगुण सोइ होत गुण, कहुँ गुण अवगुण होत ।
कुच कठोर त्यों है भले, कोमल बुरे उदोत ॥
(5) एकहि गुन ऐसो भलो, जिहि औगुन छिपि जात ।
बारिद के ज्यों रंग बद, बरसत ही मिटि जात ॥
(6) पूजनीय गुन तैं पुरुष, बयस न पूजित होय ।
यज्ञ तिलक किय कृष्ण कौं, छाँड़ि बड़े सब कोय ॥
(7) मान होत है गुननि तें, गुन बिन मान न होइ ।
सुक सारी राखै सबै, काग न राखै कोइ ॥
(8) ऊँचे बैठे ना लहै, गुन बिन बड़पन कोइ ।
बैठो देवल-सिखर पर, बायस गरुड़ न होइ ॥
(9) गुनवारो सम्पति लहै, बिन गुन लहै न कोइ ।
काढ़ै नीर पताल तैं, जो गुरयुत घट होय ॥

(10) उत्तम जन सों मिलत ही, अवगुन हूँ गुन होय ।
धन सँग खारो उदधि मिलि, बरसै मीठौ तोय ।। —**वृन्द**

किसी को बैंगन बाय, किसी को पथ्य । --**हिन्दी लोकोक्ति**

गुण के गाहक सहस नर बिनु गुण लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ।।
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ को यह रंग काग सँग भए अपावन ।।
कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मनके ।
बिनु गुण लहैं न कोय सहस नर गाहक गुण के ।। —**गिरिधर कविराय**

पंडित-पंडित सों मुख मंडित सायर-सायर कै मन मानै ।
संतहि संत अनन्त भलौ गुनवन्तहि कों गुनवन्त बखानै ।। —**दास**

(1) उत्तम गुन नहिं भूलिकै, दीजै अधमनि हाथ ।
फल उलटौ मिलि जात ज्यौ, भसमासुर-पशुनाथ ।।
(2) गुनिहिं न जानत निरगुनी, बसत जदपि घर एक ।
कंज-गंध को तत्त्व अलि, जानत मूढ़ न भेक ।।
(3) गुन तैं महिमा बढ़ति है, कुल आवत नहिं काम ।
क्यौ हूँ नहिं सीपी बिकै, कहुँ मोती के दाम ।।
(4) कहियै किमि, लखि लीजियै, गुनौ हानिकर होय ।
बाज बाँधि कै राखियत, चील्ह न बाँधत कोय ।।
(5) नीचहुँ घर जनमैं गुनी तऊ आदरैं लोग ।
ज्यों कस्तूरी देखिए हरि-सिर चदन जोग ।।
(6) निज गुनहूँ कहुँ देखिए दुखद होत निरधार ।
तेहि घोड़े पर सब चढ़े जो सुठि धावनिहार ।। —**रामचरित उपाध्याय**

सहज स्वाभाविक चीज़ का गुण यह है कि उसका स्वाद कभी भी पुराना नहीं पड़ता, उसकी सरलता उसे हमेशा नई बनाए रखती है । —**टैगोर**

(1) मुझे अपने गुणों के सहारे आगे बढ़ना चाहिए न कि दूसरों की कृपा पर ।

(2) कोई भी गुण ऐसा नहीं है जिसका लक्ष्य एक ही व्यक्ति की भलाई हो या जिसे एक ही व्यक्ति की भलाई से सन्तोष हो जाए । —**महात्मा गाँधी**

(1) हुनर ब चश्में अदावत बुज़ुर्गतर ऐबे'स्त ।
(शत्रुता की आँख से गुण ज्यादा बड़ा दोष होता है ।)

(2) कस्तूरी की पहिचान उसकी सुगन्धि से होती है, गन्धी के कहने से नहीं। —सादी

रूप की पहुँच आँखों तक है, परंतु गुण आत्मा को जीतते है। —पोप

यदि किसी में गुण होंगे, तो स्वयं ही सम्मुख आ जायेंगे। कस्तूरी को अपनी उपस्थिति क़सम खाकर नही प्रमाणित करनी पड़ती। —शेस्टन

सद्‌गुण का सर्वोत्तम पुरस्कार स्वयं सद्‌गुण है और दुर्गुण का घोरतम दण्ड स्वयं दुर्गुण है। —बेकन

जो मानव अपने गुणों के विषय मे जितना कम जानता है, वह उतना ही अधिक पसन्द किया जाता है। —एमर्सन

जो अपनी प्रशंसा कराना पसन्द करते हैं, उनमें गुणों की कमी होती है। —प्ल्यूटार्क

गुणी ही गुण को पहिचान सकता है। —कारलाइल

समकालीन व्यक्ति गुण की अपेक्षा मनुष्य की प्रशंसा करते है, आने वाली पीढ़ियाँ मनुष्य की अपेक्षा उसके गुणों का सम्मान करेंगी। —कोल्टन

निगाहे क़ाबिलों पर पड़ ही जाती हैं ज़माने मे
कही छिपता है 'अकबर' फूल पत्तो मे निहाँ होकर ! —अकबर इलाहाबादी

गुणग्राहकता

जब गुण कूँ गाहक मिले, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुण कौं गाहक नही, तब कौड़ी बदले जाइ।

कबीर लहरि समंद की, मोती बिखरे आइ।
बगुला मंझ न जाँणई, हंस चुणे चुणि खाइ॥ —कबीर

(1) हीरे को जौहरी पहचाने।
(2) अंधा क्या जाने बसन्त की बहार।
(3) का पर करूँ सिंगार पिया मोर आँधर। —हिंदी लोकोक्तियाँ

महान की उपासना करना स्वयं महान होने के बराबर है। —श्रीमती नेकर

गुणी ही गुण को परखते हैं, जैसे हीरे की कदर जौहरी ही करते हैं। —सादी

गुणग्राहकता और चापलूसी

गुणग्राहकता और चापलूसी में क्या अन्तर है? गुणग्राहकता सच्ची होती

है और चापलूसी झूठी। गुणग्राहकता हृदय से निकलती है, और चापलूसी दाँतों से। एक निःस्वार्थ होती है और दूसरी स्वार्थमय। एक की संसार में सर्वत्र प्रशंसा होती है और दूसरे की सर्वत्र निन्दा। —डेल कारनेगी

गुण-दोष

न सब कल्याणकारक ही होते हैं, न सब बुरे ही। —जातक

गुणहीन

(1) आँखों के अंधे नाम नयन सुख।
(2) भैंस के आगे बीन बजे वह बैठ पगुराय। —हिंदी लोकोक्तियाँ

गुप्त बात

करो न मंत्र मूढ़ सौं न गूढ़ मंत्र खोलिये। —केशव

गूढ़ मंत्र जौ लौं रहै, करै जु मिलि जन दोय।
भई छकानी बात तब, जानि जात सब कोय॥ —वृन्द

गुरु

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रुशब्दस्तन्निरोधकः।
अंधकारनिरोधत्वाद् गुरुरित्यभिधीयते।
('गु' शब्द का अर्थ है 'अंधकार'। 'रु' शब्द का अर्थ है उसका 'निरोधक'। अंधकार का निरोध करने से 'गुरु' कहा जाता है।) —द्वयोपनिषद्

(1) गुकारस्त्वन्धकारः स्याद् रुकारस्तेज उच्यते।
अज्ञानग्रासक ब्रह्मा गुरुदेव न संशयः॥
('गु' शब्द का अर्थ है 'अंधकार' और 'रु' शब्द का अर्थ है तेज; अज्ञान का नाश करने वाला तेजरूप ब्रह्मा, गुरु ही है, इसमें संशय नहीं है।)
(2) गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
(गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु महेश्वर हैं, गुरु ही परब्रह्म है, उस गुरु के लिए नमस्कार है।) —स्कन्दपुराण

पतिरेव गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः।
गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः॥
(स्त्रियों का गुरु उनका पति है, आया हुआ अतिथि सबका गुरु है। ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य इनका गुरु अग्नि है और चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है ।)

—चाणक्य

(1) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार ।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ।।
(2) यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
सीस दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान ।।
(3) पीछै लागा जाइ था, लोक बेद के साथि ।
आगैं थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ।।
(4) कविरा ते नर अंध है, गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर ।।
(5) कबिरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाय ।
कह कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाय ।।
(6) जाका गुरु भी अंधला चेला खरा निरंध ।
अंधै अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़न्त ।।
(7) गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो बताय ।।

—कबीर

बिन गुरु पंथ न पाइअ भूलै सोइ जो भेट ।
जोगी सिद्ध होइ तब जब गोरख सौ भेंट ।।

—जायसी

(1) जे सठ गुरु सन इरषा करही ।
रौरव नरक कोटि जग परही ।।
(2) गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई
(3) बिन गुरु होइ न ज्ञान ।
(4) हरइ सिष्यधन सोक न हरई ।
सो गुरु घोर नरक महुँ परई ।
(5) गुरु के बचन प्रतीत न जेही ।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ।

—तुलसीदास

(1) हरि ने जन्म दियो जग माही ।
गुरु ने आवागमन छुटाहीं ।
हरि ने कर्म-भर्म भरमायो ।
गुरु ने आतम रूप लखायो ।
हरि ने मोसूँ आप छिपायो ।
गुरु दीपक दै ताहि दिखायो ।

(2) गुरु सूँ कछु न दुराइए गुरु सूँ झूंठ न बोल।
बुरी भली खोटी खरी गुरु आगे सब खोल। —सहजोबाई

अनुभव ही सच्चा गुरु है। —स्वामी विवेकानन्द

गुरु कुछ नया नहीं देता। जो बीज रूप से रहता है, उसी को विकसित करने में सहायक होता है। मन्द सुगन्ध को बाहर निकालता है। —साने गुरुजी

(1) गुरु को प्रसन्न करके ही गुर प्राप्त किया जा सकता है।

(2) गुरु ऐसा होना चाहिए जो शिष्य को सद्ज्ञान दे और उसका आध्यात्मिक कल्याण चाहे, और उससे धन ऐंठने की वृत्ति न रखे।

(3) बुद्धिमान लोग गुरु का ऋण बहुत बड़ा मानते है क्योंकि और ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं—ज्ञान-दान का ऋण सबके लिए लौटाना सम्भव ही नहीं है।

(4) गुरु के बिना किसी भी क्षेत्र का समुचित ज्ञान प्राप्त करना कठिन होता है।

(5) शिक्षार्थी में विनय होनी चाहिए। बिना उसके वह कुछ सीख नहीं सकता। शिक्षक तथा बड़ों के प्रति गुरु-भाव, आदर-भाव रखना उसका कर्त्तव्य है।

(6) भारत में प्राचीनकाल से ही गुरु-शिष्य परम्परा ज्ञान-विकास की साधक रही है। —महात्मा गाँधी

(1) गुरु को अगर हमने देह रूप से माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं, अज्ञान पाया।

(2) शिष्य के ज्ञान पर 'सही' करना यही गुरु का काम है, बाकी के लिए शिष्य स्वावलम्बी है। —विनोबा

प्रत्येक मनुष्य जिससे मैं मिलता हूँ, किसी-न-किसी रूप में मुझसे श्रेष्ठ होता है। इसलिए मैं उससे कुछ शिक्षा लेता हूँ। —एमर्सन

गुरु कीजे जानकर, पानी पीजे छानकर। —एक हिंदी लोकोक्ति

गुलाम

जीवन की सफलता इसमें है कि किसी की गुलामी किए बिना जीवन बिताये। पराधीन को जीवित कहें तो फिर मृतक कौन है? —हितोपदेश

(1) जब गुलाम अपनी बेड़ी को आभूषण समझकर मुस्कराये, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है।

(2) देह से ही नहीं जो दिल से भी गुलाम हो गये हैं वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते।

(3) गुलाम से भिखारी अच्छा है। —महात्मा गांधी

किसी को अपना गुलाम बनाने के लिए पहले खुद भी उसका गुलाम बनना पड़ता है। —प्रेमचंद

वे गुलाम हैं जिनको यह साहस नही है कि वे न्याय का साथ दें चाहे वे दो-तीन की ही संख्या मे क्यों न हों। —लोवेल

जब कभी मैं किसी को दासता के पक्ष में वाद-विवाद करते सुनता हूँ, तो मुझे तीव्र आवेग होता है कि उसे ही दास बनाकर देखा जाए। —अब्राहम लिंकन

सेवक रखना बुरा है, किन्तु स्वामी रखना और भी बुरा।
—एक पुर्तगाली कहावत

कोई ईमानदार व्यक्ति हड्डी के लिए अपने को कुत्ता नही बना डालता।
—एक डैनिश कहावत

गुलामी

गुलामी अत्याचार और डकैती की प्रणाली है। —सुकरात

सांसारिक वस्तुओं, स्थूल पदार्थों की इच्छा करना ही गुलामी का कारण है।
—स्वामी रामतीर्थ

गुलामी दुनिया का सबसे बड़ा घृणित पाप है। —सुभाषचंद्र बोस

जिसके पैरो मे गुलामी की जंजीरें पड़ी हुई हैं, वह अपने धर्म की रक्षा कैसे कर सकता है? —सरदार पटेल

दासता के साँचे मे ढलकर मनुष्य अपना मनुष्यत्व खो बैठता है। —प्रेमचंद

स्वर्ग की गुलामी की अपेक्षा तो नरक का आधिपत्य श्रेयस्कर है —विनोबा

इस तथ्य को आप चाहे जितना छिपायें, दासता फिर भी कड़वा घूंट है।
—विलियम पिट

दासता पाप नही है, तो फिर और कोई चीज पाप नहीं है।
—अब्राहम लिंकन

हे नीच पेट ! एक ही रोटी में सन्तोष कर ले, ताकि तुझे दासता में पीठ न झुकानी पड़े। —शेख सादी

गुलामी सभी समाज के मौलिक नियमों के विरुद्ध है। —मांटेस्क्यू

गृहिणी

बिन बैलन खेती करै बिन भैयन के रार।
बिन मेहराऊ घर करै चौदह साख लबार ॥ —घाघ

(1) पति बरतत जेहि वस्तु नित नेहि धरि रतन सँभारि।
समय समय नित दै पियहिं आलस मदहिं बिसारि ॥

(2) अगिनि तूल चकमक दिया निमि महँ धरहु सँभारि।
रतनावलि जनु का समय काज परै लेउ वारि ॥

(3) तन मन अन भाजन वमन भोजन भवन पुनीत।
जो राषति रतनावली तेहि गावत सुर गीत ॥

(4) अ ान तजि रतनावली जथा समय करि काज।
अबको करिबो अबहिं करि तबहि पुरै सब साज ॥

(5) रतनावलि सबसों प्रथम जगि उठि करि गृहकाज।
सबन सुवाइहि सोइ तिय धरि सम्हारि गृह काज ॥ —रत्नावली

घर मलीन बिन घरनि, धरनि बिन नृपति मलीनो।
मुख मलीन बिन पान, मान बिन मानुष हीनो ॥ —उदयमणि

गोवध (दे० गाय भी)

गाय को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीनेवाला कभी नहीं बख्शा जायगा। —मुल्ला मोहम्मद बाकर हुसैनी

(1) मांसाहार के लिए दुधार गाय का वध करना न केवल क़ानून की दृष्टि से निषिद्ध होना चाहिए, बल्कि नैतिक दृष्टि से भी उसे नहीं होने देना चाहिए।

(2) मेरे विचार के अनुसार गौ-रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नज़दीक गोवध और मनुष्यवध एक ही चीज़ है।

(3) गाय जैसे निरीह और उपयोगी पशु का वध करना राष्ट्र के लिए आत्मघात के समान है। —महात्मा गाँधी

फ़रमाया रसूल अल्लाह ने कि "गाय का दूध शिफ़ा है और घी दवा और उसका मांस बिल्कुल मर्ज़ है।" —हज़रत आयशा

गाय के गोश्त में बीमारी है, उसके दूध में दुआ और घी में सफ़ा है।

—अल्लामा जलालुद्दीन सियुती

गो-सेवा

(1) गो-सेवा के बारे में अपने दिल की बात कहूँ तो आप रोने लग जाएंगे और मैं रोने लग जाऊँगा—इतना दर्द मेरे दिल में है।

(2) भारत के 80 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं और उनका जीवनाधार खेती गोवंश की समृद्धि पर निर्भर है।

(3) गो को माता इसीलिए कहा गया है कि वह हमे दूध पिलाती है और ऐसे बछड़े को जनती है जो हमारा साथी बनकर कृषि और वाणिज्य में सहायक होता है।

(4) किसी भी हिन्दू को गो-सेवा का उपदेश देने की ज़रूरत ही एक दुर्भाग्य-पूर्ण बात है।

(5) गो-सेवा करना अपने-आपकी सेवा करने के समान ही है।

—महात्मा गाँधी

ग्रंथ दे० किताब

ग्राम

(1) सच्चा हिन्दुस्तान शहरों मे नहीं बल्कि इन सात लाख गाँवों मे बसा है।

(2) अगर देहात नष्ट हुए नो हिन्दुस्तान भी मर जायेगा।

—महात्मा गाँधी

ग्रामीण जीवन में एक प्रकार की ममता होती है जो नागरिक जीवन में नही पाई जाती। एक प्रकार का स्नेह-बन्धन होता है जो सब प्राणियों को, चाहे छोटे हों या बड़े, बाँधे रहता है। —प्रेमचंद

नगर मनुष्य की दुनिया है, परन्तु गाँव ईश्वर की। —काउपर

ग्राम-सेवा

(1) किसी महान पुरुष का कथन है कि भगवान ने गाँव बनाए और मनुष्य ने शहर, इसलिए सेवाभावी शिक्षितों को तो भगवान के बनाए हुए गाँवों में जाकर जनता की सेवा करनी चाहिए।

(2) ग्राम-सेवा में वे ही लोग पड़ें, जो शहरी आदतों के शिकार न हों।

(3) ग्राम-सेवा करने वाले नवयुवक में अटूट धैर्य, आत्मविश्वास, शारीरिक शक्ति, ठंड, धूप वग़ैरह सहने की शक्ति और तालीम पाने की तत्परता इत्यादि होनी चाहिए।

(4) यह बात मुझे आज पहले से भी अधिक स्पष्ट हो गई है कि मेरा स्थान गाँव में ही है, मुझे गाँव में जाना चाहिए।

(5) गाँव में छः महीने रहकर भी शायद कोई उसकी सेवा न कर सके। गाँवों में तो स्थायी सेवा की भावना से जाना चाहिए।

(6) अगर गाँव में पशुओं के गोबर और खाद के साथ मनुष्य के मल-मूत्र का उपयोग खाद के रूप में हो सके, तो यह गाँवों की सबसे बड़ी सेवा होगी।

(7) गाँवों में जात-पाँत और छुआछूत के रोग को पहले भगाना होगा।

(8) गाँवों में जो बेकार आदमी हों, उनके हाथ में चरखा और चक्की दे देनी चाहिए।

(9) गाँवों में आटा पीसने के लिए इंजन की चक्की को मैं पामरता की सीमा समझता हूँ। —**महात्मा गाँधी**

ग्लानि

(1) अपनी बुराई, मूर्खता, तुच्छता इत्यादि का एकान्त अनुभव करने से वृत्तियों में जो शैथिल्य आता है, उसे ग्लानि कहते हैं। इसे अधिकतर उन लोगों को भोगना पड़ता है जिनका अन्तःकरण सत्त्व-प्रधान होता है, जिनके संस्कार सात्त्विक होते हैं, जिनके भाव कोमल और उदार होते है। (चिन्ता०-1)

(2) ग्लानि अन्तःकरण की शुद्धि का एक विधान है। इसमें उसके उद्‌गार में अपने दोष, अपराध, तुच्छता, बुराई इत्यादि का लोग दुःख से या मुख से कथन भी करते हैं—उसमें दुराव या छिपाव की प्रवृत्ति नहीं रहती। (चिन्ता०-1)

—**रामचद्र शुक्ल**

घटना

जैसे तिनका हवा का रुख बताता है वैसे ही मामूली घटनाएँ भी मनुष्य के हृदय की वृत्ति को बताती हैं। —**महात्मा गाँधी**

(1) प्रत्यक्ष घटना विचार से कहीं अधिक प्रभावशालिनी होती है। रण-स्थल का विचार कितना कवित्वमय है। युद्धावेश का काव्य कितनी गर्मी उत्पन्न करने वाला है। परन्तु कुचले हुए शव और कटे हुए अंग-प्रत्यंग देखकर कौन मनुष्य है जिसे रोमांच न हो आवे।

(2) कभी-कभी जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती है जो क्षण मात्र में मनुष्य का रूप पलट देती हैं। —**प्रेमचंद**

घड़ी

समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

घमंड (दे० अभिमान भी)

(1) कबिरा गर्व न कीजिए कबहुँ न हँसिए कोय।
अबहूँ नाव समुद्र में का जाने का होय ॥

(2) कबिरा गरब न कीजिए, ऊँचा देख अवास।
काल्ह परै भुइ लेटना, ऊपर जमसी घास ॥

(3) 'कबीर' कहा गरबियौ, चाँम लपेटे हड्ड।
हैंबर ऊपर छत्र सिर, तौ भी देना खड्ड ॥ —कबीर

(1) राग द्वेष इरषा मदु मोहू।
जनि सपनेहुँ इनके बस होहू ॥

(2) काम क्रोध मदु लोभ की जब लौं मन में खान।
तब लौं पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान ॥

(3) काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ। —तुलसीदास

(1) आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन ग़रूर है।

(2) घमंडी आदमी प्रायः शक्की हुआ करता है। —प्रेमचंद

दिखा न जोशो-ख़रोश इतना ज़ोर पर चढ़कर।
गए जहान मे दरिया बहुत उतर चढ़कर। —ज़ौक

गर्व समृद्धि के साथ जलपान करता है, ग़रीबी के साथ दोपहर का भोजन एवं बदनामी के साथ रात्रि का भोजन करता है। —फ्रैंकलिन

(1) गर्व सन्तोष का घोर शत्रु है।

(2) पहले गर्व चलता है इसके बाद कलंक आता है।

(3) गर्व हमारे शत्रुओं की संख्या को बढ़ाता है और हमारे मित्रों से सम्बन्ध विच्छेद कर उन्हें भगा देता है।

(4) वैभव में गर्व, विपत्ति में दुःख का रूप ग्रहण कर लेता है।

—अँग्रेज़ी कहावतें

घमंडी का सिर नीचा। —एक हिंदी लोकोक्ति

घर

वास्तव में घर को घर नही कहते, गृहिणी को ही घर कहते हैं। जिस घर में गृहिणी न हो वह बन के ही समान है। —वेदव्यास

बिन घरनी घर भूत का डेरा। —हिंदी कहावत

स्वके गेहे कुक्कुरोऽपि तावच्चण्डो भवति।
(अपने घर में कुत्ता भी बलवान होता है।) —शूद्रक

सर्वो हि आत्मगृहे राजा।
(अपने घर में हर कोई राजा होता है।) —उत्तराध्ययन चूर्णि

अपने घर पर कुत्ता भी शेर। —एक हिंदी लोकोक्ति

तुम्हारा घर तुम्हारा कुछ बड़ा शरीर है। —खलील जिब्रान

(1) आकाश में उड़ने वाले पक्षी को भी अपने बसेरे की याद आती है।

(2) घर कितनी ही पवित्र, कोमल और मनोहर स्मृतियों को जाग्रत कर देता है। घर प्रीत का क्रीड़ा-कुंज है। प्रेम ने कड़ी तपस्या करके यह वरदान पाया है।

(3) घर वही है जहाँ प्रेम और सत्कार मिले। —प्रेमचंद

चाहे वह राजा हो या किसान, वह मनुष्य सबसे भाग्यवान है जिसे अपने घर में शान्ति मिलती है। —गेटे

घर का भेदी लंका ढावे। —एक हिंदी कहावत

घायल

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय। -मीरा

घाव

घाव पर कपड़ा भी छुरी बन कर लगता है। दुखे हुए अंग को हवा भी दुखा देती है। —सुदर्शन

घृणा (दे० नफ़रत भी)

(1) घृणा द्वारा घृणा पर विजय नहीं पाई जा सकती, प्रेम द्वारा पाई जा सकती है।

(2) घृणा पाप से करो, पापी से नहीं। —गाँधी.

जो सच्चाई पर है, वह किसी से घृणा नहीं करता। —**नेपोलियन**

घृणा हृदय का पागलपन है। —**बायरन**

घृणा, घृणा से कभी कम नहीं होती, प्रेम ही से होती है। —**बुद्ध**

घृणित वह नहीं है जिससे घृणा की जाती है, घृणित वह है जो घृणा करता है। —**महावीर स्वामी**

जिससे हम प्रायः डरते हैं, कालांतर में उसी से घृणा करते हैं।
—**शेक्सपियर**

कुछ लोगों से हम इसलिए घृणा करते हैं क्योंकि हम उन्हें नहीं जानते, तथा उन्हें हम जानना भी न चाहेंगे क्योंकि हम उनसे घृणा करते हैं। —**कोल्टन**

बुलबुल को इसकी क्या परवाह कि मेंढक को उसके गाने से घृणा है।
—**बीचर**

(1) घृणा और भय की प्रवृत्ति एक-सी है। दोनों अपने विषयों से दूर होने की प्रेरणा करते हैं। परन्तु भय का विषय भावी हानि का अत्यन्त निश्चय करने वाला होता है और घृणा का विषय उसी क्षण इन्द्रिय या मन के व्यापारों में संकोच उत्पन्न करने वाला। (चिन्ता०-1)

(2) घृणा का भाव शांत है। उसमें क्रियोत्पादिनी शक्ति नहीं है। घृणा निवृत्ति का मार्ग दिखलाती है और क्रोध प्रवृत्ति का। ...घृणा विषय से दूर ले जाने वाली है और क्रोध हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर विषय के पास ले जाने वाला। (चिन्ता०-1)

(3) वैर का आधार व्यक्तिगत होता है, घृणा का सार्वजनिक। (चिन्ता०-1)

(4) सृष्टि-विस्तार से अभ्यस्त होने पर प्राणियों को कुछ विषय रुचिकर और कुछ अरुचिकर प्रतीत होने लगते हैं। इन अरुचिकर विषयों के उपस्थित होने पर अपने ज्ञान-पक्ष से उन्हें दूर रखने की प्रेरणा करने वाला जो दुःख होता है उसे घृणा कहते हैं। (चिन्ता०-1) —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

चरित्र

कुलीनं कुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चरित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम्॥

(मनुष्य के चरित्र से ही ज्ञात होता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या दंभी, पवित्र है या अपवित्र।) —**वाल्मीकि**

चारित्रयेण विहीन आढ्योऽपि दुर्गतो भवति।
(चरित्रहीन धनी भी विपत्ति में पड़ता है।) **—शूद्रक**

दुर्बल चरित्रवाला उस सरकंडे के समान है जो हवा के हर झोंके से झुक जाता है। **—माघ**

उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र मे चुस्त होता है। **—कन्फ्यूशियस**

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग। **—रहीम**

फूल खिलने दो मधुमक्खियाँ अपने आप उसके पास आ जायेंगी। चरित्रवान् बनो, जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा। **—स्वामी रामकृष्ण परमहंस**

(1) चरित्र की सम्पत्ति दुनिया की तमाम दौलतों से बढ़कर है।

(2) चरित्र की रक्षा किसी भी मूल्य पर होनी चाहिए।

(3) चरित्र-गठन जैसा रचनात्मक कार्य शिक्षितों के लिए दूसरा नहीं है।

(4) शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। शिक्षा वही है जिसके द्वारा साहस का विकास हो, गुणों मे वृद्धि हो और ऊँचे उद्देश्यों के प्रति लगन जागे।

(5) यदि हम व्यक्ति के चरित्र का विकास कर लें, तो समाज अपनी परवाह स्वयं कर लेगा। इस प्रकार के विकसित व्यक्तियों के हाथ मे समाज का संगठन सौंपा जा सकता है।

(6) यदि चरित्र-निर्माण न हुआ तो सारे रचनात्मक कार्यक्रम व्यर्थ है।

(7) चरित्र जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु है।

(8) व्यक्ति के चरित्र से ही राष्ट्र का अन्दाज़ा लगाया जाता है।

(9) चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताकत बन जाता है।

(10) चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए।

(11) मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नही अपितु उसके चरित्र से आँकी जाती है। **—महात्मा गाँधी**

किसी भी देश की प्रजा की उन्नति के आधार उसकी हिम्मत, उसके चरित्र और बलिदान करने की उसकी शक्ति होते हैं। **—सरदार पटेल**

चरित्र के सामने विद्वत्ता का मूल्य बहुत कम है। **—प्रेमचंद**

श्वास की क्रिया के समान हमारे चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता होनी चाहिए जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है वह अनायास ग्रहण कर लें तथा जो कुछ त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्याग सकें। **—टैगोर**

समाज के प्रचलित विधि-विधानों के उल्लंघन का दुःख केवल चरित्र-बल पर ही सहन किया जा सकता है। —**शरत्चन्द्र**

चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है। —**बर्टल**

कर्म को बोओ और आदत (की फसल) को काटो, आदत को बोओ और चरित्र को काटो, चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो। —**बोर्डमैन**

चरित्र केवल सुदीर्घकालीन आदत है। —**प्लूटार्क**

चरित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है। —**फ्रैडरिक सांडर्स**

चरित्र से बढ़कर कोई उत्तम पूँजी नही। —**स्माइल्स**

बुद्धि से चरित्र बढ़कर है। —**एमर्सन**

गुण एकान्त में अच्छी तरह विकसित होता है, चरित्र का निर्माण संसार के भीषण कोलाहल में होता है। —**गेटे**

व्यक्तिगत चरित्र समाज की महान आशा है। —**चैनिंग**

चरित्र एक वृक्ष के समान है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके बारे में सोचते हैं, परन्तु वृक्ष वास्तविक वस्तु है। —**लिंकन**

सँभल कर ज़रा पाँव रखिए ज़मी पर
अगर चाल बिगड़ी तो बिगड़ा चलन भी। —**दाग़**

हज़ार वर्ष का यश एक दिन के चरित्र पर निर्भर करता है। —**एक चीनी कहावत**

चाकर दे० नौकर

चंचल

दुचित्ता मनुष्य अपनी सारी बातो में चंचल होता है। —**न्यू टेस्टामेंट**

राजा चंचल होय मुलुक को सर करि लावै।
पंडित चंचल होय सभा उत्तर दै आवे॥
हाथी चंचल होय समर में सूँड़ि उठावै।
घोड़ा चंचल होय झपटि मैदान दिखावै॥
हैं ये चारों भले राजा पंडित गज तुरी।
बैताल कहै विक्रम सुनो तिरिया चंचल अति बुरी॥ —**बैताल**

खिन हँसिबौ खिन रूसिबौ, चित्त चपल थिर नाहिं।
ताका मीठा बोलना, भयकारी मनमाहिं॥ —बुधजन

चंचल स्मृति बुरी है, चंचल आचरण अधिक बुरा है, परन्तु चंचल हृदय और उद्देश्य तो सबसे बुरे हैं। —चार्ल्स सिमन्स

रोगी दरिद्र, जीवन दुखद, वृद्ध नारि, चंचलाति चित।
एते निकृष्ट संसार में, सो इनको धिक्कार नित॥ —नरहरि

चतुरता

चतुराई दरबारियों के लिए गुण है और साधुओं के लिए दोष।
—शेख सादी

चमत्कार

चमत्कार विश्वास की प्रियतम संतान है। —गेटे

'आनन्द' शब्द ने जिस प्रकार काव्य की नीयत को बदनाम किया है, उसी प्रकार 'चमत्कार' शब्द ने उसके रूप को बहुत-कुछ बिगाड़ा है।
—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

चरखा

(1) चरखा ग्रामोद्योग-रूपी ग्रहमंडल का सूर्य है।
(2) चरखा, माला और रामनाम एक ही हैं।
(3) एकाग्रता के लिए चरखा ही मेरी माला है।
(4) चरखा भारत की आर्थिक आज़ादी का प्रतीक है। —महात्मा गांधी

चाटुकारिता दे० खुशामद

चापलूस, चापलूसी (दे० 'खुशामद' भी)

रहिमन जो रहिबो चहै कहै वाहि के दाँव।
जो बासर को निसि कहै तो कचपची दिखाव॥ —रहीम

चापलूस आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है, लेकिन आप उसके मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर फूले नहीं समाते।
—टाल्सटाय

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु होते हैं। —टेसीटस

ऐसे आदमी पर कभी विश्वास न करो जो प्रशंसा के पुल बाँध दे ।

—एक यूनानी कहावत

चापलूसी दिखावटी मित्रता के समान है । —सुकरात

चापलूसी का ज़हरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझकर पी न जाएँ । —प्रेमचन्द

चापलूसी एक नक़ली सिक्का है और नकली सिक्के की भाँति ही वह अन्ततः आपको कष्ट में डाल देगी, यदि आप उसे चलाने का प्रयत्न करेंगे ।—डेल कारनेगी

जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं । उनसे तुम मत डरो; डरो उन मित्रों से जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं । —जनरल ओब्रगोन

सबसे बड़ी चापलूसी यह है कि दूसरे व्यक्ति को बोलने दें और आप स्वयं सुनता रहे । —एडीसन

(1) जब निष्कपट व्यवहार को दरवाजे से बाहर ढकेल दिया जाता है तो चापलूसी बैठक में आ बैठती है ।

(2) मुझे सिखाइए कि मैं न तो किसी की सस्ती प्रशंसा करूँ और न किसी से अपनी सस्ती प्रशंसा कराऊँ । —अँग्रेज़ी कहावतें

चापलूसी दूसरे मनुष्य से ठीक वही कहलाने का नाम है जो वह अपने आपको समझता है । —अज्ञात

चाय

यह लाखों स्त्री-पुरुषों का हाज़मा बिगाड़ चुकी है । —महात्मा गाँधी

प्रेम और निंदा चाय को मधुर बनाते हैं । —फ़ील्डिंग

चालाकी

चालाकी द्वारा कोई बड़ा कार्य नहीं होता । —स्वामी विवेकानंद

कौआ बहुत चालाक होता है, वह गू खाता है । —एक हिन्दी लोकोक्ति

चिंतन

हम बड़ी बातों को न सोचें, अच्छी सोचें । —महात्मा गाँधी

हर बुद्धिमत्तापूर्ण बात पर पहले ही विचार हो चुका है; हम केवल उस पर एक बार पुनः विचार करने का प्रयत्न कर सकते हैं । —गेटे

चिन्ता

सजीवं दहते चिंता निर्जीवं दहते चिता ।
(चिन्ता सजीव को जलाती है जब कि चिता निर्जीव को ।)—एक संस्कृत कहावत

प्राणियों के लिए चिन्ता ही ज्वर है । —स्वामी शंकराचार्य

चिन्ता साँपिन काहु न खावा । —तुलसी

रहिमन कठिन चितान तें चिन्ता को चित चेत ।
चिता दहति निर्जीव को चिन्ता जीव समेत ॥ —रहीम

चिन्ता ज्वाल सरीर की दाह लगै न बुझाय ।
प्रगट धुवाँ नहिं देखिए उर अन्तर धुँधवाय ।
उर अन्तर धुँधवाय जरै जस काँच की भट्टी ।
रक्त माँस जरि जाय रहै पांजरि की टट्टी ।
कह गिरिधर कविराय सुनौ रे मेरे मिन्ता ।
वे नर कैसे जियें जाहि व्यापी है चिन्ता । —गिरिधर कविराय

चिन्ता जननी चाह है ताको पति अविवेक । —रामचरित उपाध्याय

(1) चिन्ता वहाँ तक तो वांछनीय है, जहाँ तक वह रचनात्मक ध्येय की पूर्ति के लिए विविध उपायों का मनन करने तक सीमित हो; परन्तु जब चिन्ता इतनी बढ़ जाए कि वह शरीर को ही खाने लगे, तो वह अवांछनीय हो जाती है, क्योंकि फिर तो वह अपने ध्येय को ही हरा बैठती है ।

(2) चिन्ता करने से यदि कोई लाभ होता है, तो वह है मानसिक ह्रास ।

(3) चिन्ता एक डायन है जो शरीर को खा जाती है । —महात्मा गाँधी

मेरा विश्वास है कि चिन्ता जीवन का शत्रु है । —शेक्सपियर

अगर इंसान सुख-दुःख की चिन्ता से ऊपर उठ जाए तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों-तले आ जाए । —शेख सादी

चिंता ही से चिंता दूर होती है । इसे धोखे से रोकने का प्रयास करने से परिणाम उल्टा होता है । —टैगोर

यदि तुम्हारा स्वभाव है तो चिन्ता करके कष्टों का आह्वान कर लो, परन्तु उसे अपने पड़ोसी को उधार मत दो । —रुडार्ड किप्लिंग

बिस्तरे पर चिन्ताओं को ले जाना अपनी पीठ पर गट्ठर बाँधकर सोना है ।
—हेलिबर्टन

बेफिक्र दिल, भरी थैली से अच्छा है। —एक अरबी कहावत

चिकित्सा (इलाज)

चिकित्सकों की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि वे बिना मन को आरोग्य किये शरीर को अच्छा करने का प्रयत्न करते हैं, जबकि मन और शरीर एक ही हैं इसलिए उनकी पृथक्-पृथक् चिकित्सा नहीं होनी चाहिए। —**प्लेटो**

संयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं; परिश्रम से भूख तेज़ होती है और संयम अतिभोग से रोकता है। —**रूसो**

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं और दूर रहते हैं। —**रामदास**

चित्र

चित्र शब्दरहित कविता है। —**होरेस**

जिस कमरे मे बहुत-सी तसवीरें लटक रही हैं, वह ऐसा कमरा है जिसमें बहुत-से विचार लटक रहे हैं। —**सर जोशिया रेनाल्ड्स**

चित्रकारी मूक-कविता है और कविता बोलती हुई तस्वीर। —**सिमनडोज़**

चित्रकला अंधे मनुष्य का व्यवसाय है। वह जो कुछ देखता है, उसे चित्रित नही करता, अपितु जिसका वह अनुभव करता है उसे चित्रित करता है। —**पिकासो**

कविता की तरह चित्रकला भी मनुष्य की कोमल भावनाओं का परिणाम है। जो काम कवि करता है, वही चित्रकार करता है, कवि भाषा से, चित्रकार पेंसिल या क़लम से। सच्ची कविता की परिभाषा यह है कि तस्वीर खींच दे। उसी तरह सच्ची तस्वीर का यह गुण है कि उसमें कविता का आनन्द आये। —**प्रेमचंद**

चुगलख़ोर, चुगली

गुणिनां गुणेषु सत्स्वपि पिशुनजनो दोषमात्रमादत्ते।
पुष्पे फले विरागी क्रमेलकः कण्टकौघमिव॥

(जैसे ऊँट को किसी वृक्ष के फूल-फल से अनुराग नहीं होता, उसे काँटों का ढेर ही अभीष्ट होता है, वैसे ही गुणियों में अनेकानेक गुणों के वर्तमान रहने पर भी चुगलख़ोर उनमें दोष ही ढूंढ़ता है और ग्रहण करता है।) —**अज्ञात**

नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसन्देह बुरा है, मगर सामने हँस-

कर बोलना और पीठ-पीछे चुगलख़ोरी करना उससे भी बुरा है।

—संत तिरुवल्लुवर

चुगलख़ोर और कुत्ते समान है, क्योंकि दोनों ही अपनी जीभ से सत्पात्र (शुद्ध पात्र या सज्जन मनुष्य) को दूषित करते हैं, कलह करने में पक्के होते हैं और दोनों ही सदा अशुद्ध रहते हैं।

—अज्ञात

जो सुख चाहो देह की, तौ तजि दीजौ चारि।
चोरी, चुगली, जामिनी, और पराई नारि॥ —वृन्द

निन्दक, बंचक, चुगल अरु, बिनु-चाहे जो जाय।
सोऊ यदि मानव बनै, दानव कौन कहाय॥ —रामचरित उपाध्याय

चुगुल न चूकै कबहुँ को, अरु चूकै सब कोइ।
बरकंदाज कमानियाँ, चूक उनहुँ से होइ।
चूक उनहुँ से होय जे बाँधे बरछी गुल्ला।
चूक उनहुँ से होय पढ़ै पण्डित औ मुल्ला।
कह गिरिधर कविराय कालहू ते नट चूकै।
चुगुल चौकसीदार समुर कबहूँ नहि चूकै। —गिरिधर कविराय

पन्ना के पडोर, गढ़ झन्ना के झवैया झरि,
झारूदार झाँसी के भवैया भानपूर के।
कहै कवि कुन्दन कमायूँ के कुम्हार भाँट,
दाऊद के दरजी दमामी दानपूर के।
तेली तिलंगान के, तंबोली तेगढ़वाले,
भावज के भाँगड़, सोनार सानपूर के।
येते मिलि मारें जूती चुगुल चबाई शीश,
कालपी के कुँजड़े, कसाई कानपूर के। —एक कवि

चुनाव

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।

—जवाहरलाल नेहरू

पुरुष व स्त्रियाँ मुख्यतः इसलिए चुनाव जीतते हैं क्योंकि अधिकतम लोग किसी पक्ष में मतदान करने के स्थान पर किसी के विरुद्ध मतदान करते हैं।

—फ्रैंकलिन पी० एडम्स

चुप्पी

चुप्पी ऐब वह चिकना घड़ा है, जिस पर किसी बात का असर नहीं होता।
—**प्रेमचन्द**

एक चुप सौ वक्ता हराए। —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

चुप्पी का अर्थ हाँ होता है। —**एक अंग्रेजी लोकोक्ति**

चेहरा

चेहरा मस्तिष्क और हृदय—दोनों का प्रतिबिम्ब है।—**एक अँग्रेजी कहावत**

भोली-भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी। —**एक उर्दू कवि**

सुन्दर चेहरा सबसे अच्छा प्रशंसापत्र है। —**रानी एलिजाबेथ**

हँसमुख चेहरा रोगी के लिए लगभग उतना ही अच्छा है जितनी कि स्वस्थ ऋतु। —**फ्रैंकलिन**

सभी मनुष्यों के चेहरे वास्तविक होते हैं, उनके हाथ चाहे जैसे भी हों।
—**शेक्सपियर**

चोर, चोरी

जितने से आदमी का पेट भरे उतने पर ही उसका निजी अधिकार है। जो इससे अधिक एकत्र करता है वह चोर है। —**श्रीमद्भागवत**

(1) ईश्वर ने आदमी को मेहनत करके खाने के लिए बनाया, और कहा कि जो मेहनत किए बगैर खाते हैं वे चोर हैं।

(2) मनुष्य अपनी कम-से-कम जरूरत से ज़्यादा जितना भी लेता है, वह चोरी करता है।

(3) जिस वस्तु की हमें जरूरत नहीं है, उसे रखना, उसे लेना भी चोरी है।

(4) चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में से फूट निकलता है वैसे ही चोरी का धन है। —**महात्मा गाँधी**

चुराया गया पानी मीठा होता है और चोरी से खाई गई रोटी मजेदार।
—**न्यू टेस्टामेंट**

चोरहिं चाँदनी रात न भावा। —**तुलसी**

परीक्षा-भवन में छिपाकर पुस्तक ले जाना ही चोरी है और दिमाग़ में भरकर जाने को क्या कहें। प्रश्न के उत्तर में जो किताब का कोई टुकड़ा ज्यों-का-त्यों

रखकर पास होते हैं वे भी खेवट को चुराई हुई कौड़ी पारकराई में देकर ही उस पार पहुँचते हैं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

छंद

(1) यद्यपि छन्दों से भाषा में कृत्रिमता आती है फिर भी करुण भाव अथवा करुण कथाएँ छन्दो में अधिक प्रभावपूर्ण होती है। छन्दों के द्वारा आनन्द देने का एक विश्वस्त सिद्धान्त है।

(2) मानव हृदय को असमानता में समानता का आभास आनन्ददायक होता है। इसी सिद्धांत के अनुसार पाठकों को छदयुक्त कविता पढ़ने में अधिक आनंद आता है। यदि हम गद्य तथा पद्य दोनों में किसी भी विषय पर रचना करें तो पद्यात्मक रचना सौ गुनी रोचक होगी। —विलियम वर्ड्सवर्थ

(1) हमारे उद्वेलित भावों को जिस ठहराव की आवश्यकता होती है, उसी मे छन्द की उत्पत्ति होती है। छन्द हमारी भावना को प्रभावयुक्त तथा हमारे ध्यान को आकृष्ट रखते हैं। जिस प्रकार खमीर के मिलने मे मदिरा की तेज़ी बढ़ जाती है उसी प्रकार छन्द के संयोग मे काव्य का लालित्य बढ़ जाता है।

(2) मै छन्द का प्रयोग इसलिए करता हूँ कि मै गद्य न लिखकर काव्य की रचना कर रहा हूँ। बिना छन्द के काव्य असम्पूर्ण रहता है। यही धारणा संसार के महान्-से-महान् कवियों की रही है। —कॉलरिज

काव्य मे छन्द का प्रयोग इसलिए आवश्यक है कि बिना छन्द के काव्य की आत्मा की सन्तुष्टि नहीं होती। छन्द श्रेष्ठ कवियों का सहायक रहा है। काव्य और छन्द दोनो मे प्रेमपूर्ण तथा पारस्परिक संबध है। छन्द ही के द्वारा कवि की रचना में सम्पूर्णता, सामजस्य तथा मधुरिमा आती है। —हंट

कवियों ने काव्य की भाषा मे ध्वनि-सामंजस्य का सदैव प्रयोग किया है और इसे काव्य का प्रभावपूर्ण लक्षण माना है। परन्तु यह आवश्यक नही कि कवि इस रूढ़ि का सदा अनुसरण करे। छन्दों के प्रयोग से वर्णनात्मक काव्य रोचक हो जाता है और इसी कारण यह लोकप्रिय है। —पी० बी० शेली

काव्य के सम्पूर्ण आनंद के लिए छन्द आवश्यक हैं। बिना इस तत्त्व के काव्य के सुनने का आनन्द जाता रहता है। —हंट

छन्द वास्तव में बँधी हुई लय के भीतर भिन्न-भिन्न ढाँचों (Patterns) का योग है जो निर्दिष्ट लम्बाई का होता है। लय स्वर के चढ़ाव-उतार के लिए छोटे-छोटे ढाँचे ही हैं जो किसी छन्द के चरण के भीतर न्यस्त रहते हैं। (चिन्ता०-2) —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

कविता तथा छन्द के बीच बड़ा घनिष्ठ संबंध है; कविता हमारे प्राणों का संगीत है, छन्द हृत्कम्पन; कविता का स्वभाव ही छन्द में लयमान होना है।

—सुमित्रानन्दन पन्त

काव्य और छन्द में जो सम्बन्ध है, वह अविच्छिन्न और अनिवार्य नहीं है। काव्य का साधारण अर्थ उसके पद्यात्मक रूप से माना जाता है, किन्तु काव्यत्व इसी रूप में आबद्ध नहीं, वह गद्यात्मक भी हो सकता है। गद्य और पद्य का मौलिक भेद बुद्धि और हृदय की क्रिया का है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि दोनों एक-दूसरे के प्रभाव से सर्वथा अलग रह कर ही क्रिया-तत्पर होते हैं। गद्य बुद्धि-प्रधान होता है और पद्य हृदय-प्रधान। —लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'

छल

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार।
जैसी हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार॥ —वृन्द

इन्सान को लाज़िम है रहे दूर रिया से
यह चीज़ जुदा कहती है बंदे को ख़ुदा से। (रिया=छल) —जिगर

छल का बहिरंग सुन्दर होता है—विनीत और आकर्षक भी, पर दुःखदायी और हृदय को वेधने के लिए। —जयशंकर प्रसाद

ननद के घर भी ननद। (ननद के घर भी ननदें होती है। अर्थात् छली को छलने वाला भी कोई मिल ही जाता है।) —एक हिन्दी लोकोक्ति

छायावाद

(1) छायावाद की शाखा के भीतर धीरे-धीरे काव्य-शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ, इसमें सन्देह नहीं। उसमें भावावेश की आकुल व्यंजना, लाक्षणिक वैचित्र्य, मूर्त प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता, विरोध चमत्कार, कोमल पद-विन्यास इत्यादि काव्य का स्वरूप संघटित करने वाली प्रचुर सामग्री दिखाई पड़ी।

(2) रहस्यवाद के अंतर्भूत (छायावादी—सं०) रचनाएँ पहुँचे हुए पुराने संतों या साधकों की उस वाणी के अनुकरण पर होती हैं जो तुरीयावस्था या समाधि-दशा में नाना रूपकों के रूप में उपलब्ध आध्यात्मिक ज्ञान का आभास देती हुई मानी जाती थीं। इस रूपात्मक आभास को यूरोप में 'छाया' (फ़ैंटसमाटा) कहते थे। इसी से बंगाल में ब्रह्मसमाज के बीच उक्त वाणी के अनुकरण पर जो आध्यात्मिक गीत या भजन बनते थे, वे 'छायावाद' कहलाने लगे। धीरे-धीरे यह शब्द धार्मिक क्षेत्र से वहाँ के साहित्य क्षेत्र में आया और फिर रवींद्र बाबू की धूम मचने पर हिन्दी के साहित्य क्षेत्र में भी प्रकट हुआ। (हि० सा० इ०)

(3) 'चित्रभाषा' या अभिव्यंजन पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया तब उसके प्रदर्शन के लिए लौकिक या अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही काफ़ी समझा गया। इस बँधे हुए क्षेत्र के भीतर चलनेवाले काव्य ने 'छायावाद' का नाम ग्रहण किया। (हि० सा० इ०)

(4) छायावाद का चलन द्विवेदी काल की रूखी इत्तिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। अतः इस प्रतिक्रिया का प्रदर्शन केवल लक्षण और अन्योक्ति के प्राचुर्य के रूप में ही नहीं, कहीं-कही उपमा और उत्प्रेक्षा की भरमार के रूप में भी हुआ। (हि० सा० इ०)

(5) छायावाद का सामान्यतः अर्थ हुआ, प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करनेवाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन। इस शैली के भीतर किसी वस्तु या विषय का वर्णन किया जा सकता है। (हि० सा० इ०)

(6) 'छायावाद' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है। (हि०सा०इ०)

(7) जो छायावाद नाम प्रचलित है वह वेदान्त के पुराने 'प्रतिबिंबवाद' का है।(चिंता० 2)

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(1) कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया।

(2) वर्तमान रहस्यवाद की धारा (जिसे छायावाद काव्य भी कहते हैं) भारत की निजी सम्पत्ति है, इसमें संदेह नहीं।

(3) छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की निवृत्ति 'छायावाद' की विशेषताएँ हैं।

—जयशंकर प्रसाद

छायावादी काव्य, दिशा से अधिक. काल को वाणी देता रहा है।

—सुमित्रानन्दन पंत

(1) मनुष्य का जीवन चक्र की तरह घूमता रहता है। स्वच्छन्द घूमते-घूमते थक कर वह अपने लिए सहस्र बन्धनों का आविष्कार कर डालता है और फिर बन्धनों से ऊब कर उनको तोड़ने में अपनी सारी शक्तियाँ लगा देता है। छायावाद के जन्म का मूल कारण भी मनुष्य के इसी स्वभाव में छिपा हुआ है। उसके जन्म से प्रथम कविता के बन्धन सीमा तक पहुँच चुके थे और सृष्टि के बाह्याकार पर इतना अधिक लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अपनी

अभिव्यक्ति के लिए रो उठा। स्वच्छन्द छन्द में चित्रित उन मानव-अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था और मुझे तो आज भी उपयुक्त ही लगता है।

(2) छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है।

(3) छायावाद एक प्रकार से अज्ञातकुलशील बालक रहा, जिसे सामाजिकता का अधिकार ही नहीं मिल सका, फलत: उसने आकाश, तारे, फूल, निर्झर आदि से आत्मीयता का संबंध जोड़ा और उसी सम्बंध को अपना परिचय बनाकर मनुष्य के हृदय तक पहुँचने का प्रयत्न किया। —**महादेवी वर्मा**

मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।

—**नन्ददुलारे वाजपेयी**

छिद्रान्वेषण

(1) दूसरों में दोष न निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है।

(2) जब तक तुम में दूसरों के दोष ही दोष देखने की आदत मौजूद है तब तक तुम्हारे लिए ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन है।

(3) दुर्बल जन तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक छिद्रान्वेषण किया करते हैं। —**स्वामी रामतीर्थ**

छुआछूत

(1) 'मुझे मत छूओ' की यह बीमारी सिर्फ हरिजनों तक ही सीमित नहीं। इसने किसी भी जाति और किसी भी धर्म को अछूता नहीं छोड़ा है। एक जाति दूसरी जाति की दृष्टि में अछूत है और एक धर्म दूसरे धर्म के लिए अस्पृश्य है।

(2) जब छुआछूत जड़-मूल से नष्ट हो जाएगी तब ये भेद-भाव अपने-आप मिट जाएँगे और कोई अपने-आपको दूसरे से ऊँचा नहीं समझेगा। इसका सीधा नतीजा यह होगा कि गरीबों और दलितों का शोषण बन्द हो जाएगा और चारों तरफ़ परस्पर प्रेम और सहयोग देखने में आएगा। —**महात्मा गांधी**

छोटे

कबहुँ कि काँजी सीकरनि, छीर सिन्धु बिनसाइ। —**तुलसीदास**

(1) जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।
प्यादा से फ़रज़ी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय॥

(2) रहिम देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डरि।
जहाँ काम आवै सुई कहाँ करै तरवारि।। —**रहीम**

बड़े न लोपैं लाज-कुल, लोपैं नीच अधीर।
उदधि रहै मरजाद में, बहै उलट नद-नीर।। —**वृन्द**

जंगलीपन

मेरा विश्वास है कि थोड़ा-सा जंगलीपन मन और शरीर के लिए अच्छा है। मैं निश्चय ही यह विचार रखता हूँ कि धरती से बिल्कुल असंपृक्त जीवन अंततः निष्प्राण होकर जड़ हो जाएगा। (भारत की खोज) —**जवाहरलाल नेहरू**

जगत

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'। (ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है।) —**उपनिषद्**

जगत की रचना करके ईश्वर स्वयं अपने को ही प्रकट करता है। —**रवीन्द्र**

जगत के बिना ईश्वर ईश्वर नहीं, सृष्टि नहीं तो ईश्वर नहीं। —**हेगेल**

जनतंत्र

(1) जनतंत्र में लोगों को भेड़-बकरियों की तरह रहने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। उन्हें अपनी राय आज़ादी के साथ ज़ाहिर करने की छूट होनी चाहिए। उनमें अल्पसंख्यकों को बहुमत से मतभेद रखने का पूरा अधिकार होना चाहिए।

(2) अनुशासन और विवेकयुक्त जनतंत्र दुनिया की सबसे सुन्दर वस्तु है।
—**महात्मा गाँधी**

जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता की सरकार। —**अब्राहम लिंकन**

जनता

जनानेन कः करमर्पपिष्यति। (लोगों का मुँह कौन बन्द करेगा?) —**श्रीहर्ष**

जनता बलवान मनुष्य से प्रेम करती है। वह स्त्री की तरह होती है।
—**मुसोलनी**

राजमहलों की चालबाज़ियाँ, सभा-भवनों की राजनीति, समझौते और लेन-देन का ज़माना उसी दिन समाप्त हो जाता है जब जनता राजनीति में प्रवेश करती है। —**जवाहरलाल नेहरू**

जब जनता एक हो जाती है, तब उसके सामने ज़ालिम हुकूमत भी नहीं टिक सकती। —सरदार पटेल

(1) जनता तो धरती माता की तरह है जिस पर कुदाली से घाव होता है लेकिन गेंद का स्पर्श यों ही ऊपर के ऊपर उड़ जाता है।

(2) जनता कल्प वृक्ष है, जो भावना आप लेकर जायेंगे, वही आप उससे पायेंगे। —विनोबा

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है।

—स्वामी विवेकानन्द

जनता और कुछ नहीं कर सकती, हमदर्दी तो करती है, दुःख-कथा सुनकर, आंसू तो बहाती है। —प्रेमचन्द

'ज़बान-ए-ख़ल्क नक्कार-ए- खुदा'
(जनता की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ है।) —एक फ़ारसी कहावत

भीड़ के आधार पर कुछ बनाना, रेत के आधार पर बनाना है।

—एक इतालवी कहावत

हर प्रकार के राज्य में वहाँ की जनता ही वास्तविक क़ानून की बनानेवाली होती है। —एडमंड बर्क

जन्मभूमि

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। (जननी और जन्म भूमिस्वर्ग से भी बड़ी होती हैं।) —एक संस्कृत कहावत

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा। —इक़बाल

जो सुख छज्जू के चौबारे मे, न बलख़ मे न बुख़ारे में।—एक हिंदी लोकोक्ति

ज़मानत

जो सुख चाहों देह कौ तौ तजि दीजै चारि।
चोरी, चुगली, जामिनी, और पराई नारि। —वृन्द

ख़ुद दे दो पर अपनी ज़मानत पर मत दिलाओ। —एक हिंदी कहावत

ज़माना

ज़माने की गर्दिश से चारा नहीं है।
ज़माना हमारा तुम्हारा नहीं है। —'इबरत' गोरखपुरी

अपना ज़माना आप बनाते हैं अह्ले दिल
हम वो नहीं कि जिनको ज़माना बना गया। —अज्ञात

मर्द वे हैं जो ज़माने को बदल देते हैं। —अज्ञात

जल्दबाज़ी

(1) जल्दबाजी में कोई काम न स्वयं कर और न दूसरे से करा। जल्दबाज़ी से काम लेने से मूर्ख आदमी को पछताना पड़ता है।

(2) जो आदमी बिना विचारे जल्दबाज़ी में काम करता है, उसके वह काम ही उसे तपाते हैं, जैसे मुँह में डाला हुआ गर्म भोजन। —जातक

(1) झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी।
(2) हड़बड़ के काम गड़बड। —हिंदी लोकोक्तियाँ

जल्दी चढ़ने वाले उत्साह में कोई बड़ा परिणाम पैदा करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। —सरदार पटेल

जल्दबाजी में बुरी दूसरी चीज नहीं। —हेज़लिट

जवानी

यौवनं जीवितं चित्तं, छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चञ्चलानि षडेतानि, ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्।
(यौवन, जीवन, मन, शरीर की छाया, धन और स्वामिता—ये छहों चञ्चल हैं, यानी ये स्थिर होकर नहीं रहते।) —अज्ञात

जोबन ज्वर केहि नहि बलकावा। —तुलसीदास

निस्सन्देह, युवावस्था बहुत सुन्दर है, पर जहाँ जीवन की गहराई आँकी जाती है, वहाँ यौवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता। —दॉस्तॉवस्की

(1) युवावस्था आवेशमय होती है, क्रोध से आग हो जाती है तो करुणा से पानी भी हो जाती है।

(2) जवानी जोश है, बल है। साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है और वह सब कुछ जो जीवन को पवित्र, उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है।

(3) युवाकाल की आशा पुआल की आग है, जिसके जलने और बुझने में देर नहीं लगती। —प्रेमचन्द

धन अरु यौवन को गरब कबहूँ करिए नांहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छांहि॥ —अज्ञात

इधर आँख झपकी उधर ढल गई वह।
जवानी भी एक धूप थी दोपहर की। —इबरत

न जाने बर्क की चमक थी या शरर की लपक,
ज़रा जो आँख झपकर का खुली शबाब न था।
(शरर = चिनगारी, शबाब = जवानी) —अनीस

रहती है कब, बहारे जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥ —दाग़

जाति

कर्म, शील व गुण से मनुष्य जैसा पूज्य होता है, वैसा जाति और कुल से नहीं, क्योंकि श्रेष्ठता तो न जाति में प्राप्त होती है, न कुल से ही। —शुक्रनीति

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। —कबीर

जद्यपि जग दारुन दुख नाना।
सब तें कठिन जाति अपमाना॥ —तुलसीदास

(1) तहाँ नहीं कछु भय जहाँ, अपनी जाति न पास।
काठ बिना न कुठार कहुँ तरु को करत बिनास॥

(2) सुखी होहि नहिं जाति निज लखि खल महा अबोध।
स्वान अपर को देखि कै करैं परस्पर क्रोध॥

—दीनदयाल गिरि

बिनु फूटे निज जाति के हानि लह्यो कब कोय।
लोहा काट्यौ जात तब, लोह छिनी जब होय॥ —रामचरित उपाध्याय

जो जाति जब तक मरना जानती रहेगी, उसको तभी तक इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा। (जनमेजय) —जयशंकर प्रसाद

जाति-सेवा ऊसर की खेती है। —प्रेमचन्द

आख़िरकार जाति केवल एक है—मानव जाति। —जार्ज मूर

जिज्ञासा, जिज्ञासु

जिज्ञासा बिना ज्ञान नहीं होती। —महात्मा गांधी

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है।

—सेमुअल जान्सन

प्रथम और सरलतम भावना जो हम मनुष्य के मस्तिष्क में पाते हैं वह जिज्ञासा की है। —**बर्क**

बहुत जिज्ञासु बहुत बुद्धिमान नही होते। —**मैंसिजर**

ज़िम्मेदारी

अपनी तमाम ज़िम्मेदारी ईश्वर पर डालकर दुनिया में अपना काम करो।
—**स्वामी रामकृष्ण परमहंस**

ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारी कोई डरावनी चीज़ नही है। वह आनन्द से ओत-प्रोत है। —**विनोबा**

मनुष्य को ज़िम्मेदारी के पद पर नियुक्त कर दो, वह परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा। —**एक अरबी लोकोक्ति**

जीभ

जीभि जोग अरु भोग जीभि बहु रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग जीभि लै कैद करावै।।
जीभि स्वर्ग लै जाय जीभि सब नर्क दिखावै।
जीभि मिलावै राम जीभि सब देह धरावै।।
निज जीभि ओठ एकग्र करि बाँट सहारे तोलिए।
बैताल कहै बिक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिए।। —**बैताल**

खट्टा मीठा चरपरा जिह्वा सब रस लेय।
चोरों कुतिया मिल गई पहरा किसका देय।। —**कबीर**

जीव, जीवन

परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता। —**तुलसी**

दरिया से मौज मौज से दरिया नही
अलग हमसे नही जुदा है ख़ुदा औ ख़ुदा से हम।
—**राजा गिरधारीप्रसाद 'बाक़ी'**

जीवितं यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बाधवा:।
सफलं जीवितं तस्य, आत्मार्थे को न जीवति।।

(जिसके जीवित रहने से विद्वान, मित्र और बन्धु-बांधव जीते हैं, उसी का जीना सार्थक है। अपने लिए कौन नहीं जीता?) —**हितोपदेश**

(1) मुहूर्तमपि जीवेच्च नरः शुक्लेन कर्मणा ।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वयविरोधिना ।।

(उत्तम कर्म से मनुष्य दो पल भी जीवित रहे यही श्रेष्ठ है, पर दोनों लोक का विरोधी दुष्ट कर्म करने वाले का कल्प-भर जीना भी अच्छा नहीं ।)

(2) जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण-मुद्राएँ देने पर भी नहीं मिलता ।

—**चाणक्य**

मूर्ति के समान मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुन्दर होना चाहिए ।

—**सुकरात**

कहीं ऐसा न हो, जीवन की अच्छी चीजें जीवन की सबसे अच्छी चीज़ों को नष्ट कर दे । —**वाल्टेयर**

अपना जीवन लेने के लिए नहीं, देने के लिए है । —**विवेकानन्द**

जीवन किसी को स्थायी सम्पत्ति के रूप में नहीं मिला । वह तो केवल प्रयोग के लिए है । —**लुक्रीट्स**

मनुष्य-जीवन अनुभव का शास्त्र है । —**विनोबा**

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु । —**विक्टर ह्यूगो**

जीवन हमारे साथ किया गया एक मजाक है । —**रूसो**

मरण सोने के समान है और जन्म सोकर उठने के समान ।

—**संत तिरुवल्लुवर**

जीवन इस शरीर रूपी पिंजड़े में बन्द पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट मात्र है ।

—**स्वामी रामतीर्थ**

(1) मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है ।

(2) मेरा अस्तित्व एक निरंतर आश्चर्य है, और यही जीवन है । —**टैगोर**

(1) मनुष्य-जीवन का उद्देश्य आत्मदर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है ।

(2) जो जीवन का लोभ छोड़ कर जीता है, वही जीता है ।

(3) भूलों से संग्राम करना ही जीवन है । —**महात्मा गाँधी**

(1) प्रिय ! सान्ध्य गगन ! मेरा जीवन !

(2) जड़ चेतन के बिना विकास-शून्य है और चेतन जड़ के बिना आकार-शून्य । इन दोनों की क्रिया और प्रतिक्रिया ही जीवन है । —**महादेवी वर्मा**

जो देखी हिस्टरी इस बात पर कामिल यकीं आया।
उसे जीना नही आया जिसे मरना नहीं आया।। -अकबर

(1) मैंने जीवन से प्यार किया है और यह आज भी मुझे आकर्षित करता है, और अपने ढँग से मैं उसकी अनुभूति का प्रयत्न करता हूँ। यद्यपि कई अदृश्य बाधाएँ मेरे चारों ओर खड़ी हो गई है, लेकिन जीने की यह अभिलाषा मुझे बाध्य करती है कि मैं जीवन से खेलूँ, उसके किनारों से झाँककर देखूँ, कभी उसका दास बनकर न रहूँ।

(2) जीवन विकास का सिद्धान्त है, स्थिर रहने का नही।

(3) जीवन बहुत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, और यद्यपि उसमें बहुत-से दलदल और कीचड़ भरे स्थान हैं, पर उसमें विस्तृत समुद्र है, और पर्वत-माला हैं, और हिम-प्रपात हैं, और ये सुन्दर तारों-भरी रातें हैं (विशेषतः जल में) और घरवालों और मित्रों का प्रेम है, और किसी सामान्य उद्देश्य में सहकर्मियों का साथ है, और संगीत है, पुस्तकें हैं और विचारों का साम्राज्य है। (झलक)
—जवाहरलाल नेहरू

(1) जीवन एक प्रश्न है और मरण है उसका अटल उत्तर।

(2) सुख कहीं न दिया दिखाई, विश्राम कहाँ जीवन में?

(3) पहेली-सा जीवन है व्यस्त उसे सुलझाने का अभिमान
बताता है विस्मृति का मार्ग चल रहा हूँ बनकर अनजान।
— जयशंकर प्रसाद

तुम्हारा दैनिक जीवन ही तुम्हारा मन्दिर और धर्म है। खलील जिब्रान

जीवन एक आश्चर्य-शृंखला है। —एमर्सन

ज़िन्दगी हमारे साथ किया गया एक मज़ाक है। —रूसो

सौ वर्ष जीने के लिए अपने चारों ओर जवान और हँसमुख मित्र रखो।
—एलिज़बेथ सैफ़ोर्ड

जीवन एक नाटक के समान है—लम्बे अभिनय का ही इसमें महत्त्व है।
—सेनिका

इस जीवन में सुख-दुःख कोई भी सत्य नही, सत्य है सिर्फ़ उनके चंचल क्षण, सत्य है सिर्फ उनके चले जाने का छन्द मात्र। —शरत्चन्द्र

मनुष्य अपने भावों, विचारों और व्यापारों को लिए-दिए दूसरों के भावों, विचारों और व्यापारों के साथ कहीं मिलाता और कहीं लड़ाता हुआ अंत तक चला चलता है और इसी को जीना कहते हैं। (र० मी०) —**रामचन्द्र शुक्ल**

मनुष्य का जीवन अपने हाथों में है, वह अपने को जैसा चाहे बना सकता है, इसका मूलमन्त्र यही है कि बुरे, क्षुद्र, अश्लील विचार मन मे न आने पाएँ; वह बलपूर्वक इन विचारों को हटाता रहे और उत्कृष्ट विचारों तथा भावों से हृदय को पवित्र रखे। (से० स०) —**प्रेमचंद**

ज़िदगी ज़िदादिली का नाम है,
मुर्दादिल क्या ख़ाक जिया करते है ? —**नासिख़**

यह माना ज़िदगी है चार दिन की,
बहुत दिन होते हैं यारो चार दिन भी। —**'फ़िराक़' गोरखपुरी**

ज़िदगी क्या है, आनिसर में ज़हूरे तरतीब।
मौत क्या है, इन्ही अजज़ा का परेशाँ होना॥
फ़ना का होश आना ज़िदगी का दर्द सर जाना।
अजल क्या है, ख़मारे बादए हस्ती उतर जाना॥ —**पं० बृजनारायण चकबस्त**

ज़िदगी इन्साँ की है मानिन्दे मुर्ग़े ख़ुशनवा।
शाख़ पर बैठा कोई दम चहचहाया, उड़ गया॥ —**मुहम्मद 'इक़बाल'**

जीवन एक कहानी-सदृश है—वह कितनी लम्बी है नही, वरन् कितनी अच्छी है, यह विचारणीय विषय है। —**सेनेका**

जीवन एक बाज़ी के समान है। हार-जीत तो हमारे हाथ नही है पर बाजी का खेलना हमारे हाथ में है। —**जर्मी टेलर**

यौवन एक भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढ़ापा पश्चात्ताप। —**डिज़रायली**

मनुष्य का सच्चा जीवन तब प्रारम्भ होता है जब वह यह अनुभव करता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह संतोष नहीं दे सकता। —**टॉलस्टॉय**

जीवन संग्राम की तरह है। —**वाल्टेयर**

न समझने की ये बातें है न समझाने की।
ज़िन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की॥ —**अज्ञात**

जीवन-चरित्र

(1) असंख्य जीवनियों का सार तत्त्व इतिहास होता है।
(2) जीवन-चरित्र ही केवल सच्चा इतिहास है। —**कारलाइल**

वास्तव में इतिहास कुछ नहीं, केवल जीवन-चरित्र ही है। —एमर्सन

जीविका

दीनता से प्राप्त हुई जीविका की अपेक्षा तो मर जाना ही उत्तम है।
—वेदव्यास

वही जीविका श्रेष्ठ है जिससे अपने धर्म की हानि न हो। **—शुक्रनीति**

अधर्म से जीविका चलाने की अपेक्षा, पात्र लेकर, अनागरिक होकर जो भिक्षावृत्ति से जीविका चलाता है, वही अच्छा है। **—जातक**

जुआ

जूआ खेले होत है, सुख सम्पति कौ नास।
राज-काज नल तें छुट्यो, पाण्डव किय बनवास॥ **—वृन्द**

शैतान ने जुए का आविष्कार किया। **—सेंट आगस्टाइन**

इन्सान की जिन्दगी मे दो वक्त है जबकि उसे जुआ न खेलना चाहिए: एक तो जब वह खेल नही सकता और दूसरे जब वह खेल सकता हो।
—सैम्युएल क्लीमेंस

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और बुराइयों का पिता है।
—वाशिंगटन

ज्ञान

(1) आरोह तमसो ज्योतिः।
(अन्धकार (अविद्या) मे निकल कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर बढ़ो।)
(2) सं श्रुतेन गमेमहि माश्रुतेन वि राधिषि।
(हम सब ज्ञान से युक्त हों, कभी-भी ज्ञान से हमारा वियोग न हो।)
—अथर्ववेद

न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः॥
(कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नही होता। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है।) **—महाभारत**

'अज्ञो भवति वै बालः, पिता भवति मन्त्रदः।'
(ज्ञानहीन व्यक्ति चाहे वह वृद्ध ही **क्यों न हो, बालक है,** और शिक्षक चाहे **वह अल्पवयस्क ही हो, पिता है।) —अज्ञात**

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
(ज्ञान के समान इस संसार में और कुछ पवित्र नहीं है।) —गीता

सिर के बाल सफ़ेद हो जाने से कोई आदमी वृद्ध नही होता। वृद्ध उसे कहते हैं जो तरुण होने पर भी ज्ञानवान हो। —मनु

(1) ज्ञानाजीर्णमहंकृतिः (ज्ञान का अजीर्ण अहंकार है)

(2) ज्ञानस्याभरणं क्षमा।
(ज्ञान का आभूषणं क्षमा है।) **—संस्कृत लोकोक्तियाँ**

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
एकै आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होइ॥ **—कबीर**

कोटिक पोथी पढ़ि मरे, पंडित भा नहिं कोइ।
एकै अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होइ॥ **—जायसी**

(1) ज्ञान पंथ कृपाण कै धारा।

(2) भयउ प्रकास कतहुँ तम नाही। ज्ञान उदय जिमि संसय नाही॥ **—तुलसी**

मोह-महातम रहत है, जौं लौ ज्ञान न होत।
कहा महातम रहि सकै, आदित भये उदोत॥ **—वृन्द**

जो ज्ञान मन को शुद्ध करता है, वही ज्ञान है, शेष सब अज्ञान है।
—रामकृष्ण परमहंस

(1) ज्ञान ही शक्ति है।

(2) पहले के अनुभव से नया अनुभव ले सकना, इस क्रिया को ज्ञान कहते हैं। **—विवेकानन्द**

ज्ञान भी जब सीमा के बाहर हो जाता है तो नास्तिकता के क्षेत्र में जा पहुँचता है। **—प्रेमचंद**

(1) ज्ञान हमारी आत्मा के तटस्थ स्वरूप का संकेत है; रागात्मक हृदय उसके व्यापक स्वरूप का। ज्ञान ब्रह्म है तो हृदय ईश्वर है। (चिंता० 1)

(2) हमारा ज्ञान भी अज्ञान-सापेक्ष है। हमारी निर्गुण भावना भी सगुण भावना की अपेक्षा रखती है, ठीक उसी प्रकार जैसे प्रकाश की भावना अंधकार की भावना की अपेक्षा रखती है। (गो० तु०) **—आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

(1) ज्ञान वही सिद्ध है जिससे मानव का हित हो; ऐसा ज्ञान निरर्थक है जिसमें मानव का कल्याण न होकर कष्ट बढ़ता है।

(2) जो ज्ञान केवल दिमाग़ में ही रह जाता है और हृदय में प्रवेश नहीं कर पाता, वह जीवन के अनुभव में व्यर्थ सिद्ध होता है।

(3) ज्ञान का अर्थ है सारासार-विवेक। जिस अक्षर-ज्ञान में यह विवेक-शक्ति न आए, वह ज्ञान नहीं, पठित मूर्खता है।

(4) ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। —**महात्मा गाँधी**

ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बंधन मे बाहर है। —**निराला**

यौवन और सौंदर्य में ज्ञान प्रायः दुर्लभ ही होता है। —**होमर**

भूली हुई चीज़ों की स्मृति ही ज्ञान है। —**प्लेटो**

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता। —**सुकरात**

वह जो यह जानता है कि वह कुछ नहीं जानता, ज्ञानी है, उसका आदर करो। वह जो यह जानता है कि वह सब कुछ जानता है, मूर्ख है, उससे दूर रहो।
—**अज्ञात**

ज्ञान शक्ति है। —**बेकन**

अपने अज्ञान का आभास होना ही ज्ञान की तरफ एक बड़ा कदम है।
—**डिज़रायली**

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।
—**बर्नार्ड शा**

ज्ञान वह पंख है जिससे हम स्वर्ग की ओर उड़ते है। **शेक्सपियर**

यदि उद्देश्य शुभ न हो तो ज्ञान पाप हो जाता है। —**पोप**

(1) ज्ञान का सार यह है कि ज्ञान रहते उसका प्रयोग करना चाहिए और उसके अभाव मे अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए।

(2) ज्ञान पाप हो जाता है, यदि उद्देश्य शुभ न हो। —**कन्फ़्यूशियस**

ज्ञान धन से उत्तम है, क्योंकि धन की तुमको रक्षा करनी पड़ती है और ज्ञान तुम्हारी रक्षा करता है। —**अली**

जब ज्ञान इतना घमंडी बन जाय कि वह रो न सके, इतना गंभीर बन जाए कि हँस न सके और इतना आत्म केन्द्रित बन जाए कि अपने सिवा और किसी की चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज़्यादा ख़तरनाक होता है।
—**ख़लील जिब्रान**

ज्ञान केवल सत्य में ही पाया जाता है। —**गेटे**

ज्ञान अनुभव की बेटी है। —एक अँग्रेज़ी कहावत

जो दूसरों को जानता है वह जानकार है, जो अपने आपको जानता है वह ज्ञानी है। —लाओ-त्स

यदि कोई जीते जी मर जाए तो वही ज्ञान है। —लल्लेश्वरी

इल्म जोई अज़ कुतबुहाए फ़सोस, ज़ौक़ जोई तू ज़े हलवाए सबोस।

(तू व्यर्थ पुस्तकों मे ज्ञान ढूँढ़ता है अर्थात छिलकों के हलवे मे आनन्द ढूँढ़ता है।) —मौलाना रूम

इल्म दर सीना, न दर सफ़ीना।

(ज्ञान हृदय में रहता है पुस्तकों में नही।) —एक फ़ारसी लोकोक्ति

झगड़ा

झगड़े से बचना उचित है। किंतु यदि उसमें पड़ ही जाए तो वैरी को अपना तेज, बल और पौरुष दिखा देना ही उचित है। —शेक्सपियर

जब दो लोग झगड़ते हैं तो दोनों गलती पर होते हैं।

—एक डच लोकोक्ति

एक हाथ से ताली नही बजती। —एक हिन्दी लोकोक्ति

मित्रों के झगड़े शत्रुओं के सुअवसर होते हैं। —ईसप

लोग गूदे की अपेक्षा छिलके पर ज्यादा झगड़ते हैं। —एक जर्मन लोकोक्ति

झुकना, झुकाना

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते है तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।

—बर्नार्ड शा

हम आप झुककर दूसरे को झुका सकते हैं, पर तनकर किसी को झुकाना कठिन है। —प्रेमचंद

टूटने की अपेक्षा झुकना अच्छा है। —अंग्रेजी लोकोक्ति

झूठ, झूठा

(1) अपनी प्रभुता को सबै, बोलत झूठ बनाय।
वेस्या बरस घटावहीं, जोगी बरस बढ़ाय॥

(2) मिथ्या भाषी साँचहूँ, कहै न मानै कोइ।
भाँड़ पुकारै पीरबस, मिस समझै सब कोइ॥ —वृन्द

थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्य का नाश करता है, जैसे दूध को एक बूंद जहर।
—गाँधी

विवाह काल में, स्त्री प्रसंग के समय, किसी के प्राणों पर संकट आने पर, सर्वस्व लुटते देखकर तथा ब्राह्मण के हित के लिए आवश्यकता हो तो झूठ बोल दो। इन पाँच अवसरों पर झूठ बोलने से पाप नहीं होता। —वेदव्यास

दो अर्थों वाले शब्द बोलकर, किसी विशेष शब्द पर जोर देकर, या आँख के इशारे से भी झूठ बोला जाता है। इस प्रकार का झूठ स्पष्ट शब्दों में बोले गए झूठ से कई गुना बुरा है। —रस्किन

यदि झूठ बोलने से किसी की जान बचती हो, तो झूठ पाप नहीं, पुण्य है।
—प्रेमचंद

टेढ़ा

टेढ़ जानि सब बंदइ काहू।
वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू॥ —तुलसी

अहि सिखवत गुत वक्र गति, सुनहु तात जग वेड़।
टेढ़ो रहत निचिंत नित, सूधो कटियत पेड़॥ —रामचरित उपाध्याय

ट्रस्टीशिप (अमानतदारी)

(1) मेरे कितने ही पूंजीवादी मित्र है और वे जानते हैं कि मै पूंजीवाद समाप्त करने के लिए श्रमजीवी या साम्यवादी से भी ज्यादा उत्सुक हूँ, पर पूंजी-वाद को समाप्त करने का मेरा तरीका अलग है और वह ट्रस्टीशिप के ही सिद्धांत पर निर्भर है।

(2) मैं वर्षों से मानता आया हूँ कि संसार की सारी सम्पत्ति भगवान की है और यदि किसी के पास अनुपात से अधिक धन है, तो वह उस धन का जनता की ओर से ट्रस्टी या अमानतदार है।

(3) जब तक धनिक वर्ग स्वेच्छापूर्वक अपना धन त्याग नहीं देते अथवा उसे जनता की अमानत (ट्रस्ट) समझकर नहीं खर्च करते, तब तक हिंसात्मक क्रान्ति अनिवार्य है। —महात्मा गाँधी

ठग, ठगना

कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ।
आप ठग्या सुख ऊपजै, और ठग्या दुख होइ॥ —कबीर

निन्दक, बंचक, चुगल अरु, बिनु-चाहे जो जाय।
सोऊ यदि मानव बनै, दानव कौन कहाय॥ —**रामचरित उपाध्याय**

मूल्य में ठग लो, माल में मत ठगो। —**स्पेन की एक लोकोक्ति**

रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से॥ —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

ठोकर

ठोकर लगे और दर्द हो, तभी मैं सीख पाता हूँ। —**गाँधी**

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य को इच्छा नहीं होती, उसको स्वतन्त्र ठोकर चाहिए। —**विनोबा**

ठोकरें केवल धूल ही उड़ाती हैं, धरती से फसलें नहीं उगाती। —**टैगोर**

जिसे कभी ठोकर न लगी हो वह एक ही धक्के में लड़खड़ा जाता है। (राज्य०) —**प्रसाद**

डॉक्टर

संयम और परिश्रम मनुष्य के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं। परिश्रम से भूख तेज होती है और संयम अतिभोग से रोकता है। —**रूसो**

एक निपुण डाक्टर (सर्जन) के पास गिद्ध की आँख, शेर का हृदय और नारी जैसा कोमल हाथ होना चाहिए। — **एक अँग्रेजी कहावत**

डायरी

(1) डायरी सत्य की आराधना करने वाले के लिए पहरेदार है।

(2) डायरी रखने (लिखने) की आदत ही हमें अनेक दोषों से बचा लेगी।

(3) डायरी में अपने दोषों का उल्लेख होना चाहिए और दूसरों के दोषों का उल्लेख नहीं होना चाहिए।

(4) किसी दिन डायरी लिखने मे चूक या विलम्ब मुझे प्रार्थना में चूक या विलम्ब के समान अखरता है। —**महात्मा गाँधी**

डींग

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रलापु॥
(जो शूरवीर हैं वे तो युद्ध करते हैं, अपने मुख से डींग नहीं मारते। युद्ध में शत्रु के सामने होने पर डरपोक ही व्यर्थ की डींग मारते हैं।) —**तुलसीदास**

जहाँ डींग समाप्त होती है, वहाँ प्रतिष्ठा प्रारंभ होती है। —**यडवर्ग यंग**

(1) अधजल गगरी छलकत जाय।

(2) जो गरजते है वे बरसते नहीं। —**हिन्दी लोकोक्तियाँ**

ढोंग

धर्म के नाम पर आज ढोंग की पूजा है, और शील तथा आचार के नाम पर रूढ़ियों की। —**जयशंकर प्रसाद**

तक़दीर दे० भाग्य

तथ्य

वस्तुतः ज्ञान दोमुँहा पदार्थ है। उसके एक ओर तथ्य है, दूसरी ओर सत्य। सभी तथ्य सत्य नही होते। ऐसा कह सकते हैं कि तथ्यों के भीतर सत्य ओत-प्रोत होकर वर्तमान रहता है। —**हजारी प्रसाद द्विवेदी**

आँकड़ों की अपेक्षा तथ्य अधिक ज़ोर से बोलते हैं। —**स्ट्रीटफ़ील्ड**

तप, तपस्या

नास्ति सत्यसमं तपः। (सत्य के समान कोई तप नहीं है।) —**महाभारत**

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्य विनिग्रहः।
भाव सशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते॥
(मन की खुशी, सौम्य भाव, मौन, आत्म-निग्रह तथा शुद्ध भावना, ये सभी 'मानस' तप कहलाते हैं।) —**भगवद्गीता**

ब्राह्मण का तप ज्ञान है, और क्षत्रिय का तप कमजोर की रक्षा करना है। —**मनु**

तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा। —**तुलसीदास**

(1) आदर्श को अमल में लाने के क़दम का नाम तप है।

(2) तपस्या जीवन की सबसे बड़ी कला है।

(3) तप के बिना त्याग अधूरा ही रहता है।

(4) तप से जब देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली थी, तो भला मनुष्य उससे अभीष्ट की सिद्धि नहीं कर सकता? —**महात्मा गाँधी**

तरुणाई (दे० 'जवानी' भी)

पाँच बात ये जगत में निबहत नाहिं निदान ।
लछी, सुख, दुख, रूप, छबि, तरुनाई कहि जान ।। —जान

जमला जोबन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय ।
जाण बटाऊँ पंथ सरि वैसे ही उठि जाय ।। —जमाल

तरुनाई धन देह बल बहु दोषनु आगार ।
बिनु बिवेक रतनावली पशु सम करत विचार ।। —रत्नावली

तर्क

जो तर्क की सुने नही, वह कट्टर है; जो तर्क कर न सके, वह मूर्ख है, और जो तर्क करने का साहस न कर सके, वह गुलाम है । —ड्रमण्ड

तर्क करने समय शान्त रहिए । क्योंकि अशांति गलती को अपराध बना देती है और सच्चाई को बदतमीजी । —हरबर्ट

अगर तुझे निरर्थक तर्क-वितर्क मे मज़ा आता है तो हो सकता है कि तू मिथ्या-वादियों से भिड़ने लायक़ हो, लेकिन इसका तुझे एहसास भी न हो कि मनुष्यों से प्रेम किस तरह किया जाता है । —सुकरात

जिस प्रकार शरीर में दृष्टि है, उसी प्रकार आत्मा में तर्क है । —अरस्तू

हर बात में बहस करना उचित नही है । बड़ों की ग़लती पकड़ना ग़लती है ।
—शेख़ सादी

आत्मा तर्क से परास्त हो सकती है, पर परिणाम का भय तर्क से दूर नही होता । वह पर्दा चाहता है । —प्रेमचंद

(1) तर्क केवल बुद्धि का विषय है । हृदय की सिद्धि तक बुद्धि नहीं पहुँच सकती । जिसे बुद्धि माने मगर हृदय न माने वह तर्क त्याज्य है ।

(2) अतिशय तर्क-वितर्क से बुद्धि तेजस्वी नही बनती, तीव्र भले ही होती हो । —महात्मा गांधी

तर्क बड़ा हल्का सवार है, वितर्क के घोड़े उसे सुगमता से पटक देते हैं ।
—स्विफ़्ट

तर्क में संगीत रहित ध्वनि न आने दे । —जॉनसन

ताज

बादशाह का ताज, जिसमें हमेशा जान का भय है, दिल को लुभाने वाला तो होता है, मगर सर के दर्द के बराबर भी उसकी क़ीमत नही। —हाफ़िज़

ताड़ना

लालनाद्बहवो दोषा: ताड़नाद्बहवोगुणा:।
तस्मात्पुत्रं च शिष्यञ्च ताडयेन्नतु लालयेत्॥
(दुलारने में बहुत दोष होते हैं और दंड देने मे बहुत गुण, इसलिए पुत्र और शिष्य को दंड देना उचित है, बहुत प्यार करना नही।) **—चाणक्य**

दुर्जना: शिल्पिनो दासा दुष्टाश्च पटहा: स्त्रिय:।
ताडिता मार्दवं यान्ति न ते सत्कार भाजनम्॥
(दुर्जन, शिल्पी, दास, दुष्ट, ढोल तथा स्त्रियाँ ताड़ित होने पर मृदु होते हैं, वे सत्कार के पात्र नहीं।) **—गर्ग संहिता**

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥ **—तुलसीदास**

तीर्थ

तीर्थ परं किं स्वमनो विशुद्धम्।
(सबसे उत्तम तीर्थ क्या है ? अपना विशुद्ध मन।) **—शंकराचार्य**

सत-महापुरुष ही वास्तविक तीर्थ और देवता हैं, क्योंकि इन संतों, महापुरुषों के दर्शन-मात्र से ही कल्याण हो जाता है। **—भागवत**

ज्ञान तीर्थ है, धैर्य तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थों में भी श्रेष्ठ तीर्थ है—अन्त:करण की परम शुद्धता। **—स्कन्दपुराण**

मन चंगा तो कठौती में गंगा। **—गोरखनाथ**

तीरथ तीरथ क्यों फिरै तीरथ तो घट माँहि।
जे थिर हुए सो तिर गए, अथिर तिरत हैं नाँहि॥ **—बुधजन**

शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र है।
—महात्मा गाँधी

तुच्छ

छोटी नदियाँ थोड़ा ही जल पाकर इतरा जाती हैं, चूहे की अंजलि थोड़ी ही चीजों से भर जाती है। —पंचतंत्र

तूफ़ान

तूफ़ान में ली हुई शपथ, उसके शांत हो जाने पर भूल जाती है।

—एक अंग्रेज़ी कहावत

तूफ़ान जितना ही तेज़ होता है उतना ही जल्द समाप्त भी हो जाता है।

—सेनेका

तृप्ति

मनुष्य की तृप्ति धन से कभी भी नहीं हो सकती। —कठोपनिषद्

तृष्णा

(1) वृद्धावस्था आने पर केश जीर्ण हो जाते है, दाँत जीर्ण हो जाते है, नेत्र और कान भी जीर्ण हो जाते है, किन्तु एक तृष्णा ही जीर्ण नही होती।

(2) जिसने तृष्णा को जीत लिया उसने अटल स्वर्ग जीत लिया।

—महाभारत

तृष्णा का कही ओर-छोर नही है। उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकड़ों दोषों को ढोये फिरती है, उसके द्वारा बहुत-से अधर्म होते है, अतः तृष्णा का परित्याग कर दो। —पद्म पुराण

वलीभिर्मुखमाक्रान्तं पलितेनांकितं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते॥

(वृद्धावस्था में—मुख पर झुरियाँ पड़ गईं, सिर के बाल सफ़ेद हो गए, शरीर के अंग शिथिल हो गए, किन्तु एक तृष्णा ही तरुण होती जाती है।) —भर्तृहरि

जहाँ-जहाँ तृष्णा है, वहाँ-वहाँ संसार है, यह जान लो। —अष्टावक्रगीता

यावत्सतृष्णः पुरुषो हि लोके तावत्समृद्धोऽपि सदा दरिद्रः।

(जब तक मनुष्य तृष्णा से युक्त रहता है, तब तक समृद्धिशाली होने पर भी दरिद्र ही रहता है।) —अश्वघोष

तृष्णा को उखाड़ फेंकने वाले का पुनर्जन्म नही होता। —बुद्ध

आसा तृस्ना ना मरे कह गए दास कबीर। —कबीर

ना सुख दारा, सुख महल, ना सुख भूप भये।
साधू सुखी 'सहजो' कहै, तृष्णा रोग गए॥ —सहजोबाई

तृष्णा संतोष की बैरिन है, यह जहाँ पाँव जमाती है, संतोष को भगा देती है। —सुदर्शन

तृष्णा चतुर को भी अन्धा बना देती है। —सादी

त्याग

त्याग के समान कोई सुख नहीं है। —महाभारत (शान्तिपर्व)

प्राणी कर्म का त्याग नही कर सकता, कर्म-फल का त्याग ही सच्चा त्याग है। —गीता

पतझड़ हुए बिना पेड़ों पर फल नही लगते। —रज्जब जी

त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से पाप का ब्याज।—विनोबा

त्याग यह नही है कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जाएँ और सूखी रोटी खाई जाए। त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा, अभिलाषा, तृष्णा को जीता जाए। —सूफ़ियान सौरी

जीवन मे मनुष्यों के लिए त्याग से बढ़कर कुछ भी नहीं है। —जातक

कबिरा खड़ा बजार मे लिए लुकाठी हाथ।
जो घर फूंके आपनो चले हमारे साथ।। —कबीर

त्याग के सिवा इस संसार मे कोई दूसरी शक्ति नही है।—स्वामी रामतीर्थ

अपना जीवन लेने के लिए नही देने के लिए है। —विवेकानन्द

(1) त्याग से प्रसन्नता न हो तो वह किसी काम का नही।

(2) जिसमे त्याग-भाव नही है, वह सेवा का काम नही कर सकता।

(3) कोई भी त्याग बदले की भावना से नही करना चाहिए।

(4) त्याग अपने कुटुम्ब और परिजन-पुरजन के लिए सभी करते हैं, पर जो सबके लिए करे वही प्रशंसनीय है।

(5) योग कभी धर्म नही बन सकता। धर्म की जड़ तो त्याग में ही है।

(6) त्याग के बाद पछतावा नही होना चाहिए। —महात्मा गाँधी

जिसमें त्याग है वही प्रसन्न है। -उमर खय्याम

त्याग अपने को रीता कर डालने को नहीं बल्कि अपने को पूर्ण करने के लिए ही है। —टैगोर

पतझर न हो तो पेड़, त्याग न हो तो मनुष्य, हरियाली से न लदें ।
—भोलानाथ तिवारी

त्रुटि दे० ग़लती

थकान

थकान सबसे अच्छा तकिया है । —फ्रैंकलिन

बलवान से बलवान व्यक्ति भी कभी-न-कभी थक जाता है । —नीत्से

दंड

(1) गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ।
उत्पथं प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम् ।।

(यदि गुरु (या 'गुरुजन') भी घमण्ड में आकर कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान खो बैठें और कुमार्ग पर चलने लगें तो उन्हें भी दण्ड देना आवश्यक हो जाता है ।)

(2) राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवाः ।
निर्मलाः स्वर्गमायन्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ।।

(मनुष्य पाप या अपराध करने के पश्चात् यदि राजा के दिये हुए दण्ड को भोग लेते है तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरुषों की भाँति स्वर्गलोक में आ जाते हैं ।)
—वाल्मीकि

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ।
उत्पथ प्रतिपन्नस्य दण्डोभवति शाश्वतः ।।

(घमंड में भरकर कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान न रखने वाला तथा कुमार्ग पर चलने वाला मनुष्य यदि अपना गुरु होवे तो भी उसे दण्ड देने का सनातन विधान है ।) —महाभारत

अपि भ्राता सुतोऽर्घ्यो व श्वशुरो मातुलोऽपि वा ।
नादण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति धर्माद्विचलितः स्वकात् ।।

(अपने धर्म से विचलित होने पर भाई, पुत्र, पूजनीय, श्वसुर अथवा मामा भी राजा के लिए अदण्डनीय नहीं हैं ।) —याज्ञवल्क्यस्मृति

(1) पाटनमन्तरेण विषव्रणानां नोपशान्तिः ।
(विषैले घाव को चीरे बिना शान्ति नहीं होती है ।)

(2) शिष्यापराधे गुरोर्दण्डः ।
(शिष्य के अपराध के लिए गुरु को दण्ड) **—अज्ञात**

जिहि जैसो अपराध तिहि, तैसो दण्ड बखानि।
थाप ककरिया-चोर को, धन-चोरहि जिय हानि ।। **—वृन्द**

बुराइयों तथा अपराधों का निवारण ही दंड का एकमात्र उद्देश्य है।
—होरेस मैन

दंड अन्यायी के लिए न्याय है। **—आगस्टाइन**

अपराध को दण्ड से नहीं रोका जा सकता। **—रस्किन**

अपराधी के दण्ड में उपयोगिता होनी चाहिए। जब एक मनुष्य को फाँसी दे दी गई तो इस दण्ड से कोई लाभ नहीं। **—वाल्टेयर**

दण्ड के भय से ही शील बनता है। **—एक मलयालम लोकोक्ति**

दंभ दे० अभिमान

दया

आनृशंस्यं परो धर्मः (दया करना सबसे बड़ा धर्म है।) **—वाल्मीकि**

दया सबसे बड़ा धर्म है। (शांति०) **—महाभारत**

दया धर्मस्य जन्मभूमिः।
दया ही धर्म की जन्मभूमि है। **—चाणक्यनीति**

मक्का मदिना द्वारका, बद्री औ केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहें मलूक विचार ।। **—मलूकदास**

पापी हो या पुण्यात्मा अथवा वध के योग्य अपराध करनेवाले ही क्यों न हों, उन सबके ऊपर श्रेष्ठ पुरुष को सदैव दया करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा कोई नहीं है जो बिल्कुल अपराध न करता हो। **—वाल्मीकि**

दया और सत्य परस्पर मिलते है, धर्म और शान्ति एक-दूसरे का साथ देते हैं।
—बाइबल

(1) हम सभी ईश्वर से दया की प्रार्थना करते हैं और यही प्रार्थना हमें दूसरों पर दया करना भी सिखाती है।
(2) मधुर दया सज्जनता का वास्तविक चिह्न है। **—शेक्सपियर**

जिसमें दया नहीं है उसमें कोई सद्गुण नहीं है। **—हज़रत मुहम्मद**

जो निर्बलों पर दया नहीं करता उसे बलवानों के अत्याचार सहने पड़ेंगे।

—शेख सादी

दया चरित्र को सुन्दर बनाती है। बढ़ती हुई आयु के साथ वह चेहरे को भी सुन्दर बनाती है। —जेम्स ऐलन

आत्मा के आनन्दरूपी सामंजस्य का बाहरी रूप दया है।

—विलियम हैजलिट

(1) जहाँ दया तहँ धर्म है, जहँ अधर्म तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप॥

(2) दया कौन पर कीजिए, का पर निर्दय होय।
साँई के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय॥ —कबीर

(1) दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्रान॥

(2) धर्म कि दया सरिस हरि जाना। —तुलसी

दया दुष्ट के चित्त में कबहूँ उपजै नाहिं।
हिंसा छोड़े सिंह यह क्यों आवै मन माहिं॥ —वृन्द

सजै न बिन अंजन वधू भूषन भरी प्रवीन।
तैसेई सब धरम हैं एक दया करि हीन॥ —दीनदयाल गिरि

चाकर चोर राज बेपीर।
कहैं घाघ का धारी धीर॥ —घाघ

दया धर्म जान्यौ तुही सब धर्मनु को सार। —वियोगी हरि

यदि मानव तन मध्य है दयालुता का बास।
तो होगा किस धर्म में उसका नहीं विकास॥ —हरिऔध

(1) दया संसार के सभी धर्मों की मूल शिक्षा है।

(2) दयाहीन मनुष्य मानवता के अन्य सद्गुणों में बहुत आगे नहीं बढ़ सकता।

(3) सभी सद्गुणों की पंक्तियों में दया को अगली पंक्ति में स्थान मिलेगा।

(4) भारत में दया का भी बहुत दुरुपयोग हुआ है, क्योंकि दया करके जिन्होंने बिना विवेक के बड़े-बड़े दान दे डाले हैं, उनका बहुत दुरुपयोग हुआ है।

(5) दया मनुष्य की कोमलतम भावना का प्रतीक है। जिसमें दया नहीं उसमें विनय नहीं।

(6) शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए। न्याय का विरोध करनेवाली दया, दया नहीं बल्कि क्रूरता है। —**महात्मा गाँधी**

असली दयावान वह है जो पशुओं के प्रति भी दयावान हो। —**बाइबिल**

हत्यारों को क्षमा करके दया हत्या ही करती है। —**शेक्सपीयर**

मैं नाम से मनुष्य हूँ, दया से ईश्वर हूँ। —**सिमन्स**

दयालुता वह सोने की ज़ंजीर है जिसके द्वारा समाज परस्पर बँधा है। —**गेटे**

केवल दया दिखानेवाला परमात्मा अन्यायी परमात्मा है। —**यंग**

दया सब वस्तुओं में सबसे अधिक सस्ती है। —**एस० स्माइल**

दयालुता हमको ईश्वर तुल्य बना देती है। —**क्लाडियन**

दयालुता, दयालुता को जन्म देती है। —**शोफ़ोक्लीज़**

दयालु

दयालु चेहरा सदैव सुन्दर रहता है। —**बेली**

मानव को दयालुओं के ही पड़ोस में रहना चाहिए। जो दयालु और चिन्ता-रहित हैं वे ही दयालु मानव है। —**कन्फ़्यूशियस**

दयालु धन्य हैं, क्योंकि वे ही प्रभु की दया को प्राप्त कर सकेंगे। —**मसीह**

दयालु बनने में कुछ खर्च नहीं पड़ता। —**महात्मा गाँधी**

दर्शन

दर्शन सर्वश्रेष्ठ संगीत है। —**प्लेटो**

दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है। —**राधाकृष्णन्**

जब ज़िन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने के लिए गायक नहीं मिलता, तो वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है। —**खलील जिब्रान**

दार्शनिक होने का अर्थ केवल सूक्ष्म विचारक होना नहीं है, या केवल किसी दर्शन-प्रणाली को चला देना नहीं है, बल्कि यह कि हम ज्ञान के ऐसे प्रेमी बन

जाएँ कि उसके इशारों पर चलते हुए विश्वास, सादगी, स्वतन्त्रता और उदारता का जीवन व्यतीत करने लगें। —थोरो

दर्शन जगत् को समझने और उसको उन्नत बनाने का श्रेष्ठतम साधन है।
—सम्पूर्णानन्द

आश्चर्य सारे दर्शनशास्त्र की आधारशिला है। अनुसन्धान उसका विकास एवं अज्ञानत उसकी समाप्ति है। —मांटेन

दर्शन को भलीभाँति पढ़ने से संदेह और शंकाएँ दूर तो हो जाती है पर इसके विपरीत शंकाओं की वृद्धि भी होती है। —बेकन

दलाल

दलाल वह है जिसे चोरी करने का लाइसेन्स मिला होता है।
—उबैद ज़ाकानी

दरिद्र, दरिद्रता, दरिद्रनारायण (दे० गरीब, गरीबी भी)

दारिद्रयान्मरणाद्वापि दारिद्रयमवरं स्मृतम्।
अल्पक्लेशेन मरणं दारिद्रयमति दुःसहम्॥
(दरिद्रता और मरण में दरिद्रता अधिक बुरी है क्योंकि मरण में थोड़ा कष्ट होता है, जबकि दरिद्रता में अति दुस्सह कष्ट होता है।) —हितोपदेश

ग़रीबों की छाती पर दुनिया ठहरी हुई है, यह कठोर सत्य है।
—प्रेमचंद

दारिद्रयादधिक दुःख न भूत न भविष्यति।
(दारिद्र्य से बड़ा दुःख न हुआ न होगा।) —एक संस्कृत लोकोक्ति

ईश्वर का सबसे अच्छा नाम दरिद्रनारायण है। —महात्मा गाँधी

दरिद्र की आकांक्षा भी दरिद्र ही होती है। —टैगोर

जिसके पैसा नहीं पास, उसको मेला लगे उदास। —एक हिंदी लोकोक्ति

अतिथि की भाँति दीन, दुःखी, पीड़ित, रोगी इत्यादि की सेवा करना भी समाजपूजा का एक अंग है। दरिद्रनारायण भी एक महान् देवता है। उनका हम पर वह उपकार है, जिसका बदला कभी नहीं चुकाया जा सकता। —विनोबा

दवा

दिनान्ते च पिबेद्दुग्धं निशान्ते च पिबेत् पयः ।
भोजनान्ते पिबेत्तक्रं किं वैद्यस्य प्रयोजम् ।।

(दिन के अन्त में दूध पिए, रात के अन्त में जल पिये, और भोजन के अन्त में छाछ पिये, फिर वैद्य की क्या आवश्यकता ?) —अज्ञात

An apple a day keeps the doctor away.
(प्रतिदिन एक सेब का प्रयोग डाक्टर को दूर रखता है ।)

—एक अंग्रेजी कहावत

जहाँ तक हो सके निरन्तर हँसते रहो—यह सस्ती दवा है । —अज्ञात

आराम और उपवास सर्वोत्तम दवा है । —फ्रैंकलिन

दायित्व (दे० 'ज़िम्मेदारी')

अपनी तमाम जिम्मेदारियाँ ईश्वर पर डालकर, दुनिया में अपना काम करो ।

—रामकृष्ण परमहंस

दान, दानी

दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते, दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः ।
(दानी अमरत्व पाते है और दीर्घायु प्राप्त करते है) —ऋग्वेद

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर ।
(सैंकडों हाथों से इकट्ठा करो और हज़ारों हाथों से बाँटो ।) —अथर्ववेद

अभयः सर्वभूतानां नास्ति दानमतः परम् । (सबसे बड़ा दान तो अभयदान है जो सत्य, अहिंसा का पालन करने से दिया जा सकता है ।) —महाभारत

तुलसी पंछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर ।
दान दिए धन ना घटै, जो सहाय रघुवीर ।। —तुलसी

(1) रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं ।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ।।

(2) तब ही लगि जीबो भलो, दीबो पड़े न धीम ।
बिन दीबो जीबो जगत, मोहि न रुचै रहीम ।। —रहीम

दान दीन को दीजिए मिटै दरिद की पीर ।
औषधि वाको दीजिए जाके रोग सरीर ।। —वृन्द

दाता नर अरु सूम में, लखिए भेद इतेक ।
देत एक जियतहिं हरखि, देत मरे पर एक ।। —रामचरित उपाध्याय

देते समय न सोच तू पात्र, कुपात्र, सुपात्र ।
दान सदिच्छा से दिया करे सुपात्र कुपात्र ।। —भगवानदीन

सच्चा दानी प्रसिद्धि का अभिलाषी नहीं होता। —प्रेमचन्द

लकड़हारे की कुल्हाड़ी ने वृक्ष से बेंट माँगी। वृक्ष ने दे दिया। —टैगोर

प्रार्थना ईश्वर की तरफ़ आधे रास्ते तक ले जाती है, उपवास हमको उनके महल के द्वार तक पहुँचा देता है और दान से हम अन्दर प्रवेश करते हैं।

—क़ुरान

सज्जनों की रीति ही यह है कि यदि कोई उनसे कुछ माँगे तो वे मुँह से कुछ न कहकर, काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं। —कालिदास

तुम्हारा दायाँ हाथ जो देता है, उसे बायाँ हाथ न जानने पाए। —बाइबल

दान देकर तुम्हें खुश होना चाहिए, क्योंकि मुसीबत दान की दीवार कभी भी नहीं फांदती। —हज़रत मुहम्मद

(1) दान से धन घटता नहीं बढ़ता है। अंगूर की शाखें काटने से ज्यादा अंगूर देती हैं।

(2) जो भाग्यवान है वह दानशीलता अपनाता है और दानशीलता से ही आदमी भाग्यवान होता है।

(3) दानियों के पास धन नहीं होता और धनी दानी नहीं होते।

—शेख सादी

अधिक नहीं दे सकते तो अपने निवाले में से ही आधा निवाला क्यों नहीं दे देते ? —जैन पंचतंत्र

(1) जो दान अनीति और आलस्य को बढ़ाता है वह दान ही नहीं है, वह तो अधर्म है।

(2) दान के माने 'फेंकना' नहीं बल्कि 'बोना' है। —विनोबा

सच्चा दान दो प्रकार का होता है—एक वह जो श्रद्धा-वश दिया जाता है; दूसरा वह जो दया-वश दिया जाता है। (चिंता०) —**रामचन्द्र शुक्ल**

दामाद

(1) आदित्यादिग्रहाः सर्वे यथा तुष्यन्ति दानतः ।
सर्वस्वेऽपि न तुष्येत जामाता दशमो ग्रहः ।

(सूर्य आदि सभी ग्रह जिस प्रकार दान मे सतुष्ट होते हैं, उस प्रकार दामाद रूपी दसवाँ ग्रह सर्वस्व प्रदान करने के बाद भी सन्तुष्ट नहीं होता।)

(2) सदा वक्र सदा क्रूर, सदा पूजामपेक्षते ।
कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः ॥

(दामाद दसवाँ ग्रह है जो सदा वक्र रहता है, सदा क्रूर है, सदा पूजा चाहता है तथा कन्याराशि मे स्थित है।) —**अज्ञात**

दिखावा

(1) डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई ।

(2) बाहर लंबी-लंबी धोती, घर मे बाजरे की रोटी ।

(3) घर मे नही दाने, अम्मा चली भुनाने । —**हिन्दी लोकोक्तियाँ**

दिमाग़

मस्तिष्क स्वयं अपने मे ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग मे बदल सकता है। —**मिल्टन**

मस्तिष्क की शक्ति काम है आराम नही। —**पोप**

दिल

अगर सुन्दर चेहरा संस्तुति है तो नेक दिल विश्वासपात्र। —**बुल्वर**

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला,
फ़ायदा देखा इसी नुकसान में। —**अज्ञात**

उभरने ही नही देती यहाँ बेमायगी दिल की,
नहीं तो कौन क़तरा है जो दरिया हो नही सकता। —**चकबस्त**

दिल तलवार से अधिक शक्तिशाली है। —**वेंडेल फ़िलिप्स**

दीन, दीनता दे० ग़रीब, ग़रीबी

दु:ख

(1) सुख के बाद दु:ख आता है और दु:ख के बाद सुख। मनुष्य के दु:ख और सुख गाड़ी के पहिये की तरह घूमते रहते हैं।

(2) दु:ख रहता है तो दुखियों के प्रति हमदर्दी रहती है और भगवान् का निरंतर स्मरण आता है। सुख मे मनुष्य का हृदय निष्ठुर बन जाता है, वह भगवान् को भूल जाता है।
—महाभारत

लोकेषु निर्धनो दु:खी ऋणग्रस्तस्ततोऽधिकम्।
ताभ्यां रोगयुतो दु:खी तेभ्यो दु:खी कुभार्यकः॥

(संसार के दु:खियों मे पहला दु:खी निर्धन है। उससे अधिक दु:खी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनों से अधिक दुखी वह है जो सदा रोगी रहता हो, और सबसे दु:खी वह है जिसकी पत्नी दुष्टा हो।)

—विदुरनीति

विचित्र बात है कि सुख की अभिलाषा मेरे दु:ख का एक अंग है।
—ख़लील जिब्रान

तुम तो खुद अपना खिलौना तोड़कर रोने बैठे हो। —हर्ष

सुख कै माथै सिलि परै, जो नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुक्ख की, पल-पल नाम रटाय॥ —कबीर

(1) पिय वियोग सम दुख जग नाही।
(2) रहत न आरत के चित चेतू।
(3) धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखियहि चारी।
(4) कहेहु तें कछु दुख घटि होई। —तुलसीदास

दु:ख का एक क्षण युग के बराबर होता है। —शेक्सपियर

(1) रहिमन विपदाहू भली जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जान परत सब कोय॥

(2) रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बाँटि न लैहें कोय॥ —रहीम

(1) जदपि आपनो होय तउ, दुख में करत न सीर।
ज्यों दुखती अँगुरी निकट, दुसरी ताहि न पीर।

(2) दुख पाये बिनु हूँ कही गुन पावत है कोइ।
सहै बेध बन्धन सुमन, तब गुन संयुत होइ॥

(3) सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत।
दिवस गये ज्यों निस उदित, निस गत दिवस उदोत ॥ —**वृन्द**

दीरघ साँस न लेइ दु:ख, सुख साईंहि न भूल।
दई-दई क्यों करत है, दई-दई सो कबूल ॥ —**बिहारी**

तौलौं ही डर बिपति सों जब लौ बिपति सुदूर।
नद में डूबे नाव तौ पैरे परियत पूर ॥ —**रामचरित उपाध्याय**

(1) पवित्रता की नाप है मलिनता, सुख का आलोचक है दु:ख, पुण्य की कसौटी है पाप। (स्कंद०)

(2) दु:ख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात। (कामा०) —**प्रसाद**

अन्याय सहनेवाले से ज़्यादा दु:खी अन्याय करने वाला होता है। —**प्लेटो**

दु:ख भोगने से सुख के मूल्य का ज्ञान होता है। —**सादी**

रंज से खूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ी इतनी कि आसाँ हो गईं ॥ —**ग़ालिब**

आड़े आया न कोई मुश्किल में, मशवरे दे के हट गए अहबाब। —**जोश**

व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए समय कहाँ? —**बायरन**

दुर्बलता दे० कमजोर

अश्वं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजापुत्रं बलिं दद्यात् देवो दुर्बल घातक: ॥

(यज्ञ में न तो घोड़े की बलि दी जाती है, न हाथी की और व्याघ्र की तो कदापि नही। बकरे की बलि दी जाती है। भगवान भी दुर्बलों का घातक होता है।) —**अज्ञात**

(1) कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पर जोर।
चलै न अचल उखारि तरु, डारत पवन झकोर ॥

(2) सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय ॥ —**वृन्द**

दुविधा

(1) सत्त नाम कड़वा लगै मीठा लागै दाम।
दुविधा में दोऊ गए माया मिली न राम ॥

(2) हिरदे माहीं आरसी मुख देखा नहिं जाय।
मुख तौ तब ही देखई दुविधा देय बहाय॥ —**कबीर**

सँइया अस कहीं त नतवे टूटे,
भइया अस कही त सेजिए छूटे।
(यदि पति के पक्ष की कहूँ तो भाई से सम्बन्ध टूटता है और यदि भाई के पक्ष की कहूँ तो पति से।) —**हिंदी लोकोक्तियाँ**

दुर्गुण

दुर्गुणों को सीखने के लिए शिक्षकों की आवश्यकता नही पड़ती। —**एक डेनिश कहावत**

दुर्भाग्य

दैवेनोपहतस्य बुद्धिरथवा सर्वा विपर्यस्यति।
(भाग्य के मारे हुए व्यक्ति की सम्पूर्ण बुद्धि विपरीत हो जाती है।) —**विशाखदत्त**

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापि यान्त्यापदः। (प्रायः दुर्भाग्यशाली व्यक्ति जहाँ भी जाता है, वहीं विपत्तियाँ भी आ जाती हैं।) —**अज्ञात**

जहाँ जाए भूखा वहाँ पड़े सूखा। —**एक हिंदी लोकोक्ति**

सियहबख़्ती में कब, कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा रहता है इन्साँ से।
(सियहबख़्ती = दुर्भाग्य, तारीकी = अँधेरा) —**नासिख़**

दुर्वचन

दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हे। —**बुद्ध**

खीरा को मुख काटिए मलियत नोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन को चहियत यही सजाय। —**रहीम**

दुश्मन (दे० शत्रु भी)

रिपु पर दया परम कदराई। —**तुलसी**

यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खिला, प्यासा हो तो उसे पिला, इससे तू उसके सिर पर जलते हुए कोयले रख देगा। —**बाइबिल**

अपने शत्रु के लिए अपनी भट्टी को इतना गर्म न कर कि वह तुझे ही भून कर रख दे। —**शेक्सपियर**

हर व्यक्ति स्वयं ही अपना बहुत बुरा शत्रु है। —शेफ़र

मानव का स्वयं से बड़ा कोई शत्रु नहीं। —पेट्रार्क

किसी के हज़ार मित्र हों, फिर भी कोई बुद्धिमान नहीं होता और जिसका एक शत्रु होता है, उसे वह हर जगह दिखाई देता है। —एमर्सन

दुष्कर्म

यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर मुझे क्षमा कर देंगे और मनुष्य मेरे कुकर्म को न जान सकेंगे, तब भी मुझे कुकर्म करते हुए लज्जा आयेगी।

—प्लेटो

प्रत्येक कुकृत्य उस तार को तोड़ देता है जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है। —रस्किन

कुछ कुकर्म बहुत-से गुणों को दूषित करने के लिए पर्याप्त होते हैं।—प्लूटार्क

दुष्ट

(1) दुष्ट भार्या, दुष्ट पुत्र, दुष्ट राजा, दुष्ट मित्र, दूषित सम्बन्ध और दुष्ट देश को तो दूर से ही छोड़ देना चाहिए। (महाभारत)

(2) शास्त्रं न शास्ति दुर्बुद्धिं श्रेयसे चेतराय च।

(जिसकी बुद्धि खोटी है, उसे शास्त्र भी भला-बुरा कुछ नहीं सिखा सकता। —महाभारत) —वेदव्यास

शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकरेण दुर्जनः।

(दुष्ट उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है।—कुमा०)

—कालिदास

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालंकृतोऽपि सः।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

(विद्या से विभूषित होने पर भी दुर्जन का परित्याग ही उचित है। मणि धारण करने वाला साँप क्या भयंकर नहीं होता?) —भर्तृहरि

दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चांगारः शीतः कृष्णायते करम्॥

(दुर्जनों के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नहीं करना चाहिए। कोयला यदि जलता हुआ है तो स्पर्श करने पर जला देता है और यदि ठण्डा है तो हाथ काला कर देता है।) —हितोपदेश

तक्षकस्य विष दन्ते मक्षिकाया विषं शिरे।
वृश्चिकस्य विष पुच्छे सर्वांगे दुर्जनां विषम् ।।
(साँप के दन्त में विष रहता है, मक्खी के सिर में जहर रहता है, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, किन्तु दुर्जन के पूरे शरीर में विष रहता है।) —चाणक्य

(1) कवि कोविद गावहिं अस नीती।
खल सन कलहु न भल नहिं प्रीती ।।
(2) बरु भल वास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ विधाता। —तुलसी

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरैं रहिमन पेड़ बबूल ।। -रहीम

(1) दुष्ट न छाँड़ै दुष्टता, बड़ी ठौरहू पाय।
जैसे तजत न स्यामता, विष सिवकण्ठ बसाय ।।
(2) दुष्ट न छोड़े दुष्टता कैसे हू सुख देत।
धोये हू सौ बेर के काजर होय न सेत ।।
(3) दुर्जन के संसर्ग तें, सज्जन लहत कलेस।
ज्यों दशमुख, अपराध ते, बंधन लह्यो जलेस ।। —वृंद

आपुन काज सँवारन के हित और कौ काज बिगारत जाई।
आपुन कारज होउ न होउ बुरौ करि और को डारत भाई।
आपुहु षोवत, औरंहु षोवत, षोइ डुबो घर देत बहाई।
सुन्दर देषन ही बनि आवत दुष्ट करें, नहिं कौन बुराई ।। —सुन्दरदास

परे विपत में दुष्ट को मोचत नहीं प्रवीन।
बंधन तें अहि छुटि परै करै प्रान तै हीन ।। —दीनदयाल गिरि

दुरजन-हिय उपदेस सत, नहिं ठहरत, कढ़ि जात।
अनल-बीच छिन माहिं ज्यौं, पारो पर्यौ परात ।।
—रामचरित उपाध्याय

दूरी

दूर के ढोल सुहावने। —एक हिन्दी लोकोक्ति

दूरात् पर्वता: रम्या।
(दूर से पर्वत सुन्दर दीखते हैं) —एक संस्कृत लोकोक्ति

दूर के पहाड़ अच्छें, दूर के बंधु अच्छे। —एक उड़िया लोकोक्ति

देवता

अप्सु देवा मनुष्याणां, दिवि देवा मनुष्याणाम्।
बालानां काष्ठ लोष्ठेषु, वुद्धास्त्वात्मनि देवताः ।।

(मूर्ख मनुष्यों के देवता जल में, स्वर्ग में, काठ में अथवा मिट्टी में होते हैं, परन्तु विद्वानों के देवता अपने अन्दर होते हैं।) —**अज्ञात**

देवता न बड़ा होता है, न छोटा, न शक्तिशाली होता है, न अशक्त। वह उतना ही बड़ा होता है जितना बड़ा उसे उपासक बनाना चाहता है।

—**हजारीप्रसाद द्विवेदी**

मनुष्य देवताओं को अपने सदृश बनाते हैं —**एल्डस हक्स्ले**

देश-भक्ति

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

(हे लक्ष्मण ! मुझे स्वर्णमयी लंका भी अच्छी नहीं लगती, माता और मातृ-भूमि स्वर्ग से बढ़कर होती हैं।) —**अज्ञात**

जिस देश में आपने जन्म लिया है, उसके प्रति कर्तव्य-पालन करने से बढ़कर संसार में कोई दूसरा काम है ही नहीं। —**महात्मा गाँधी**

अपने देश के प्रति मेरा जो प्रेम है, उसके कुछ अंश में मैं अपने जन्म के गाँव को प्यार करता हूँ और मैं अपने देश को प्यार करता हूँ। पृथ्वी (जो सारी की सारी मेरा देश है) के प्रति अपने प्रेम के एक अंश में मैं पृथ्वी को भी प्यार करता हूँ क्योंकि यह मानवता का, ईश्वर का, प्रत्यक्ष आत्मा का निवास-स्थान है।

—**खलील जिब्रान**

(1) देशभक्तों की चरण-रज माथे पर लगाने को मिले तो अहोभाग्य ! संसार के गुलाम देशों को आजाद करने में उन्होंने नींव के पत्थर का काम किया है।

(2) इसमें सन्देह नहीं कि देशभक्ति की वर्तमान भावना हमने पाश्चात्य देशों से सीखी है। हमारी पुरानी देशभक्ति स्थानीय और अपेक्षाकृत संकीर्ण ढंग की हुआ करती थी।

(3) मनुष्य में सच्ची देशभक्ति तब उपजती है, जब वह अपने देश से दूर जा पहुँचता है।

(4) अगर देशभक्ति का मतलब व्यापक मानव-मात्र का हित-चिन्तन नहीं है, तो उसका कोई अर्थ ही नहीं है। —**महात्मा गाँधी**

जब तक तुम मनुष्य-जाति में से देशभक्ति नहीं निकाल फेंकोगे तब तक संसार में कभी शान्ति स्थापित नहीं कर पाओगे। —बर्नार्ड शा

दोष

जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥ —तुलसी

रतन न पर दूषन उघटि आपन दोष निवार।
तोहिं लखें निरदोष वे दें निज दोष बिसारि॥ —रत्नावली

सब देखै पै आपनो, दोष न देखै कोइ।
करै उजेरो दीप पै, तरे अँधेरा होइ॥ —वृन्द

आये औगुन एक के गुन सब जाय नसाय।
जथा खार जल रासि को नहिं कोऊ जल खाय॥ —दीनदयाल गिरि

बंसी छिद्र न ढाँपती पाती चुम्बन प्यार।
छिद्र छिपाती ढोलकी इससे खाती मार॥ —भगवानदीन

तू दूसरे की आँख का तिनका क्यों देखता है, अपनी आँख का शहतीर तो निकाल। —बाइबल

साधारण लोग अपनी हर बुराई का दोषी दूसरे को ठहराते हैं अल्प ज्ञानी स्वयं को, विशेष ज्ञानी किसी को नहीं। —ऐपिक्टस

क्या तुमने उस आदमी के बारे में नहीं सुना जो सूर्य को इसलिए दोष देता था कि वह उसकी सिगरेट नहीं जलाता। —कार्लाइल

दोषारोपण

शुचेरपि हि युक्तस्य दोष एव निपात्यते।
(कोई कितना ही शुद्ध और उद्योगी क्यों न हो, लोग उस पर दोषारोपण कर ही देते हैं।—महाभारत) —वेदव्यास

टूटै टूटनहार तरु वायुहिं दीजत दोष। —केशव

(1) नाच न आवै आँगन टेढ़ा।
(2) करनी भूली आपनी औरन दोष लगाय। —हिंदी लोकोक्तियां

दोस्ती (दे० मित्रता भी)

सच्ची दोस्ती अच्छे स्वास्थ्य की तरह है जिसकी कीमत तब तक नहीं आँकी जा सकती जब तक कि वह खो न जाय। —कोल्टन

दौलत (दे० धन भी)

दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान ।।
ठाँउ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै।
मीठें वचन सुनाय बिनय सबही की कीजै ।।
कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन है दिन चारि रहत सबही के दौलत ।। —**गिरिधर कविराय**

द्वेष

द्वेषी को मृत्यु तुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। —**महाभारत**

जिनका हृदय वैर या द्वेष की आग में जलता है उन्हे रात में नींद नही आती। —**विदुर नीति**

प्रेम बसत समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू। जिस पुष्प को वसंत समीर महीनों में खिलाती है, उस लू का एक झोंका जलाकर राख कर देता है।— **प्रेमचंद**

द्वेष-बुद्धि को हम द्वेष से नही मिटा सकते, प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है। —**विनोबा**

मानव-मन में द्वेष जैसी भयकरता उत्पन्न करता है, वैसी कोई दूसरी वस्तु नही। —**स्वेट मार्डेन**

राग मिलानेवाली वासना है और द्वेष अलग करनेवाली। (र० मी०)
—**रामचंद्र शुक्ल**

धन, धनी

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।
(धन से मनुष्य कभी तृप्त होनेवाला नही।) —**कठोपनिषद**

(1) धर्म करने के लिए भी धन कमाने की अपेक्षा न कमाना ही अच्छा है, जब अन्त में कीचड़ को धोना ही पड़ेगा तो उसे छूआ ही क्यों जाय?

(2) धन बढ़ाने की अभिलाषा उन्नति का बीज है।

(3) यदि धन अपने पास इकट्ठा हो जाय तो वह पाले हुए शत्रु के समान है। उसको छोड़ना भी कठिन हो जाता है।

(4) धन मनुष्य के दु:ख का कारण है।

(5) पुत्र-धन सबसे श्रेष्ठ है, इसके सामने संसार के सभी धन फीके हैं।

(6) धन की प्यास कभी नहीं बुझती, उसकी ओर से मुँह मोड़ लेना ही परम सुख है।

(7) अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
(पुरुष अर्थ का दास है। अर्थ किसी का दास नही—महाभारत) —**वेदव्यास**

(1) आपदर्थे धनं रक्षं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि॥
(विपत्ति के लिए धन बचाना चाहिए, धन की तुलना में स्त्री को बचाना चाहिए, किंतु स्त्री और धन दोनो की तुलना मे अपने को बचाना चाहिए।)

(2) यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बांधवाः।
यस्यार्थः स पुमांल्लोके यस्यार्थः स च जीवति।
(जिसके पास धन रहता है उसी के मित्र बहुत होते हैं, जिसके पास धन रहता है उसी के बन्धु होते हैं, जिसके पास धन रहता है वही पुरुष गिना जाता है और जिसके पास धन है वही जीवित है।) —**चाणक्य**

(1) पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते।
वन्धते यदवन्धोऽपि, स प्रभावो धनस्य च॥
(धन का ही यह प्रभाव है कि अपूजनीय भी पूजनीय, अगमनीय भी गमनीय और अवन्दनीय भी वन्दनीय हो जाता है।)

(2) जिनके पास दौलत है, वे यदि वृद्ध भी हो चुके है तो जवान है और दौलत से जो रहित हैं, वे जवान भी बुड्ढे हैं। —**पंचतंत्र**

दौलत की तीन तरह की गति होती है—दान, भोग और नाश। जो न देता है, न खाता है उसके धन की तीसरी गति ही होती है। —**हितोपदेश**

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ते॥
(जिसके पास धन है वही कुलीन है, वही पंडित, बहुश्रुत, गुणज्ञ, सुवक्ता और दर्शन करने योग्य है। तात्पर्य यह है कि संसार के सभी गुण सुवर्ण में बसते हैं।) —**भर्तृहरि**

(1) यत्कर्म करणेनान्तः संतोष लभते नरः।
वस्तुतस्तद् धनं मन्ये, न धनं धनमुच्यते॥
(जिस काम के करने से मनुष्य के अन्तःकरण को सन्तोष होता है, मैं वास्तविक धन उसी को मानता हूँ। लौकिक धन को धन नहीं कहा जाता।)

(2) विदेशेषु धनं विद्या, व्यसनेषु धनं मतिः।
परलोके धनं धर्मः, शीलम् सर्वत्र वैधनम्॥

(विदेश में विद्या धन (सुख का साधन) है, संकटकाल में बुद्धि धन है, परलोक में धर्म धन है, किन्तु शील सर्वत्र धन है ।)

(3) यथा विहंगास्तरुमाश्रयन्ति, नद्यो यथा सागरमाश्रयन्ति ।
यथा तरुण्यः पतिमाश्रयन्ति, सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ।।

(जैसे पक्षीगण वृक्ष का आश्रय लेते हैं, नदियाँ समुद्र का आश्रय लेती हैं और युवतियाँ पति का आश्रय लेती हैं, उसी तरह सभी गुण कांचन का आश्रय लेते हैं ।) —अज्ञात

(1) गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान ।
जो आवै संतोषधन, सब धन धूरि समान ।।
(2) चलौ चलौ सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय ।
एक कनक और कामिनी, दुरगम घाटी दोय ।। —कबीर

(1) जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय ।
रहिमन अम्बुज अम्बु बिनु, रवि ताकर रिपु होय ।।
(2) कमला थिर न रहीम कहि यह जानत सब कोय ।
पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चंचला होय ।। —रहीम

(1) नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।
(2) दिये पीठि पाछे लगे सनमुख होत पराय ।
तुलसी सम्पति छाँह ज्यों लखि दिन बैठि गँवाय ।।
(3) तुलसी या संसार में, कौन भयो समरत्थ ।
इक कंचन इक कुचन पर, को न चलायो हत्थ ।। —तुलसी

कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय ।
वा खाए बौरात है या पाए बौराय ।। —बिहारी

(1) कहा कहौं बिधि की अविधि, भूले परम प्रबीन ।
मूरख को सम्पति दई, पण्डित सम्पतिहीन ।।
(2) गुन प्रगटै अवगुन दुरै, जाके कमला साथ ।
तिय मारी परिहरि तऊ, कृष्ण त्रिलोकीनाथ ।।
(3) खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लै जाय ।
पाछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ मले पछताय ।।
(4) विद्या लक्ष्मी पुरुष पै होय नही इक ठाँय ।
नाहिन सुख है सौति में पिय पै एकहि जाय ।। —वृन्द

(1) दौलत पाय न कीजिए सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान ॥
... ...

कह गिरिधर कविराय करै यह सब घट दौलत।
पाहुन निस दिन चारि रहत सब ही के दौलत ॥

(2) पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ॥ — **गिरिधर कविराय**

टका करै कुल हूल टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै ॥
टका माय अरु बाप टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया ॥
अब एक टके बिनु टकटका रहत लगाये रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो धिक जीवन इक टके बिन ॥ —**बैताल**

ज़ंजीरें ज़ंजीरें ही हैं, चाहे वे लोहे की हों या सोने की, वे समान रूप से तुम्हें गुलाम बनाती हैं। —**स्वामी रामतीर्थ**

(1) संस्कृत में पैसे को द्रव्य कहा गया है। द्रव्य माने है बहनेवाला। अगर वह स्थिर रहा तो रुके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी।

(2) फ़ुटबाल की तरह धन का खेल होना चाहिए। गेंद को कोई अपने पास नहीं रखता। वह जिस के पास पहुँचती है वही उसे फेंक देता है। पैसे को इस तरह फेंकते जाइए तो समाज-शरीर में उसका प्रवाह बहता रहेगा और समाज का आरोग्य कायम रहेगा। —**विनोबा**

(1) जब धन जरूरत से ज्यादा हो जाता है, तो अपने लिए निकास का मार्ग खोजता है। यों न निकल पायेगा, तो जूए मे जायगा, घुड़दौड़ मे जायगा, ईंट-पत्थर में जायगा या ऐयाशी में जायगा। (गो०)

(2) धन से बड़े से बड़े पापों पर पर्दा पड़ सकता है।

(3) सम्पत्ति और सहृदयता में वैर है। —**प्रेमचंद**

राजधर्म, आचार्य धर्म, वीर धर्म सब पर सोने का पानी फिर गया, सब टका धर्म हो गए। धन की पैठ मनुष्य के सब कार्यक्षेत्रों मे करा देने से, उसके प्रभाव को इतना विस्तृत कर देने से, ब्राह्मणधर्म और क्षात्रधर्म का लोप हो गया, केवल वणिग्धर्म रह गया। (चिन्ता०) —**रामचंद्र शुक्ल**

जो अधिक धनवान है, वही अधिक मोहताज है। —**शेख सादी**

नशा दौलत का बदअतवार (कुप्रकृति) को जिस आन चढ़ा
सर पै शैतान के इक और भी शैतान चढ़ा। —ज़ौक

(1) धन अच्छा सेवक पर बुरा स्वामी है।

(2) धन के पर होते हैं, कभी-कभी वे स्वयं उड़ते हैं और कभी-कभी अधिक धन लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है। —बेकन

कोई व्यक्ति दो आदमियों की एक साथ सेवा नहीं कर सकता। चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। —बाइबिल

किसी प्रकार की भी गरीबी हमारा ईश्वर से उचित सम्बन्ध जोड़ देती है जबकि हर प्रकार की अमीरी (मन या धन की) हमारा उससे विच्छेद करा देती है। —फ्रैंक क्रासले

जो मेरा धन चुराता है, मेरी तुच्छ वस्तु ही ले जाता है। —शेक्सपियर

जल्दी इकट्ठी की हुई दौलत जल्दी ही घट जाती है। थोड़ी-थोड़ी इकट्ठी की गयी बढ़ती है। —गेटे

(1) माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परशुराम।

(2) ज़र है तो नर है, नहीं तो खँडहर है।

(3) बाप भला न भैया, सब से भला रुपैया।

(4) रुपया रुपये को खींचता है। —हिंदी लोकोक्तियाँ

प्रेम बहुत कुछ कर सकता है पर पैसा सब कुछ कर सकता है। —एक फ्रेंच कहावत

सोने की चाभी हर दरवाज़े को खोल देती है। —एक हिंदी कहावत

दौलत बुद्धि की सेवा करती है, किंतु मूर्ख पर शासन। —एक अँग्रेजी कहावत

जैसे प्राणियों के सिर पर मृत्यु का भय सर्वदा सवार रहता है वैसे ही धनी पुरुषों को, राजा, जल, अग्नि, चोर और कुटुम्ब का भय सदा बना रहता है। —महाभारत

जिसे सब तरह से संतोष है वही धनवान है। —शंकराचार्य

धनी होत निरधन बहुरि निरधन तें धनवान्।
बड़ी होति निसि सीत ऋतु ज्यों ग्रीषम दिन मान ।। —वृन्द

जिसके जीवन को उसके इर्द-गर्द की जनता चाहती है, वह सच्चा धनी है। —विनोबा

धनी मनुष्य धन में लोटने वाले ईश्वर ही की कल्पना कर सकता है। धनी ईश्वर में ही उसकी श्रद्धा हो सकती है। जिसके पास धन नहीं, वह उसकी दया का पात्र हो सकता है, श्रद्धा का कदापि नहीं। —**प्रेमचंद**

धनवानों के हाथ मे माप ही एक है, वे विद्या, सौंदर्य, बल, पवित्रता और तो क्या, हृदय भी उसी से मापते हैं। वह माप है—उनका ऐश्वर्य।

—**जयशंकर प्रसाद**

उस मनुष्य से अधिक ग़रीब कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है।

—**एडविन पग**

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमंद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है।

—**थोरो**

जो अधिक धनवान् है वही अधिक मोहताज है। —**सादी**

कोठेवाला रोवे छप्परवाला सोवे। —**हिन्दी लोकोक्ति**

धन्यवाद

'कृपया' और 'धन्यवाद'—ये छोटी रेज़गारी हैं जिनके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते हैं। ये ऐसे साधारण शिष्टाचार है जिनके द्वारा हम जीवनयन्त्र को स्नेहयुक्त और चालित रखते है। —**गार्डनर**

धर्म

(1) प्राणियों की अभिवृद्धि के लिए धर्म का प्रवचन किया गया है, अतः जो प्राणियों की अभिवृद्धि का कारण हो, वही धर्म है।

(2) श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

(सावधान होकर धर्म का वास्तविक रहस्य सुनो और उसे सुनकर उसी के अनुसार आचरण करो। जो कुछ तुम अपने लिए हानिप्रद और दुःखदायी समझते हो, वह दूसरों के साथ मत करो।)

(3) इज्याध्ययनदानादि तपः सत्य क्षमा दमः।
आलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्ट विध स्मृतः॥

(यज्ञ, अध्ययन, दान, तप, सत्य, क्षमा, मन और इन्द्रियों का संयम तथा लोभ-त्याग—ये आठ धर्म के मार्ग हैं।) —महाभारत —**वेदव्यास**

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

(धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध—ये दस धर्म के लक्षण हैं।) **—मनुस्मृति**

धर्म्मो यो बाधते धर्मं न स धर्म्मः कुधर्म्म तत् ।
धर्म्माविरोधी यो धर्म्मः स धर्म्मः सत्यविक्रमः ।।

(जो धर्म दूसरे धर्म को बाधा पहुँचाता है, वह धर्म नहीं कुधर्म है। जो धर्म का अविरोधी है, सत्य पराक्रमशील है, धर्म वही है।) **—अज्ञात**

शान्ति के समान कोई तप नहीं है, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं है, दया के समान कोई धर्म नहीं है। **—चाणक्य नीति**

हर अवसर और हर अवस्था में जो अपना कर्तव्य दिखाई दे, उसी को धर्म समझकर पूरा करना चाहिए। अन्य किसी 'धर्म' की ओर नहीं जाना चाहिए। **—गीता**

(1) अप्पम्पि चे सहितं भासमानो धम्मस्य होति अनुधम्मचारी।
रागञ्च दोसञ्च पहाय मोहं सम्मप्पजानो सुविमुत्तचित्तो।
अनुपादियानो इध वा हुरं वा स भागवा सामञ्ञस्स होति ।।

(धर्म-ग्रन्थों का चाहे थोड़ा ही पाठ करे, लेकिन यदि राग, द्वेष तथा मोह से रहित, कोई व्यक्ति धर्म के अनुसार आचरण करता है तो ऐसा बुद्धिमान, अनासक्त, यहाँ वहाँ (दोनों जगह) भोगों के पीछे न भागनेवाला व्यक्ति ही श्रमणत्व का भागी होता है।)

(2) बहुपि चे सहितं भासमानो न तक्करो होति नरो पमत्तो।
गोपा व गोवो गणयं परेसं न भागवा सामञ्ञस्स होति ।।

(धर्म-ग्रन्थों का कितना ही पाठ करे, लेकिन यदि प्रमाद के कारण मनुष्य उन धर्म-ग्रन्थों के अनुसार आचरण नहीं करता, तो दूसरों की गौवें गिनने वाले ग्वालों की तरह वह श्रमणत्व का भागी नहीं होता।) **—धम्मपद**

(1) केसन कहा बिगारिया, जो मूँड़ो सौ बार।
मन को क्यों नहिं मूँड़िये, जामें विषै-बिकार ।।

(2) डाढ़ी मूँछ मुड़ाइ कै, हुआ घोटमघोट।
मन को क्यों नहिं मूँड़िये, जामें भरिया खोट ।।

(3) मुंड़ मुंड़ाये हरि मिलैं, सब कोई लेहि मुंड़ाय।
बार-बार के मूँड़ने, भेड़ न बैकुंठ जाय ।।

(4) पाथर पूजै हरि मिलैं तौ मैं पूजूँ पहार।

(5) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, बहिरा हुआ खुदाय ।। —कबीर

पर-हित सरिस धरम नहिं भाई। —तुलसी

(1) वास्तव में जितने मनुष्य हैं, उतने ही धर्म हैं।

(2) धर्म सारे संसार और मानव-जाति का केवल एक ही है, फिर इसके नामान्तर भले ही कर दिए गए हों।

(3) मजहब तो वैयक्तिक मामला है।

(4) धर्म की परीक्षा ही दुःख मे होती है।

(5) मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना नही कर सकता। वास्तव में धर्म तो हमारे हर एक काम में व्यापक होना चाहिए। यहाँ धर्म का अर्थ कट्टर-पंथ नही है, उसका अर्थ है—विश्व की एक नैतिक सुव्यवस्था।

(6) वह धर्म जो व्यावहारिक मामलों पर ध्यान नहीं देता और उन्हें सुलझाने में सहायक नही, धर्म नही।

(7) धर्मस्थान के नाम पर भारत-भर में जो भंडार पडे सड़ रहे है, वे धर्म-स्थान नही, धोखे की चीज़ें हैं। ये भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए है।

(8) धार्मिक स्थानों का धन यदि राष्ट्र-निर्माण मे लगे, तो इससे अच्छा काम और क्या होगा ?

(9) आप मेरे जीवन को ध्यान से देखिए। मै कैसे रहता हूं, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ और आम तौर पर मेरा बर्ताव कैसा रहता है ? इन सबको मिलाकर जो छाप आप पर पडे, वही मेरा धर्म है।

—महात्मा गाँधी

(1) धर्म प्रारम्भ मे भय के रूप मे आया, और जो बात भय के अंतर्गत की जाती है, वह निश्चय ही बुरी है। आज भी बहुत-से लोगों के निकट धर्म एक ऐसी चीज है, जिससे डरना उचित है। ये लोग अपना समय मन्दिरों में भेंट चढ़ाकर, यहाँ तक कि पशुओं की बलि देकर, कुछ कल्पित देवताओं के संतुष्टीकरण की चेष्टाओं मे व्यतीत करते है।

प्राचीन बर्बर मनुष्यों ने देवताओं और धर्म के संबंध में सोचना आरम्भ किया, क्योंकि वे बहुत-सी बातों को समझने मे असमर्थ थे, और जिस बात को वे नही समझते थे उससे डरते थे। उन्होंने हर वस्तु को एक देवता या देवी का रूप दे दिया—नदी, पहाड़, सूर्य, वृक्ष, पशु और कल्पित प्रेतात्माएँ आदि। चूंकि वे भयग्रस्त थे, इसलिए वे सर्वदा यही सोचते थे कि उनके देवता उन्हें दण्ड देना

चाहते हैं। उन लोगों की तरह उनके देवता भी कठोर और निर्दयी थे, और वे लोग उन्हें प्रसन्न करने अथवा बलि देकर संतुष्ट करने की चेष्टा करते थे। (विश्व० झलक)

(2) धर्मनिष्ठ लोगों ने बहुधा अपने को दूसरों पर ठूँसा है, अपना मत उनसे बलात् स्वीकार कराया है, और यह विश्वास बनाए रखा है कि वे जन-सेवा का कार्य कर रहे हैं। ईश्वर के नाम पर उन्होंने लोगों को मारा और उनकी हत्या की है और 'अनश्वर आत्मा के उद्धार' की बातें बनाते हुए उन्होंने नश्वर शरीर को जलाकर स्वाहा करने में संकोच नहीं किया। धर्म का लेखा-जोखा बहुत ही निकृष्ट है। (वही)

(3) इतिहास में हम प्रायः ही देखते हैं कि धर्म ने, जो हमें ऊपर उठाने और श्रेष्ठतर बनाने के दावों के साथ आया था, लोगों से पाशविक आचरण कराया है। उन्हें ज्ञान की ज्योति उपलब्ध कराने की बजाय उसने उन्हें बहुधा अन्धकार में रखने की चेष्टा की है, उनके हृदय को विशालता प्रदान करने की बजाय उसने उन्हें कितनी ही बार संकीर्ण हृदय और दूसरों के प्रति असहिष्णु बनाया है। धर्म के नाम पर कई महान और उत्कृष्ट कार्य किए गए हैं। धर्म के नाम पर ही हजारों-लाखों का संहार हुआ है और हर संभाव्य अपराध किया गया है। (वही)

(4) धर्म, जैसा कि मैंने उसे व्यवहार में तथा कई विचारशील व्यक्तियों द्वारा भी मान्यता पाते देखा—चाहे वह हिन्दुत्व हो या इस्लाम, बौद्धमत हो या ईसाई धर्म, उसने मुझे आकर्षित नहीं किया। मुझे वह मिथ्यामूलक रीतियों और हठवादी विश्वासों से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध प्रतीत हुआ। मैंने देखा कि उसके पीछे जीवन की समस्याओं की ओर उन्मुख होने की एक ऐसी प्रणाली थी, जो निश्चय ही विज्ञान की प्रणाली नहीं थी। उसमें जादू और चमत्कार का एक तत्त्व था, बिना परीक्षण विश्वास करने और अतिप्राकृत पर निर्भर करने की एक प्रवृत्ति। (खोज)

(5) भारत और अन्य देशों में जिस चीज़ को धर्म कहा जाता है, या कम से कम जो चीज संगठित धर्म का रूप रखती है, उसके दर्शन-मात्र से ही मेरा मन अति घृणा से भर उठा। मैंने प्रायः ही इस चीज की भर्त्सना की है, और इसका आमूल-चूल अंत करने की उत्कट इच्छा अनुभव की है। प्रायः सदैव यह अन्ध-विश्वास प्रतिगामिता और मतांधता का परिपोषक और हठधर्मिता, मिथ्या धारणाओं और शोषण तथा निहित हितों को बनाए रखने का समर्थक प्रतीत होता है। (आत्म)

(6) मैं चाहता हूँ और मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक

रस्में न अदा की जाएँ। मैं ऐसी बातों को नहीं मानता। सिर्फ़ रस्म समझकर इनमें बँध जाना मैं धोखे में पड़ना मानता हूँ। —जवाहरलाल नेहरू

(1) धर्म का कोई ऐसा सामान्य लक्षण नहीं बताया जा सकता जो सर्वत्र और सब काल मे—मनुष्य जाति की जब से उत्पत्ति हुई तब से अब तक बराबर मान्य रहा हो। समाज की ज्यों-ज्यों वृद्धि होती गई, त्यों-त्यों धर्म की भावना में भी देश-कालानुसार फेरफार होता गया। (वि० प्र०)

(2) धर्म का भाव कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीनों धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है। (हि० सा० इ०)

(3) धर्म की ऊँची-नीची कई भूमियाँ लक्षित होती हैं—जैसे—गृहधर्म कुल-धर्म, समाजधर्म, लोकधर्म और विश्वधर्म या पूर्णधर्म। (चिन्ता०-1)

(4) लोक समाज को धारण करने वाला धर्म है। (वि० प्र०)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

धर्म केवल लोगों की सेवा में है। तसबीह (माला) या मुसल्ला में नही है।

—शेख़ सादी

(1) धर्म परमेश्वर की कल्पना कर मनुष्य को दुर्बल बना देता है, उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न नही होने देता और उसकी स्वतन्त्रता का अपहरण करता है। (राष्ट्रीयता और समाजवाद)

(2) मानव की परिपूर्णता में धर्म बाधक है। परलोक की सुन्दर कल्पना कर धर्म अपनी आज की ज़िम्मेवारियों से बरी हो जाता है। धर्म आज रूढ़ियों और स्थिर स्वार्थों का समर्थक है। (वही) —आचार्य नरेन्द्र देव

मृत्यु में अनेक एक हो जाता है—जीवन में एक अनेक रहता है। धर्म एक हो जाएगा जब ईश्वर का अन्त होगा। —टैगोर

मन को निर्मल रखना ही धर्म है, बाकी सब कोरे आडम्बर हैं।

—संत तिरुवल्लुवर

गम्भीरता, उदारता, विश्वस्तता, तत्परता तथा दयालुता का व्यवहार ही सच्चा धर्म है। —कनफ़्यूशियस

(1) धर्म तो मानव समाज के लिए अफ़ीम है।

(2) धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है, जो मनुष्य के गिर्द तब तक घूमता रहता है, जब तक कि मनुष्य मनुष्यता के गिर्द नही घूमता। —कार्ल मार्क्स

मंदिर अथवा गिर्जाघर के जो जितना ही समीप रहता है, ईश्वर के प्रति उसकी उतनी ही कम श्रद्धा रहती है। —एंड्रयूज

धर्म होने पर जब मनुष्य इतने नीच हैं, तो धर्म न होने पर वे क्या होंगे ?

—फ्रैंकलिन

सच्चा धर्म तो पापों की जड़ काट कर मुक्ति का मार्ग दिखाता है पर मिथ्या धर्म में मुक्ति टकों के बल बिकती है। —रस्किन

विश्वव्यापी धर्म तो एक ही है, यद्यपि उसके सैकड़ों रूपान्तर हैं।

—जार्ज ब० शॉ०

पंडित को भी सलाम है औ मौलवी को भी,
मज़हम न चाहिए मुझे ईमान चाहिए ॥ —अकबर इलाहाबादी

चर्च के जो जितना समीप होता है, भगवान से उतना ही दूर रहता है।

—एक अंग्रेज़ी लोकोक्ति

(1) आज विश्व में धर्म का जो प्रचलित रूप है, उससे मानवता की हानि ही हुई है, लाभ तो शायद ही हुआ हो।

(2) अपना और समाज का ध्यान रखते हुए जो हमारा कर्तव्य है, वही हमारा धर्म है। उसी धर्म को धारण करने से हम सच्चे अर्थों में 'हम' हो सकते है। —भोलानाथ तिवारी

धीरज

व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे।
विमृशश्च स्वया बुद्ध्या धृतिमान्नावसीदति ॥

(शोक मे, आर्थिक संकट मे या प्राणान्तकारी भय उपस्थित होने पर जो अपनी बुद्धि से दुःख-निवारण के उपाय का विचार करते हुए धीरज धारण करता है, उसे कष्ट नही उठाना पड़ता।) —वाल्मीकि

शत्रु का लोहा भले ही गर्म हो जाए, पर हथौड़ा तो ठण्डा रहकर ही काम दे सकता है। —सरदार पटेल

जितनी जल्दी करोगे, उतनी देर लगेगी। —चर्चिल

सब्र ज़िन्दगी के मक़सद का दरवाज़ा खोलता है, क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाज़े की और कोई कुंजी नहीं है। —शेख़ सादी

अपने धैर्य के बिना कोई और संकट से मनुष्य का उद्धार नहीं करता।

—योगवासिष्ठ

धीरा हितरन्त्यापदम्। (धीर व्यक्ति विपत्ति को पार कर लेते हैं।)

—बाणभट्ट

धीरे-धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा रितु आए फल होय ॥ —कबीर

(1) धीरजु धरम मित्र अरु नारी।
आपद काल परखियहि चारी ॥

(2) धीरज धरिय त पाइय पारू। —तुलसीदास

धैर्य सन्तोष की कुंजी है। —हज़रत मुहम्मद

तमाम खुशियों और तमाम शक्तियों का मूलाधार धीरज है।
—जान रस्किन

धैर्य कड़ुआ होता है पर उसका फल मधुर होता है। —रूसो

धैर्य हर रोग की दवा है। पब्लिअस साइरस

धैर्यहीन व्यक्ति उसी प्रकार है जिस तरह कि बिना तेल के दीपक।
—ए० दे मूसे

संकट के समय धीरज धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है।
— प्लाट्स

धीरज सारे आनन्दों और शक्तियों का मूल है। —जान रस्किन

धूर्त, धूर्तता

(1) हो सकता है कि आदमी मुस्कुराए और धूर्त हो।

(2) जब जुल्मी चूमने का अभिनय करे तो डरना चाहिए। —शेक्सपियर

धूर्तता बुद्धिमत्ता का विद्रूप है। —जान लॉक

(1) रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से।

(2) हाथ सुमरनी, पेट कतरनी।

(3) हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।

(4) कुछ कुत्ते काटने के पहले चाटते हैं। —हिन्दी लोकोक्तियाँ

धैर्य दे० धीरज

धोखा

धोखा देनेवाला धोखा खाता है। —हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

काठ की हाँडी दूसरी बार नहीं चढ़ती। —एक हिन्दी लोकोक्ति

धूर्त को धोखा देना धूर्तता नहीं है —**एक अँग्रेजी लोकोक्ति**

हमें दूसरे धोखा तो देते हैं किंतु हम स्वयं अपने आपको कहीं अधिक धोखा देते हैं। —**भोलानाथ तिवारी**

ध्यान

ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। (ज्ञान की अपेक्षा ध्यान श्रेष्ठ है।) —**महाभारत**

क्या तुम्हें मालूम है कि सात्विक प्रकृति का मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रात को अपने बिस्तर के अन्दर ध्यान करता है, ताकि लोग उसे देख न सके। —**रामकृष्ण परमहंस**

ध्येय (लक्ष्य)

मेरा अधिवास कहाँ?
क्या कहा—रुकती है गति जहाँ —**निराला**

इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना।
किंतु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं। —**प्रसाद**

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए न कि सुख। —**सुकरात**

यदि परिस्थिति अनूकूल हो तो सीधे अपने ध्येय की ओर चलो, लेकिन यदि परिस्थिति अनूकूल न हो तो उस मार्ग का अनुसरण करो जिसमें सबसे कम बाधा आने की सम्भावना हो। —**तिरुवल्लुवर**

अपने लक्ष्य को न भूलो, अन्यथा जो कुछ भी मिलेगा उसी में संतोष करने लगोगे। —**बर्नार्ड शा**

इससे बड़ी और कोई घातक भूल नहीं कि हम मंजिल को मंज़िले-मक्सूद समझ लें या किसी पड़ाव पर अधिक देर तक ठहरे रहें। —**अरविन्द**

अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ और इसके बाद अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति उसमें लगा दो। —**कार्लाइल**

महान् ध्येय महान् मस्तिष्क की जननी है। —**इमन्स**

(1) ध्येय रहित व्यक्ति बिना पतवार की नाव है।

(2) हमें अपना लक्ष्य अपनी क्षमता, परिस्थिति और प्रकृति का विचार करके ही बनाना चाहिए। हमारी ऊँचाई के अनुरूप लक्ष्य न हो तो हमें बर्बाद कर देता है, और यदि लक्ष्य असंभव-सा हुआ तो असफलता में हाथ मलना ही हमारे हाथ लगता है। —**भोलानाथ तिवारी**

ध्वनि

यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ ।
व्यंक्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः । (ध्वन्यालोक)

(जहाँ [वाच्य] अर्थ और [वाचक] शब्द अपने-अपने अस्तित्व को गौण बना कर जिस [विशिष्ट] अर्थ को प्रकट करते हैं वह [अर्थ] 'ध्वनि' कहलाता है ।')

—आनन्दवर्द्धन

जो कुछ भी कर्णेन्दिय से ग्रहण हो सके वह ध्वनि है । —भोलानाथ तिवारी

नक़ल

किसी को अपने व्यक्तित्व को छोड़कर दूसरे का व्यक्तित्व नही अपनाना चाहिए । —चैनंग

मानव नक़ल करने वाला प्राणी है, और जो सबसे आगे होता है वही नेतृत्व करता है । —शिलर

उपदेशो की बजाय कही ज्यादा हम नक़ल करके ही सब कुछ सीखते हैं ।

—बर्क

जहाँ नकल है वहाँ ख़ाली दिखावट होगी, जहाँ ख़ाली दिखावट है, वहाँ मूर्खता होगी । —जॉनसन

अच्छी नक़ल पूर्ण मौलिकना है । —वाल्टेयर

नकल के लिए भी अक़ल चाहिए । —एक हिंदी लोकोक्ति

नगर

नगर मनुष्य की दुनिया है, परन्तु गाँव ईश्वर की । —काउपर

नगर आदमी को बातूनी, मनोरंजक और बनावटी बना देता है । —एमर्सन

नफ़रत

नफ़रत नफ़रत से कभी कम नहीं होती, नफ़रत प्रेम से ही कम होती है ।

—भगवान बुद्ध

नफ़रत और प्रेम दोनों अन्धे होते हैं । —एक अंग्रेजी कहावत

नफ़रत हृदय का पागलपन है । —बायरन

नमस्कार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो
नमो युवभ्यो नमो आशिनेभ्यः। (हम बड़े विद्वानों, कम गुण वालों, युवकों और वृद्धों को नमस्कार करते हैं।) —ऋग्वेद

नम्र, नम्रता

भवंति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैषपरोपकारिणाम्।
(फल के आने पर वृक्ष झुक जाते है, नव वर्षा के समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्ति के समय सज्जन भी नम्र हो जाते हैं, परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा है।)
—कालिदास

सबसे लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जब द्वितिया का चन्द्रमा, शीश नवै सब कोय॥ —कबीर

नर की अरु नलनीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होइ॥ —बिहारी

हम महानता के निकटतम होते हैं, जब हम नम्रता में महान् होते हैं।
—टैगोर

नम्रता के माने है 'मैं' का बिलकुल मिट जाना। —महात्मा गाँधी

(1) नम्रता की ऊँचाई की नाप नहीं।

(2) नम्रता माने लचीलापन। लचीलेपन में तनने की भी शक्ति है, जीतने की भी कला है और शौर्य की पराकाष्ठा भी है। —विनोबा

मेरा विश्वास है कि वास्तविक महान् पुरुष की पहली पहचान उसकी नम्रता है। —रस्किन

नम्रता और मीठे वचन ही मनुष्य के आभूषण होते है। — संत तिरुवल्लुवर

नम्रता समस्त सद्गुणों का दृढ़ आधार है। —कन्फ्यूशियस

दुःख और हानि सहने के बाद आदमी अधिक नम्र और ज्ञानी हो जाता है।
—फ्रैंकलिन

यह अभिमान था जिसने देवों को दैत्यों में बदल दिया, यह नम्रता है जो मनुष्य को देवतुल्य बना देती है। —आगस्टाइन

बड़े को छोटा बनकर रहना चाहिए, क्योंकि जो अपने-आपको बड़ा मानता है वह छोटा बन जाता है और जो छोटा बनता है वह बड़ा पद पाता है।

—बाइबिल

नरक

संसार में छल, प्रवंचना और हत्याओं को देखकर कभी-कभी मान ही लेना पड़ता है कि यह जगत् ही नरक है। —जयशंकर प्रसाद

काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ। —तुलसी

वाहन कुचाली, चोर चाकर, चपल चित, मित्र मतिहीन, सूम स्वामी उर आनिये।
पर वश भोजन, निवास वास कुकुरन, वरषा प्रवास, केशोदास दुख जानिये॥
पापिन के अंग संग, अंगना अनंग-वश अपयश-युत सुत, चित हित हानिये।
मूढ़ता, बुढ़ाई, व्याधि, दारिद, झुठाई आधि, यहई नरक नरलोकनि बखानिये॥

—केशवदास

मन अपनी रुचि से अपने ही में स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है। —मिल्टन

नशा

नशा नाश की सीढ़ी है। —एक हिन्दी लोकोक्ति

जो आदमी नशे में मदहोश है उसकी सूरत उसकी माँ को भी बुरी लगती है। —तिरुवल्लुवर

नशे की हालत तात्कालिक आत्महत्या है, जो सुख वह देती है केवल नकारात्मक है, दुःख की क्षणिक विस्मृति। —बर्ट्रेण्ड रसल

संसार की सारी सेनाएँ मिलकर इतने मानवों और इतनी संपत्ति को नष्ट नहीं करतीं जितनी शराब पीने की आदत। —मिल्टन

शराब का उपयोग तो स्वयं को भुलाने के लिए है, स्मरण करने के लिए नहीं, और जीवन का सर्जनात्मक विकास अपनेपन की चेतना में ही सम्भव है।

—महादेवी वर्मा

नशा करनेवाले मित्र से चाहे कोई कितना ही प्रेम क्यों न करता हो, पर जब किसी पर निर्भर करने का अवसर आता है तो वह भरोसा करता है केवल उसी पर जो नशा न करता हो। —शरत्चन्द्र

नसीहत, सीख

नसीहत बर्फ़ के सदृश है, जितनी धीरे-धीरे गिरती है उतनी ही अधिक स्थायी होती है और उतनी ही गहराई से मन में प्रवेश करती है। —**कॉलरिज**

अपने मित्रों को चुपके से नसीहत दो, किन्तु प्रशंसा खुलेआम करो।

—**साइरस**

बिना माँगे किसी को नसीहत न दो। —**एक जर्मन कहावत**

नागरिक

मेरी दृष्टि में सच्चा नागरिक वह है जो निजी स्वार्थों से अधिक (क्योंकि कुछ न कुछ स्वार्थ तो प्रत्येक व्यक्ति का अपना होता ही है) अपने समाज और ख़ास तौर से अपने राष्ट्र के हित के लिए सोचे एवं क्रियाशील हो।

—**जवाहरलाल नेहरू**

किसी अजनबी के प्रति सम्मान तथा दयापूर्ण व्यवहार करनेवाला ही दुनिया का सर्वश्रेष्ठ नागरिक होता है। —**फ्रांसिस बेकन**

नाटक

नाटक शब्द का अर्थ है नट लोगों की क्रिया। नट कहते हैं विद्या के प्रभाव से अपने वा किसी वस्तु के स्वरूप को फेर कर देने वाले को, वा स्वयं दृष्टि-रोचन के अर्थ फिरने को। नाटक में पात्रगण अपना स्वरूप परिवर्तन करके राजादिक का स्वरूप धारण करते हैं वा वेश-विन्यास के पश्चात् रंगभूमि में स्वकीय कार्य साधन के हेतु फिरते हैं। —**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

नाटक मानव की पुस्तक है। —**रूसो**

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधकम्।
(भिन्न-भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए प्रायः नाटक ही एक ऐसा उत्सव है जिसमें सबको एक-सा आनन्द मिलता है।) —**कालिदास**

किसी नवयुवती को नाटकशाला में नही ले जाना चाहिए। केवल नाटक ही नहीं वरन् वह स्थान भी अपवित्र हो जाता है। —**एलेक्जेंडर ड्यूमा**

नाम

रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतलगत न परहिं पहिचाने ॥
देखियहि रूप नाम आधीना। रूपज्ञान नहिं नाम बिहीना ॥ —**तुलसी**

नामों में देश-काल की संस्कृति का प्रतिबिम्ब रहता है। —धीरेन्द्र वर्मा

(1) आँख का अंधा, नाम नयनसुख।
(2) गोबर बिनत लछिमिनियाँ देखी भीख माँगत महिपाल।
चिता जरत अमर को देखा सबसे भला ठंठपाल॥
(3) आग कहते मुँह नही जलता। —हिन्दी लोकोक्तियाँ

नाम में क्या रखा है ? जिसे हम गुलाब कहते हैं, वह किसी दूसरे नाम से भी वैसी ही सुगन्ध देगा। —शेक्सपियर

अपना नाम सदा क़ायम रखने के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा जोखिम उठाने, धन ख़र्च करने, हर तरह के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है। —सुकरात

अपने नाम को कमल की तरह निष्कलंक बना। लांगफ़ैलो

संदल की बू न जायेगी पीसो कि जलाओ,
मिटता है मिटाए से कही नाम किसी का। —अज्ञात

गुण रहित नाम निरर्थक होता है। — होमर

नाम-स्मरण

(1) लूट सकै तो लूटियौ राम नाम है लूटि।
पाछै ही पछिताहुगे यहु तन जैहै छूटि॥
(2) कबीर कहें मै·कथि गया, कथि गया ब्रह्म महेस।
राम नाँव तत सार है सब काहू उपदेस॥
(3) आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह।
परसत ही कंचन भया, छूटा बंधन मोह॥ —कबीर

नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून।
अंक गए कछु हाथ नहिं अंक रहे दस गून॥ -- तुलसी

सुमिरन ऐसा कीजिये दूजा लखे न कोय।
ओंठ न फरकत देखिए प्रेम राखिए गोय॥ —मलूकदास

नाम बिना क्या होत है जप तप संजम ध्यान। —गरीबदास

नारी

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया॥

(जहाँ स्त्रियाँ पूजी जाती हैं, वहाँ देवताओं का वास होता है। जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल होती हैं।) —**मनुस्मृति**

बचनेन हरन्ति वल्गुना निशितेन प्रहरन्ति चेतसा।
मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदये हलाहलं महद्-विषम्॥

(स्त्रियाँ मधुर वचन से आकर्षित करती हैं और तीक्ष्ण वचन से प्रहार करती हैं। उनके वचन में मधु रहता है और हृदय मे हलाहल नामक महाविष।)

—**अश्वघोष**

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षने यौवने।
पुत्राश्च स्थविरे भावे न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति॥

(पिता स्त्री की कुमारावस्था मे, पति युवावस्था मे तथा पत्र वृद्धावस्था में रक्षा करता है। स्त्री को स्वतन्त्र नहीं रहना चाहिए।) —**महाभारत**

रोदनं स्त्रीणां बलम्। (रोना स्त्री का बल है।) —**अज्ञात**

(1) नारी की झाईं परत अंधा होत भुजंग।
कबीर तिनकी कौन गति नित नारी के संग॥
(2) नारि नसावैं तीनि सुख जा नर पासैं होय।
भगति मुकति निज ग्यान में पैसि न सकई कोय॥
(3) नारी सेती नेह, बुधि बिबेक सबही हरै। —**कबीर**

(1) सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ। सब विधि अगम अगाध दुराऊ॥
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई। जानि न जाय नारिगति भाई॥
(2) राखिय नारि जदपि उर माही। जुबती शास्त्र नृपति बस नाही।
(3) नारि चरित जलनिधि अवगाहू॥
(4) ढोल गँवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥

—**तुलसीदास**

कामिनी कौ देह मानौ कहिए सघन वन,
उहाँ कोउ जाइ सु तौ भूलि कै परतु है।
कुंजर है गति, कटि केहरि कौ, भय जामे,
बेनी काली नागनीऊ फन कौ धरतु है।
कुच है पहार जहाँ कामचोर रहै तहाँ,
साधिकै कटाक्ष बान प्रान कौ हरतु है।
सुन्दर कहत एक और डर अति तामैं,
राक्षस बदन षाँऊँ षाँऊँ ही करतु है। —**सुन्दरदास**

अबला-जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ! —**मैथिलीशरण गुप्त**

(1) रमणी ! जब तुम्हें कोई चलने को कहता है तो पैरों मे पीड़ा का अनुभव करने लगती हो। जब विश्राम का समय होता है तो पवन से भी तीव्र गति धारण करती हो। तुम स्नेह से पिच्छल, जल से अधिक तरल, पत्थर से भी कठोर, इन्द्र-धनुष से भी सुन्दर बहुरंगशालिनी हो। (राज्य०)

(2) नारी के नयन ! त्रिगुणात्मक ये सन्निपात
किसको प्रमत नही करते
धैर्य किसका ये नहीं हरते? (लहर)

(3) नारी तुम केवल श्रद्धा हो। (काम) —**जयशंकर प्रसाद**

(1) स्त्री सहन-शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, धैर्य का औतार है।

(2) स्त्री तो एक मूर्तिमान बलिदान है। वह जब सच्ची भावना से किसी काम का बीड़ा उठाती है तो पहाड़ों को भी हिला देती है।

(3) नारी को अबला कहना उसका अपमान करना है। —**गाँधी**

(1) नारी सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दुःख, बड़े से बड़ा संकट। यदि नही सह सकती तो अपने यौवन-काल की उमंगों का कुचला जाना।

(2) दबा हुआ पुरुषार्थ ही स्त्रीत्व है। —**प्रेमचंद**

(1) पुरुष विजय का भूखा होता है, नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है, स्त्री लुट जाना।

(2) नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नही है। आदिम काल मे आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभि-शापों को स्वयं झेलकर, और अपने वरदानो मे जीवन में अक्षय शक्ति भरकर, मानवी ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का पर्याय नारी है। (दीप०)

(3) स्त्री में माँ का रूप ही सत्य, वात्सल्य ही शिव और ममता ही सुन्दर है।
—**महादेवी वर्मा**

औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती हैं, क्योंकि वे जानती कम, समझती अधिक हैं। —**जेम्स स्टीफ़ेन**

मनुष्य को दृष्टि होती है और नारी को अंतर्दृष्टि। —**विक्टर ह्यूगो**

नारी देखने की वस्तु है, सुनने की नहीं। —**सैफ़ोक्लीज़**

(1) स्त्री को भला कौन समझ सकता है ?

(2) सौन्दर्य से नारी अभिमानिनी बनती है, उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है और लज्जाशील होकर वह देवी बन जाती है। —**शेक्सपियर**

नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर करती है। —**अरस्तू**

नारी एक ईश्वरीय उपहार है जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसकी क्षति-पूर्ति के लिए दिया है। —**गेटे**

तारे आकाश की कविता हैं, स्त्रियाँ पृथ्वी की। —**हारग्रेव**

सारे विश्व का राज्य मिल जाय परन्तु स्त्री न हो तो पुरुष भिक्षुक से भी बुरा है। इससे तो वह कंगाल लाखगुना प्रसन्न-चित्त है जो सारा दिन परिश्रम करता है और संध्या को स्त्री का मुँह देखकर सारा दुख भूल जाता है। —**कूपर**

स्त्री परमात्मा का सब से बड़ा जादू है। —**आस्कर वाइल्ड**

एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर है। —**जार्ज हरबर्ट**

यदि तुम पत्थर हो तो पारस पत्थर बनो। यदि तुम वृक्ष हो तो लाजवन्ती का पौदा बनो। यदि तुम मनुष्य हो तो नारी से प्रेम करो। —**विक्टर ह्यूगो**

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरों तले है। —**हजरत मुहम्मद**

नारी का व्यक्तित्व विचित्र है। वह दयालुता की मूर्ति है और कठोरता की प्रतिमा है, विश्वास की जननी है और अविश्वास की ग्रंथि है तथा सरलता-सी सरल और पहेली-सी असरल है। —**भोलानाथ तिवारी**

नास्तिक, नास्तिकता

नास्तिको वेदनिन्दकः।
(नास्तिक वह है जो वेदों की निन्दा करता है।) —**अज्ञात**

नास्तिकता प्रायः धर्म की प्राण शक्ति की अभिव्यक्ति रही है, धर्म में वास्तविकता की खोज रही है। —**राधाकृष्णन**

नास्तिकता द्वारा अस्वीकृत सभी महान सत्यों को स्वीकार करने में जितनी श्रद्धा की आवश्यकता है उससे अनन्त गुनी श्रद्धा नास्तिक बनने के लिए आवश्यक है। —**एडीसन**

निंदा

(1) जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है, उसने मानो सारे जगत् पर विजय प्राप्त कर ली।

(2) बुरे लोगों को निन्दा में ही आनन्द आता है, सारे रसों को चखकर कौवा गन्दगी से ही तृप्त होता है। —महाभारत

दूसरों की बुराइयाँ मत ढूँढ़ते फिरो और न पीठ पीछे किसी की बुराई करो। पीठ पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसे अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना।

—क़ुरान

यदि लोग हमारे बारे में कुछ ऊटपटाँग बातें करते हैं, तो हमें उसका बुरा नही मानना चाहिए। जिस प्रकार गिरजाघर की मीनार अपने इर्द-गिर्द चीलों के चीखने का ख्याल नही करती। —इलियट

हर किसी की निन्दा सुन लो लेकिन अपना फ़ैसला गुप्त रखो।—शेक्सपियर

(1) जो तेरे सामने औरों की निन्दा करता है, वह औरों के सामने तेरी निंदा करेगा।

(2) परमेश्वर देखता है और छिपाता है, पड़ोमी देखता नही और चिल्लाता है। —शेख सादी

(1) निन्दक नेड़ा राखिए आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन पानी साबण विना निरमल करै सुभाइ॥
(2) न्यंदक दूरि न कीजिए दीजै आदर-मान।
निरमल तन मन सब करै बकि-बकि आनहि आन॥ —कबीर

निन्दक बपुरा ज़िन मरै पर उपकारी सोइ।
हमकूं करता ऊजला आपण मैला होइ॥ —दादू

(1) सुखी कि होहिं कबहुँ पर-निंदक ?
(2) पर निन्दा सम अघ न गिरीसा।
(3) तुलसी जे कीरति चहहिं, पर की कीरति खोइ।
तिनके मुँह मसि लागिहैं, मिटिहि न मरिहैं धोइ॥ —तुलसीदास

जो दूसरों के अवगुण बखानता है वह अपना अवगुण प्रकट करता है। —बुद्ध

निद्रा

आतुरस्य कुतो निद्रा नरस्यामर्षितस्य च।
अर्थांश्चिन्तयतश्चापि कामयानस्य वा पुनः॥

(जो मनुष्य शोक से आतुर हो, अमर्ष से भरा हुआ हो, नाना प्रकार के कार्यो की चिन्ता कर रहा हो अथवा किसी कामना में आसक्त हो, उसे नीद कैसे आ सकती है ?) —महाभारत

सम्यक्स्ववापो वपुष: वरमारोग्याय।
(अच्छी निद्रा आना स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।) —राजशेखर

ग्रीष्मवर्जेषु कालेषु दिवा स्वापो निषिध्यते। (ग्रीष्म ऋतु के अतिरिक्त सभी कालों में दिन में सोना निषिद्ध है।) —अज्ञात

निद्रावस्था जाग्रतावस्था की स्थिति का आईना है। —गाँधी

निद्रा एक ऐसा अथाह सागर है जिसमें हम अब अपने दु:खों को डुबो देते हैं। —प्रेमचन्द

आधी रात के पहले की एक घंटे की निद्रा उसके बाद की तीन घंटे की निद्रा के बराबर है। —जार्ज हर्बर्ट

निबंध

(1) यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक संभव होता है। इसीलिए गद्य शैली के विवेचक उदाहरणों के लिए अधिकतर निबंध ही चुना करते हैं। (हि० सा० इ०)

शुद्ध विचारात्मक निबंधों का चरम उत्कर्ष वही कहा जा सकता है जहाँ एक-एक पैराग्राफ़ में विचार दबा-दबाकर कसे गए हों और एक-एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचारखंड को लिए हो। (वही) — आचार्य रामचंद्र शुक्ल

नियम

न देवानामतिव्रतं शतात्मा च न जीवति। (देवताओं के नियम तोड़कर कोई सैकड़ों सिद्धियों वाला मनुष्य भी सौ वर्ष नहीं जी सकता।) —ऋग्वेद

(1) बगैर नियम के एक भी काम नहीं बन सकता।
(2) यदि नियम एक मिनट के लिए टूट जाएँ तो सारा सूर्य मंडल अस्त-व्यस्त हो जाएगा। —महात्मा गाँधी

नियम बनाओ, किन्तु उन्हें इस प्रकार बनाओ कि जब लोग बिना उनके काम चलाने लगें तो वे उन्हें तोड़कर फेंक सकें। हमारी मौलिकता पूर्ण अनुशासन के साथ पूर्ण स्वतन्त्रता को संयुक्त कर देने में है। -- विवेकानन्द

यही स्वर्णिम नियम है कि स्वर्णिम नियम होते ही नहीं। —जार्ज बर्नार्ड शा

निराश, निराशा, निराशावाद, निराशावादी

नैराश्यं परमं सुखम् (निराशा परम सुख है।) — एक संस्कृत लोकोक्ति

निराशायाः समं पापं मानवस्य न विद्यते ।
तां समूलं समुत्सार्य ह्याशावादपरो भव ।।

(मनुष्य के लिए निराशा के समान दूसरा पाप नहीं है । इसलिए तुम्हें उस पाप रूपिणी निराशा को समूल हटाकर आशावादी बनना चाहिए ।) —**अज्ञात**

निराशावादिनो मन्दा मोहावर्त्तेऽत्र दुस्तरे ।
निमग्ना अवसदन्ति पंके गावो यथावशाः ।।

(प्रगति की भावना से विहीन निराशावादी लोग मोह के दुस्तर भँवर में पड़े हुए दलदल में फँसी विवश गौओं के समान दुःख पाते हैं ।) —**अज्ञात**

निराशा, निर्बलता का चिह्न है । —**स्वामी रामतीर्थ**

अपने अहं का विस्तार करना ही निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है ।
—**टॉलस्टॉय**

निराशावादी ? ऐसा व्यक्ति जो सबको अपनी तरह गंदा समझता है और इसलिए उनसे घृणा करता है । —**बर्नार्ड शा**

निर्बल

यद्यपि शहद की मक्खियाँ कमज़ोर होती हैं, फिर भी वे सब मिलकर मधु निकालने वाले का प्राण तक ले लेती हैं, वैसे ही निर्बल पुरुष भी इकट्ठे होकर बलवान् शत्रु का नाश कर सकते है । (महाभारत) —**वेदव्यास**

(1) सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय ।
पवन जगावत आग कौ, दीपहिं देत बुझाय ।।
(2) कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पै जोर ।
सकै न अचल उखारि तरु, डारत पवन झकोर ।।
(3) बहुत निबल मिलि बल करै, करै जु चाहैं सोय ।
तिनकन की रसरी करी, करी निबन्धन होय ।। —**वृंद**

अपने को निर्बल समझनेवाला ही निर्बल है । —**गांधी**

सबल की शिकायतें सब सुनते हैं, निर्बल की फ़रियाद कोई नहीं सुनता ।
—**प्रेमचंद**

निश्चय

अनुभव बताता है कि आवश्यकता-काल में दृढ़ निश्चय पूरी सहायता करता है । —**शेक्सपियर**

जिसका निश्चय दृढ़ और अटल है वह दुनिया को अपने साँचे में ढाल सकता है। —गेटे

सच्ची से सच्ची और अच्छी से अच्छी चतुराई निश्चय है। —नेपोलियन

जो व्यक्ति निश्चय करता है, उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं। —एमर्सन

निश्चयात्मक प्रकृति के मनुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं। —स्वेट मार्डेन

निष्काम

कृपणाः फलहेतवः।
(फल के लिए कर्म करने वाले निकृष्ट होते हैं।) —महाभारत

निष्काम कर्म करो। —गीता

भिक्षुर्वा भूपतिर्वापि यो निष्कामः स शोभते। (भिक्षु हो या राजा, जो निष्काम है, वही शोभित होता है।) —अष्टावक्र गीता

निष्ठा

वफा ही वह जादू है जो रूप के गर्व का सिर नीचा कर सकता है। —प्रेमचंद

अचल निष्ठा ही महान कार्यों की जननी है। —विवेकानन्द

निष्ठावान ही निष्ठा को पहचान सकता है। —कार्लाइल

नींद दे० निद्रा

नीच, नीचता

(1) काटेहि पर कदली फरइ, कोटि जतन कोउ सीच।

(2) बिनय न मान खगेस सुनु, डाँटेहि पै नव नीच।

(3) नवनि नीच कै अति दुःखदाई। —तुलसीदास

उरग तुरग नारी नृपति, नीच जाति हथियार।
रहिमन इन्हें सँभारिये, पलटत लगे न वार॥ —रहीम

(1) ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात॥

(2) बहुत किए हू नीच को, नीच सुभाव न जात।
छाड़ि ताल जल कुम्भ को, कौवा चोंच सरात।।
(3) नीचहु उत्तम संग मिलि, उत्तम ही ह्वै जाय।
संग-संग जल हूबहू, गंगोदक के भाय ।। —वृन्द

बौना छोटा ही रहेगा चाहे वह पर्वत पर खड़ा हो, देव देव ही रहेगा चाहे वह कुएँ में ही क्यों न खड़ा हो। —सेनेका

स्वभाव की नीचता वर्षों में भी मालूम नहीं होती। —शेख सादी

नीच मनुष्य के साथ मैत्री और प्रेम कुछ भी नहीं करना चाहिए। कोयला यदि जलता हुआ है तो छूने से जला देता है और यदि ठंडा है तो हाथ काला कर देता है। —हितोपदेश

जो उपकार करने वाले को नीच मानता है, उससे अधिक नीच दूसरा कोई नहीं। —विनोबा

शक्तियों का एक नियम है जिसके कारण चीज़ें समुद्र में डूबकर एक ख़ास गहराई से नीचे नहीं जा सकतीं: लेकिन नीचता के समुद्र में जितने गहरे हम जाएँ डूबना उतना ही आसान है। —लावैल

नीच को देखने और उसकी बातें सुनने से ही हमारी नीचता का आरम्भ हो जाता है। —कन्फ़्यूशियस

नीति

काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीयतः।
(ठीक समय पर प्रारम्भ की गई नीतियाँ अवश्य ही फल प्रदान करती हैं।)
—कालिदास

(1) नीति न तजिय राज-पद पाये।
(2) राज कि रहइ नीति बिनु जाने।
(3) प्रीति विरोध समान सन करिअ नीति असि आहि।
जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि।। —तुलसीदास

नीति बिन जाने भूप कूप बिना पानी सम। —छत्रसाल

हृदय जीत सी जीत नहिं, भरम-भीति सी भीति।
धर्म-नीति सी नीति नहिं, कृष्ण-प्रीति सी प्रीति।। —वियोगी हरि

नुक़्ताचीनी

त्रुटि निकालना सरल है, अच्छा कार्य करना कठिन। —प्लुटार्क

नृत्य

समस्त कलाओं में नृत्य सबसे महान्, सबसे अधिक प्रभाव डालने वाली और सबसे अधिक सुन्दर कला है, क्योंकि यह जीवन का केवल अनुवाद या पृथक्करण ही नहीं है यह स्वयं ही जीवन है। —हेलाकउफ्लिस

नृत्य भी शरीर की चेष्टाओं पर आश्रित होने के कारण मूर्ति के बन्धनों से सर्वथा मुक्त नहीं। वह एक प्रकार का अभिनीत गीत है। —महादेवी वर्मा

नेक, नेकी

सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां, दोषान् विहाय गुणमेव गवेषयन्ति।
त्यक्त्वा भुजंगमविषं हि पटीरगर्भात्, सौगन्ध्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति॥

(वे भले मानुष लोग धन्य हैं जो दूसरों के दोषों को छोड़ कर गुण को ही खोजते रहते हैं। मलयाचल के चन्दन वृक्ष पर लिपटे हुए सर्पों के विष को न ग्रहण कर वायु चन्दन की सुगन्धि का ही वहन करती है। —अज्ञात

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं, लेकिन नेकी करने का मौका साल में केवल एक बार मिलता है। —वाल्टेयर

मधुमक्खियाँ केवल अँधेरे में काम करती हैं, विचार केवल मौन में काम करते हैं, नेक काम भी गुप्त रहकर ही कारगर होते हैं। —कार्लाइल

नेकी का इरादा बदी की ख्वाहिश को दबा देता है। —हज़रत अली

जितने दिन जिन्दा हो, उसे ग़नीमत समझो और इससे पहले कि लोग तुम्हें मुर्दा कहें, नेकी कर जाओ। —शेख़ सादी

नेकी का उपहार नेकी है। —एमर्सन

नेक बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता। ऊपर चढ़ना कितना कठिन है? इसमें कितना समय लगता है? मगर गिरना कितना आसान है? इसमें परिश्रम कुछ नहीं करना पड़ता। —अज्ञात

नेता

मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान कहुँ एक।
पालइ पोसइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक॥ —तुलसीदास

जो लोग जनता का नेतृत्व करना चाहें उन्हें कभी जनसमूह के नेतृत्व में नहीं चलना चाहिए और अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहना चाहिए। —महात्मा गाँधी

(1) नेता बनने की कुंजी सेवा में है।

(2) जो आदमी सीधा नेता बन जाता है, वह किसी न किसी दिन लुढ़क जाता है। —सरदार पटेल

सभी नेताओं को पहले कार्यकर्ता होना चाहिए। जो कार्यकर्ता नही बन सकता, वह नेता भी नहीं हो सकता। —श्यामाप्रसाद मुकर्जी

हर नेता अन्तत: उबाऊ हो जाता है। —एमर्सन

नेता समुद्र में जहाज के सदृश हैं, आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु जनता समुद्र की भाँति है जो सदा रहती है। —मॉरिस हिंडस

नेत्र

सर्वत्र नेत्रों की भाषा एक ही होती है। —जार्ज हर्बर्ट

नेत्र बोल सकते हैं और नेत्र समझ सकते हैं। —जार्ज चैपमेन

नौकर, नौकरी

(1) सब तें सेवक धर्म कठोरा।

(2) करहि स्वामि हित सेवक सोई। —तुलसी

सेवक सोई जानिये, रहै बिपति में संग।
तन-छाया ज्यों धूप में, रहै साथ इक रंग॥ —वृन्द

नौकरी आत्महत्या से भी बड़ा पाप है। —रामकृष्ण परमहंस

चाकर है तो नाचा कर। न नाचे तो ना चाकर। —हिंदी लोकोक्ति

पति मूरख वेस्या सलज अविनय सुत सठ मित्र।
सूम स्वामि सेवक बधिर सुखद न राम चरित्र॥ —रामचरित उपाध्याय

चाकर चोर राज बे पीर। कहैं घाघ का धारों धीर॥ —घाघ

न्याय

न्याय से बढ़कर कोई रक्षक नहीं। —सुकरात

राजा करे सो न्याव, पासा पड़े सो दाँव। —एक हिन्दी कहावत

कार्यरूप में सत्य को ही न्याय कहते हैं। —डिजराइली

न्यायाधीश

न्यायाधीश बिना गाली सुने कभी नहीं रह सकता। —उबैद ज़ाकानी

पंचायत

(1) पंचायत भारत की प्राचीनतम संस्था है, इसलिए उसका फिर के प्रचलन देश में कोई नई बात नहीं होगी।

(2) पंचायत-राज के बारे में मेरा यह विचार है कि वह पूर्णतः गणतंत्र है।

(3) पंचायत की व्यवस्था में हर गाँव स्वावलम्बी और स्वतन्त्र होना चाहिए। —महात्मा गाँधी

पंडित

जो सबको समान भाव से देखता है वही पंडित है। —गीता

(1) पोथी पढ-पढ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय॥
(2) पंडित और मसालची, दोनों सूझै नाहिं।
औरन को कर चाँदना, आप अँधेरे माहि॥ —कबीर

पण्डित अरु बनिता लता, सोभित आश्रय पाय।
है मानिक बहु मोल कौ, हेम-जटित छबि छाय॥ —वृन्द

पछतावा

करता था सो क्यो किया, अब करि क्यों पछिताय।
बोवे पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय॥ —कबीर

पछतावा हृदय की वेदना है, और निर्मल जीवन का उदय। —शेक्सपियर

सुधार के बिना पश्चात्ताप ऐसा है जैसे छेद बन्द किए बिना जहाज़ में से पानी निकालना। —पामर

मुझे कोई पछतावा नहीं है, क्योंकि मैंने कभी किसी का कुछ बुरा नही किया। —गाँधी

पड़ोस

पड़ोसी सू रूसणाँ तिल-तिल सुख की हाणि। —कबीर

बसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अपसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन बसा परोस॥ —रहीम

जब तुम्हारे पड़ोसी के घर में आग लगी हो तो तुम्हारी अपनी सम्पत्ति भी ख़तरे में है । **—होरेस**

सच्चा पड़ोसी वह नहीं जो तुम्हारे साथ उसी मकान में रहता है, बल्कि वह है जो तुम्हारे विचार-स्तर पर रहता है । **—रामतीर्थ**

कोई इतना धनी नहीं है, कि पड़ोसी के बगैर काम चला ले ।

—एक डेनिश कहावत

मित्रों के बिना रहा जा सकता है किंतु पड़ोसियों के बिना नहीं ।

—एक चीनी कहावत

पति, पति-पत्नी

(1) जिय बिन देह नदी बिन वारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिन नारी ।
(2) वृद्ध रोग बस जड धन हीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ।
ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।

—तुलसी

अच्छे पति को बहरा और अच्छी पत्नी को अन्धी होना चाहिए ।

—एक डेनिश कहावत

विवाहित दम्पति में एक अवश्य मूर्ख होता है । **—हेनरी**

सुयोग्य पति अपनी पत्नी को सम्मान की अधिकारिणी बना देता है । **—मनु**

जिसे पति बनना है उसके लिए पुरुष बनना बहुत जरूरी है ।

—एक चीनी लोकोक्ति

अगर यह कहा जाए कि संसार के किसी देश या जाति में सम्बन्ध के लिहाज़ से पत्नी की अपेक्षा माता या बहन अधिक प्रिय है, तो यह बात सुनने में तो बहुत भली लगेगी, लेकिन वास्तव में ऐसा कहना मिथ्या ही होगा । **—शरत्चंद**

पतिव्रता

कोकिलानां स्वरो रूपं नारी रूपं पतिव्रतम् ।
विद्या रूपं कुरुपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ।

(कोकिला का स्वर ही उसकी सुन्दरता है और स्त्रियों की सुन्दरता उनका पतिव्रत धर्म है । कुरूपा की सुन्दरता विद्या है और तपस्वियों की सुन्दरता उनकी क्षमा है ।) **—चाणक्य**

(1) पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिंह-बचा जो लंघना, तो भी घास न खाय।।
(2) पतिबरता मैली भली, गले काँच की पोत।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि-ससि की जोत।। —**कबीर**

(1) एकै धरम एक व्रत नेमा। काय, वचन, मन पति-पद प्रेमा।
(2) जग पतिव्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान सन्त सब कहही।
उत्तम के अस बस मन माही। सपनेहुं आन पुरुप जग नाहीं।
मध्या पर पति देखइ कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निक्रिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई।

—**तुलसी**

पतिव्रता स्त्री पति का मुकुट है। —**एक जापानी कहावत**

पत्नी

पत्नी पुरुष की पूरक है। पुरुष के सभी अभाव उसे पाकर स्वयमेव भर जाते है। —**बालज़ाक**

अच्छे पति को बहरा और अच्छी पत्नी को अन्धी होना चाहिए।

—**एक डैनिश कहावत**

पत्नी के चुनाव मे किसी सुचरित्र माँ की बेटी को पसन्द करो। —**फ़ुलर**

पत्नी के चुनाव में युद्ध की योजना के सदृश केवल एक बार ग़लती करना सदा के लिए बरबाद हो जाना है। —**मिडिलटन**

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी, भाज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमयाधरित्री, भार्या च षडगुण्यवनीः दुर्लभा।।

(काम-काज में मन्त्री के समान सलाह देने वाली, सेवादि में दासी के समान काम करने वाली, माता के समान सुन्दर भोजन कराने वाली, शयन के समय रम्भा (वेश्या) के समान सुख देने वाली, धर्म के अनुकूल तथा क्षमादि गुण धारण में पृथ्वी के समान स्थिर रहने वाली—ऐसे छः गुणों से युक्त स्त्री दुर्लभ होती है।) —**एक संस्कृत सूक्ति**

पत्रकारिता

(1) पत्र का उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि लोक-भावना को समझकर उसकी अभिव्यक्ति की जाए।

(2) पत्रकारिता लोकमत बनाने का एक साधन है।

(3) मैंने तो अपने जीवन के ध्येय की पूर्ति के लिए एक साधन के रूप में पत्रकारिता को अपनाया है, पत्रकारिता के लिए नहीं।

(4) समाचारपत्रों को 'चतुर्थ राज्य' कहा जाता है। निश्चय ही यह एक शक्ति है, पर इस शक्ति का बुरा इस्तेमाल एक अपराध है। **—महात्मा गाँधी**

पब्लिक स्कूल

पब्लिक स्कूल सारी बुराइयों एवं अनैतिकता के संवर्धन गृह है।

—हेनरी फ़ील्डिंग

परम्परा

परम्परा और विद्रोह, जीवन में दोनों का स्थान है। परम्परा घेरा डालकर पानी को गहरा बनाती है, विद्रोह घेरों को तोड़कर पानी को चौड़ाई मे ले जाता है। परम्परा रोकती है, विद्रोह आगे बढ़ना चाहता है। इस संघर्ष के बाद जो प्रगति होती है, वही समाज की असली प्रगति है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

परम्परा को स्वीकार करने का अर्थ बंधन नही, अनुशासन का स्वेच्छा से वरण है। **—विद्यानिवास मिश्र**

बाप के कुएँ में तैरना तो चाहिए, पर डूब मरना तो न चाहिए।

—महात्मा गाँधी

परलोक

मुझे परलोक मे तनिक भी रुचि नही। मेरा मस्तिष्क तो विचारों से इतना अधिक व्याप्त है कि इस ससार मे, इहलोक मे क्या करना है यह भी मेरे लिए उलझा हुआ सवाल है। और यदि मुझे अपने कर्तव्य का ज्ञान हो जाए, तो इससे और संतोष क्या होगा ? मैं अपने-आप को परलोक के पचड़े में नहीं डालता। (विश्व इतिहास की झलक) **—जवाहरलाल नेहरू**

पराक्रम

बिना पराक्रम के कोई उच्च पद पर नही पहुँचता। **—साइरस**

पराजय

पराजय क्या है ? कुछ नहीं, केवल शिक्षा और अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति की ओर पहला क़दम है। **—वेंडेल फ़िलिप**

पराजय से सत्याग्रही और अहिंसक को निराशा नहीं होती। उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढ़ती है और सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है। —**महात्मा गांधी**

पराधीन, पराधीनता

पराधीनता के कारण पशु का चित्त भी संतप्त हो उठता है। —**कल्हण**

एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता।
ये पराधीनतां यातास्ते वै जीवन्ति के मृताः।

(स्वाधीनता ही जन्म की सफलता है और जो पराधीन होने पर भी जीते हैं, तो फिर मरे हुए कौन हैं?) **हितोपदेश**

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। —**तुलसी**

जो प्रानी परबस पर्यो, सो दुख सहत अपार।
जूथ-बिछोहो गज सहै, बंधन अंकुस मार॥ —**वृन्द**

पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन।
सुखी रहत शुक वन विषै, कनक पींजरे दीन॥ —**गिरधर कवि**

ऐ नीच पेट! एक ही रोटी से इतमीनान कर ले ताकि तुझे गुलामी में पीठ को न झुकाना पड़े। —**एक इस्तोनियन लोकोक्ति**

पराधीनता समाज के सभी मौलिक नियमों के विरुद्ध है। —**माण्टेग्यू**

गुलामी में रहना इन्सान की शान के खिलाफ़ है। जिस गुलाम को अपनी दशा का भान है और फिर भी अपनी जंजीरों को तोड़ने का प्रयास नहीं करता वह पशु से हीन है। अन्त:करण से प्रार्थना करने वाला कभी गुलामी को बर्दाश्त नहीं कर सकता। —**गाँधी**

क्या मै अपने ही देश में गुलामी करने के लिए जिन्दा रहूँ? —**प्रेमचंद**

पिंजरा तो सोने का होने पर भी पिंजरा रहेगा। —**रांगेय राघव**

परामर्श

जो मनुष्य नेक सलाह देता है, वह एक हाथ से निर्माण करता है और जो मनुष्य उपयुक्त परामर्श के साथ दृष्टान्त भी देता है, वह दोनों हाथों से निर्माण करता है। —**बेकन**

बुद्धिमान मूर्खों को सलाह नहीं देते और न मूर्खों से सलाह लेते हैं।
—**एक बर्मी कहावत**

सलाह माँगने पर दो। —एक चीनी कहावत

परिभाषा

जो चीज़ जितनी ही सरल होती है, उसकी परिभाषा उतनी ही मुश्किल होती है। —प्रेमचंद

मैं परिभाषा से घृणा करता हूँ। —डिज़राइली

परिवर्तन

दुनिया में कोई भी वस्तु जो, जीवित है, अपरिवर्तनीय नहीं रह सकती। समस्त प्रकृति दिन-दिन और क्षण-क्षण बदलती रहती है। (विश्व इतिहास की झलक) —जवाहरलाल नेहरू

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है। स्थिर होना मृत्यु है। —जयशंकर प्रसाद

परिवर्तन अनिवार्य है। —डिज़राइली

परिश्रम

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा.। (देवता परिश्रमी के अतिरिक्त किसी की सहायता नहीं करते।) —ऋग्वेद

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या, यत्ने कृते यदि न सिध्यीत कोऽत्र दोष: ?
(उद्योगी पुरुष-सिंह लक्ष्मी का उपार्जन करता है, परन्तु कायर मनुष्य भाग्य के भरोसे बैठा रहता है। भाग्य को ठोकर मारकर उद्योगी पुरुष अपने कार्य में दृढ़ता से निमग्न हो जाता है और यदि फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती, तो यह भाग्य का नहीं वरन् अपनी कार्य-पद्धति का दोष है।) —भर्तृहरि

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथै:।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा:॥
(कार्य मनोरथ से नहीं उद्यम से सिद्ध होते हैं। जैसे सोते हुए सिंह के मुँह में मृग अपने आप नहीं चले जाते।) —पंचतन्त्र

अप्राप्यं नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिन:। (परिश्रमी धीर व्यक्ति को इस जगत में कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है।) —सोमदेव

जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा जीर्ण होकर नष्ट हो जाना अधिक अच्छा है। —बिशप रिचर्ड कंबरलैंड

मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र उसकी दस उँगलियाँ हैं। —रॉबर्ट कोलियर

अपने अमूल्य समय का एक-एक क्षण परिश्रम में व्यतीत करना चाहिए। इसी में आनन्द है। ऐसा करने से कोई क्षण भी ऐसा नहीं बचता, जब हमें सोच या पछतावा हो। —एमर्सन

(1) जो शारीरिक परिश्रम नही करता, उसे खाने का हक भला कैसे हो सकता है ?

(2) मरते दम तक तू अपने पसीने की रोटी खा। —बाइबिल

श्रम ही तें सब मिलत है, बिन श्रम मिलै न काहि।
सीधी अँगुरी घी जम्यो, क्यों हूँ निकरै नाहि॥ —वृन्द

नवयुवकों के लिए मेरा संदेश तीन शब्दों में है—परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम। —विवेकानन्द

बगैर परिश्रम यानी तप के कुछ भी नहीं हो सकता। —महात्मा गाँधी

कुएँ में चाहे जितना भी पानी हो मगर चाहने मात्र से तो वह नहीं निकल सकता। —एक कन्नड़ कहावत

परिस्थितियाँ

मेरा उद्देश्य यह है कि मैं परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लूँ न कि स्वयं परिस्थितियों के अनुकूल बनूँ। —होरेस

यदि तुम किसी गोल छिद्र में जा पड़ो तो तुम्हें स्वयं को गेंद बना लेना चाहिए। —इलियट

परिस्थितियों मे गिरने वाला मनुष्य उन परिस्थितियों का त्याग करने से ही बच सकता है। —प्रेमचंद

गंभीर परिस्थिति ही आदमी का विद्यालय है। —महात्मा गाँधी

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह जितना अधिक संभव हो बाहरी परिस्थितियों पर शासन करे और जितना कम हो सके उनसे शासित रहे। —गेटे

इन्सान परिस्थितियों का खेल है, जबकि परिस्थितियाँ ही इन्सान को खेल मालूम होती हैं। —बायरन

परीक्षा

धीरज धरम मित्र अरु नारी। आपदकाल परखियहु चारी॥ —तुलसी

स्वर्णकार ने स्वर्ण को दीन्ह अग्नि में डार।
काँप उठ्यो पानी भयो देख परीक्षा काल। **—अज्ञात**

चिन्ता बुद्धि परेखिए टोटे परख त्रियाहि।
सगे कुबेला परखिए ठाकुर गुनो कि आहि ॥ **—रहीम**

परोपकार

(1) पिबंति नद्यः स्वयमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
खादंति शस्यं न च वारिवाहाः परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

(नदियाँ अपना जल स्वयं ही नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फल स्वयं ही नहीं खाते, बादल खेती का स्वाद स्वयं नही लेते, सज्जनों की विभूतियाँ परोपकारार्थ ही होती हैं।)

(2) परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥

(वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं, नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं, गायें परोपकार के लिए दूध देती हैं; यह शरीर परोपकार के लिए ही है।)

(3) आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

(इस ससार में कौन मानव अपने लिए नही जीता है, परन्तु परोपकार के लिए जो जीता है वही वास्तव में जीता है।) **—अज्ञात**

(1) परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
(2) परहित बस जिनके मन माहीं। तिन्ह कहुँ, जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

—तुलसीदास

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति सँचहिं सुजान ॥ **—रहीम**

सच्ची ज़िंदगी वही है जहाँ हम अपने लिए नहीं सबके लिए जीते हैं।

—प्रेमचंद

यदि मनुष्य परोपकारी नहीं है तो उसमें और दीवार पर खिचे चित्र में क्या फ़र्क़ है? **—शेख़ सादी**

जीने से लाभ ही क्या यदि परोपकार न हो सका! **—गोथे**

पश्चात्ताप

(1) पश्चात्ताप के फल कभी-न-कभी सभी को चखने पड़ते हैं।

(2) पश्चात्ताप अंतिम चेतावनी है जो हमें आत्मसुधार के निमित्त ईश्वर की ओर से मिलती है। —**प्रेमचंद**

पश्चिम

पश्चिम का जीवन और दर्शन हमारे बिल्कुल विपरीत है।···वह बहिर्मुखी और समाजवादी है।···(शेखर०) —**अज्ञेय**

आज देश में जो पाश्चात्य शिक्षा चल रही है, यहाँ की मिट्टी को उसने बहुत ही कम दिया है। —**टैगोर**

(1) भारत को पश्चिम से सीखना होगा, क्योंकि आधुनिक पश्चिम के पास सिखाने को बहुत कुछ है, और युग की धारा का प्रतिनिधित्व पश्चिम द्वारा हो रहा है। लेकिन पश्चिम को भी, जाहिर है, बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। अभिनव शिल्प मे उसकी प्रगति उसके लिए सुख-शांति की वाहिका न बनेगी, यदि वह जीवन के उन गम्भीरतर रहस्यों से अवगत न हो, जिनमें सभी देशों और सभी युगों के चिंतको ने अपना मन लगाया है। (भारत की खोज)

(2) पाश्चात्य सभ्यता मे आज कई दोष हैं, जिनके परिणामस्वरूप वह द्वन्द्व और युद्ध से ग्रस्त हुई है। ताहम वह एक भव्य सभ्यता रही है। उसने विज्ञान और अभिनव शिल्प द्वारा पश्चिम के लोगों को उच्चतर जीवन-स्तर उपलब्ध कराया है, उसने भव्य साहित्य, महान संगीत और महान कला का निर्माण किया है। (भाषण, 1955) —**जवाहरलाल नेहरू**

पाकिस्तान

हम पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम पाकिस्तान को कुचलना और उसका गला घोंटना चाहते है और उसे भारत से मिलने पर बाध्य करना चाहते हैं। यह आरोप हमारे रुख़ की नितांत नासमझी पर आधारित है। अगर हम पाकिस्तान को समाप्त करना चाहते, तो हम विभाजन को कभी स्वीकार ही क्यों करते ? इतिहास मे लौटने का सवाल नही होता। वास्तव में, यह भारत के हित की ही बात होगी कि पाकिस्तान एक सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र बने और हम उसके साथ अधिक घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर सकें। यदि आज किसी प्रकार भारत और पाकिस्तान के पुनर्मिलन का प्रस्ताव किया जाए, तो मैं स्पष्ट कारणों से उसे अस्वीकार कर दूंगा। मैं पाकिस्तान की महान समस्याओं का बोझ नहीं उठाना चाहता। (अलीगढ़ विश्वविद्यालय में 1946 में भाषण)

—**जवाहरलाल नेहरू**

पाप, पापी

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

(अठारहों पुराणों में वेदव्यास जी ने केवल दो बातें कही हैं। परोपकार करके पुण्य कमाया जाता है और दूसरों को कष्ट पहुँचाकर पाप।) —अज्ञात

इध सोचति पेच्च सोचति पापकारी उभयत्थ सोचति।
सो सोचति सो विहञ्ञति दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो॥

(पापी मनुष्य दोनों जगह शोक करता है—यहाँ भी और परलोक में भी। अपने दुष्ट कर्म को देखकर वह शोक करता है, पीड़ित होता है।) —धम्मपद

पापी से घृणा न करो, उसके पाप से घृणा करो, क्योंकि पूर्ण निष्पाप तो तुम भी न होगे। —महावीर

मरते समय तक क्या चुभता है—गुप्त पाप। —शंकराचार्य

कोई व्यक्ति जब पाप करके धन लाता है, तो उसका उपभोग घर के सब लोग करते हैं, किन्तु पाप का फल वह अकेला ही भोगता है। —महाभारत

छिपकर पाप करना कायरता और खुलकर करना बेहयाई है।
—एक चीनी लोकोक्ति

(1) पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
(2) गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौर पर नहीं जानते, लेकिन बात साफ़ है। —महात्मा गाँधी

अगर पाप से किसी की जान बचती हो तो ऐसा करना सवाब है।—प्रेमचन्द

जो दिल में खटके वह पाप है। —हज़रत मुहम्मद

पाप इसीलिए दुःखद नहीं है कि वह मना है, बल्कि इसलिए मना है कि वह दुःखद है। —फ्रैंकलिन

इस मस्जिद में से सबसे बड़े पापी को बाहर निकालने के लिए कहा जाए तो मैं ही सबसे पहले निकलूँगा। —मलिक दीनार

प्राणघात, चोरी और व्यभिचार ये तीन शारीरिक पाप हैं। झूठ, निन्दा, कटु वचन और व्यर्थ भाषण ये वाणी के पाप हैं। पर मन की इच्छा, दूसरे की बुराई की इच्छा, असत्य, हिंसा, दया-दान में अश्रद्धा—ये मानसिक पाप हैं। —बुद्ध

पाहुना दे० अतिथि

पुण्य

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीड़नम्।

(अठारहों पुराणों में वेदव्यास जी ने केवल दो बातें कही हैं। परोपकार करके पुण्य कमाया जाता है और दूसरों को कष्ट पहुँचा कर पाप।) —अज्ञात

इध मोदति पेच्च मोदति, कतपुञ्ञो उभयत्थ मोदति।
सो मोदति सो पमोदति, दिस्वा कम्मविसुद्धिमत्तनो।।

(शुभ कर्म करने वाला मनुष्य दोनों जगह प्रसन्न रहता है—यहाँ भी और परलोक में भी। अपने शुभ कर्म को देखकर वह मुदित होता है, प्रमुदित होता है।)

—धम्मपद

पुत्र

(1) धिक् तं सुतं य: पितुरीप्सितार्थं क्षमोऽपि सन्न प्रतिपादयेद् य:।
जातेन किं तेन सुतेन कामं पितुर्न चिन्तां हि समुद्धरेद् य:।।

(उस पुत्र को धिक्कार है, जो समर्थ होते हुए भी पिता के मनोरथ को पूर्ण करने में उद्यत नहीं होता। जो पिता की चिन्ता को दूर नहीं कर सकता, उस पुत्र के जन्म से क्या लाभ?)

(2) मूर्खं पुत्रादपुत्रत्वं वरं वेदविदो विदु:।
(मूर्ख पुत्र की अपेक्षा पुत्रहीन रहना ही उत्तम है।) —देवी भागवत

पुत्र से पराजित होना द्वितीय पुत्र जन्म के समान है। —राजशेखर

रतन बाँझ रहिबो भलो पै न सौउ कपूत।
बाँझ रहै तिय एक दुख पाइ कपूत अकूत।। — रत्नावली

एकहि भले सुपुत्र तैं, सब कुल भलो कहात।
सरस सुबासित बिरछ तैं, ज्यों बन सकल बसात।। —वृन्द

पुत्र वही मरि जाय जो कुल में दाग लगावे। —बैताल

साईं ऐसे पुत्र से बाँझ रहे बरु नारि।
बिगरो बेटा बाप से जाय रहे ससुरारि।।
जाय रहे ससुरारि नारि के नाम बिकाने।
कुल के धर्म नसाय और परिवार नसाने।।
कह गिरिधर कविराय मातु झंखै वहि ठाईं।
असि पुत्र नहिं होय बाँझ रहतिउँ बरु साईं।। — गिरिधर कविराय

पुरुष

घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान् ।
तस्माद्घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद्बुधः ॥

(नारी घी का कुप्पा है और पुरुष जलता हुआ अंगार। दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है। इसलिए घी और आग को बुद्धिमान पुरुष इकट्ठा न रखे।) —**अज्ञात**

(1) पुरुष का हृदय सशंक होता है। (अजात०)

(2) पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करुणा है—जो अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। (अजात०) —**प्रसाद**

पुरुष विजय का भूखा होता है, नारी समर्पण की। पुरुष लूटना चाहता है, स्त्री लुट जाना। —**महादेवी वर्मा**

मनुष्य के दृष्टि होती है और नारी के अंतर्दृष्टि। —**विक्टर ह्यूगो**

पुस्तक (दे० किताब भी)

पुस्तक का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं। —**गाँधी**

विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र है। **बर्नार्ड शॉ**

उत्तम पुस्तकों का नरक में भी स्वागत करना चाहिए क्योंकि जहाँ वे होंगी वहीं स्वर्ग बन जायेगा। —**लोकमान्य तिलक**

पुस्तक ऐसे मित्र के समान है जो कभी भी धोखा नही देता।
—**एक फ्रांसीसी कहावत**

(1) पुस्तक में से ज्ञान लेना हमारे मन का स्वाभाविक धर्म नहीं।

(2) हम किताब के आदमी को पहचानते हैं और दुनिया के आदमी को नही पहचानते। —**टैगोर**

कोई भी पुस्तक जो एक वर्ष पुरानी न हो कभी मत पढ़ो। —**एमर्सन**

पूजा

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानवः। (अपने-अपने कर्मों द्वारा पूजा करने से मनुष्य सिद्धि को प्राप्त होता है।) —**गीता**

पाहन पूजै हरि मिलैं तौ मैं पूजूं पहार।
तात यह चाकी भली पीस खाय संसार॥ —**कबीर**

तुम ईश्वर और धन दोनों की पूजा एक साथ नहीं कर सकते। —**बाइबल**

अल्लाह का ग़ुस्सा उन पर नाज़िल हो जो पैगम्बरों की क़ब्रों को पूजा का स्थान बना लेते हैं। —**हज़रत मुहम्मद**

(1) अपने कर्त्तव्य का पालन परमेश्वर की पूजा का ऊँचा तरीका है।

(2) मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मन्दिर है। इसलिए साक्षात् देवता की पूजा करो। —**स्वामी विवेकानन्द**

लोकसेवा हमारी मूर्तिपूजा है। —**विनोबा**

पूँजीवाद

पूँजीवाद का अर्थ लोकतंत्र के बिलकुल विपरीत है—कुछ लोगों के हाथ में सारी आर्थिक शक्ति का होना, जिसका वे अपने हित के लिए उपयोग करते हैं। वे अपने विशेष अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए विधि रचते हैं, और जो कोई भी उस विधि का उल्लंघन करता है, वह अपराधी कहलाता है, जिसे दण्ड देना समाज और सत्ता का कर्त्तव्य है। इस प्रकार इस व्यवस्था में समता का प्रश्न ही नहीं उठता। (विश्व इतिहास की झलक) —**जवाहरलाल नेहरू**

पेट

छुधा पीड़ सहि सकहि न जोगी। —**तुलसी**

रहिमन कहत सुपेट सों क्यों न भयो तू पीठ।
रीते अनरीते करै भरे बिगारत दीठ॥ —**रहीम**

सूँघन बास को नाक दई, अरु आँख दई जग जीवन को।
दान के काज दिए दोउ हाथ, सो पाउँ दिए पृथ्वी घूमन को॥
कान दिये सुनिये कौ पुरान सु जीभ दई भज मोहन को।
गंग कहै सब नीक दियो, पर पेट दियो पत खोवन को॥ -**गंग**

(1) पाजी पेट काज कोतवाल कौ अधीन होत,
कोतवाल सु तौ सिकदार आगे लीन है।
सिकदार दीवान के पीछे लग्यौ डोलै पुनि,
दीवान हू जाइ पतिसाइ आगै दीन है।
पातिसाह कहै या षुदाइ मुझै और देइ,
पेट ही पसारै नहिं पेट बसि कीन है।
सुन्दर कहत प्रभु क्यों हूँ नहि भरै पेट।
एक पेट काज एक एक कौ अधीन है॥

(2) कैधों पेट चूल्हो, कैधों भाठी, कैधों भार आहि,
जोई कछु झोंकियत सोई जारि जात है।
कैधों पेट कूप, कैधों बापी, कैधों सागर है,
जेतो जल परै तेतो सकल समात है।
कैधों पेट भूत, कैधों प्रेत, कैधों राकस है,
खाँव खाँव करै कहूँ नेक ना अघात है।
सुंदर कहत प्रभु कौन पाप पायो पेट,
जब ते जनम लीन्हों तब ही ते खात है।—**सुंदरदास**

इन्सान अपने को आसानी से ईश्वर क्यों नही समझ लेता, इसका मुख्य कारण पेट है। —**नीत्से**

पापी पेट तू सब कुछ कर सकता है ! मान और अभिमान, ग्लानि और लज्जा ये सब चमकते हुए तारे तेरी काली घटाओं की ओट में छिप जाते हैं।

—**प्रेमचन्द**

जो अपने पेट का गुलाम है वह ईश्वर की पूजा कभी नहीं कर सकता।

—**शेख सादी**

भूखै भजन न होंहि गोपाला। लै लो अपनी कंठी माला ॥ —**अज्ञात**

प्रकृति

प्रकृति ईश्वर की कला है। —**दाँते**

प्रकृति और विवेक सदा एक ही बात कहते हैं। —**जुवैनल**

यदि हम प्राकृतिक नियमों को भंग करते है, तो अवश्य ही उसके कारण हमें स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुछ क्षति उठानी पड़ती है। —**महात्मा गाँधी**

विराट प्रकृति ज्ञान की पुस्तक है। —**गोल्डस्मिथ**

प्रकृति को अपना शिक्षक बनाओ। —**वर्ड्सवर्थ**

प्रकृति एक बात कहे और बुद्धिमत्ता दूसरी ऐसा नही हुआ, नहीं, नही, कभी नहीं। —**एडमंड बर्क**

अपने ही सुख-दुःख के रंग मे रंगकर प्रकृति को देखा तो क्या देखा ? मनुष्य ही सब कुछ नही है। प्रकृति का अपना रूप भी है। —**रामचन्द्र शुक्ल**

प्रजा

(1) परजा की रक्षा करै सोई स्वामि अनूप।
तर सबको छहियाँ करै सहै आप सिर धूप ॥

(2) परजा जानहु मूल तुम्ह राजा वृक्ष विचार।
अपनी जर्रहि उखारिहैं परजा खोवनहार॥ —जान

अगर प्रजा का बल संगठित हो जाय, तो कोई भी सरकार उसका सामना नहीं कर सकती। —सरदार पटेल

प्रण, प्रतिज्ञा

(1) प्रतिज्ञाहीन जीवन बिना नीव का घर है। प्रतिज्ञा के बल पर ही यह संसार टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ है अनिश्चित या डाँवाडोल रहना।

(2) कोई भी प्रतिज्ञा करना या व्रत लेना बलवान का काम है, निर्बल का नहीं। -महात्मा गाँधी

निबहै सोई कीजिये, पन अपने उनमान।
कैसे होत गरीब पै, राजा को सो दान॥ —वृन्द

जो कहि दीजै वाहि को, कीजै नैनन मीच।
प्रानहुँ दै प्रन पूरियै, जथा मार मारीच॥ —रामचरित उपाध्याय

प्रयत्न

माँग, और वह तुझे जरूर मिलेगा; खोज, और तू जरूर पाएगा; खटखटा, तेरे लिए दरवाजा जरूर खुलेगा। —बाइबिल

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य, इसलिए प्रयत्न-देव की उपासना करना ही श्रेयस्कर है। —रामदास

महान् ध्येय के प्रयत्न में ही आनन्द है, खुशी है और एक हद तक प्राप्ति की मात्रा भी। —जवाहरलाल नेहरू

क्या तुमने कभी ऐसे आदमी का नाम सुना है, जिसने निष्ठापूर्वक जीवन-भर प्रयास किया हो और किसी हद तक भी सफल न हुआ हो? —थोरो

असफलताओं से न घबराकर लगातार प्रयत्न करने वाले लोगों की गोद में सफलता खुद आकर बैठ जाती है। —भारवि

प्रशंसा

मिथ्या प्रशंसा खलु नाम कष्टा।
(मिथ्या प्रशंसा बहुत कष्टप्रद होती है।) —भास

उष्ट्राणां विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभा: ।
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूपमहो ध्वनिः ।।

(ऊंटों के विवाह में गधे गीत गाते हैं तथा परस्पर प्रशंसा इस प्रकार करते हैं—अद्‌भुत रूप ! अद्‌भुत ध्वनि !) **—अज्ञात**

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय मत नष्ट करो, उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो। **—कार्ल मार्क्स**

चापलूसी करना बहुत-से लोग जानते हैं, लेकिन प्रशंसा करना किसी-किसी को ही आता है। **—वेंडेल फ़िलिप्स**

मूर्खों से प्रशंसा की रागिनी सुनने की बजाए बुद्धिमान की फटकार सुनना कहीं अच्छा है। **—इंजील**

हम प्रशंसा, आशा और प्रेम से जीते हैं। **—वर्ड्सवर्थ**

आप हर व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, अगर आप देखें कि वह प्रशंसा से किस तरह प्रभावित होता है। **—सेनेका**

जो हर किसी की प्रशंसा करता है वह किसी की प्रशंसा नहीं करता। **—जॉनसन**

मैं उसकी प्रशंसा करूंगा जो मेरी प्रशंसा करेगा। **—शेक्सपियर**

शत्रु द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है। **—टॉमस**

उन्हें वफादार न मान जो तेरी हर कहनी और करनी की प्रशंसा करें, बल्कि उन्हें मान जो तेरे दोषों की अकट् आलोचना करें। **—सुकरात**

किसी की अधिक प्रशंसा करना उसे धोखा देना है। (राज्य श्री) **—प्रसाद**

प्रतिभा

प्रतिभावान मनुष्य वे कार्य करते हैं, जिसे किये बिना वे रह नहीं सकते, गुणी मनुष्य वे कार्य करते हैं जो वह कर सकते हैं। **—ओवेन मेरीडेन**

जब कोई प्रतिभाशाली हस्ती इस दुनिया में आती है तो उसे इस लक्षण से पहचाना जा सकता है कि सभी मूर्ख लोग उसके विरुद्ध उठ खड़े होते हैं। **—स्विफ़्ट**

लम्बी-चौड़ी पढ़ाई के नीचे प्रतिभा दबकर मर जाती है। **—विनोबा**

प्रतिभा का आवश्यक अंग है धैर्य। **—डिज़रॉइली**

प्रतीक्षा

जो व्यक्ति प्रतीक्षा करना जानता है उसे हर वस्तु समय से प्राप्त हो जाती है। —**एक फ्रांसीसी कहावत**

उकताने से गूलर नहीं पकते। —**एक भोजपुरी कहावत**

प्रतीक्षा का फल मीठा होता है। —**एक चीनी कहावत**

प्रयत्न, प्रयास दे० कोशिश

प्रसन्नता

चित्त के प्रसन्न रहने से सब दुःख नष्ट हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त स्थिर हो जाती है। —**गीता**

दुनिया में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है और वह यह कि अपनी ज़रूरतें कम करो। —**गाँधी**

काम में व्यस्त रहने से मन को बड़ी प्रसन्नता मिलती है। —**होर्न**

प्रसन्नता सभी सद्गुणों की माँ है। —**गटे**

चित्त की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। —**प्रेमचन्द**

प्रसन्नचित्त व्यक्ति अधिक जीते हैं। —**शेक्सपियर**

प्रसन्नता को हम जितना लुटाएँगे, उतनी ही अधिक वह हमारे पास आएगी। —**विक्टर ह्यूगो**

वही व्यक्ति सबसे अधिक दौलतमंद है जिसकी प्रसन्नता सबसे सस्ती है। —**थोरो**

प्रसिद्धि

उत्तमा स्वयमाख्याता पितुः ख्याताः च मध्यमाः।
अधमा मातुलात्ख्याताः श्वशुरख्याताधमाधमाः॥

(उत्तम पुरुष वह है जो अपना नाम स्वयं पैदा करता है, मध्यम पुरुष अपने पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करता है, अधम पुरुष वह है जो अपने मामा के नाम से ख्याति प्राप्त करता है, पर वह पुरुष अधम से अधम है जो ससुर के नाम पर प्रसिद्धि प्राप्त करता है।) —**अज्ञात**

धन्य हैं वे लोग जिनकी प्रसिद्धि उनकी सत्यता से अधिक प्रकाशमान नहीं होती। —**टैगोर**

वह प्रसिद्धि जिसकी प्राप्ति बहुत जल्द और उचित समय के पूर्व हो, भार-स्वरूप है। —**वाल्टेयर**

येनकेनप्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्। (आदमी किसी भी प्रकार प्रसिद्ध होना चाहता है।) —**एक संस्कृत लोकोक्ति**

(1) प्रसिद्धि जीवन की झाग है।

(2) शांति से घृणा हो तो प्रसिद्धि का वरण कर लो। —**भोलानाथ तिवारी**

प्राणदण्ड

(1) जिस प्राण का मनुष्य दान नहीं दे सकता, उसका अपहरण करने का उसे क्या अधिकार है?

(2) नैतिक दृष्टि से प्राणदण्ड देने का अधिकार संसार के किसी भी न्यायालय को नहीं है। —**महात्मा गाँधी**

(1) 'फाँसी' समाज को डराने के लिए दी जाती है, हत्यारे से बदला लेने के लिए नहीं।

(2) अपराधी के दंड में उपयोगिता होनी चाहिए। जब एक मनुष्य को फाँसी दे दी गई तो वह व्यर्थ हो गया। —**वाल्टेयर**

यदि किसी को सप्राण करने की शक्ति मनुष्य में नहीं है, तो उसके प्राण लेने का भी अधिकार नहीं है। —**एक जापानी संत**

प्रायश्चित्त

(1) प्रायश्चित्त से पिछले पाप के प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी।

(2) प्रायश्चित्त प्रहसन के रूप मे नहीं, हृदय से होना चाहिए।

—**महात्मा गाँधी**

प्रारंभ (दे० आरंभ भी)

रहिमन बिगरी आदि की, बनै न खरचै दाम।
हरि बाढ़े आकास लौं, तऊ बावनै नाम। —**रहीम**

प्रारंभ अच्छा हो गया तो अंत भी अच्छा ही होगा। —**एक यूनानी कहावत**

प्रार्थना

(1) प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं, हृदय से होता है।

(2) प्रार्थना अपनी अयोग्यता और दुर्बलता को स्वीकार करना है।

—महात्मा गाँधी

यदि हृदय गूँगा हो तो ईश्वर ज़रूर बहरा रहेगा। **—ब्रुक्स**

प्रार्थना विश्वास की आवाज़ है। **—होर्न**

मैं भगवान से अष्टसिद्धि या मोक्ष तक की कामना नहीं करता। मेरी यही एक प्रार्थना है कि सब प्राणियों के हृदय में स्थिर होकर मैं ही उनके समस्त दुःखों को सहूँ। **—गीता**

प्रेम, प्रेमी

अनुरागोऽनुरागेण परीक्षितव्यः। (प्रेम की परीक्षा प्रेम से ही होनी चाहिए।)

—कालिदास

अहण कवणु णेहें संताविउ। (प्रेम से कौन दुःखी नहीं होता?) **—नयनंदी**

इस संसार में घृणा घृणा से कभी कम नहीं होती, घृणा प्रेम से ही कम होती है। **—धम्मपद**

सोइ पिरिति अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होय। **—विद्यापति**

पिरम घाउ ओखदि नहि मानइ। पिरम बान जेहि लाग सो जानइ॥

—मुल्ला दाऊद

(1) परिमल प्रेम न आछे छपा।
(2) प्रेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई।**—जायसी**

(1) पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा पंडित भया न कोइ।
एकै आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ॥
(2) जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहि राम।
ते नर इस संसार में, उपजि खये बेकाम॥ **—कबीर**

जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीति किये दुःख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती रे, प्रीति करो मत कोय॥ **—मीरा**

(1) सुर नर मुनि सबकर यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।
(2) तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥
सो मनु सदा रहत तेहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥

—तुलसी

यह रहीम निज संग ले जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस होत होत ही होय॥ **—रहीम**

चटक न छाँड़त घटत हूँ, सज्जन नेह गँभीर।
फीको परै न बरु फटै रँग्यो चोल रंग चीर।। —बिहारी

प्रेम दुराए ना दुरै नैना देत बताय। —बैरीसाल

प्रेम निबाहन कठिन है, समझ कीजियौ कोय।। —वृन्द

जमला, ऐसी प्रीत कर, जैसो हिन्दू जोय।
पूत पराये कारणै, जल-बल कोयला होय।। —जमाल

(1) प्रेम को व्याधि के रूप में देखने की अपेक्षा हम संजीवनी शक्ति के रूप में देखना अधिक प्रसन्द करते हैं। (चिन्ता०-2)

(2) प्रेम वास्तव में राग का ही पूर्ण विकसित रूप है। (र० मी०)

(3) विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं।···लोभ सामान्योन्मुख होता है और प्रेम विशेषोन्मुख। (चिन्ता० 1) —रामचन्द्र शुक्ल

(1) उन्मुक्त प्रेम को मै कुत्तों का प्रेम समझता हूँ।

(2) प्रेम कभी दावा नही करता, वह तो हमेशा देता है। प्रेम हमेशा कष्ट सहता है, न कभी झुँझलाता है, न बदला लेता है।

(3) जहाँ प्रेम है वहाँ परमात्मा है। — महात्मा गाँधी

(1) इश्क ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया।
वरना हम भी आदमी थे काम के।।

(2) इश्क पर ज़ोर नही है ये वो आतिश 'ग़ालिब'
कि लगाए न लगे और बुझाए न बने। ग़ालिब

दर्द ही खुद है खुद दवा है इश्क
शेख क्या जाने तू कि क्या है इश्क। —मीर

कभी रोना, कभूँ हँसना, कभी हैरान हो रहना
मुहब्बत क्या भले-चंगे को दीवाना बनाती है। —दर्द

जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला
फ़ायदा देखा इसी नुकसान में। —दाग़

एक दूसरे से प्रेम करो, लेकिन प्रेम को बंधन न बनने दो।
—ख़लील जिब्रान

(1) प्रेम आँखों से नहीं, हृदय से देखता है। इसीलिए प्रेम के देवता को अंधा बताया गया है।

(2) प्रेम के जोश में आदमी अपने आप को भूल जाता है। —**शेक्सपियर**

मनुष्य प्रेम तो जल्दबाज़ी में करता है किन्तु घृणा फ़ुर्सत में। —**बायरन**

प्रेम मन की सबसे अच्छी दुर्बलता है। —**ड्राइडेन**

प्रेम भगवान का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। —**वाल्टेयर**

सच्चा प्रेम संयोग में भी वियोग की मधुर वेदना का अनुभव करता है।
—**प्रेमचंद**

प्रेम मानवता का दूसरा नाम है। —**बुद्ध**

घृणा राक्षसों की सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्यों का लक्षण है, प्रेम देवताओं का गुण है। —**भर्तृहरि**

प्रेम मे हम सब समान रूप से मूर्ख है। —**गेटे**

ज्ञान के शीतल प्रकाश मे प्रेम का पौधा कभी नहीं उगता। —**कांट**

खूब किया मैंने दुनिया से प्रेम, और दुनिया ने मुझसे। तभी तो मेरी सब मुस्कराहटे उसके होंठों पर थी और उसके सब आँसू मेरी आँखों मे।
—**खलील जिब्रान**

प्रेम के स्पर्श से हर कोई कवि बन जाता है। —**प्लेटो**

जहाँ प्रेम है वहाँ नियम नहीं, जहाँ नियम है वहाँ प्रेम नही।
—**संत शाहंशाह**

प्रेम के दो लक्षण हैं, पहला बाहरी संसार को भूल जाना, दूसरा अपने-आपको भी भूल जाना। —**रामकृष्ण परमहंस**

प्रेम के सिवा तू किसी परमात्मा को न मान। —**मूसा**

परमात्मा प्रार्थना का नही, प्रेम का भूखा है। —**दयानन्द**

प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है और अन्त में प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है। —**टैगोर**

फाँसी दे० प्राणदंड

फ़िज़ूलख़र्ची

फ़िज़ूलखर्ची करने वाला अंधा होता है क्योंकि वह आज को ही देखता है, कल को नहीं देखता। —बिक्टर ह्यूगो

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो कंगाल हो जाता है। —चाणक्य

फूट

भिन्नानामतुलो नाशः क्षिप्रमेव प्रवर्तते। (परस्पर फूट वाले लोगों का शीघ्र ही पूर्णतः नाश हो जाता है।) —वेदव्यास

फूट गए हीरा की बिकानी कनी हाट-हाट,
काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल को लयो।
टूट गई लंका फूट मिल्यौ जो विभीषन है,
रावन समेत बंस आसमान को गयो।
कहैं कवि गंग दुरजोधन से छत्रधारी,
तनक में फूटे ते गुमान वाको ढह गयो।
फूटे ते नरद उठि जात बाजी चौसर की,
आपुस के फूट कहु कौन को भलो भयो॥ —गंग

फ़ैशन

फ़ैशन कुरूपता का एक प्रकार है जो इतना असाध्य है कि हमें उसे हर छह महीने में बदल देना होता है। —आस्कर वाइल्ड

अंततः फ़ैशनें उत्पन्न की गयी महामारियाँ ही हैं। —जार्ज बर्नार्ड शा

फ़ैशनों का परिवर्तन वह टैक्स है जो उद्योग द्वारा धनपतियों के गर्व पर लगाया जाता है। —चैमफ़ोर्ट

हर पीढ़ी पुराने फ़ैशनों पर हँसती है, लेकिन नयों का अनुसरण धार्मिक जैसी कट्टरता से करती है। —थोरो

बचपन दे० बालक

बच्चा दे० बालक

बड़प्पन, बड़ा

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर॥ —कबीर

जो बड़ेन को लघु कहें, नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं॥ —रहीम

बड़े अनीत करैं तऊ, बुरो कहै नहिं कोय।
बालि हत्यो अपराध बिन, ताहि भजै सब कोय।। —**वृन्द**

कुछ पैदाइशी बड़े होते हैं, कुछ बड़े बन जाते हैं और कुछ पर बड़प्पन लाद दिया जाता है। —**शेक्सपियर**

कुछ व्यक्तियों का बड़प्पन केवल स्थानीय होता है, वे बड़े इसलिए होते हैं कि उनके सहयोगी बौने होते हैं। —**जॉनसन**

बड़ों को तेहरी ग़ुलामी करनी पड़ती है—राज्य की ग़ुलामी, प्रसिद्धि की ग़ुलामी और अपने कार्य की ग़ुलामी। —**बेकन**

बदला

(1) वह जो बदला लेने की सोचता है, भरकर अच्छे हो गए अपने घावों को हरा करता है।

(2) बदला लेने से मनुष्य उसके दुश्मन जैसा हो जाता है, लेकिन न लेने से वह उसमें श्रेष्ठ बन जाता है।

(3) बदला जंगली न्याय है। —**बेकन**

अपने शत्रु के लिए अपनी भट्ठी को इतना गर्म न कर कि वह तुझे ही भूनकर रख दे। —**शेक्सपियर**

शत्रुओं को क्षमा करना बदला लेने का सबसे अच्छा तरीका है।
—**एक चीनी कहावत**

बल, बलवान, बली

कैसे निबहैं निबल जन करि सबलन सों बैर।
रहिमन बसि सागर बिषे करत मगर सों बैर।। —**रहीम**

बल तो निर्भयता में है शरीर में माँस बढ़ जाने में नहीं। —**महात्मा गाँधी**

दैत्य का-सा बल होना बुरा नहीं है, दैत्य की तरह उसका प्रयोग करना बुरा है। —**शेक्सपियर**

(1) सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय।।

(2) कछु बसाय नहिं सबल सों करैं निबल पै जोर।
चलै न अचल उखारि तरु डारत पवन झकोर।। —**वृन्द**

बहुमत

भेड़िये को इसकी कोई चिन्ता नहीं होती कि भेड़ों की संख्या क्या है ।
—वर्जिल

बहुमत की वाणी न्याय का प्रमाण नहीं है । —शिलर

हम बहुमत से चलते हैं और यदि पागल अधिक हैं तो समझदारों को अस्पताल जाना ही पड़ेगा । —होरेसमैन

बात (दे० बोलना भी)

प्रिय बानी जे सुनहि जे कहही । ऐसे नर निकाय जग अहही ।।
वचन परमहित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं, ते नर प्रभु थोरे ।।
—तुलसीदास

बिगरी बात बनै नही लाख करौ किन कोय ।
रहिमन फाटे दूध को मथै न माखन होय ।। —रहीम

हर एक बात मीठी भाषा में कही जा सकती है । —महात्मा गाँधी

(1) फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय बिचारि ।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों बिबाह में गारि ।।
(2) नीकी पै फीकी लगै, विन अवसर की बात ।
जैसे बरनत जुद्ध मे, नहिं सिंगार सुहात ।। —वृन्द

(1) जो बात का नही, वह बाप का नही ।
(2) छोटे मुँह बड़ी बात ।
(3) कमान से छूटा तीर और मुँह से निकली बात वापस नही आते ।
(4) बात कहिए जगभाती, रोटी खाइए मनभाती । —हिन्दी लोकोक्तियाँ

बालक

(1) बालक बचन करिय नहिं काना ।
(2) बाल दोष गुन गनहिं न साधू ।
(3) बररै बालक एक सुभाऊ । —तुलसीदास

नारिन सों लरिकान सों भेद कहौ जिन कोइ ।
वै दुराइ जानत नहीं निहचै परगट होइ ।। —जान

बच्चे को बहुत दुलार-पुचकारकर कोमल शय्या पर ही रखना उसको बिगाड़

देना है। उसे कठोरता और सभी तरह के वातावरण और मौसम को सहने योग्य बनाना चाहिए। —महात्मा गाँधी

बच्चों का हृदय कोमल थाला है, चाहे इसमें कँटीली झाड़ी लगा दो चाहे फूलों के पौधे। (अजात०) —प्रसाद

बुद्धि, बुद्धिमान

यतो बुद्धिस्ततः शान्तिः। (जहाँ बुद्धि है वही शान्ति है।) —वेदव्यास

दुष्करसाधनम् प्रज्ञा। (कठिन कार्य का साधन बुद्धि है।) —दण्डी

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। (जिसके पास बुद्धि है, उसी का बल है, बुद्धिहीन में बल कहाँ?) —नारायण पंडित

सन्ति ते सुधियो येषां काचः काचो मणिर्मणिः।
(बुद्धिमान वे हैं, जिनकी दृष्टि में काँच काँच है और मणि मणि है।)
—भल्लट भट्ट

बुद्धि ही तुम्हारा गुरु है। —शेक्सपियर

उड़ने के बजाय जब हम झुकते हैं तो बुद्धि के अधिक निकट होते हैं।
—वर्ड्सवर्थ

वह सचमुच बुद्धिमान है जो क्रोध में बुरी बात नही कहता। —शेख़ सादी

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निधाना॥ —तुलसीदास

बुद्धिमान के लिए संकेत काफ़ी होता है। —एक फ़ारसी कहावत

थोड़ा पढ़ना अधिक गुनना और कम बोलना अधिक सुनना बुद्धिमान बनने के उपाय हैं। —टैगोर

(1) बुद्धि तीव्र होने पर भी विवेक की अपेक्षा रखती है।

(2) बुद्धि का दुरुपयोग हुआ तो वह संसार मे बड़े से बड़ा अनर्थ करने का कारण बन जाती है। —महात्मा गांधी

बुरा, बुराई

अक्क्रोधेन जिने क्रोधं, असाधुं साधुना जिने।
(मनुष्य को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से जीते।)
—गौतम बुद्ध

ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग ।
होंहि कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग ।। —तुलसीदास

होय बुराई तें बुरो यह कीनो निरधार ।
खाँड़ खनैगो और कौं ताकौं कूप तयार ।। —वृन्द

गाड़ी का सबसे ख़राब पहिया सबसे ज़्यादा आवाज़ करता है ।
—फ्रैंकलिन

जाकौ मन जासौ रमै, जग कछु भलो न मन्द ।
चहत चकोरी चन्द कौ, चकई चहत न चन्द ।। —रामचरित उपाध्याय

बेकार

ख़ाली दिमाग़ शैतान का कारख़ाना बन जाता है । —महात्मा गाँधी

ख़ाली दिमाग शैतान का घर । —एक हिंदी लोकोक्ति

बैर

(1) लायक ही सों कीजिए ब्याह, बैर अरु प्रीति ।
(2) बैर प्रीति नहिं दुरइ दुराये । —तुलसी

रीति प्रीति सब ते भली बैर न हित मित गोत । —रहीम

बोलना (दे० बात भी)

(1) रोष न रसना खोलिए, बरु खोलिय तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित बोलिय बचन बिचारि ।।
(2) कागा काको लेत है, कोयल काको देति ।
केवल मीठे बचन तें, सबको बस कर लेति ।। —तुलसी

ईश्वर ने हमें दो कान दिये हैं और दो आँखे, पर जिह्वा केवल एक ही—इसलिए कि हम बहुत अधिक सुनें और बहुत अधिक देखें, लेकिन बोलें कम—बहुत कम । —सुकरात

जिह्वा का घाव तलवार के घाव से अधिक बुरा होता है, क्योंकि तलवार शरीर पर आघात करती है और जिह्वा आत्मा पर । —पाइथागोरस

बोली

बोली यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की उस व्यवस्था को कहते हैं, जिसके

माध्यम से (भाषा की तुलना में सीमित) समाज के लोग आपस में (प्राय: अनौपचारिक स्थितियों में) विचार-विनिमय करते हैं। इसका मानक रूप प्राय: नहीं होता तथा इसे किसी-न-किसी भाषा की मानते हैं, इसीलिए इसकी प्रतिष्ठा भाषा मे कम होती है तथा इसका प्रयोग मात्र अपने क्षेत्र में होता है। यह भाषा की तरह अपने मूल क्षेत्र के बाहर नही प्रयुक्त होती। —**भोलानाथ तिवारी**

ब्रह्म (दे० ईश्वर, भगवान भी)

अभयं वै ब्रह्म (अभय ही ब्रह्म है।) —**बृहदारण्यक उपनिषद्**

सर्वं खल्विदं ब्रह्म। (यह सब (जगत्) निश्चय ही ब्रह्म है।)
—**छान्दोग्योपनिषद्**

अयमात्मा ब्रह्म। (यह आत्मा ब्रह्म है।) —**मांडूक्योपनिषद्**

सत्य ज्ञानमनन्तमानन्दं ब्रह्म। (ब्रह्म है सत्य, ज्ञान, अनन्त और आनन्द।)
—**सर्वसारोपनिषद्**

एक मेवाद्वितीयं वै ब्रह्म नित्यं सनातनम्। (ब्रह्म एकमेव, अद्वितीय और सनातन है।) —**देवी भागवत**

एक उसी के नूर सौ दीसै सारे नूर। —**सुन्दरदास**

भक्ति

जिन्ह हरि-भगति हृदय नहिं आनी।
जीवत सब-समान तेइ प्रानी॥ **तुलसीदास**

जिसका मन और देह शुद्ध न हो उसका मन्दिर मे जाकर पूजा करना व्यर्थ है। —**स्वामी विवेकानन्द**

(1) भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है। (चिंता०-1)
(2) भक्ति धर्म और ज्ञान दोनों की रसात्मक अनुभूति है। (चिंता० 2)
(3) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। (चिन्ता० 1)
—**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

भगवान (दे० ईश्वर, ब्रह्म भी)

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्॥
(बिना हाथ पकड़ने वाला है, बिना पैर तेज दौड़ने वाला है, बिना आँख के

देखता है, बिना कान के सुनता है, वह जानने योग्य को जानता है, उसका जानने वाला कोई नहीं है। उसको आदि और महान् पुरुष कहते हैं।)

—श्वेताश्वतर उपनिषद्

(1) लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।
(2) प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में मन में नैन में, ताको कहा सँदेस।। —कबीर

व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत चेतन घन आनँद राशी।
आदि-अंत कोउ जासु न पावा। मति-अनुमान निगम यश गावा।।
बिनु पग चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु वानी वक्ता बड़ योगी।।
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहै घ्रान बिनु वास अशेषा।।
अस सब भाँति अलौकिक करणी। महिमा तासु जाइ किमि बरणी।।

—तुलसी

ईश्वर न काबा में है, न काशी मे है। वह तो घर-घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है। —महात्मा गाँधी

यदि भगवान का अस्तित्व न होता तो उसके आविष्कार की आवश्यकता होती। —वाल्टेयर

(1) रहस्य क्या है, यह मै नहीं जानता। मै इसे ईश्वर या परमात्मा नहीं कहता, क्योंकि ईश्वर के अर्थ में बहुत-सी ऐसी बातें प्रविष्ट कर गई है, जिनमें मुझे विश्वास नहीं है। मै अपने को एक बुद्धियुक्त आराध्य-देव या व्यक्ति-रूप अज्ञात परम शक्ति की कल्पना करने मे असमर्थ पाता हूँ। और यह तथ्य, कि बहुत-से लोग ऐसी कल्पना करते हैं, मेरे लिए निरन्तर आश्चर्य का कारण है। वैयक्तिक परमेश्वर-सम्बन्धी धारणा मुझे बड़ी अनोखी जान पड़ती है। (भारत की खोज)

(2) ईश्वर का अस्तित्व यदि है, तो भी सर्वदा उसकी ओर देखते रहना अथवा उस पर निर्भर रहना वांछनीय नहीं है। पारलौकिक तत्त्वों पर अतिशय निर्भरता से मनुष्य में आत्मावलम्बन का अंत हो सकता है, उसकी क्षमता एवं रचनात्मक योग्यता का ह्रास हो सकता है, और बहुधा हुआ है। (भारत की खोज)

—जवाहरलाल नेहरू

भगवान मानव की सर्वोत्तम कल्पना है। —भोलानाथ तिवारी

भाग्य (दे० क़िस्मत भी)

हम अपना भाग्य ख़ुद ही बनाते है। —बुद्ध भगवान

विक्लवो वीर्यहीनो यः स दैवमनुवर्तते।
(जो कायर है, जिसमें पराक्रम का नाम नहीं है, वही दैव का भरोसा करता है।) —वाल्मीकि

भाग्य को पुरुषार्थ के द्वारा कौन मिटा सकता है? —वेदव्यास

भाग्य की कल्पना मूढ़ लोग ही करते हैं और भाग्य पर आश्रित होकर वे अपना नाश कर लेते हैं। बुद्धिमान लोग तो पुरुषार्थ द्वारा ही उत्कृष्ट पद प्राप्त करते है। —योगवासिष्ट

मनुष्यों की अपनी वृद्धि और क्षय का एकमात्र कारण भाग्य ही है।
—भर्तृहरि

(1) पिता रत्नाकरो यस्य लक्ष्मीर्यस्य सहोदरी।
शंखो भिक्षाटनं कुर्यात् भाग्यानुसारतः॥
(शंख का पिता समुद्र रत्नाकर है और बहिन लक्ष्मी है, फिर भी शंख भिक्षाटन करता है। सत्य है कि फल भाग्यानुसार ही होता है।)
(2) दैवं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्। (भाग्य ही सर्वत्र फलीभूत होता है, न विद्या फलित होती है और न पौरुष।) —अज्ञात

कठिन करम गति कछु न बसाई। —तुलसीदास

जो 'रहीम' भावी कहूँ होति आपने हाथ।
राम न जाते हरिन-संग, सीय न रावन साथ। —रहीम

(1) पढ़े फ़ारसी बेचै तेल, यह देखो किस्मत का खेल।
(2) लाख तदबीर एक तरफ़, एक तक़दीर एक तरफ़। —हिन्दी लोकोक्तियाँ

भावना

जिन्ह कै रही भावना जैसी। प्रभु-मूरति तिन्ह देखी तैसी। —तुलसीदास

भावना बच्चों और स्त्रियों की चीज है। —नेपोलियन

जिस मनुष्य को भावनाओं का उफान आता है वह 'हिस्टिरिकल' है।
महात्मा गाँधी

देहधारी जीव स्नेह से, द्वेष से या भय से जिस किसी में पूरी तरह अपने मन को लगा देता है, वह वैसा ही हो जाता है। —**गीता**

कोई भी चीज़ स्वयं भली या बुरी नहीं होती, समझने से हो जाती है।
—**शेक्सपियर**

भाषा

कबिरा संस्कृत कूपजल भाखा बहता नीर। —**कबीर**

का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच।
काम जो आवै कामरी, का लै करै कमाच॥ —**अज्ञात**

जामैं रस कछु होत है पढ़त ताहि सब कोय।
बात अनूठी चाहिए भाषा कोऊ होय॥ —**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

हिन्दुस्तान सबसे पहले अपनी पोशाक और अपनी भाषा को अपनाए।
—**महात्मा गाँधी**

जो विदेशी भाषा नहीं जानता, वह अपनी भाषा के विषय में भी कुछ नहीं जानता। —**गेटे**

(1) भाषा के दो पक्ष होते हैं—एक सांकेतिक (सिम्बॉलिक) और दूसरा बिंबाधायक (प्रेजेन्टेटिव)। एक में तो नियत संकेत द्वारा अर्थबोध मात्र हो जाता है, दूसरे में वस्तु का बिंब या चित्र अंत:करण में उपस्थित होता है। (जायसी)

(2) प्रत्येक भाषा की लाक्षणिक प्रवृत्ति उसके बोलने वालों की अन्तःप्रकृति और संस्कारों के अनुरूप हुआ करती है, अत: एक भाषा के लाक्षणिक प्रयोग दूसरी भाषा में बहुत काम दे सकते हैं। (चिन्ता० 2) —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

भाषा विचार का परिधान है। —**डॉ० जॉनसन**

भाषा को भावों की पोशाक कहते हैं, किन्तु यथार्थतः वह भावों की अस्थि-चर्ममय पोशाक—शरीर—है। —**कार्लाइल**

भाषा ऐच्छिक प्रतीकों द्वारा विचार, भाव, इच्छा को व्यक्त करने की असहजवृत्तिक (नॉनइंस्टिंक्टिव) और मात्र मानवीय पद्धति है। —**सपीर**

भाषा असीमित या सीमित वाक्यों का वह सेट है जिसमें प्रत्येक अपनी लंबाई में सीमित होता है तथा सीमित घटकों के सेट में से कुछ से बना होता है।
—**चॉम्स्की**

भाषा मानव-उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज-विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं, तथा लेखक, कवि या वक्ता रूप में, अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं, एवं अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अस्मिता (identify) के संबंध मे जानकारी देते है।

—**भोलानाथ तिवारी**

भख

बुभुक्षित: किं न करोति पापं क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।

(भूखा मनुष्य क्या पाप नही करता ? दुर्बल (भूख से व्याकुल) मनुष्य निर्दयी हो जाते हैं।) —**पंचतंत्र**

संसार में भूख के समान कोई वेदना नही। —**ओघनिर्युक्तिभाष्य**

(1) जब पेट ख़ाली होता है तो जिस्म रूह बन जाता है और जब वह भरा होता है तो रूह जिस्म बन जाती है।

(2) भूख के बिना गुलकंद भी खाओगे तो वह नुकसान करेगा; भूख के वक़्त सूखी रोटी खाओगे तो वह गुलकंद का मज़ा देगी। —**शेख़ सादी**

भूख को बुद्धि का आदेश मानना चाहिए। —**सिसरो**

(1) आत्मा में पड़े तो परमात्मा की सूझे।
(2) भूख में किवाड़ ही पापड़।
(3) चार कौर भीतर, तब देवता और पीतर।
(4) पहले पेट पूजा, पीछे काम दूजा।
(5) भूखे भजन न होय गोपाला, ले लो अपनी कण्ठी माला।

—**हिन्दी लोकोक्तियां**

सच है कहा किसी ने कि भूखे भजन न हो,
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियाँ। —**नज़ीर**

भूल

(1) भूल करके आदमी सीखता तो है किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि वह जीवन-भर भूल करता जाए और कहे कि हम सीख रहे हैं।

(2) भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की गई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण करना कि फिर वह भूल न होने पाए, मरदानगी है।

—**महात्मा गांधी**

भूल करना मानव का स्वभाव है और उसे क्षमा करना भगवान का।
—एक अंग्रेजी कहावत

जानकर भी अपनी भूल को ठीक न करना और भी बड़ी भूल है।
—कन्फ्यूशियस

जो कुछ करने का यत्न करेगा, उससे भूल भी होगी। —गेटे

भूल करना मानवीय है, क्षमा करना दैवी है। —एलेक्जेंडर पोप

भोजन

परान्नं प्राप्य दुर्बुद्धे, मा प्राणेषु दयां कुरु।
दुर्लभानि परान्नानि, प्राणा जन्मनि जन्मनि ॥
(हे मूर्ख ! पराये अन्न को प्राप्त करके अपने प्राणों पर दया मत कर। प्राण तो हर जन्म में मिलेंगे, परन्तु पराये अन्न तो दुर्लभ होते हैं।) —अज्ञात

अति खाणे मसणात जाणे।
(अधिक भोजन से मनुष्य श्मशान जाता है।) —एक मराठी लोकोक्ति

जीवित रहने के लिए भोजन करना चाहिए न कि भोजन करने के लिए जीवित रहना चाहिए। —मोलियर

दीपक अंधकार को खाता है और काजल को जन्म देता है। प्राणी नित्य जैसा अन्न खाता है उसकी वैसी ही सन्तति होती है। —चाणक्य

जैसा अनजल खाइए तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिए तैसी बानी सोय॥ —कबीर

पेट में पड़ गया चारा, तो कूदन लगा बेचारा। —हिन्दी लोकोक्ति

मंत्री

सचिव बैद गुरु तीन जौ, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिही नास॥ —तुलसी

ओछो मन्त्री राजै नासै ताल बिनासै काई। —घाघ

मतलबी

साईं सब संसार में मतलब को व्यवहार।
जब लगा पैसा गाँठ में तब लग ताको यार॥

तब लग ताको यार यार संग ही संग डोलै ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहीं बोलै ।।
कह गिरिधर कविराय जगत यहि लेखा भाई ।
करत बेगरजी प्रीत यार बिरला कोई साईं ।। **—गिरिधर कविराय**

मद, मदिरा (दे० शराब)

मन

(1) मनो पुब्बंगमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया ।
मनसा चे पसन्नेन भासति वा करोति वा ।
ततो नं सुखमन्वेति छाया व अनपायिनी ।।

(सभी धर्म (अवस्थाये) पहले मन में उत्पन्न होते हैं, मन ही मुख्य है, वे मनोमय हैं । जब आदमी स्वच्छ मन से बोलता या कार्य करता है, तब सुख उसके पीछे वैसे ही [illegible]ता है, जैसे कभी साथ न छोड़ने वाली छाया आदमी के पीछे-पीछे ।)

(2) दिसो दिसं यन्तं कयिरा वेरी वा पन वेरिनं ।
मिच्छापणिहितं चित्तं पापियो, नं ततो करे ।।

(शत्रु शत्रु की या वैरी वैरी की जितनी हानि करता है, कुमार्ग की ओर गया हुआ चित्त मनुष्य की उससे कहीं अधिक हानि करता है ।) **—धम्मपद**

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो: ।
बन्धाय विषयासक्तम् मुक्तं निर्विषयं स्मृतम् ।।

(मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है । विषयासक्त मन बन्धन का कारण कहा गया है और निर्विषय मन, मोक्ष का ।) **—अमृतबिन्दूपनिषद्**

जगत किसने जीता ? जिसने मन को जीता । **—शंकराचार्य**

मन जानत सब बात, जानत ही औगुन करै ।
काहे की कुसलात, कर दीपक कुएँ परै ।। **—कबीर**

रहिमन मनहि लगाय के, देखि लेहु किन कोय ।
नर को वश करिबो कहा, नारायण वश होय ।। **—रहीम**

तन जावे तो जान दे दृढ़ कर मन वर वीर ।
रोदे बिना कमान के कैसे लागे तीर ।। **बीरबल**

मन लाड़ले बच्चे के समान है । लाड़ला बच्चा जैसे सदैव अतृप्त रहता है, उसी तरह हमारा मन भी अतृप्त रहता है । अतएव मन का लाड़ कम करके उसे दबाकर रखना चाहिए । **—विवेकानन्द**

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। —प्रेमचन्द

जैसे कच्ची छत में पानी भरता है, वैसे ही अविवेकी मन में कामनाएँ धुँसती हैं। —धम्मपद

मन को हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हज़ारों हानियों से बचोगे और लम्बी उम्र पाओगे। —शेक्सपियर

(1) मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
(2) मन चंगा तो कठौती में गंगा। —हिन्दी लोकोक्तियाँ

मनुष्य, मनुष्यता

नात्मन: कामकारो हि पुरुषोऽयमनीश्वर:।
इतश्चेतरतश्चैनं कृतान्त: परिकर्षति ।।
(मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि वह पराधीन होने के कारण असमर्थ है। काल इसे इधर-उधर खींचता रहता है।) —वाल्मीकि

अहोनृजन्माखिलजन्मशोभनम्।
(अहो ! मनुष्य-जन्म सभी जन्मों में उत्कृष्ट है।) —भागवत

मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारंबार।
तरवर थें फल झड़ि पड्या, बहुरि न लागै डार ।। —कबीरदास

(1) बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ।।
(2) संसार महँ पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा।
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागही ।। —तुलसीदास

मनुष्य प्रकृति का अनुचर और नियति का दास है। —जयशंकर प्रसाद

मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मानव का 'मानव' होना उसकी जीत है। —राधाकृष्णन्

इस विचार से मैं अत्यन्त दु:खी हूँ कि मनुष्य ने मनुष्य को क्या बना डाला है। —वर्ड्सवर्थ

केवल मनुष्य ही रोता हुआ पैदा होता है, शिकायतें करता हुआ जीता है और निराश मरता है। —वाल्टर टेम्पिल

प्रत्येक मनुष्य एक बर्बाद परमात्मा है। —एमर्सन

संसार आश्चर्यजनक वस्तुओं से भरा पड़ा है, लेकिन मनुष्य से बड़ा कोई आश्चर्य नहीं। —सोफ़ोक्लिस

मनुष्यता बड़ी है, परन्तु मनुष्य छोटा है। —बोनी

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना॥ —ग़ालिब

फरिश्ने से बेहतर है इंसान बनना।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत जियादा। —हाली

आदमियत और शै है, इल्म है कुछ और चीज़
कितना तोते को पढ़ाया, पर वो हैवाँ रह गया। —ज़ौक

खुदा तो मिलता है इन्साँ ही नही मिलता
यह चीज़ है कि देखी नही मैंने। —इक़बाल

मस्तिष्क व दिमाग

महाकाव्य

महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। वह महान् (विषय) का निरूपक और महान् होता है। उसमें अग्राम्य शब्द, सुन्दर अर्थ, अलंकार और सद्वस्तु होनी चाहिए। उसमें मंत्र, दूत-प्रयाण, युद्ध, नायक का अभ्युदय, पाँच सन्धियाँ हों। बहुत व्याख्या के योग न हो, उत्कर्षयुक्त हो। धर्म आदि चारों वर्गों का वर्णन होने पर भी प्रधानतया उसमे अर्थ उपदिष्ट हो। उसमे लोक-स्वभाव का वर्णन हो और सभी रसों का पृथक् निरूपण हो। कुल, बल, शास्त्राध्ययन आदि से नायक का उत्कर्ष बताकर, फिर दूसरे का उत्कर्ष कहने की इच्छा से उस नायक का वध न दिखाया जाय। यदि उस नायक को काव्य के शरीर में व्यापक नही करना हो और उसका अभ्युदय न दिखलाना हो, तो उसका आश्रयण तथा पहले स्तुति करना भी व्यर्थ है। —भामह

अनेक सर्गो मे जहाँ कथा का वर्णन हो वह महाकाव्य कहलाता है। उसका लक्षण यह है—वह आशीर्वाद, नमस्कार या वस्तु-निर्देश द्वारा आरम्भ होता है। इसकी रचना ऐतिहासिक कथा या अन्य किसी उत्कृष्ट कथा के आधार पर होनी चाहिए। यह काव्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का फलदायक हो। इसका नायक चतुर (बुद्धिमान) तथा उदात्त होना चाहिए। महाकाव्य, नगर, समुद्र, पर्वत, ऋतु तथा चन्द्र और सूर्य के उदय और अस्त, उपवन और जल-क्रीड़ा, मधुपान और प्रेमोत्सव आदि के वर्णनों से अलंकृत होना चाहिए। यह काव्य विरहजन्य प्रेम, विवाह, कुमारोत्पत्ति, विचार-विमर्श, राजदूतत्व, अभियान, युद्ध तथा नायक के

जयलाभ आदि के मनोहर प्रसंगों से युक्त होना चाहिए। यह विभिन्न वृत्तान्तों से सुशोभित तथा सविस्तर वर्णन द्वारा हृदयंगम होना चाहिए। इसमे रस तथा भावों की लड़ी जड़ी हो। इसके सर्ग बहुत लम्बे-लम्बे न हों। सर्गों के छन्द श्रवणीय तथा अच्छी सन्धियों से युक्त होने चाहिए। सर्गों का अन्तिम श्लोक सर्वत्र भिन्न वृत्तों से युक्त होना चाहिए। यह काव्य लोक-रंजक तथा अलंकारों से अलंकृत होना चाहिए। ऐसा उत्तम काव्य महाप्रलय के बाद भी कल्पों तक स्थिर रहता है। महाकाव्य के उपरिवर्णित अंगों में से किसी की न्यूनता होने पर भी यदि उसमे प्रतिपाद्य विषयवस्तु रूप सम्पत्तिका गुण-सौन्दर्य सहृदय काव्य रसिकों के चित्त को आकृष्ट कर लेता है तो वह काव्य दूषित नही होता। पहले नायक के गुणों का वर्णन करके फिर उसके द्वारा उसके शत्रुओं की पराजय का वर्णन करना चाहिए। इस प्रकार की वर्णनरीति स्वभावत: मनोहर शैली है। शत्रु के भी वंश, पराक्रम तथा पाण्डित्य आदि का वर्णन करने के पश्चात् नायक द्वारा उस पर विजय-प्राप्ति के माध्यम से नायक के उत्कर्ष का वर्णन करना हमें सन्तोषप्रद है। —दंडी

महान, महानता

खुदा की नज़र में अज़ीम वे हैं जिनका इख़लाक बुलन्द है।—हज़रत मुहम्मद

मनुष्य ठीक उसी मात्रा में महान् बनता है जिस मात्रा मे वह मानव-मात्र के कल्याण के लिए श्रम करता है। —सुकरात

आज तक ऐसा कोई महान् व्यक्ति नही हुआ जो सदाचारी न रहा हो।

—फ्रैंकलिन

कुछ जन्म से ही महान् होते हैं, कुछ महानता प्राप्त करने हैं और कुछ लोगों पर महानता लाद दी जाती है। —शेक्सपियर

हर महान् वस्तु अच्छी नहीं होती है पर हर अच्छी वस्तु महान् होती है।

—अज्ञात

माँगना

(1) रहिमन याचकता गहे बड़े छोट ह्वै जात।
नारायन हू को भयो बावन आँगुर गात॥

(2) रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाँहि॥ —रहीम

मांस-भक्षण

अवधू मांस भषंत दया धरम का नास। —गोरख

मैं मांस नहीं खा सकता, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि अपने पेट में पशुओं की क़ब्र बनाऊँ। —**बर्नर्ड शा**

(1) बकरी पाती खात है ताकी काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है ताको कौन हवाल॥
(2) रोजा करि जिबहै करै, कहते हैं ज हलाल।
जब दफतर देखेगा दई, तब ह्वैगा कौन हवाल॥ —**कबीर**

अपने पेट को पशुओं की क़ब्र मत बनाओ। —**हज़रत अली**

माता

मातृलाभे सनाथत्वमनाथत्वं विपर्यये। (जब तक माता जीवित रहती है, मनुष्य सनाथ रहता है और उसके न रहने पर वह अनाथ हो जाता है।)

—**महाभारत**

माता किल मनुष्याणां देवतानां च दैवतम्। (मनुष्यों के लिए तो माता अवश्य ही देवताओं की भी देवता है।) —**भास**

कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति। (कभी कुपुत्र तो जन्म ले सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं होती।) —**शंकराचार्य**

राजपत्नी गुरोः पत्नी, मित्रपत्नी तथैव च।
पत्नीमाता स्वमाता च, पंचैता मातरः स्मृताः॥
(ये पाँच माताएँ कही गई हैं—राजपत्नी, गुरुपत्नी, मित्रपत्नी, अपनी पत्नी की माता और अपनी माता।) —**चाणक्य**

सौ शिक्षक एक बालक को उतनी शिक्षा नहीं दे सकते जितनी एक माता दे सकती है। —**हरबर्ट**

मातृभाषा

(1) स्वदेशाभिमान की एक शाखा यह भी है कि हम अपनी भाषा का मान रखें, उसे ठीक तरह से बोलना सीखें और उसमें विदेशी भाषा के शब्दों का उपयोग यथासंभव कम करें।

(2) मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है वह स्वदेश-भक्त कहलाने लायक नहीं। —**महात्मा गाँधी**

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल॥ —**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

मातृभूमि

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
(माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी महत्त्वपूर्ण होती हैं ।) —**संस्कृत लोकोक्ति**

मानव, मानवता

यह ज्यादा अक़्लमन्दी की बात है कि हम उस ख़ुदा की बातें कम करें जिसे हम समझ नहीं सकते, और इन्सानों की बातें ज्यादा करें जिन्हें हम समझ सकते हैं । —**ख़लील जिब्रान**

जब संसार में चारों ओर अत्याचार, अन्याय, स्वार्थ आदि का साम्राज्य फैला हो, तो यह मानकर कि हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया, ईश्वरीय प्रेम में मग्न या मस्त रहने से मानवता की वृद्धि नही हो सकनी । —**नाथजी**

मानव मानवता से छोटा है । —**थेडोर पार्कर**

माया

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया ।।
(हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदयों में वास करता है और अपनी माया के बल से उन्हें चाक पर चढ़े हुए घड़े की तरह घुमाता है ।) —**गीता**

माया त्रिष्णां नां मुई मरि मरि गया शरीर । —**कबीर**

(1) को जग जाहि न व्यापी माया ।
(2) सुर नर मुनि कोउ नाहि, जेहि न मोह माया प्रबल । —**तुलसी**

मार्क्सवाद

ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं मार्क्सवादी नही हूँ । —**मार्क्स**

मार्क्सवाद सर्वोपरि एक विश्लेषण-विधि है । —**ट्राट्स्की**

(1) अंधविश्वास से इसकी आधारभूत मुक्तता और इसके वैज्ञानिक दृष्टि-कोण के कारण ही मुझे मार्क्सवाद रुचिकर लगा । (आत्मकथा)

(2) मार्क्सवाद ने मुझे पूर्णतया संतुष्ट नहीं किया । जीवन इतना अधिक जटिल है, और जहाँ तक हम अपनी वर्तमान ज्ञानावस्था में उसे समझ सकते हैं, इतना तर्करहित है कि उसे किसी रूढ़ सिद्धांत की चारदीवारी में बाँधा नहीं जा सकता । (भारत) —**जवाहरलाल नेहरू**

मितव्ययिता दे० किफ़ायतशारी

मित्र, मित्रता (दे० दोस्त, दोस्ती भी)

न स सखा योन ददाति सख्ये । (वह मित्र नहीं है, जो साथी को नहीं देता है ।) —**ऋग्वेद**

दु:खितो सुखिता वापि सख्युर्नित्यं सखा गतिः ।
(मित्र दु:ख में हो या सुख में, अपने मित्र की सदा ही सहायता करता है ।)
—**वाल्मीकि रामायण**

इच्छेच्चेद विपुलां मैत्री त्रीणि तत्र न कारयेत् ।
वाग्वादमर्थसंबंधं तत्पत्नीपरिभाषणम् ।।
(यदि व्यक्ति गाढ़ी मित्रता चाहता है तो उसे ये तीन बातें वहाँ नही करनी चाहिए—'वाद-विवाद', 'धन का लेन-देन' तथा 'उसकी पत्नी से बातचीत' ।)
—**अज्ञात**

विद्या मित्रं प्रवासेषुभार्या मित्र गृहेषु च ।
व्याधितस्यौपधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ।।
(विदेश में विद्या मित्र होती है, गृह में भार्या मित्र है, रोगी का मित्र औषध और मरे का मित्र धर्म है ।) —**चाणक्य**

(1) धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परखियहि चारी ।
(2) जे न मित्र दुख होहि दुखारी । तिन्हहि विलोकत पातक भारी ।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्र के दुख रज मेरु समाना ।
जिनके अस मति सहज न आई । ते सठ हठ कत करत मिताई ।
—**तुलसी**

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहुरीत ।
विपति-कसौटी जे कसे, सोई साँचे मीत ।। —**रहीम**

प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय ।
दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय ।। —**वृन्द**

जो मुख पर ऐगुन कहे, महामित्र है सोइ ।
ताको मित्र न जानिये, ऐगुन राखे गोइ ।। —**नूर मुहम्मद**

दिल अभी पूरी तरह टूटा नहीं,
दोस्तों की मेहरबानी चाहिए । —**अदम**

तुम्हारा मित्र तुम्हारे अभावों की पूर्ति है । —खलील जिब्रान

सच्ची मित्रता उत्तम स्वास्थ्य के समान है, उसका महत्त्व तभी ज्ञात होता है, जब हम उसे खो बैठते हैं । —चार्ल्स कैल्ब काल्टन

मदिरा और मित्र जितने पुराने होते जाते हैं, उनकी क़ीमत बढ़ती जाती है । —एक इतालवी कहावत

एक अच्छा मित्र, सैकड़ों रिश्तेदारों की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा होता है । फ्रांसीसी कहावत

मेरे मित्रो ! मित्र होते ही नहीं । —अरस्तू

जीवन में एक मित्र मिल गया तो बहुत है, दो बहुत अधिक हैं, तीन तो मिल ही नही सकते । —हेनरी आदम्स

मुखिया

मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान कहँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ।। —तुलसीदास

मुखिया बनिबो कठिन अति, परिनिति लखि कै भाग ।
देखु सुमेरहि भेदि हिय, पोहल दोहरो ताग ।।
—रामचरित उपाध्याय

मुहावरा

मुहावरे लाक्षणिक प्रयोग ही हैं पर बँधे हुए । (चिन्ता० 2)
—रामचद्र शुक्ल

मुहावरे हमारी वोलचाल में जीवन और स्फूर्ति की चमकती हुई छोटी-छोटी चिनगारियाँ हैं । वे हमारे भोजन को पौष्टिक और स्वास्थ्यकर बनाने वाले उन तत्त्वों के समान हैं, जिन्हें हम जीवनतत्त्व कहते हैं । —लोगन पियरसाल स्मिथ

मूर्तिपूजा

जिसे मूर्ति की आवश्यकता हो वह मूर्तिपूजन करे, इसमें मुझे कोई आपत्ति नही है । मुझे इसकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती । इसके विना करोड़ों लोगों का काम चल जाता है । —महात्मा गाँधी

मनुष्य के लिए पत्थर पूजना मूर्खता है, लेकिन यदि किसी व्यक्ति को पत्थर पूजने से सांत्वना मिलती है, और वह अपने सामान्य स्तर से ऊपर उठ जाता है, तो यह 'उसके' लिए अच्छा है । —जवाहरलाल नेहरू

मूर्ख, मूर्खता

पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः ।
(विद्वान शत्रु भी श्रेष्ठ होता है, मूर्ख हितकारी नहीं ।) —**पंचतंत्र**

शास्त्रों में सबकी दवा है, मूर्खों की नहीं । —**भर्तृहरि**

जवाबे जाहिलाँ बाशद खामोशी ।
(मूर्खों की बात का उत्तर मौन है ।) **फ़ारसी लोकोक्ति**

मूरख को समझावते, ज्ञान गाँठ को जाय ।
कोयला होय न ऊजला सौ मन साबुन खाय ।। —**कबीर**

फूलै फलै न बेत, जदपि सुधा बरखहिं जलद ।
मूरख हृदै न चेत, जो गुरु मिलै विरंचि सम ।। —**तुलसीदास**

मूरख को पोथी दई बाँचन को गुन गाथ ।
जैसे निर्मल आरसी दई अंध के हाथ ।। —**वृन्द**

विवाहित दंपति में एक अवश्य मूर्ख होता है । —**हेनरी फ़ील्डिंग**

पढ़ा-लिखा मूर्ख, अशिक्षित मूर्ख से कहीं अधिक बेवकूफ होता है ।
—**फ्रांसीसी कहावत**

लाभदायक वस्तु को फेंक देना और हानिकारक वस्तु को पकड़ रखना—बस, यही मूर्खता है । —**तिरुवल्लुवर**

बारह ज्ञानी एक घंटे में जितने प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं, उससे कहीं अधिक प्रश्न मूर्ख व्यक्ति एक मिनट मे पूछ सकता है । —**लेनिन**

मृत्यु

नाकाले म्रियते जन्तुर्विद्धः शरशतैरपि ।
कुशाग्रेणैव संस्पृष्टः प्राप्तकालो न जीवति ।। (यदि काल न हो तो सैकड़ों बाणों से बिंधने से भी प्राणी नहीं मरता और यदि काल आ जाय तो कुशा की नोंक छुआने से मर जाता है ।) —**हितोपदेश**

जीवन एक प्रश्न है और मरण है उसका अटल उत्तर । —**जयशंकर प्रसाद**

मनुष्य के विकास के लिए जीवन जितनी ही मृत्यु आवश्यक है ।
—**महात्मा गाँधी**

मृत्यु से नया जीवन मिलता है । जो व्यक्ति और राष्ट्र मरना नहीं जानते, वे जीना भी नहीं जानते । —**जवाहरलाल नेहरू**

अपकीर्ति ही मृत्यु है। —शंकराचार्य

मौत इक ज़िदगी का वक़्फ़ा है,
यानी आगे चलेंगे दम लेकर। —मीर

आदमी की क़द्र मरे पर होती है। —हिन्दी लोकोक्ति

दो दिन की शान हर कोई दिखला के मर गया,
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया। —नज़ीर

कायर लोग अपनी मृत्यु से पूर्व बहुत बार मरते हैं, किन्तु वीर केवल एक बार ही मृत्यु का स्वाद लेते है। —शेक्सपियर

जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया। —हिन्दी लोकोक्ति

मृत्युदंड

जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता उसे ले लेने की स्पर्धा से बढ़कर दूसरा दंभ नही। —जयशंकर प्रसाद

मृत्युदंड इसलिए नही दिया जाता कि इससे फाँसी पाने वाले का सुधार हो वरन् इसलिए कि इससे दूसरों का सुधार हो। —मांटेग्यू

मेहमान (दे० अतिथि भी)

मछली और मेहमान तीन दिन में बदबू करने लगते है। —फ्रैंकलिन

मौन

मौनं सर्वार्थ साधनम्।(मौन सब प्रयोजनों का साधन है।)—संस्कृत लोकोक्ति

(1) मौन सर्वोत्तम भाषण है।
(2) मौन के द्वारा इन्द्रियों पर नियंत्रण आसान हो जाता है।
(3) बोलना एक सुन्दर कला है, मौन उससे भी ऊँची कला है।
(4) मौन में अन्तश्शक्ति को जगाने की अधिक क्षमता होती है।
(5) जहाँ तक हो सके वहाँ तक मौन ही रहना चाहिए।
(6) मौन कभी-कभी वाणी से अधिक वाचाल होता है। —महात्मा गांधी

एक चुप सौ को हरावै। —हिन्दी लोकोक्ति

वाचालता मनुष्योचित है, मौन देवोचित। —एक जर्मन कहावत

मौन मूर्खों का गुण है। —बेकन

यथार्थवाद

यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात। उसमें स्वभावतः दुःख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है। लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात से मेरा तात्पर्य है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्रण के अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दुःख और अभावों का वास्तविक उल्लेख।……वेदना से प्रेरित होकर जन-साधारण के अभाव और उनकी वास्तविक स्थिति तक पहुँचने का प्रयत्न यथार्थवादी साहित्य करता है।

—जयशंकर प्रसाद

यथार्थवाद का मूल सिद्धांत है वस्तु को उसके यथार्थ रूप में चित्रित करना। न तो उसे कल्पना के द्वारा विचित्र रंगों से अनुरंजित करना, और न किसी धार्मिक या नैतिक आदर्श के लिए उसे काट-छाँटकर उपस्थित करना।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

आज का यथार्थवाद, बुद्धि और साम्यवाद का ऐसा पुत्र है जिसके आविर्भाव के साथ ही, आलोचक जन्मकुण्डली बना-बनाकर उसके चक्रवर्तित्व की घोषणा में व्यस्त हो गए। स्वयं उनके जीवन और विकास के लिए कैसे वायुमण्डल, कैसी धूपछाया और कितने नीर-क्षीर की आवश्यकता होगी इसकी उन्हें चिन्ता नहीं।

—महादेवी वर्मा

यथार्थवाद और आदर्शवाद

यथार्थवाद यदि हमारी आँखें खोल देता है तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुँचा देता है। लेकिन जहाँ आदर्शवाद में यह गुण है वहाँ इन बातों की भी शंका है कि हम ऐसे चरित्रों को न चित्रित कर बैठें जो सिद्धांतों की मूर्तिमात्र हों—जिनमें जीवन न हो। किसी देवता की कामना करना मुश्किल नहीं है लेकिन उस देवता में प्राण-प्रतिष्ठा करना मुश्किल है।

—प्रेमचन्द

यथार्थवाद भले ही उपेक्षा करके बुरे के चित्रण को नहीं कहा जा सकता, फिर वह चित्रण ऐसा हो कि यथार्थ हो। इसी प्रकार उस चीज़ को आदर्शवाद नहीं कह सकते जो केवल रूढ़ि-समर्पित समाचार के उपदेश का नामान्तर है।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

यश

नष्टकीर्तिस्तु नश्यति। (जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई, उसका जीवन ही नष्ट हो जाता है।)

—महाभारत

यह रहीम निज संग ले जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस होत होत ही होय॥ —रहीम

जाकी कीरति जगत में, जगत सराहे जाहि।
ताको जीवन सफल है कहत अकब्बरशाहि। —मुगल सम्राट अकबर

(1) जारज पाँचहु पति तऊ, द्रुपदिहिं अजस न कोय।
अजस लही सीता बड़े भागहु ते जस होय॥
(2) धन उन ही को जानिये, जग कीरति जिन कीन।
न तु समान दोऊ अहैं, धनाधीस, धन-हीन॥
—रामचरित उपाध्याय

किस वास्ते जुस्तजू करूँ शुहरत की,
इक दिन ख़ुद ढूँढ़ लेगी शुहरत मुझको। —चकबस्त

यशस्वी जीवन का एक व्यस्त घंटा यश-रहित युग के बराबर है।
—टामस ओसबर्ट

याचना

गुणशतमप्यर्थिता हरति।
(याचकता सैकड़ों गुणों को हर लेती है।) —हितोपदेश

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जात।
नारायन हूँ को भयो, बावन आँगुर गात॥ —रहीम

माँगना और मरना समान है। —हिंदी लोकोक्ति

याद

यादें हमारे जीवन को हरा-भरा रखने के लिए हमारे साथ प्रभु का पक्षपात है। यादें पंख हैं, जो उड़ने का पुरुषार्थ देती हैं। —माखनलाल चतुर्वेदी

दुःख की याद वर्तमान खुशी को मधुर बना देती है। —पोलक

याद ही केवल ऐसा स्वर्ग है जहाँ से हमको भगाया नहीं जा सकता। —रिचर

किसी राजा ने एक भक्त से पूछा कि 'तुम्हें कभी मैं याद आता हूँ?' उत्तर मिला, 'हाँ, जब मैं ईश्वर को भूल जाता हूँ।' —शेख सादी

युद्ध

युद्ध बर्बर लोगों का पेशा है। —नैपोलियन

युद्ध मानव-जाति का विनाशक है, अतः उससे बचने के सभी उपाय काम में लाए जाने चाहिए। —गाँधी

जब मनुष्य का स्वयं से युद्ध आरम्भ होता है, तब उसका मूल्य होता है। —ब्राउनिंग

युद्ध से ही शांति की उत्पत्ति हुई है। —कार्नेल

युद्ध ऐसा धंधा है, जिसमें मनुष्य सम्मानपूर्वक नहीं रह सकता। -मेकियावेली

युद्ध अहंकार की संतान है। —स्विफ़्ट

धर्म-युद्ध बाहरी जीत के लिए नहीं होता, वह तो हारकर भी जीतने के लिए होता है। —टैगोर

लड़ाई को न तो मोल लो न उससे जी चुराओ। —कोरियाई लोकोक्ति

योग

मन प्रशमनोपायो योग इत्यभिधीयते।
(मन के प्रशमन के उपाय को योग कहते हैं।) —महोपनिषद्

(1) योगः कर्मसु कौशलम्। (कर्मों में कुशलता ही योग है।)
(2) समत्वं योग उच्यते। (समत्व को योग कहते हैं।) —महाभारत

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः।
(चित्तवृत्ति के निरोध का नाम योग है।) —पतंजलि

योग्यता

लहर और तूफ़ान भी योग्य नाविक ही का साथ देती हैं। —गिबन

यश की अपेक्षा योग्यता अधिक महत्त्वपूर्ण है। —बेकन

दस अयोग्य संतानों से एक योग्य संतान कहीं अच्छी होती है। —एक चीनी लोकोक्ति

उचित अवसर के अभाव मे, योग्यता का मूल्य बहुत कम रह जाता है। —नैपोलियन

अपनी योग्यता को कैसे छिपाएँ यह जानना बहुत बड़ी चातुरी है। -शेशोफ़ो

यौवन

प्राप्ते च षोडसे वर्षे सूकरी चाप्सरायते ।
(सोलह की होने पर सूकरी जैसी स्त्री भी अप्सरा जैसी लगने लगती है ।)

—अज्ञात

जोवन मरम जान पै बूढ़ा । (पद०) **—जायसी**

युवाकाल की आशा पुआल है जिसके जलने और बुझने मे देर नही लगती । (सेवा०) **—प्रेमचंद**

समझदारी आने पर यौवन चला जाता है, जब तक माला गूँथी जाती है, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं । (चंद्र०) **—जयशंकर प्रसाद**

जवानी की पहचान है दिमाग़ का लचीलापन । **—जवाहरलाल नेहरू**

रस

लक्ष्मीरिव विना त्यागान्न वाणी भाति नीरसा ।
(बिना त्याग के धन की शोभा नहीं होती और रसहीन वाणी की भी शोभा नहीं होती ।) **—अग्निपुराण**

(रसो वै सः । वही (ब्रह्म ही) रस है ।) **—तैत्तिरीय उपनिषद**

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः (नाट्यशास्त्र)
(विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति (अभिव्यक्ति) होती है ।) **—भरत**

मिलि विभाव, अनुभाव अरु संचारी सु अनूप ।
व्यंग कियो थिर भाव जो, सोई रस सुख भूप ।। **—कुलपति**

काव्य सार शब्दार्थ को रस तेहि काव्यसुसार । **—देव**

(1) सैकड़ों अलंकारों से अलंकृत होकर भी, शब्दशास्त्र के उच्चासन पर अधिरूढ़ होकर भी और सब प्रकार सौष्ठव को धारण करके भी, रस रूपी अभिषेक के बिना, कोई भी प्रबंध काव्याधिराज पदवी को नही पहुँचता ।

(2) रस ही कविता का सबसे बड़ा गुण है । **—महावीरप्रसाद द्विवेदी**

(1) सच्चा कवि वही है जिसे लोक-हृदय की पहचान है, जो अनेक विशेषताओं और विचित्रताओं के बीच मनुष्य-जाति के सामान्य हृदय को देख सके । इसी लोक-हृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस-दशा है ।

(2) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान-दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस-दशा कहलाती है। —रामचन्द्र शुक्ल

रहस्यवाद

काव्य में आत्मा की संकल्पात्मक मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है। (काव्य०) —जयशंकर प्रसाद

(1) रहस्यवाद दो प्रकार का होता है—भावात्मक और साधनात्मक। हमारे यहाँ का योग मार्ग साधनात्मक रहस्यवाद है। (जायसी)

(2) रहस्यवाद की सबसे पहली बात है अज्ञात निर्विशेष परम सत्ता के साथ समागम और संलाप, सीधे जिसके द्वारा भक्त या साधक को लोकोत्तर या पारमार्थिक ज्ञान की उपलब्धि होती है। हमारे भक्ति मार्ग में इसका कहीं नाम नहीं है।

(3) तत्त्व दृष्टि से, मनोविज्ञान की दृष्टि से, साहित्य की दृष्टि से 'अज्ञात की लालसा' कोई भाव ही नही है। यह केवल 'ज्ञात की लालसा' है जो भाषा की छिपाने वाली वृत्ति के सहारे 'अज्ञात की लालसा' कही जाती है।

—रामचन्द्र शुक्ल

मुझे ऐसा लगता है कि रहस्यवादी कविता का केन्द्र बिन्दु वह वस्तु है जिसे भक्ति साहित्य में 'लीला' कहते हैं।...रहस्य शंका का नाम है, 'लीला' समाधान का। —हजारीप्रसाद द्विवेदी

राजनीति

राजनीति वेश्या की तरह अनेक रूपिणी होती है। —भर्तृहरि

राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ मत धो बैठो। (ध्रुव०) —प्रसाद

राजनीति भुजंग से भी अधिक कुटिल है। (बाण०) —हजारप्रसाद द्विवेदी

राजनीति है रक्तपातहीन युद्ध और युद्ध है रक्तपातयुक्त राजनीति।

—माओ त्से तुंग

साफ़ बात है कि राजनीतिज्ञ के कार्य द्वारा भारत का निर्माण नही होना है, यद्यपि यह बात मैं स्वयं एक राजनीतिज्ञ के नाते कह रहा हूँ।

—जवाहरलाल नेहरू

राजा (दे० मुखिया भी)

एष राज्ञां परो धर्मो ह्यार्तानामार्तिनिग्रहः।

(राजाओं का परम धर्म है—दुखियों का दुःख दूर करना।) —भागवत

मानशरीरा राजानः।
(मान ही राजाओं का शरीर कहलाता है।) —भास

यद्वृन्ताः सन्ति राजानस्तद्वृत्ताः सन्ति हि प्रजाः।
(राजा जैसे आचरण करते हैं, प्रजा भी वैसे ही आचरण करने लगती है।)
—वाल्मीकि

पुत्र, स्त्री, मित्र और भृत्य पर जो शंका करते हैं, वे राजा किन का विश्वास करते हैं, इसे कौन जानता है? —कल्हण

परोपदेश कुशलः केवलो न भवेन्नृपः।
(राजा केवल दूसरों को उपदेश देने में कुशल न हो।) —शुक्रनीति

(1) राज्य कि रहइ नीति बिनु जाने। —तुलसी

(2) बरषत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ।
तुलसी प्रजा सुहाग ते भूप भानु सो होइ॥
(3) जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी।
—तुलसीदास

राजा अपने राज्य का प्रथम सेवक होता है। —फ़्रेडरिक महान

रामायण

(1) भारत में यदि कोई ग्रन्थ झोपड़ियों से महलों तक में स्थान पा सका है, तो वह तुलसीकृत रामायण है।

(2) रामायण और महाभारत कवि-कल्पना से भरे हैं, लेकिन उनके रचयिता कोरे कवि न थे, अथवा वे सच्चे कवि यानी ऋषि थे। वे शब्दों के चित्रकार नहीं, मानव-स्वभाव के चित्रकार थे।

(3) आज मैं तुलसीदास की रामायण को भक्ति-मार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूँ। —महात्मा गांधी

राष्ट्र

जातियाँ व्यक्तियों से बनती हैं, लेकिन राष्ट्र का निर्माण केवल संस्थाओं द्वारा ही होता है। —डिज़रायली

एक हज़ार वर्ष भी कठिनाई से एक राष्ट्र बना पाते हैं, लेकिन वह राष्ट्र केवल घंटे-भर में समाप्त हो सकता है। —बायरन

अधिक जनसंख्या होने से या दूसरे देशों को हड़पकर कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। —रस्किन

राष्ट्र अमर है। नर और नारी जनमते और मरते है, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है। इसमें अमरत्व नाम की कोई चीज़ है। —**जवाहरलाल नेहरू**

राष्ट्र प्राणियों के उस समूह को कहते हैं कि जिनकी एक विद्या, एक तहज़ीब हो, एक राजनैतिक संगठन हो, एक भाषा हो और एक साहित्य हो। (कुछ)

—**प्रेमचंद**

लक्षणा (शक्ति)

मुख्यार्थबाधे तद्‌युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढ़ेः प्रयोजनाद् वासौ लक्षणाशक्तिरर्पिता ।। (साहित्य)

(मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा शब्दशक्ति कहते है।)

—**विश्वनाथ**

लक्ष्य दे० ध्येय

लगन

बुद्धि द्वारा सधा हुआ उत्साह ही लगन है। —**पास्कल**

लगन अपने से उल्टी दिशा में मनुष्य को उसी प्रकार नही दौड़ा सकती, जिस प्रकार तेज़ बहती हुई नदी अपने प्रवाह के विरुद्ध नौका को नही ले जा सकती।

—**फ़ीलिंडग**

जिसको लगन है, वह साधन भी जुटा लेता है, यदि नही जुटा पाता तो वह उन्हें स्वयं बना लेता है। —**चैनिंग**

लगन से ज्ञान मिलता है, लगन के अभाव में ज्ञान खो जाता है। —**बुद्ध**

(1) सच्ची लगन को काँटों की परवाह नही होती।

(2) वही तलवार, जो केले को भी नही काट सकती, सान पर चढ़कर लोहे को भी काट सकती है। मानव-जीवन में लाग बड़े महत्व की वस्तु है। जिसमें लाग है, वह बूढ़ा होकर भी जवान है। जिसमें लाग नही, ग़ैरत नहीं, वह जवान होकर भी मृतक है। —**प्रेमचंद**

लज्जा

लज्जा सर्वस्य भूषणम। (लज्जा सभी का आभूषण है) —**चाणक्य**

लज्जा नारी का सबसे क़ीमती आभूषण है। —**कोल्टन**

लज्जा का आकर्षण सौन्दर्य से अधिक होता है। —**शेक्सपियर**

यदि कोई सुन्दरी लज्जा त्याग देती है, तो वह अपनी सुन्दरता का सबसे बड़ा आकर्षण खो देती है। —**संट ग्रेगरी**

यह बात याद रखनी चाहिए कि व्यर्थ की लज्जा आवश्यक लज्जा को मार डालती है। —**टैगोर**

लज्जाहीन मनुष्य मनुष्य नही। —**प्लैट्स**

(1) दूसरों के चित्त में अपने विषय में बुरी या तुच्छ धारणा होने के निश्चय या आशंका मात्र से वृत्तियों का जो संकोच होता है—उनकी स्वच्छंदता के विधान का जो अनुभव होता है, उसे लज्जा कहते हैं। (चिन्ता० 1)

(2) लज्जा का कारण अपनी बुराई, त्रुटि या दोष का हमारा अपना निश्चय नहीं, दूसरे के निश्चय का निश्चय या अनुमान है, जो हम बिना किसी प्रकार का प्रमाण पाए केवल अपने आचरण या परिस्थिति विशेष पर दृष्टि रखकर ही कभी-कभी कर लिया करते हैं। (वही) —**आचार्य रामचंद्र शुक्ल**

लड़ाई दे० युद्ध

लालच, लालची

(1) माखी गुड़ मे गड रही, पंख रहे लिपटाय।
हाथ मलै औ सिर धुनै, लालच बुरी बलाय।।
(2) कामी क्रोधी लालची, इनतै भक्ति न होय।
(3) खेत बिगाड़्यो खरतुआ, सभा बिगाड़ी कूर।
भक्ति बिगाड़ी लालची, ज्यों केसर में धूर।। —**कबीर**

लालच हूँ ऐसो भलो, जासों पूरे आस।
चाटे हूँ कहुँ ओस के, मिटत काहु की प्यास।। —**वृन्द**

लेखक, लेखन

कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। —**प्रेमचन्द**

मैं प्रतिदिन दो घण्टे से अधिक कभी नहीं लिखता। दस-बारह घण्टे पढ़ता हूँ। —**शरत्चन्द्र**

या तो अच्छी तरह लिखना सीख ले,
अन्यथा बिलकुल ही न लिखा जाय। —**जॉन ड्राइडेन**

दो प्रकार के लेखकों को अपूर्व बुद्धि का कहा जा सकता हूँ, प्रथम वे हैं जो स्वयं सोचते हैं, और दूसरे वे हैं जो दूसरों को सोचने के लिए बाध्य करते हैं।

—रौक्स

हर समाज का सर्वोच्च गौरव उसके लेखकों से उद्‌भूत होता है।

— डा० जानसन

लेखनी तलवार से अधिक शक्तिशाली होती है। —एडवर्ड जार्ज बुलवर

लेना-देना

स्वयं अपने को लेकर मैं तो प्रतिदिन यही अनुभव करता हूँ कि मेरे भीतरी और बाहरी जीवन के निर्माण में कितने अगणित व्यक्तियों के श्रम और कृपा का हाथ रहा है और इस अनुभूति से उद्दीप्त मेरा अंत:करण कितना छटपटाता है कि मैं कम-से-कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूँ जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है। —आइंस्टाइन

जो लोग समाज से जितना लेते हैं, उतना उसे देते नहीं, समाज के चोर हैं।

—गाँधीजी

लोकतंत्र

(1) लोकतंत्र, अंततोगत्वा, एक जीवन-पद्धति है, सोचने का एक ढंग है, परिस्थितियों से निपटने का एक तरीका है, और उन बातों को बर्दाश्त करने का जिन्हें हम पसंद नही करते। (संसद मे भाषण, 1962)

(2) मेरे निकट लोकतंत्र का अर्थ है शांतिपूर्ण उपायो से समस्याओं को हल करने का प्रयत्न। यदि वह शांतिपूर्ण नही है तो फिर, मेरी समझ में वह लोकतंत्र भी नहीं है। (भाषण 1951)

(3) लोकतंत्र का अर्थ है समता, केवल एक वोट की समता नही, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्थिति की समता। (विश्व०) —जवाहरलाल नेहरू

लोकप्रियता

लोकप्रियता से बचो ! इसमें बहुत-से फंदे हैं. मगर कोई भी सच्चा नही है।

—पैन

जो लोकप्रिय है वह खुद का धनी है। किन्तु जो लोकप्रिय बनता है, उसकी दुर्दशा ही होती है। —रामतीर्थ

लोभ, लोभी

काम क्रोध मद लोभ की जब लग घट में खान ।
तब लगि पंडित मूर्खहू दोनों एक समान ।। —कबीर

(1) तृष्णा केहि न कीन्ह बौरहा ।
(2) ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।
केहि के लोभ बिडंबना कीन्ह न एहि संसार ।। —तुलसीदास

लोभ की चीज हमे हमेशा बड़ी दीखती है, इसलिए नहीं कि वह सचमुच ही बड़ी होती है, बल्कि इसलिए कि उसके प्रति हमारा लोभ है । —टैगोर

(1) लोभियो ! तुम्हारा अक्रोध, तुम्हारा इंद्रिय-निग्रह, तुम्हारी मानापमानसमता, तुम्हारा तप अनुकरणीय है । तुम्हारी निष्ठुरता, तुम्हारी निर्लज्जता, तुम्हारा अविवेक, तुम्हारा अन्याय विगर्हणीय है । तुम धन्य हो ! तुम्हें धिक्कार है ! (चिन्ता० 1)

(2) किसी प्रकार का सुख या आनंद देने वाली वस्तु के संबंध में मन की ऐसी स्थिति को जिसमें उस वस्तु के अभाव की भावना होते ही प्राप्ति, सान्निध्य या रक्षा की प्रबल इच्छा जग पड़े, लोभ कहते हैं ।

(3) लोभ सामान्योन्मुख होता है और प्रेम विशेषोन्मुख ।—रामचन्द्र शुक्ल

लोभ पापस्य कारणम् (लोभ पाप का कारण है ।) —चाणक्य

जिस व्यक्ति पर धन का लोभ छा गया, उसने अपनी ज़िन्दगी के खलिहान को हवा में उड़ा दिया । —शेख सादी

मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, परन्तु लोभ कभी बूढ़ा नही होता । —सुदर्शन

लोभ भी एक छूत की बीमारी है । —शरत्चंद्र

जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक किसी भी अवस्था में लोभ का परित्याग करना कठिन है । —वेदव्यास

व्यापारी का कोई स्वदेश नहीं होता और न लोभी का कोई बाप ।
—एक तुर्की कहावत

बेवकूफ़ चिड़िया दानों को तो देखती है, फंदा नहीं ।—एक अफ़गानी कहावत

वंश दे० कुल

वचन दे० प्रण

वर्तमान

'आज' को पकड़ लो और 'कल' में कम से कम विश्वास करो। —**होरेस**

हमको वर्तमान की चर्चा करनी चाहिए। भविष्य का किसे पता है?

—**मैक्सिम गोर्की**

(1) वर्तमान समय ही मनुष्य का अपना है।

(2) भविष्य को वर्तमान ख़रीदता है। **डॉ० जानसन**

वसुधैव कुटुम्बकम्

अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥
(यह मेरा है यह दूसरे का है—ऐसा संकीर्ण हृदय वाले समझते हैं। उदार व्यक्ति तो पूरे विश्व को कुटुम्ब-सा समझते हैं।) —**हितोपदेश**

हम सारे भारत को अपना परिवार क्यों न मानें? और दरअसल तो सारी मनुष्य जाति हमारा परिवार है। क्या हम सब एक ही वृक्ष की शाखाएँ नहीं है?

—**महात्मा गाँधी**

(1) हमारा एकमात्र अन्तिम लक्ष्य केवल यही हो सकता है कि एक विश्व की स्थापना हो। (भाषण 1948)

(2) अमन के लिए, मुझे कोई सन्देह नही है कि एक विश्व बनकर रहेगा, क्योंकि इसके सिवा दुनिया के रोग का और कोई उपचार नहीं है। (वही)

—**जवाहरलाल नेहरू**

वाणी, बात, बोलना

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन शीतल करै, औरन को सुख होइ॥ —**कबीर**

रहिमन जिह्वा बावरी, कहिगै सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥ —**रहीम**

बात कहन की रीति मैं, है अन्तर अधिकाय।
एक बचन तै रिस बढ़ै, एक बचन तैं जाय॥ —**वृन्द**

कड़ी बात भी हँसकर कही जाय, तो मीठी हो जाती है। —**प्रेमचंद**

गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे। —**हिंदी लोकोक्ति**

कागा काको धन हरै कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाय कै जग वश में कर लेय ।। —अज्ञात

वाक्य

एक क्रियावाली रचना वाक्य है। —पाणिनि

वाक्य उस क्रिया को कहते हैं, जिसके साथ अव्यय, कारक, विशेषण आ सकें। —पतंजलि

पद का ऐसा समूह वाक्य है जो योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति से युक्त हो। —विश्वनाथ

ऐसा पदसमूह जो पूर्ण अर्थ का वाचक हो वाक्य है। —नागेश भट्ट

ऐसी रचना वाक्य है जो किसी उक्ति में अपने से बड़ी रचना का अंग न हो। —ब्लूमफ़ील्ड

व्याकरणिक वर्णन की सबसे बड़ी इकाई वाक्य है। —लॉयन्स

मौन और अनुतान के अंत के मौन के बीच की उक्ति वाक्य है। —स्कॉट और जेम्स स्लेड

एक क्रिया तथा एक या अधिक संज्ञा (संज्ञा पदबंध) की ऐसी रचना वाक्य है, जिसमें संज्ञा और क्रिया विशिष्ट कारकीय संबंध से जुड़ी रहती हैं तथा यह संबंध पूर्णत: अर्थ पर आधारित होता है। —फ़िलमोर

मानव-मस्तिष्क में स्थित किसी अमूर्त संकल्पना का व्यक्त रूप वाक्य है। —चॉम्स्की

वायदा (दे० वचन, बात भी)

मिथ्या वायदा करने से विनम्र इनकार अच्छा। —ई० पी० डे

सच्चे हृदय का बलवान् व्यक्ति अपना वायदा पूरा करने से कभी मुँह नहीं मोड़ेगा। वायदा क़सम से बढ़कर है, जिसे पूरा करना ही होगा। —नैपोलियन

विचार

विचार से बढ़कर कोई राजा नहीं। —सुकरात

कर्म के बिना विचार गर्भपात के समान है, और विचार के बिना कर्म निपट मूर्खता ! —जवाहरलाल नेहरू

विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार प्रस्तुत किया जा चुका हो, लेकिन आख़िरकार वह है उसी का जो उसे सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करे। —**लॉवेल**

जैसे हमारे विचार होते हैं वैसे ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है।

—**स्वेट मार्डेन**

विचारों का अजीर्ण भोजन के अजीर्ण से कहीं बुरा है, क्योंकि भोजन के अजीर्ण की तो दवा है, पर विचारों का अजीर्ण आत्मा को बिगाड़ देता है।

—**गाँधी**

अपने विचारों को अपना बन्दीगृह न बनाओ। —**शेक्सपियर**

मनुष्य जैसा कि अपने हृदय में विचारता है, वैसा ही बन जाता है।

—**बाइबल**

महान् विचार जब कार्य-रूप में परिणत हो जाते हैं, तब महान कृतियाँ बन जाती हैं। —**हैजलिट**

विचार से अधिक ठोस वस्तु ब्रह्माण्ड में नहीं है। —**एमर्सन**

वे व्यक्ति कभी अकेले नही, जिनके साथ सुन्दर विचार हैं। —**पी० सिडनी**

विचार का दीपक बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। —**विनोबा**

विज्ञान

विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान है। —**हर्बर्ट स्पेंसर**

धर्मरहित विज्ञान लँगड़ा है और विज्ञान-रहित धर्म अंधा। —**आइन्स्टाइन**

विज्ञान सदैव ग़लत है। यह किसी समस्या को बिना दस नयी समस्याएँ खड़ी किए हल नही करता। —**जार्ज बर्नार्ड शा**

वैज्ञानिक तरीका ही किसी प्रश्न पर विचार करने का एकमात्र सही तरीका प्रतीत होता है। उसके निकट कोई भी बात स्वयंसिद्ध नही है। उसमें अंधविश्वास के लिए स्थान नहीं, और न होना ही चाहिए। वह मानसिक उदारता को प्रोत्साहन देता है और अनवरत प्रयोग द्वारा ही सत्य तक पहुँचने का प्रयास करता है। (विश्व०) —**जवाहरलाल नेहरू**

विद्या

नास्ति विद्यासमं चक्षुः। (विद्या के समान नेत्र नहीं है।) —**महाभारत**

मातेव का या सुखदा सुविद्या किमेधते दानवशात् सुविद्या ।
(माता के समान सुख देने वाली कौन है ? उत्तम विद्या । देने से क्या बढ़ती है ? उत्तम विद्या ।) —शंकराचार्य

(1) अनभ्यासे विषं विद्या ।
(अभ्यास न करने से विद्या विष हो जाती है ।)
(2) विद्या सब वस्तुओं से बढ़कर है, क्योंकि न तो इसे चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई बाँट सकता है और यह खर्च करने पर घटने के बजाय बढ़ती जाती है । —हितोपदेश

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो बुद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात् ।।
(हे सरस्वती ! आपका यह कोई अपूर्व कोष है जो व्यय करने से बढ़ता है तथा संचय करने से घटता है ।) —अज्ञात

(1) विद्या रूपं कुरूपाणाम् । (कुरूप मनुष्यों का सौंदर्य विद्या है ।)
(2) अल्पविद्या भयंकरी । (कम विद्या भयंकर होती है ।)
—संस्कृत लोकोक्तियाँ

थोड़ी विद्या भयावह होती है । —पोप

नीम हकीम ख़तर-ए-जान । —एक फ़ारसी लोकोक्ति

उत्तम विद्या लीजिए यदपि नीच घर होय ।
परो अपावन ठौर में, कंचन तजै न कोय । —तुलसी

बिद्या बिन न बिराजही, जदपि सरूप कुलीन ।
ज्यों सोभा पावै नहीं, टेसू बास-बिहीन ।। -वृन्द

इल्म से जाना था कि कुछ जानेंगे ।
जाना तो जाना कि न जाना कुछ भी ।
आदमियत और शै है, इल्म है कुछ और चीज़,
कितना तोते को पढ़ाया पर वह हैवाँ ही रहा । —जौक

विद्यार्थी

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ?
(सुख चाहने वाले को कहाँ विद्या और विद्या चाहने वाले को कहाँ सुख ?)
—चाणक्य

अशुद्ध हृदय लेकर अपनी पुस्तकों या अपने शिक्षकों के पास मत जाओ।
—गांधी

विद्वान

विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥
(विद्वत्ता तथा राजत्व की कभी कोई समानता नहीं। राजा का अपने देश में ही सम्मान होता है जबकि विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है।) —पंचतंत्र

विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्।
(विद्वानों के परिश्रम को विद्वान ही जानता है।) —एक संस्कृत लोकोक्ति

विद्वान वे होते हैं जो अपने ज्ञान पर अमल करते हैं। —मुहम्मद साहब

असंयमी विद्वान अंधा मशालदार है। —शेख सादी

विद्वान अन्धा होता है क्योंकि वह अपने अज्ञान को नही देखता।
—विक्टर ह्यूगो

विनय

विनय बड़ों की शोभा है। —बाणभट्ट

अविनयी लोगों का अन्त विपत्तिमय होता है। —भारवि

विनय के बिना संपत्ति क्या? —भामह

बलवान का बल उसका विनय है। —तिरुवल्लुवर

विनयी ही जगद्विजयी है। —बाइबिल

विनाश

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।
(विनाश के समय उल्टी बुद्धि हो जाती है।) —चाणक्य

विपत्ति

विनिपतितानां नराणां प्रियकारी दुर्लभो भवति।
(विपत्ति में पड़े हुए मनुष्यों का प्रिय करने वाले दुर्लभ होते हैं।) —शूद्रक
विपदि विपरीतत्वं व्रजन्ति मित्राण्यपि।
(विपत्ति में मित्र भी विपरीत हो जाते हैं।) —संस्कृत लोकोक्ति

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव यांत्यापदः ।
(भाग्यहीन मनुष्य जहाँ भी जाता है, प्रायः विपत्ति भी वहीं जाती है।)
—भर्तृहरि

विपत्ति से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं। —डिजरायली

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला।
—प्रेमचन्द

हे परमेश्वर ! मुझे पग-पग पर विपत्तियाँ दे, क्योंकि विपत्ति में तेरे दर्शन होते हैं। (महाभारत) —कुन्ती

धीरज धरम मित्र अरु नारी। आपत्काल परखिए चारी ॥ —तुलसीदास

विपत्ति मनुष्य को पक्का बनाती है और सच्चे-झूठे की पहिचान कराती है।
—सुकरात

होता नही है कोई बुरे वक्त का शरीक
पत्ते भी भागते हैं ख़िज़ाँ में शजर से दूर।
(ख़िज़ाँ = पतझर, शजर = डाली) —आतिश

बाग़बाँ ने आग दी जब आशियाने को मेरे,
जिन पै तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे। —साकिब

रहिमन विपदा हूँ भली जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ॥ —रहीम

विपत्ति के लाभ मधुर होते हैं। —शेक्सपियर

विवाह

आदौ कुलं परीक्षेत् ततो विद्यां ततो वयः।
शीलं धनं ततो रूपं देशं पश्चात् विवाहयेत् ॥
(पहले कुल की परीक्षा करे, फिर विद्या की, तदन्तर आयु की, फिर शील, धन और रूप की तथा बाद में देश की परीक्षा करे, तब विवाह करे।) —अज्ञात

लायक ही सों कीजिए ब्याह बैर अरु प्रीति। —तुलसीदास

रहिमन ब्याह बियाधि है, सकहु तो जाहु बचाइ।
पाइन बेरी परत है, ढोल बजाइ बजाइ॥ —रहीम

शादी जरूर करो। अच्छी पत्नी मिलेगी तो सुखी होगे और ख़राब मिलेगी तो तत्त्वज्ञानी बनोगे। यह भी क्या कम है? —सुकरात

पुरुष प्रणय-निवेदन के समय अप्रैल होते हैं और विवाह के समय दिसम्बर। कुमारियाँ जब तक कुमारियाँ होती हैं तब तक मई होती हैं, पर उनके पत्नी बनते ही आकाश बदल जाता है। —**शेक्सपियर**

स्त्री का कर्तव्य है कि वह जल्दी से जल्दी विवाहित हो जाए, और पुरुष का कर्तव्य है कि वह जितने अधिक समय तक अविवाहित रह सके, रहे।

—**जार्ज बर्नार्ड शा**

प्रश्न—आदमी किस अवस्था में विवाह करे ?

उत्तर—नौजवान अभी नहीं, प्रौढ़ कभी नहीं। —**बेकन**

विवाह को एक पिंजड़े के सदृश कहा जा सकता है। इसके बाहर के पक्षी तो प्रवेश न कर पाने से परेशान रहते हैं, अन्दर के पक्षी बाहर न हो पाने से।

—**मौंटेन**

प्रत्येक विवाहित युगल में कम से कम एक मूर्ख होता है। —**हेनरी फील्डिंग**

प्रत्येक स्त्री को विवाह करना चाहिए और किसी पुरुष को नहीं।

—**डिज़रायली**

अपनी आँख की अपेक्षा अपने कान से पत्नी चुनो। —**टामस फ़ुलर**

विवाह संसार को सर्वाधिक सभ्य बनाने वाला है। —**राबर्ट हॉल**

यद्यपि स्त्रियाँ स्वर्गदूत है तथापि विवाह शैतान है। —**बायरन**

कोई व्यक्ति विवाहित ही नहीं हुआ, तो यह उसका नरक है। दूसरा व्यक्ति विवाहित है तो यह उसकी विपत्ति है। —**राबर्ट बर्टन**

पहली बार विवाह कर्तव्य है, दूसरी बार मूर्खता और तीसरी बार पागलपन। —**एक डच लोकोक्ति**

अविवाहित मनुष्य मोर होता है, सगाई हो चुका सिंह होता है और विवाहित गधा होता है। —**एक जर्मन लोकोक्ति**

विवेक

भ्रान्ति भाजि भवति क्व विवेकः।
(भ्रम में पड़े हुए व्यक्ति को विवेक कहाँ ?) —**माघ**

(1) निज हित अनहित पशु पहिचाना।
(2)बिनु-बिबेक संसार घोर-निधि पार न पावै कोई। —**तुलसीदास**

विवेक वीरता का श्रेष्ठतर भाग है । —शेक्सपियर

उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं ।
—वर्ड्सवर्थ

विश्राम

सभी सच्चा काम आराम है । —रामतीर्थ

आराम हराम है । —नेहरू

इस समय विश्राम की बात तुम कैसे कर सकते हो ? जब हम लोग इस शरीर को त्यागेंगे, तभी विश्राम करेंगे । —विवेकानन्द

जैसे नेत्रों के लिए पलक, वैसे ही काम के लिए विश्राम ।
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विश्राम करने का समय वही होता है जब तुम्हारे पास उसके लिए समय न हो । —अज्ञात

मेरे विचार में काम का बदलना ही विश्राम है, वैसे मस्तिष्क भला विश्राम कहाँ करता है ? —भोलानाथ तिवारी

विश्वबन्धुत्व

समग्र मानव जाति एक है । —आचार्य भद्रबाहु

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।
(उदार चरित्र वालों के लिए तो सारा संसार ही अपना कुटुम्ब होता है ।)
—महोपनिषद्

घरे घरे मोर घर आछे आमि सेइ घर मरि खूँजिया ।
देशे-देशे मोर देश आछे आमि सेइ देश नीबो जूझिया ।।
(प्रत्येक घर में मेरा घर है, मैं उसी घर की खोज कर रहा हूँ । प्रत्येक देश में मेरा देश है, मैं उसी देश की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा हूँ ।)
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

यह विशाल संसार मेरा घर है । —रामतीर्थ

विश्व मेरा देश है और भलाई करना मेरा धर्म । —टामस पेन

विश्वविद्यालय

लड़कों को देखता हूँ तो जी चाहता है कि ये यूनिवर्सिटी में न पढ़ते तो

अच्छा होता। मुदम्मिग़ (घमंडी), बदतमीज़, कज़खुल्क (दुश्शील), मिज़ाज में हद दर्जा रुऊबत (उद्दंडता), नाहमदर्द, ख़ुदपसंद और खुदख़र (उद्दंड)। यह आम रविश है। मुसतसनियात (अपवाद) भी हैं, लेकिन बहुत कम। लड़कियों में भी यह नकाइस (दोष) नुमायाँ हैं। आख़िर इन्होंने अपने भाइयों ही से तो सबक़ लिया है। (चिट्ठी-पत्री) —**प्रेमचंद**

विचारहीन रूढ़ियों के पालन-पोषण का भार विश्वविद्यालय को देना पुत्र को राक्षसी के हाथ में देने के बराबर है। —**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

विश्वविद्यालय तो प्रकाश, स्वाधीनता और ज्ञान का स्थान होना चाहिए। —**डिज़रायली**

विश्वास

मर्यादातीनं न कदाचिदपि विश्वसेत्।
(कभी भी मर्यादा से अधिक विश्वास न करें।) —**चाणक्य**

कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा। —**तुलसीदास**

विश्वास तो क्रय नही किया जाता। —**जयशंकर प्रसाद**

सच्चा विश्वास जगत में व्यर्थ नहीं होता। —**शरत्चंद्र**

मनुष्य पर विश्वास करो ये सचमुच स्वर्णिम शब्द हैं। —**सैमुअल स्माइल्स**

जिसने एक बार विश्वास भंग किया है, उस पर विश्वास मत करो। —**शेक्सपियर**

अपना विश्वास कभी भी न खोओ। —**महात्मा गाँधी**

जिस चीज़ में हमारा विश्वास नही है, उससे हम कभी लाभान्वित नहीं हो सकते। —**कारलाइल**

न विश्वास करेंगे और न धोखा खायेंगे।
न विश्वास करो न धोखा खाओ। —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

वीर, वीरता

गर्जन्ति न वृथा शूरा निर्जला इव तोयदाः। (शूर जन जलहीन बादल के समान व्यर्थ गर्जना नहीं किया करते।) —**वाल्मीकि**

वीरों में परस्पर द्वेष बहुत हुआ करता है। —**भवभूति**

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रलापु॥ —**तुलसीदास**

कायर मनुष्य अपनी मृत्यु से पहले अनेक बार मरते हैं, किन्तु वीर व्यक्ति केवल एक बार मृत्यु का आस्वादन करते हैं। —**शेक्सपियर**

वीरता मारने में नहीं, मरने में है, किसी की इज्जत बचाने में है, इज्जत लेने में नहीं। —**गाँधी**

भय पर आत्मा की शानदार जीत ही वीरता है। —**एमियल**

वृद्ध

न तेन स्थविरो भवति येनास्य पलितं शिरः।
बालोपि यः प्रजानाति तं देवाः स्थविरं विदुः॥
(कोई सिर के बाल श्वेत होने से वृद्ध नहीं होता। बालक होकर भी यदि कोई ज्ञान-सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जाता है।) —**महाभारत**

न ते वृद्धो भवति ये नास्य पलितं सिरः।
यो वै युवाप्यधीया नस्तं देवाः स्थविर विदुः॥
(केश श्वेत होने से कोई वृद्ध नहीं होता। जो युवा होते हुए भी अध्ययनशील है, देवगण उसी को वृद्ध मानते हैं।) —**मनुस्मृति**

काम करने वाला मरने से कुछ घंटे पूर्व ही बुड्ढा होता है। (मृग)
—**वृन्दावनलाल वर्मा**

बुढ़ापा शरीर का उतना धर्म नहीं है, जितना मन का। —**विद्यानिवास मिश्र**

वृद्धावस्था विचार करती है, यौवन साहस करता है।
—**राउपाख** (जर्मन लेखक)

यौवन भारी भूल है, पुरुपत्व संघर्ष है, वृद्धावस्था पश्चात्ताप है।—**डिजरायली**

(1) जब वृद्धावस्था आती है तो बुद्धि चली जाती है।
(2) वृद्ध व्यक्ति दुगुना बच्चा होता है। —**शेक्सपियर**

बचपन और पचपन एक होते हैं। —**एक हिन्दी लोकोक्ति**

वेश्या

(1) जब तक जायदाद क़ायम है, दुनिया में ग़रीबी रहेगी, जब तक विवाह की प्रथा क़ायम है, तब तक वेश्यावृत्ति रहेगी। (यामा)

(2) वेश्यावृत्ति एक भयंकर बीमारी है। इसके लिए स्त्रियों की तुलना में पुरुष उत्तरदायी हैं। आख़िर जिस चीज़ की माँग होती है, वही तो बिकती है। (वही)

—कुप्रिन

(1) वेश्या बरस घटावहीं जोगी बरस बढ़ाय।

(2) वेश्या की प्रीत जैसे बालू की भीत। —हिंदी लोकोक्तियाँ

व्यंग्य

व्यंग्य और क्रोध में आग और तेल का संबंध है। —प्रेमचन्द

शीतल वाणी और मधुर व्यवहार से क्या वन्य-पशु भी वश में नहीं हो जाते? राजन्! संसार भर के उपद्रवों का मूल व्यंग्य है। हृदय में जितना यह घुमता है, उतनी कटार नहीं। वाक्-संयम विश्व मैत्री की पहली सीढ़ी है। (अजात०)

—जयशंकर प्रसाद

व्यंजना (शक्ति)

विरतास्वभिधाद्यासु ययाऽर्थो बोध्यते परः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥

(अभिधा और लक्षणा द्वारा अपना-अपना अर्थ बताकर शांत हो जाने पर जिसके द्वारा अन्य अर्थ का बोध न होता है उसे व्यजना शब्दशक्ति कहते हैं।)

—विश्वनाथ (साहित्य)

व्यंजना शक्ति ऐसे अर्थ को बतलाती है जो अभिधा, लक्षणा या तात्पर्यवृत्ति द्वारा उपलब्ध नहीं होता। व्यंजना व्यापार का नाम ध्वनन, गमन और प्रत्यायन भी है। यह शक्ति या तो शब्द, अर्थ और प्रत्ययगत होती है या उपसर्गगत। (रस)

—आचार्य रामचंद्र शुक्ल

व्यवहार

व्यवहार एक दर्पण है, जिसमें प्रत्येक अपना प्रतिबिम्ब देख सकता है।—गेटे

दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार कदापि मत करो जैसा कि तुम दूसरों से पसंद नहीं करते। —कन्फ़्यूशियस

मनुष्य नियम बनाया करते हैं, स्त्रियाँ व्यवहार। —डी० सीगर

जो बात सिद्धान्त से ग़लत है, वह व्यवहार में कभी उचित नहीं है।

—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

व्यवहार पोशाक की भाँति ही होना चाहिए, जो तंग न हो बल्कि ऐसा हो जिसमें हरकत और कसरत आसानी से हो सके। —बेकन

व्यायाम

(1) व्यायाम के बिना दिमाग़ भी वैसे ही कमज़ोर पड़ जाता है, जैसे शरीर।

(2) शारीरिक और मानसिक दोनों व्यायाम सीमा के अन्दर ही रहकर करने चाहिए। —महात्मा गाँधी

व्रत

अव्रतो हिनोति न।

(जो व्रत का आचरण नहीं करता, उसे कुछ भी नहीं मिलता।) —सामवेद

व्रत का पालन करना सज्जनों का आभूषण है। —भारवि

(1) व्रत में अपार शक्ति होती है, क्योंकि उसके पीछे मनोवैज्ञानिक दृढ़ता होती है।

(2) संयम के बिना व्रत असम्भव है, इसलिए पहले सामान्य संयम का पालन करना सीख लेने पर ही व्रत लेने और उसे पूरा करने का बल मिलता है। —महात्मा गाँधी

शंका

शंका अपने दोषों के कारण ही होती है। —शूद्रक

शंका के मूल में श्रद्धा का अभाव रहता है। —महात्मा गाँधी

ज्ञान के साथ-साथ शंका भी बढ़ती है। हम ठीक तभी जानते हैं, जब कम जानते हैं। —गेटे

मानवीय ज्ञान शंका का उद्‌गम है। —ग्रेवाइल

जहाँ शंका है, वहाँ सत्य है। —गेमेलील बेली

जब शंका हो तो काम करने से रुक जाओ। —जरथुस्त्र

शंका का अन्त शान्ति का प्रारम्भ है। —पैट्रार्क

शंका तो भय का ही वितर्क-प्रधान रूप है जो आलंबन के दूरस्थ होने पर प्रकट होता है। इसमें वेग नहीं होता है और न आलंबन उतना स्फुट होता है। —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

शकुन

ग्रहों की गति, स्वप्न, अपशकुन, मनौती संयोग से फल देते हैं, इसीलिए विद्वान् इनसे डरते नहीं। —**वेणीसंहार**

शक्ति, शक्तिशाली

छुई-मुई की तरह मुरझा सकना कितनी बड़ी शक्ति का गुप्त रूप है। —**हजारीप्रसाद द्विवेदी**

जिसकी लाठी उसकी भैंस। —**हिंदी लोकोक्ति**

जिसने अपने को वश में कर लिया वही सर्वाधिक शक्तिशाली है। —**सेनेका**

हृदय से शक्ति आती है बुद्धि से नही। —**मैक्सिम गोर्की**

जितनी बड़ी शक्ति होती है, उतना ही बड़ा उसका दुरुपयोग होता है। —**एडमंड बर्क**

नम्रता कठोरता से अधिक शक्तिशाली है, जल चट्टान से अधिक शक्तिशाली है और प्रेम बल से अधिक शक्तिशाली है। —**हरमन हेस**

मनुष्य में शक्ति की उतनी कमी नही है जितनी कि इच्छा अथवा लगन की। —**विक्टर ह्यूगो**

शक्ति द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त करना अधूरी विजय है। —**मिल्टन**

धैर्य और सज्जनता ही शक्ति है। —**ले हण्ट**

जिसके पास अपनी शक्ति नहीं उसे भगवान् भी शक्ति नहीं देता। शक्ति आत्मा के अन्दर से आती है, बाहर से नहीं। —**सुदर्शन**

शत्रु, शत्रुता (दे० दुश्मन भी)

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।

(आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।) —**गीता**

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो॥

(वैर, वैर से कभी शान्त नही होता, अवैर से ही वैर शान्त होता है—यही संसार का सनातन नियम है।) —**धम्मपद**

न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
कारणादेव जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।

(न कोई किसी का मित्र होता है और न कोई किसी का शत्रु होता है। कारणवश ही मित्र और शत्रु हो जाते हैं।) —गरुणपुराण

(1) रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिय न छोट करि।
(2) रिपु पर दया परम कदराई।
(3) नाथ बैरु कीजिय ताही सों।
बुधि बल सकिय जीति जाही सों॥ —तुलसी

शत्रु की उचित प्रशंसा करना मनुष्य का धर्म है। —जयशंकर प्रसाद

जात के दुश्मन जात। काठ के दुश्मन काठ। —हिंदी लोकोक्ति

अरि छोटो गनिए नहीं जाते होय बिगार।
तृन समूह को छिनक मे जार करत है छार॥ —वृन्द

यदि तुम शत्रु चाहते हो तो दूसरे से आगे बढ़ो, यदि मित्र तो दूसरे को अपने से आगे बढ़ने दो। —कोल्टन

बुरे विचार ही हमारी सुख-शान्ति और विजय के शत्रु हैं। —स्वेट मार्डेन

हमारी इन्द्रियाँ ही हमारी सबसे बड़ी शत्रु हैं। —शंकराचार्य

किसी से शत्रुता या वैर करना अपने विकास को रोकना है। —विनोबा

नहिं कोऊ ऐसो कहूँ, जाको रिपु जग नाहि।
मीन कहा केहिको दुखद, हने जाहि जल माहि॥ —रामचरित उपाध्याय

शब्द

एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च काम धुग् भवति।

(एक भी शब्द यदि सम्यक् रीति से ज्ञात हो तथा सुप्रयुक्त हो तो वह इस लोक में तथा स्वर्ग में मनोरथ को पूरा करने वाला होता है।) —पतंजलि

इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

(ये तीनों भुवन गाढ़ान्धकार से व्याप्त हो जाते, यदि 'शब्द' नामक ज्योति सम्पूर्ण संसार को प्रकाशित नहीं करती।) —अज्ञात

सबदहि ताला सबदहि कूँची, सबदहि सबद भया उजियाला। —गोरखनाथ

शब्दों में चमत्कार भरा होता है। शब्द भावना को देह देता है और भावना शब्द के सहारे साकार बनती है। —महात्मा गांधी

शब्द बड़ी साधना से उठ पाते हैं। —जैनेन्द्र

(1) जो थोड़े शब्दों में अपनी बात नहीं कह पाते वे ही विस्तार देते हैं।

(2) किसी शब्द का प्रयोग तब करो जब समझ लो कि दूसरा कोई शब्द इस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। —तिरुवल्लुवर

हमारे ये समस्त शब्द केवल जूठन हैं, जो मस्तिष्क के भोज मे गिरती है। —खलील जिब्रान

शब्द तो प्रेत मात्र हैं, यदि वे हृदय की बात न कहे। —अरविंद

कोमल शब्द कठोर तर्क होने हैं। —टॉमस फ़ुलर

शब्द सार्थक स्वतंत्र भाषिक इकाई होते हैं। —भोलानाथ तिवारी

शराब

मद्य पीने से अर्थ, धर्म और काम तीनों नष्ट हो जाते हैं। —वाल्मीकि

मदिरा और मित्र जितने पुराने होते जाते हैं, वे अधिक मूल्यवान होते जाते हैं। —इतालवी कहावत

जब शराब अन्दर तब बुद्धि बाहर। —टामस बेकन

उसकी बेटी ने उठा रखी दुनिया सर पर
ख़ैरियत गुजरी कि अंगूर के बेटा न हुआ। —अकबर इलाहाबादी

शराबियों की सरकार शराबबन्दी नही करेगी। —लोकमान्य तिलक

शरीर

देहो देवालय· प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः।
(शरीर को देवालय कहा गया है, क्योंकि जीव केवल शिव है।)
—स्कन्दोपनिषद्

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
(निश्चय ही शरीर सर्वश्रेष्ठ धर्म-साधन है।) —कालिदास

प्रतिक्षणमयं कायः क्षीयमाणो न लभ्यते।
(प्रतिक्षण यह शरीर नष्ट होता रहता है, किन्तु दीखता नही।)—हितोपदेश

छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम सरीरा। —तुलसी

सुन्दर देही देखि के, उपजत है अनुराग।
मढ़ी न होती चाम की, जीवत खाते काग ॥ —मलूकदास

यह माटी का महल है छार मिलै छन माहिं।
चार सकस कांधे धरे मरघट कूँ ले जाहिं ॥ —गरीबदास

रहिमन ठठरी धूरि की रही पवन ते पूरि।
गाँठ युक्ति की खुलि गई अन्त धूरि की धूरि ॥ --रहीम

शान्ति

न संरम्भेण सिध्यन्ति सर्वेऽर्थाः सान्त्वया यथा।
(क्रोध से सब काम वैसे नही बनते, जैसे शान्ति से।) —भागवत

अन्तः शीतलतायां तु लब्धायां शीतलं जगत्।
(अपने भीतर शान्ति प्राप्त हो जाने पर सारा संसार भी शांत दिखाई देने लगता है।) —योगवासिष्ठ

शान्ति ठीक वहाँ से आरम्भ होती है, जहाँ महत्त्वाकांक्षा का अन्त हो।
—यंग

युद्ध के लिए तैयार रहना शान्ति स्थापित करने के लिए एक बहुत प्रभावशाली साधन है। —वाशिंगटन

(1) मनुष्य की शान्ति की परख समाज में ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नहीं।

(2) शान्ति तभी मिल सकती है, जब मनुष्य का अपनी वृत्तियों पर नियन्त्रण हो।

(3) शांति बाहर की किसी चीज़ से नही मिलती। वह अपने अन्दर की चीज है।

(4) मनुष्य की शांति की कसौटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नहीं। —महात्मा गाँधी

शांति की विजय का महत्त्व, लड़ाई की विजय से किसी तरह भी कम नही।
—मिल्टन

अगर शान्ति पाना चाहते हो तो लोकप्रियता से बचो। —अब्राहम लिंकन

मौन के वृक्ष पर शान्ति का फल लगता है। —अरबी कहावत

शान्ति के अतिरिक्त दूसरा कोई आनन्द नही है। —टेनिसन

शांति से घृणा हो तो प्रसिद्ध बनो। —**भोलानाथ तिवारी**

शासक, शासन

सर्वोत्तम शासन वह है जो हमें अपने पर शासन रखना सिखाता है।

—**गोथे**

सत्ता शक्तिमानों को निर्बलों की रक्षा के लिए मिली है, औरों को डराने के लिए नही। (चित्र) —**प्रसाद**

महलों में रहने वाला आदमी राज्य नहीं चला सकता। —**महात्मा गाँधी**

हम पर जितना कम शासन हो, उतना अच्छा। —**एमर्सन**

शासन तो मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव की बुद्धिमत्ता का एक आविष्कार है। —**एडमंड बर्क**

(1) शासन का दोष समस्त देश का अपराध है।

(2) समाज हमारी आवश्यकताओं की देन है और शासन हमारी दुष्टता की। —**टामसपेन**

विश्व में अराजकता के पश्चात सबसे खराब चीज शासन है।

—**हेनरी वार्ड बीचर**

शासन का सुदृढ़ आधार न्याय है। —**विल्सन**

शिक्षा

सा विद्या या विमुक्तये। (विद्या या शिक्षा वह है जो हमे मुक्त करे।)

—**संस्कृत लोकोक्ति**

आजकल शिक्षा तो रोटी कमाने का एक धंधा-सा हो बैठी है। यह शिक्षा नही, मज़दूरी है। उससे राष्ट्र की उन्नति नही, उलटे अवनति ही होगी।

—**लोकमान्य तिलक**

(1) शिक्षा का उद्देश्य है विद्यार्थी को मनुष्य बनाना।

(2) शिक्षा एक प्रकार का योग है।

(3) यदि हम सीखना चाहें तो हमारी हर भूल हमें कुछ शिक्षा दे सकती है।

(4) शिक्षा का विषय है चरित्र गढ़ना।

(5) जिस शिक्षा या विद्या से त्रिविध—आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मक—मुक्ति मिलती है, वही वास्तविक शिक्षा या विद्या है।

(6) सच्ची शिक्षा तो वह है जिसके द्वारा हम अपने को, आत्मा को, ईश्वर को, सत्य को पहचान सकें।

(7) मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारे कॉलेजों में जो कला की शिक्षा दी जाती है, वह बिलकुल फ़ज़ूल है और उससे शिक्षितों मे बेकारी फैलने के अलावा और कुछ नहीं होता।

(8) शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही सर्वोत्तम ढंग से हो सकती है।

—**महात्मा गाँधी**

जनता जो कुछ सीखती है वह घटना-क्रम की पाठशाला मे सीखती है और दु:ख-दर्द ही उसका शिक्षक है। —**जवाहरलाल नेहरू**

शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य आत्मनिर्भर बनाना है। —**सेमुअल स्माइल्स**

सीखे हुए को भूल जाने पर जो कुछ बचा रहता है, वही शिक्षा है।

—**स्किनर**

शिक्षा क्या है ? क्या पुस्तकों का ज्ञान ? क़तई नही; संसार, मनुष्य और कार्य-कलापों का पारस्परिक संयोग ही शिक्षा है। —**बर्क**

शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण है। —**हर्बट स्पेन्सर**

शिक्षा का ध्येय मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि करना ही नही, अपितु उसका ध्येय मनुष्य के मस्तिष्क को विकसित करना भी है। —**डाउंट**

सौ शिक्षक एक बालक को उतनी शिक्षा नही दे सकते जितना एक माता दे सकती है। —**हरबर्ट**

(1) जो शिक्षा शिक्षा के नाम पर मन को ढक देती है, उसे पढ़ना कहा जा सकता है, सीखना हरगिज नही।

(2) शिक्षा को अपनाने में सर्वप्रधान सहायक है अपनी भाषा। शिक्षा का सारा भोजन उसी भाषा के रसायन से हमारा अपना भोजन होता है।

(3) मातृभाषा में शिक्षा की धारा प्रशस्त न हो तो इस क्रियाहीन देश के मरुवासी मन का क्या होगा ? —**रवींद्रनाथ ठाकुर**

(1) कभी-कभी हमें उन लोगों से शिक्षा मिलती है. जिन्हें अभिमानवश हम अज्ञानी समझते हैं।

(2) जिसके पास जितनी ही बड़ी डिग्री है, उसका स्वार्थ भी उतना ही बढ़ा हुआ है।

(3) संपूर्ण शिक्षा से मेरा आशय उस शिक्षा से है जो सर्वांगपूर्ण हो, जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह सभी के विकास का अवसर मिले। शिक्षा का वर्तमान आदर्श यही है। (कुछ) —**प्रेमचंद**

शील

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः॥

(पुरुष में शील ही प्रधान है। जिसका वही नष्ट हो जाता है, इस संसार में उसका जीवन, धन और बन्धुओं से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।) —**वेदव्यास**

किं भूषणाम् भूषणमस्ति शीलं।
(भूषणों में उत्तम भूषण क्या है? शील) —**शंकराचार्य**

शीलं हि विदुषां धनम्। (शील ही विद्वानों का धन है।) —**सोमदेव**

शीलं परं भूषणम्। (शील सर्वोत्तम आभूषण है।) —**भर्तृहरि**

गिरही सो जो गिरहै काया। अभिअन्तर की त्यागे माया।
सहज सील का धरै सरीर। सो गिरही गंगा का नीर। —**गोरखनाथ**

भूषन रतन अनेक जग पै न सील सम कोय।
सील जासु नैनन बसत सो जग भूषन होय॥ —**रत्नावली**

नियम और शील धर्म के दो अंग है। नियम का संबंध विवेक से है और शील का हृदय से। सत्य बोलना, प्रतिज्ञा का पालन करना नियम के अंतर्गत है। दया, क्षमा, वात्सल्य, कृतज्ञता आदि शील के अतर्गत है। नियम के लिए आचरण ही देखा जाता है, हृदय का भाव नही देखा जाता। केवल नाम की इच्छा रखने वाला पाखंडी भी नियम का पालन कर सकता है—और पूरा तरह कर सकता हैं, पर शील के लिए सात्विक हृदय चाहिए। (गो० तु०) —**रामचन्द्र शुक्ल**

शुक्रिया दे० कृपया

शैली

अर्थगत विशेषता के आधार पर ही भाषा और अभिव्यंजन-प्रणाली की विशेषता—शैली की विशेषता—खड़ी हो सकती है। (हि० सा०)

—**रामचंद्र शुक्ल**

शैली उस भाषा की विशेषता है जिससे हम अपने विचारों और भावों को ठीक-ठीक व्यक्त करते हैं। —**गेटे**

शैली स्वयं व्यक्ति ही है। —बफ़ों

शैली वैयक्तिक विशेषता है। —जानसन

शैली लेखक के मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि है। —गेटे

शैली विचारों की पोशाक है। —चेस्टरफ़ील्ड

भाषिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग ही शैली है। —भोलानाथ तिवारी

श्रद्धा

श्रद्धाधनं श्रेष्ठतमं धनेभ्यः। (धनों में श्रद्धा श्रेष्ठतम धन है।) —अश्वघोष

सद्धाय तरती ओघं। (मनुष्य श्रद्धा से संसार-प्रवाह को पार कर जाता है।) —सुत्तनिपात

श्रद्धा बिना धर्म नहिं कोई। —तुलसीदास

(1) श्रद्धा सामर्थ्य के प्रति होती है और दया असामर्थ्य के प्रति।
(2) यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण है। —रामचन्द्र शुक्ल

(1) श्रद्धा के बिना ज्ञान लँगड़ा ही रहता है।
(2) श्रद्धा ही ज़िन्दगी का सूरज है।
(3) बुद्धि और तर्क का मेल अच्छा है, पर श्रद्धा के मिले बिना त्रिवेणी नहीं बनती। —महात्मा गाँधी

मानो तो देव नहीं तो पत्थर। —एक हिन्दी लोकोक्ति

श्रम

जिन देशों में हाथ और मुँह पर मज़दूरी की धूल नही पड़ने पाती वे धर्म और कलाकौशल मे कभी उन्नति नही कर सकते। —सरदार पूर्णसिंह

विचारपूर्वक किया हुआ श्रम उच्च से उच्च प्रकार की समाजसेवा है। —महात्मा गाँधी

श्रम करने में ही मानव की मानवता है। —विनोबा भावे

जो श्रम नही करता दूसरों के श्रम पर जीवित रहता है, सबसे बड़ा हिंसक होता है। —लक्ष्मीनारायण मिश्र

ईमानदारी से परिश्रम करने पर मुख सुन्दर लगता है। —टॉमस डेकर

श्रम प्रेम को प्रत्यक्ष करता है। —ख़लील जिब्रान

संकट

संकट का काल ही मानव की कसौटी है। —टॉमस पेन

संकट ही चरित्र को निखार कर नैतिक बल प्रदान करते हैं।

—सैमुअल स्माइल्स

संकट पहले अज्ञान और दुर्बलता से उत्पन्न होते हैं फिर ज्ञान और शक्ति की प्राप्ति कराते हैं। — जेम्स एलेन

ख़तरा हमारी छिपी हुई हिम्मतों की कुंजी है। —प्रेमचन्द

संकल्प

संकल्पो वाव मनसो भूयान्।
(संकल्प ही मन से बढ़कर है।) —छान्दोग्योपनिषद्

महान् संकल्प ही महान फल का जनक होता है। —हजारीप्रसाद द्विवेदी

सर्व: स्वसंकल्पवशाल्लघु भवति वा गुरुः।
(सब कुछ अपने संकल्प द्वारा ही छोटा या बड़ा बन जाता है।)

—योगवासिष्ठ

सब व्रत, यम, धर्म आदि संकल्प से ही होते हैं। —मनुस्मृति

अच्छे काम करने के लिए सम्पत्ति की आवश्यकता कम पड़ती है, अच्छे हृदय और संकल्प की अधिक। —मूर

इस संसार मे प्रत्येक वस्तु संकल्प-शक्ति पर निर्भर है। —डिजराइली

दृढ़ संकल्प एक क़िले के समान है जोकि भयंकर प्रलोभनों से हमारी रक्षा करता है। —महात्मा गाँधी

संकोच

(1) लज्जा का एक हल्का रूप संकोच है जो किसी काम को करने के पहले ही होता है। (चिन्ता०-1)

(2) संकोच इस बात के ध्यान या आशंका से होता है कि जो कुछ हम करने जा रहे हैं वह किसी को अप्रिय या बेढंगा तो न लगेगा, उससे हमारी दुःशीलता या धृष्टता तो न प्रकट होगी। (वही) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

संग दे० संगति

संगठन

संघे शक्तिः कलियुगे ।
(कलियुग में शक्ति संगठन में होती है ।) —एक संस्कृत लोकोक्ति

संगठन शक्ति है और उसका रहस्य आज्ञापालन है । —विवेकानन्द

संगठन में ही शक्ति है । —एक हिन्दी कहावत

संगठन मनुष्य के लिए सर्वोत्तम है, चाहे वह अपनी ही जाति के साथ हो या किसी अजनबी के साथ, क्योंकि चावल जब अपनी भूसी से अलग हो जाता है तो वह लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं जम सकता । —हितोपदेश

(1) संगठन का पाठ कोई चीटियों से सीखे ।
(2) संगठन के बिना न तो कोई आन्दोलन सफल हो सकता है और न किसी अच्छे हेतु का परिणाम निकल सकता है । —महात्मा गाँधी

संगति

वासो न संगः वह कैर्विधेयो मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।
(किन के साथ निवास और संग नहीं करना चाहिए ? मूर्खों, नीचों, दुष्टों और पापियों के साथ ।). —शंकराचार्य

पुष्पाणामनुषंगेण सूत्रं शिरसि धार्यते ।
(फूलों की संगति से सूत्र सिर पर धारण किया जाता है ।) —अज्ञात

क्षीराश्रितमुदक क्षीरमेव भवति ।
(दूध का आश्रय लेने वाला पानी दूध हो जाता है ।) —चाणक्य

मन्दोऽप्यमन्दतामेति संसर्गेण विपश्चितः ।
(विद्वानों की संगति से मूर्ख भी विद्वान बन जाता है ।) —कालिदास

रत्नं रत्नेन संगच्छते । (रत्न रत्न के साथ जाता है ।) —शूद्रक

कबीर तन पंषी भया, जहँ मन तहँ उड़ि जाइ ।
जो जैसी संगति करै, सो तैसे फल खाइ ।। —कबीर

(1) को न कुसंगति पाय नसाई ।
(2) केहि न सुसंग बड़प्पन पावा ।
(3) हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू ।। —तुलसी

(1) रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि।।
(2) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।। —रहीम

नीचहुँ उत्तम संग मिलि उत्तम ही ह्वै जाय।
गंग संग जल हृद्य हूँ गंगोदक के भाय।। —वृन्द

उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।। —अज्ञात

मुझे बताओ कि तुम किनके साथ रहते हो और मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम कौन हो। —लॉर्ड चेस्टर फ़ील्ड

संगीत

(1) मुझे संगीत का ज्ञान तो नहीं, पर उससे प्रेम बहुत है। कभी-कभी मैं उसमें अपने आपको डुबा लेता हूँ।

(2) मेरे लिए तो संगीत ही सबसे बड़ी औषधि है।

(3) संगीत पहले धर्म-शिक्षा का एक अंग था, अब दुर्भाग्यवश वह शृंगाररस का वाहक बनता जा रहा है।

(4) संगीत आरम्भिक पाठशाला के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए, इसका मैं समर्थन करता हूँ। —महात्मा गाँधी

मेरे विचार से जिस व्यक्ति के हृदय में संगीत का स्पन्दन नहीं है, वह चिन्तन और कर्म द्वारा कदापि महान नहीं बन सकता। — सुभाषचन्द्र बोस

संगीत किस मनोवेग को जगा और शान्त नहीं कर सकता? —ड्राइडेन

संगीत हमें प्रभावित करता है, परन्तु हम नहीं जानते हैं कि क्यों?
—लेटिशिया एलिज़बेथ लंडन

संगीत मनुष्य को और अधिक सभ्य तथा शीलवान बना देता है।
—लूथर

चलचित्रों का संगीत तो शोर है। —टामस बीचम

संत

क्षमासारा हि साधवः। (साधुओं का बल क्षमा है।) —विष्णुपुराण

मलीनमसानपि जनान् सन्तः कुर्वन्ति निर्मलान् ।
(संत मलिन चित्त वाले मनुष्यों को भी निर्मल कर देते हैं ।)

—अचिन्त्यानन्द वर्णी

संत जन प्राणों का त्याग कर देते हैं, किन्तु धर्म का नहीं । —जातक

खीर रूप हरि नाँव है, नीर आन ब्यौहार ।
हंस रूप कोई साध है, तत को जानन हार ।। —कबीर

(1) साधु चरित सुभ सरिस कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ।।
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा । बंदनीय जेहि जग जस पावा ।।

(2) बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंधकर दोइ ।।

(3) जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ।।

(4) संत मिलन सम सुख जग नाही । —तुलसीदास

'पलटू' तीरथ को चला, बीचे मिलिगे संत ।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गई मुक्ति अनंत ।। —पलटूदास

संतान

संततिः शुद्धवंश्यां हि परत्रेह च शर्मणे ।
(अच्छी संतान इस लोक और परलोक दोनों में सुख देती है ।) —कालिदास

मनुष्य को सुखदायी, कुरूप, मूर्ख, व्यसनी एवं दुष्ट कुपुत्र भी हृदयानन्दकारी होता है । —पंचतंत्र

संतोष

संतोष सबसे बड़ा सुख है । सुख चाहने वाले व्यक्ति को हमेशा संतुष्ट रहना चाहिए । —भगवान बुद्ध

संतोषादनुत्तमसुखलाभः ।
(संतोष से सर्वोत्तम सुख प्राप्त होता है ।) —पतंजलि

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः, श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः ।
(दरिद्र कौन है ? भारी तृष्णा वाला । और धनवान कौन है ? जिसे पूर्ण संतोष हो ।) —शंकराचार्य

जो मिले उससे संतुष्ट रहना चाहिए । अतिलोभ करना पाप है । —जातक

(1) गोधन गजधन बाजिधन और रतन धन खान ।
जब आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान ।।
(2) कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि-पचि मरिअ ।। —तुलसीदास

सन्तोष स्वाभाविक सम्पत्ति है, ऐश्वर्य कृत्रिम ग़रीबी । —सुकरात

जो दरिद्र होकर भी सन्तुष्ट है, वह धनी है और पर्याप्त धनी है ।
—शेक्सपियर

रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पी ।
देखि पराई चूपड़ी मन ललचावे जी ।। —एक हिंदी लोकोक्ति

दीरघ साँस ने लेहि दुख सुख साईं नहिं भूल ।
दई-दई क्यों करत है, दई-दई सो कबूल ।। —बिहारी

संदेह (दे० संशय भी)

वहम की दवा तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं थी । —हिंदी लोकोक्ति

संदेह सच्ची दोस्ती के लिए जहर है । —सेंट आगस्टाइन

संशयात्मा विनश्यति ।
(संदेह करने वाला नष्ट हो जाता है । —संस्कृत लोकोक्ति

जिस व्यक्ति को संदेह है, उसका कहीं ठिकाना नहीं । —गाँधी

सन्देह हमारा दुश्मन है । वह हमारे मन में भय पैदा करता है, जिससे जिस पर विजय प्राप्त करने का हमको पूरा भरोसा होना है, उसी के सामने सिर झुकाना पड़ता है । —शेक्सपियर

संदेह पानी का बुलबुला नहीं है जो क्षण-भर में भग हो जाता है । वह तो धूमकेतु की रेखा के समान है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है । और, धूमकेतु जानते हो किस बात का प्रतीक है ? भय का, आशंका का, असंगति का, अमंगल का । —रामकुमार वर्मा

सन्देह आलोचना का एक तत्त्व है । —डिजरायली

संन्यासी

ज्ञेयः स नित्य संन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति ।
(जो मनुष्य न किसी से द्वेष करता है, और न किसी की आकांक्षा करता है, वह सदा संन्यासी ही समझने योग्य है ।) —महाभारत

दुनिया में रहते हुए भी सेवा-भाव से और सेवा के लिए ही जो जीता है, वह संन्यासी है। —महात्मा गाँधी

जो ब्रह्मचारी नहीं रहा, गृहस्थ नहीं बना, जिसने वाणप्रस्थ नहीं ग्रहण किया, वह संन्यासी कैसे बनेगा ? —अज्ञात

संपत्ति

सम्पत्ति चोरी है। —प्रूधाँ

सम्पत्ति अनेक मित्र बना देती है। —बाइबिल

मनुष्य जाति की इच्छाओं को समान किए जाने की आवश्यकता है, न कि सम्पत्तियों को। —अरस्तू

फ़ालतू सम्पत्ति केवल फ़ालतू वस्तुएँ ख़रीद सकती है। —थोरो

जिसके पास कोई संपत्ति नही है, उसे किसी बात से भय नही है।
—टामस फ़ुलर

आपत्ति 'मानव' बनाती है, और सम्पत्ति 'राक्षस'। —विक्टर ह्यूगो

लक्ष्मी को पाने ही मनुष्य कठोर हो जाता है। —योगवासिष्ठ

सम्पत्ति खड़ी करना अपनी क़ब्र चिनना है। —जैनेन्द्र कुमार

संयम

विद्वान् मनो धारयेताप्रमत्त.।
(विद्वान को चाहिए कि मन को सावधान होकर वश में रखे।)
—श्वेताश्वतर उपनिषद्

(1) सब संयमों का मूल जिह्वा (ज़बान) और नाली (जननेन्द्रिय) के नियंत्रण में बसता है।

(2) दुर्बल मन का मनुष्य संयम-पालन नही कर पाता, पर जिसके मन में लगन हो वह अभ्यास से संयम-पालन सीख सकता है।

(3) संयम जीवन का स्वर्णिम सूत्र है। —महात्मा गाँधी

जो इन्द्रियों पर संयम रखता है, उसकी विजय होती है। —गेटे

संयम और परिश्रम, मनुष्य के दो वैद्य हैं। —रूसो

जिसकी इन्द्रियाँ वश में नही वह एक ऐसा मकान है जिसकी दीवारें गिर चुकी हैं। —सुलेमान

संयुक्त राष्ट्रसंघ

मेरा विश्वास रहा है, और आज भी है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ अपनी अनेक त्रुटियों और कभी-कभी अपनी उद्देश्य-भ्रष्टता के बावजूद आज की दुनिया के ढाँचे में एक मौलिक और आधारभूत वस्तु है। इसे बनाए न रखना अथवा इसका खण्डन करना विश्व के लिए एक महान दुर्भाग्य होगा। (संसद में भाषण, 1952)

—**जवाहरलाल नेहरू**

संशय (दे० 'संदेह' भी)

(1) संशयात्मा विनश्यति। (संशय वाले नष्ट हो जाते हैं।)

—**एक संस्कृत लोकोक्ति**

(1) संसै खाया सकल जुग, संसा किनहुँ न खद्ध।
जे बेधे गुर आष्षिरां तिनि संसा चुणि-चुणि खद्ध॥
(2) जिहि घट में संसै बसै तिहि घटि राम न होय। —**कबीर**

संसार

अक्षरात् सम्भवतीह विश्वम्।
(अक्षर (ब्रह्म) से यह विश्व उत्पन्न होता है।) —**मुंडकोपनिषद्**

सर्वं ह्येतद् ब्रह्म। (यह सब विश्व ब्रह्म ही है।) —**मांडूक्योपनिषद्**

वस्तुस्तु जगन्नास्ति सर्वं ब्रह्मैव केवलम्।
(वास्तव में जगत है ही नहीं। सब कुछ केवल ब्रह्म ही है।) —**योगवासिष्ठ**

यहु ऐसा संसार है, जैसा सेंबल फूल।
दिन दस कें व्यौहार को, झूठे रंग न भूलि॥ —**कबीर**

जग ते रहु छत्तीस ह्वै रामचरण छ तीन। —**तुलसी**

यह जागो काँचो काँच सो, मैं समुझ्यौ निरधार।
प्रतिबिंबित लखिये जहाँ, एकै रूप अपार॥ —**बिहारी**

देखा देखी करत सब, नाहिन तत्त्व-बिचार।
याकौ यह अनुमान है, भेड़ चाल संसार॥ —**वृन्द**

जगत हम ही हैं। हम उसके अन्दर हैं, वह हमारे अन्दर है।—**महात्मा गाँधी**

मजा भी आता है दुनिया से दिल लगाने में।
सजा भी मिलती है दुनिया से दिल लगाने की॥ —**अकबर इलाहाबादी**

आसान नहीं इस दुनिया में ख्वाबों के सहारे जी सकना।
संगीन हक़ीक़त है दुनिया यह कोई सुन्दरी ख्वाब नही।।

—सागर निज़ामी

विश्व है परमात्मा का व्यक्त रूप। —विवेकानन्द

(1) संसार में छल, प्रवंचना और हत्याओं को देख कर कभी-कभी मान ही लेना पड़ता है कि यह जगत् ही नरक है। (स्कंद०)

(2) क्षणिक संसार! इस महाशून्य में तेरा इन्द्रजाल किसे नही भ्रान्त करता? (राज्यश्री) —जयशंकर प्रसाद

संसार में अपना-पराया कोई भी नहीं। जो अपना समझता है वही अपना है, और जो पराया समझता है वह अपना होने पर भी पराया है। —टैगोर

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या। (ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या।) —उपनिषद्

यह जगत् एक सुन्दर पुस्तक है, लेकिन जो इसे नहीं पढ़ता, उसके लिए निरर्थक है। —गोल्डोनी

विचारकों के लिए संसार सुखान्त है और हृदयवालों के लिए दुखान्त।

– होरेस वालपोल

दुनिया एक बुलबुला है। —बेकन

सम्पूर्ण जगत एक रंगमंच है तथा समस्त नर-नारी केवल अभिनेता है।

—शेक्सपियर

संसार वह स्थान है जहाँ कोई भी प्राणी शांति से नहीं रह सकता।

—उबैद जाकानी

संस्कृत

(1) संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरसंचित ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई अपने को पूर्ण भारतीय और विद्वान नहीं बना सकता।

(2) जो अच्छी हिन्दी, गुजराती, बंगाली या मराठी सीखना चाहें, उन्हें संस्कृत तो सीखनी ही पड़ेगी। —महात्मा गांधी

मैंने अकसर सोचा है कि भारत के अतीत में, उसके हजारों वर्ष के इतिहास में, जिन बहुत-से तत्त्वों ने उसको विशिष्टता प्रदान की है, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण कौन-सा है? मेरे मन में सन्देह नहीं है कि वह एक तत्त्व संस्कृत भाषा है। मैं

समझता हूँ कि यही वह तत्त्व है जिसमें हमारी जाति की प्रतिभा, हमारी जाति की प्रबुद्धता, मूर्तिमान हुई है, और करीब-करीब हर वस्तु, जिसका बाद के वर्षों में प्रादुर्भाव हुआ, उसका उत्स और स्रोत, किसी-न-किसी रूप से, यही भव्य भाषा है। —**जवाहरलाल नेहरू**

संस्कृत तो भाषाओं की भाषा है। —**मैक्समूलर**

संस्कृत का साहित्य उच्च गिरिशृंग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है। —**हजारीप्रसाद द्विवेदी**

संस्कृति

(1) संस्कृति और सभ्यता की परिभाषा करना कठिन है, और मैं भी इनकी परिभाषा करने का प्रयत्न नहीं करूँगा। लेकिन कई बातों में, जो संस्कृति की परिधि में आती हैं, अपने पर संयम और दूसरों का आदर ये दो गुण अवश्य सम्मिलित हैं। अगर किसी व्यक्ति में आत्मसंयम नहीं है, और वह दूसरों का आदर नहीं करता, तो निश्चय ही कहा जा सकता है कि वह असभ्य और असंस्कृत है। (विश्व)

(2) मैं सामान्यतः यह देखता हूँ कि जो लोग संस्कृति का सबसे ज्यादा शोर मचाते है, वे मेरी समझ में संस्कृति से बिल्कुल कोरे हैं। संस्कृति, प्रथमतः शोर नहीं मचाती, वह शांत-मौन है, मर्यादित है, सहिष्णु है। आप किसी व्यक्ति के सांस्कृतिक स्तर का अनुमान उसके मौन से, उसकी एक मुद्रा से, एक वाक्य से और विशेषतः उसके जीवन से साधारणतः लगा सकते है। (भाषण)

(3) संस्कृति का मतलब है—मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता। इसका मतलब दिमाग़ को तंग रखना या आदमी या मुल्क की भावना को सीमित करना कभी नहीं होता। (भाषण) —**जवाहरलाल नेहरू**

संस्कृति का सामूहिक चेतना से मानसिक शील और शिष्टाचारों से, मनोभावों से मौलिक सम्बन्ध है। धर्मों पर भी इसका चमत्कारपूर्ण प्रभाव दिखाई देता है।···संस्कृति सौन्दर्य-बोध के विकसित होने की मौलिक चेष्टा है। (काव्य०)
—**जयशंकर प्रसाद**

(1) सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है। सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है, संस्कृति व्यक्ति के अन्तर के विकास का।

(2) संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है।
—**हजारीप्रसाद द्विवेदी**

प्रकृति यदि गति का उन्मेष है तो संस्कृति उस गति की दिशा-निबद्ध संयमित मर्यादा का पर्याय। —**महादेवी वर्मा**

संस्कृति किसी समाज में प्रचलित कला या साहित्य या नृत्य या संगीत या चित्रकला है। वैसे समाज द्वारा सामान्य रूप से स्वीकृत आचार-पद्धति है। —**चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य**

भेड़-चाल का सभ्य नाम संस्कृति है। (शेखर) —**अज्ञेय**

संस्कृति संस्कार से बनती है और सभ्यता नागरिकता का रूप है। —**किशोरीदास वाजपेयी**

सच्ची संस्कृति मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है —**शिवानंद**

सच, सच्चाई दे० सत्य

सज्जन, सज्जनता

सत्कार धनः खलु सज्जनः। (सत्कार ही सज्जनों का धन है।) —**शूद्रक**

न्यायाधाराहि साधवः। (सज्जन न्याय का ही अवलम्बन करते हैं।) —**भारवि**

प्रत्यक्षे च परोक्षे च सन्तो हि समवृत्तिकाः।
(सज्जन प्रत्यक्षतः और परोक्षतः समान व्यवहार करते हैं।)—**क्षत्रचूणामणि**

कस्तूरी की पहिचान उसकी सुगन्धि से होती है, गन्धी के कहने से नहीं। —**शेख सादी**

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति॥
(नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नही करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न पड़ने पर बीच में ही छोड़ देते हैं, किन्तु अच्छे लोग बारम्बार विघ्न पड़ने पर भी आरम्भ किए हुए काम को बीच में नहीं छोड़ते।) —**भर्तृहरि**

चंद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है, परन्तु अपना कलंक अपने ही पास रखता है। —**टैगोर**

सज्जन अपनी उपयोगिता कार्य से दिखाते हैं, बताते नहीं। —**श्री हर्ष**

(1) अहि सिखवत सुत वक्र गति, सुनहु तात जग बेड़।
टेढ़ो रहत निचिंत नित, सूधो कटियत पेड़॥

(2) घटत-बढ़त संपति निरखि, सुजन परहिं नहिं मन्द ।
दुहूँ पाख समभाव तैं जग-सुखदायक चन्द ।।

—रामचरित उपाध्याय

विधिबस सुजन कुसंगति परहीं ।
फनि-मनि-सम निजगुन अनुसरही ।। —तुलसीदास

(1) जो लायक जिहि बात कौ, तासों तैसी होय ।
सज्जन सो न बुरी करै, दुरजन भली न कोय ।।
(2) अति ही सरल न हूजियो देखो जो बनराय ।
सीधे-सीधे छेदिये, बाँको तरु बच जाय ।।
(3) खल सज्जन सूचीन के, भाग दुहूँ सम. भाय ।
निगुन प्रकासै छिद्र कौं, सगुन सु ढाँपत जाय ।। —वृन्द

खल सज्जन दो जगत में तिनकी है यह रीत ।
ज्यों सूची को अग्र भग पृष्ठ भाग है मीत ।।
पृष्ठ भाग है मीत एक तो छिद्दर करिहै ।
दूसरे तिसे अछादत तत छिन गुन करि भरिहै ।।
कह गिरिधर कविराय आतमा एकहि अमल ।
निज माया करि बन रह्यो सोइ सज्जन खल ।। —गिरिधर कविराय

सज्जन जो उपकार करते हैं, उसका बदला नहीं चाहते । भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस तरह चुका सकता है ? —संत तिरुवल्लुवर

दुष्ट स्वभाव के मनुष्य भय से आज्ञा-पालन करते हैं, और अच्छे स्वभाव वाले प्रेम से । —अरस्तू

सत्य

सत्यं वै चक्षुः । (सत्य ही नेत्र है।) —शतपथ ब्राह्मण

सत्यं ब्रह्मेति सत्यं ह्येव ब्रह्म ।
(सत्य ब्रह्म है, सत्य ही ब्रह्म है ।) —बृहदारण्यक उपनिषद्

सत्यमेव जयति नानृतम् ।
(सत्य ही विजयी होता है, असत्य नहीं ।) —मुंडकोपनिषद्

न हि प्रतिज्ञां कुर्वन्ति वितथां सत्यवादिनः ।
(सत्यवादी पुरुष झूठी प्रार्थना नहीं करते ।) —वाल्मीकि

सत्यं हि परम् बलम् । (सत्य ही सबसे बड़ा बल है ।) —वेदव्यास

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदय साँच है, ताके हिरदय आप ॥ —कबीर

धरम न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना ॥ —तुलसीदास

काना कहने से काने को जो दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है। —प्रेमचंद

सत्य को पाना कठिन है, पाकर सुरक्षित रखना और भी कठिन है।
—हजारीप्रसाद द्विवेदी

(1) सत्य ही परमेश्वर है।

(2) अपने आपको जान लेना सत्य को पहचानना है।

(3) सत्य की हमेशा विजय होती है, ऐसी जिसकी श्रद्धा है उसके कोश में 'हार' शब्द नहीं है।

(4) सत्य के सिवा और किसी चीज़ की हस्ती है ही नहीं।

(5) जहाँ सत्य नहीं है, वहाँ शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता।

(6) सत्य के पालन में ही शान्ति है।

(7) पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है।

(8) अगर हमारे जीवन मे सच्चाई है, तो उसका असर अपने-आप लोगों पर पड़ेगा। —महात्मा गांधी

यदि तुम मेरे हाथों पर चाँद और सूरज को भी लाकर रख दो, तो भी मै सच्चाई के रास्ते से विचलित नहीं होऊँगा। —हजरत मुहम्मद

सत्य एक ही है, दूसरा नही। सत्य के अस्तित्व के लिए बुद्धिमान विवाद नहीं करते। —बुद्ध

सत्य बोलो, प्रिय बोलो, प्रिय असत्य न बोलो। —मनुस्मृति

अंतिम वास्तविकता के रूप में, सत्य, यदि वह है तो, निश्चय ही अनादि-अनन्त, अनश्वर और अपरिवर्ती होगा। लेकिन उस असीमित, अविकारी और शाश्वत सत्य को मानव की सीमित बुद्धि पूर्णतया ग्रहण करने में असमर्थ है। मानवी बुद्धि में उसका एक छोटा अंश ही ग्राह्य हो सकता है, जो काल और देश से सम्बद्ध और बुद्धि की विकास-स्थिति से तथा युग की भावना से परिसीमित होता है। —जवाहरलाल नेहरू

सत्य बहुधा लोक में अप्रिय होता है। —एडले स्टीवेन्सन

सत्य, खान से निकले हुए सोने की भाँति शुद्ध एवं खरा होता है। —लॉक

सत्य ईश्वर का स्वरूप है। —प्लेटो

सत्य, गुलाब के फूल की भाँति कँटीली डालियों पर फूलता है। —हाफ़िज

सत्य पानी में छोड़े गए कार्क की भाँति किसी न किसी समय अवश्य ही ऊपर आ जाता है। —टेम्पिल

सत्य दबाया जा सकता है, पर नष्ट नही किया जा सकता है।
—एक जर्मन कहावत

जान जाये हाथ से जाये न सत। है यही इक बात हर हज़हब का तत।।
—इक़बाल

सचाई छिप नही सकती बनावट के वसूलों से।
वो खुशबू आ नहीं सकती कभी काग़ज़ के फूलों से।। —एक कवि

सत्य का अनुसरण निश्चय ही पृथ्वी पर स्वर्ग है। —बेकन

सत्य ऐसा तर्क है कि उसके सामने दूसरा तर्क नही ठहरता —सार्त्र

झूठे का दंड यही है कि जब वह सत्य बोलता है तब भी उसका कोई विश्वास नहीं करता। -तालमद

पाप के कई हथियार हैं, पर उन सब की एक ही मूठ है—झूठ। —होम्स

सत्य बोलने से बढ़िया चुटकुला संसार मे दूसरा नहीं। —जार्ज बर्नार्ड शा

सत्य बोलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह याद नही रखना पड़ता कि क्या कहा था। —रॉबर्ट बेन्सन

सत्याग्रह

(1) सत्याग्रही में सत्य का आग्रह सत्य का बल होना चाहिए।
(2) विनय सत्याग्रह का सबसे कठिन अंश है।
(3) सत्याग्रही सबका मित्र होता है, शत्रु किसी का नहीं होता। सफल सत्याग्रह की यह पहली शर्त है। —महात्मा गाँधी

अगर हमने सत्याग्रह की लड़ाई का सच्चा अर्थ समझ लिया हो, तो जीत होने के बाद हममें नम्रता आनी चाहिए और हमारा अभिमान मिट जाना चाहिए। अगर ऐसा न हो तो कहा जाएगा कि हमने विरोधियों से द्वेष ही किया है। —सरदार पटेल

सत्संगति

न कस्य वीर्याय वरस्य संगतिः ।
(श्रेष्ठ की संगति किसका बल नहीं बढ़ाती ।) —कालिदास

सत्संगः स्वर्गवास. । (सज्जनों का संग स्वर्ग में वास के समान सुखद होता है ।
—चाणक्य नीति

दुर्जनेऽपि हि सौजन्यं सुजनैर्यदि संगमः । (सुजनों की संगति होने पर दुर्जन में भी सुजनता आ जाती है ।) —क्षत्रचूड़ामणि

(1) बिनु सत्संग विवेक न होई ।
(2) सत्संगति दुर्लभ संसारा ।
(3) बड़े भाग पाइय सत्संगा । बिनहि प्रयास होंहि भवभंगा ।
(4) सठ सुधरहिं सत्संगति पाई । पारस परस कुधातु सुहाई ।।—तुलसीदास

नीच बड़ेन के संग तें पदवी लहत अतोल ।
परै सीप में जलद जल मुक्ता होत अमोल ।। —दीनदयाल कवि

नीचहुँ उत्तम संग मिलि, उत्तम ही ह्वै जाय ।
गङ्ग संग जल निन्द्यहू गंगोदक के भाय ।। —वृन्द

सदाचार

समुल्लंघ्य सदाचारं कश्चिन्नाप्तोति शोभनम् । (सदाचार का उल्लंघन करके कोई कल्याण की प्राप्ति नही कर सकता ।) —विष्णु पुराण

साधवः क्षीण दोषाः स्यु सच्छब्दः साधुवाचकः
तेषामाचरणं यत्तु सदाचारः स उच्यते । (साधुओं को दोष-रहित होना चाहिए । सत् शब्द साधु का वाचक है । उनका जो आचरण है, वही सदाचार कहा जाता है ।) —हारीत स्मृति

सदाचार ही आत्मा का स्वास्थ्य है । —जोबरी

सदाचार एवं अच्छाइयों द्वारा ही व्यक्ति शक्तिशाली हो सकता है, किंतु शक्ति को प्राप्त करने वाले व्यक्तियों में सदाचार का अभाव रहता है । —न्युमैन

सदाचारी दुष्ट को भी क्षमा प्रदान करता है, जिस प्रकार कि चंदन का पेड़ उस कुल्हाड़ी को भी सुगंधित कर देता है जिससे कि वह स्वयं काटा जाता है ।
—शेख़ सादी

सफलता, असफलता

केवल सफलता ही इस दुनिया में सही और ग़लत की निर्णायक।
—**हिटलर**

असफलता की भावना से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असंभव है जितना कि बबूल के वृक्ष से गुलाब के फूल का निकलना। —**स्वेट मार्डेन**

उन व्यक्तियों को कभी असफलता नहीं मिलती जो महान् उद्देश्य के लिए बलिदान होते हैं। —**बायरन**

लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखो, सफलता का यही रहस्य है।
—**डिज़राइली**

सफलता का प्रथम रहस्य है आत्मविश्वास। —**एमर्सन**

[illegible] सफलता के लिए सबसे अधिक महत्त्व की वस्तु है। —**ब्राउन**

'प्रतीक्षा करना' जानना ही सफलता का महान् रहस्य है। —**दे मैस्तर**

सफलताओं की अपेक्षाकृत असफलताओं द्वारा हममें कहीं अधिक बुद्धि आती है। सम्भवतः जिसने कभी कोई भी भूल नहीं की, वह कभी भी कोई खोज न कर सका। —**स्माइल्स**

सभ्य, सभ्यता

(1) सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे से बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर परदा डाल सकते हैं तो आप सभ्य है, जेंटिलमैन हे। अगर आप में यह सिफ़त नहीं है तो आप असभ्य हैं, बदमाश हैं। यही सभ्यता का रहस्य है।

(2) जिस सभ्यता की स्प्रिट स्वार्थ हो, वह सभ्यता नहीं है, संसार के लिए अभिशाप है, समाज के लिए विपत्ति है। —**प्रेमचंद**

आज की सभ्यता दुःशासन की तरह मन का चीर हरण करना चाहती है।
—**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

(1) सभ्यता उस आचरण का नाम है जिसके द्वारा मनुष्य अपना कर्त्तव्य-पालन करता है।

(2) हिन्दुस्तान अँग्रेज़ों के बोझ से नहीं, बल्कि आजकल की सभ्यता के बोझ से दबा हुआ है। —**महात्मा गाँधी**

अपने बच्चों को सभ्यता सिखाना मन-भर अनाज दान करने से अधिक अच्छा है।
—हज़रत मुहम्मद

सभ्यता का अन्तिम सुफल यह हो कि हमें फुरसत के क्षणों का उपयोग समझदारी से करना आ जाए।
—बरट्रेण्ड रसल

सभ्यता की एकमात्र कसौटी है सहनशीलता। —आर्थर हैल्प्स

मानव जाति का अंत इस तरह होगा कि सभ्यता अन्ततः उसका गला घोट देगी।
—एमर्सन

प्राण बचाना चाहते हो तो जल्दी भागो, सभ्यता हमारे पीछे पड़ी हुई है।
—खलील जिब्रान

सभ्यता तो गति है, स्थिति नहीं। यात्रा है, बन्दरगाह नहीं।
—आर्नोल्ड टायनबी

मानव, मूल्यों और विश्व के बीच उनके विविध आयामों तथा कोटियों में, खुला तथा आत्मस्थायीकरण करने वाला विनियम ही सभ्यता है।
—राधाकमल मुखर्जी

(1) ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी, त्यों-त्यों एक ओर तो काव्य की आवश्यकता बढ़ती जाएगी दूसरी ओर कवि-कर्म कठिन होता जाएगा। (र० मी०)

(2) रूप बदलने का नाम है सभ्यता, पर वह प्रच्छन्न रूप इतना मर्मस्पर्शी नही हो सकता। इसी से इस प्रच्छन्नता का उद्घाटन 'काव्य' का एक मुख्य कार्य है। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी, त्यों-त्यों यह काम बढ़ता जाएगा, मनुष्य की मूल रागात्मिका वृत्ति से सीधा सम्बन्ध रखने वाले रूपों को प्रत्यक्ष करने के लिए उसे बहुत-से परदों को हटाना पड़ेगा। —रामचंद्र शुक्ल

सभ्यता की वास्तविक परीक्षा देश की जनगणना या नगरों की रूपरेखा अथवा फसल से नहीं होती, वरन् किस प्रकार के इंसान राष्ट्र पैदा करते हैं, इससे होती है।
—एमर्सन

जो सभ्य व्यक्ति समाज से जितना ग्रहण करे उतना ही समाज को लौटा दे, वह साधारण सभ्य व्यक्ति कहलायेगा। जो व्यक्ति जितना समाज से ग्रहण करे, उससे अधिक उसे लौटा दे, वह विशिष्ट सभ्य व्यक्ति कहलायेगा और जो अपना समस्त जीवन समाज में लगा दे और उसके प्रतिरूप में समाज से कुछ भी न चाहे, वह असाधारण सभ्य व्यक्ति कहलायेगा। किन्तु पश्चिम का सभ्य व्यक्ति (?) समाज से ग्रहण ही करता है, लौटाने की तो इच्छा ही नहीं करता।
—जार्ज बर्नार्ड शा

संस्कृति और सभ्यता की परिभाषा करना कठिन है, और मैं भी इनकी परिभाषा करने का प्रयत्न नही करूँगा। लेकिन कई बातों में, जो संस्कृति की परिधि में आती हैं, अपने हर संयम और दूसरों का आदर, ये दो गुण अवश्य सम्मलित हैं। अगर किसी व्यक्ति में आत्मसंयम नहीं है, और वह दूसरों का आदर नहीं करता, तो निश्चय ही कहा जा सकता है कि वह असभ्य और असंस्कृत है। (विश्व०) —**जवाहरलाल नेहरू**

समता

सम होना माने अनन्त होना, विश्वमय हो जाना। —**अरविंद**

सम भाव ही समस्त कल्याण का पाया है। —**विवेकानन्द**

समता, सुख या ऐशो-आराम से नही, संयम से प्राप्त होती है।
—**विनोबा भावे**

समय

अनावर्ती कालो व्रजति।
(कभी न लौटने वाला समय जा रहा है।) —**एक संस्कृत लोकोक्ति**

चापलूसी करने वाले से सदा बचे रहो, वह बड़ा भारी चोर होता है। वह तुम्हें मूर्ख बनाकर तुम्हारा समय भी चुराता है और बुद्धि भी। —**चाणक्य**

गय दियहा कि एन्ति पडीवा।
(गए हुए दिन क्या फिर लौटकर आते हैं?) —**स्वयम्भू**

(1) का वरषा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने।।
(जब कृषि सूख गयी तो वर्षा किस काम की? समय पर चूक गये तो फिर पछताने से क्या लाभ?)

(2) दिवस जात नहि लागहि बारा। —**तुलसीदास**

(1) जेहि अंचल दीपक दुर्यो हन्यो सो ताही गात।
रहिमन कुसमय के परे मित्र शत्रु ह्वै जात।।
(2) रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बान सो, रुधिरै देत बताय।।
(3) रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं बेर।। —**रहीम**

साईं समय न चूकिये यथाशक्ति सन्मान।
को जाने को आइहै तेरी पौरि प्रमान ।।
तेरी पौरि प्रमान समय असमय तकि आवै।
ताको तू मन खोलि अंक भरि हृदय लगावै ।।
कह गिरिधर कविराय सबै यामे सधि आई।
शीतल जल-फल-फूल समय जनि चूको साई ।। —गिरिधर कविराय

(1) अपने अपने समय पर, सबको आदर होय।
भोजन प्यारो भूख मै, तिस मै प्यारो तोय ।।
(2) समय पाय तरुवर फलै केतक सीचौ नीर। —वृन्द

दुख-सुख-धन-जीवन-मरन, पैये बार करोर।
बीत गयौ जो फिर कबौ, समय न मिलत बहोर ।। —रामचरित उपाध्याय

मैने समय को बर्बाद किया और अब समय मुझे बर्बाद कर रहा है।
—शेक्सपियर

समय का हर क्षण स्वर्ण के कण की भाँति बहुमूल्य है। —मैसन

जो लोग समय का सबसे अधिक दुरुपयोग करते है, वे ही समय की कमी की सबसे अधिक शिकायत करते हैं। —ब्रूयर

समय बदल जाने पर लोगों की आँखें भी बदल जाती हैं। —जयशंकर प्रसाद

(1) समय परिवर्तन का धन है, परन्तु घड़ी उसका उपहास करती है। उसे केवल परिवर्तन के रूप मे दिखाती है, धन के रूप में नही।
(2) समय किसी की प्रतीक्षा नही करता। उसको किसी के सुख-दुख से कोई संबन्ध नहीं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

(1) समय लेखकों का भी लेखक है।
(2) समय चुनना समय बचाना है। —बेकन

मैं तुम्हें यही शिक्षा दूंगा कि तुम केवल मिनटों का ध्यान रक्खो, घंटे स्वयं अपना ध्यान रखेंगे। —चेस्टर फ़ील्ड

हम सदा समय के भूखे होते हैं, किंतु उसका उपयोग हम बुरे से बुरा करते हैं।
—पेन

समय हाथ से निकल जाने पर केवल पश्चाताप ही हाथ लगता है। —बायरन

जीवन कितना ही छोटा हो, समय की बर्बादी से वह और भी छोटा बना दिया जाता है। —जॉनसन

किसी सत्कार्य को करने के लिए जो यह कहते हैं, कि हमारे पास समय नही है, वे वास्तव में आलसी हैं। समय हर मनुष्य के पास है, पर उसका उपयोग करने के लिए हमें आलस्य त्यागना होगा। जो सवेरे चार बजे उठ सकता है, उसके पास समय ही समय है। —बर्नार्ड शा

(1) बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अपने धन को मितव्यमता से खर्च करते हों और इससे भी कम ऐसे लोग है जो अपने समय का सदुपयोग कर सकते हों।

(2) मिनटों की चिन्ता करो क्योंकि घंटे तो अपनी चिन्ता स्वयं कर लेंगे। —चेस्टरफ़ील्ड

सदुपयोग किया हुआ समय ही जीवन है। —यंग

समय सर्वोत्तम डॉक्टर है। —ओविड

समय को यदि एक बहुत बड़ा उपदेशक कहा जाय तो अनुचित न होगा। —एडमंड बर्क

समय की परिभाषा करना असंभव नही तो बहुत कठिन है। क्योंकि भूत समाप्त हो चुका है, भविष्य अब तक नही पहुँच पाया है तथा वर्तमान भी भूत होता जाता है। यहाँ तक परिभाषा करते-करते वर्तमान बिजली की तरह आता है और लुप्त हो जाता है। —कोल्टन

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? तो समय को व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि जीवन उसी से बना है। —फ्रैंकलिन

समय महान चिकित्सक है। —डिज़रायली

याद रखो कि समय धन है। —बेंजामिन फ़्रैंकलिन

समय महान शिक्षक है। —एडमंड बर्क

गुज़र गये हैं जो दिन फिर न आयेंगे हरगिज़
कि एक चाल फ़लक हर बरस नही चलता। —दाग़

पुरुष बली नहिं होत है समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपिका वहि अर्जुन वहि बान॥ —अज्ञात

समस्या

(1) समस्या जीव और जीवन का लक्षण है।

(2) समस्या का कहीं अंत नही और समाधान की चेष्टा में मनुष्य के साथ उससे लड़ते रहना ही बदा है । —जैनेन्द्र कुमार

समाचारपत्र

किसी भी अख़बार का पहला काम है, लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना। दूसरा काम है, लोगों में जिन भावनाओं की ज़रूरत हो उन्हें जाग्रत करना, तीसरा काम है, लोगों में अगर कोई ऐब हो तो उन्हें किसी भी मुसीबत की परवाह न कर वेधड़क सबके सामने रख देना । —महात्मा गाँधी

समाचारपत्र जनता के विश्वविद्यालय हैं। —जे पार्टन

समाचारपत्र साधारण जनता के शिक्षक हैं। —बीचर

समाचारपत्र विश्व के दर्पण हैं। — जेम्स एलिस

धन्य भाग हैं उनके जो अख़बार नहीं पढ़ते। —स्वामी रामतीर्थ

मैं समाचारपत्र यह जानने के लिए पढ़ता हूँ कि ईश्वर विश्व पर कैसे शासन करता है। —न्यूटन

मानसिक अनुशासन की दृष्टि से समाचारपत्र पढ़ना अहितकर है। मस्तिष्क के लिए दस मिनट में चालीस बातें सोचने से बुरा और क्या हो सकता है? —मंज़र

अनियंत्रित राज-सत्ता पर अंकुश लगाना ही समाचारपत्रों का सच्चा उपयोग है । —लोकमान्य तिलक

हम मनुष्यों और प्रातःकालीन समाचारपत्रों के शासन में रह रहे हैं। —वेंडल फ़िलिप्स

मेरी मान्यता है कि एक अच्छा समाचारपत्र स्वयं से ही बात करता राष्ट्र है। —आर्थर मिलर

समाज

जिस समाज में ग़रीबों के लिए स्थान नहीं वह उस घर की तरह है, जिसकी बुनियाद न हो। कोई हल्का-सा धक्का भी उसे ज़मीन पर गिरा सकता है। —प्रेमचंद

हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है । —हजारी प्रसाद द्विवेदी

मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है । —अरस्तू

समाज मानव-हृदय का कारागार है, समाज एक प्रकाण्ड इंजन वाला कारख़ाना है, क्षुधानल-प्रदीप्त प्रयोजन ही उस इंजन के लिए कोयला जुटाता है।
—टैगोर

अच्छा समाज शरीर के समान है। समाज में जो दुःखी हिस्सा है, उसकी ओर सबको ध्यान देना चाहिए। —विनोबा

केवल वही समाज सदा सुखी रह सकता है, जिसने नैतिक गुणों को अपना लिया है। —रस्किन

सबसे अधिक सुखी समाज वह है, जिसमें हरेक व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति हार्दिक सम्मान की भावना रखता है। —गेटे

जितने कम क़ानून बनाने की जरूरत पड़े समाज के लिए उतना ही श्रेयस्कर है। —वृन्दावनलाल वर्मा

समाजवाद

(1) यदि लोकतंत्र बना रहता है तो शेष सब कुछ उसके अनिवार्य परिणामों के रूप में स्वतः ही उपलब्ध हो जाना चाहिए, जिनमे सबसे बड़ी उपलब्धि है स्वयं लोकतंत्र की सम्पन्नता। और लोकतंत्र की सम्पन्नता ही 'सुखी जीवन' का मार्ग है। इसे समाजवाद कहिए या कोई और 'वाद', लेकिन आधारभूत रूप से यह लोकतंत्र ही है।

(2) हमारी सब बुराइयों का एक ही इलाज है और वह है समाजवाद।
—जवाहरलाल नेहरू

समाजवाद धर्म की सच्ची मीमांसा कर, धर्म की कैद से मनुष्य को निजात दिलाता है और इस भाँति मानवता के गौरव को बढ़ाता है।—आचार्य नरेन्द्रदेव

व्यक्तिगत स्पर्द्धाशील सम्पत्ति को संयुक्त सामूहिक सम्पत्ति बना देना ही समाजवाद की मूल भावना है। —शौफ़िल

समाजवाद मनुष्य को दीनता के क्षेत्र से हटाकर स्वाधीनता के राज्य में ले जाना चाहता है। —कार्ल मार्क्स

समाजवाद कोई यूरोपीय विचार नहीं है, यह मूलतः एशियाई और विशेषतः भारतीय विचार है। —अरविन्द

(1) समाजवाद ही नहीं, साम्यवाद भी ईशोपनिषद् की देन है।

(2) समाजवाद तो हमारे देश की प्राचीन देन है।

(3) समाजवाद के सिद्धान्तानुसार राजा और किसान, धनाढ्य और गरीब, मालिक और नौकर, सब समान स्तर के हैं।

(4) मैं प्रमुख उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में विश्वास करता हूँ।

(5) सच्चा समाजवाद वही है जिसमे वाद न हो।

(6) एक भी कौड़ी जब तक कोई रखेगा, तब तक वह समाजवादी नही है।

(7) समाजवाद के नियमानुसार द्वैत है ही नही—सबमें एकता-मात्र है।

—**महात्मा गाँधी**

समाजवाद का सार यह है कि व्यक्तिगत स्पर्द्धाशील पूँजी को संयुक्त सामूहिक पूँजी बना देना। —**शौफ़िल**

समालोचक, समालोचना, समीक्षक, समीक्षा

क्या तुम जानते हो कि आलोचक कौन होते है? वे लोग जो साहित्य और कला में असफल हो गये हैं। —**डिज़राइली**

समीक्षा क्या है? सर्वोत्तम ज्ञात चिंतन को सीखने और प्रचारित करने का रागरहित प्रयास। —**मैथ्यू आर्नल्ड**

समालोचक प्रायः ऐसे लोग होते हैं जो यदि बन सकते तो स्वयं कवि, इतिहासकार या जीवनचरित्र-लेखक बन गये होते। —**कॉलरिज**

जो कृतिकारों की धूल उड़ाते हैं, उनमें अधिकांशतः लोग मूढ़ व परगुण-द्वेषी होते है। —**शेली**

जिसका हृदय सहानुभूति के भाव से परिपूर्ण है उसे ही समालोचना करने का अधिकार है। —**अब्राहम लिंकन**

सम्मान

बड़े लोगों का धन सम्मान ही होता है। —**शुक्रनीति**

जीवन प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय है, किन्तु शूरवीर को अपना सम्मान जीवन से भी अधिक बहुमूल्य एवं प्रिय है। —**शेक्सपियर**

अच्छा सम्मान पाने का मार्ग यह है कि जैसा तुम अपने-आपको बनाना चाहते हो, वैसा बनने का प्रयत्न करो। —**सुकरात**

मैं अपने सम्मान पर आघात पहुँचने की अपेक्षा दस सहस्र बार मरना ज्यादा अच्छा समझता हूँ। —**एडीसन**

सम्मान सच्चे श्रम में है। —**क्लीवलैंड**

सरकार

सबसे अच्छी सरकार कौन-सी है ? जो हमें अपने ही ऊपर शासन करना सिखाती है। —गेटे

सबसे बढ़िया सरकार वह है जो कम से कम शासन करती हो। —थोरो

सरकार का उचित कार्य लोगों के लिए अच्छे कार्य कर सकना सरल बनाना और बुराई कर सकना कठिन बनाना है। —ग्लैडस्टन

कोई भी सरकार प्रबल विपक्ष के बिना अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रह सकती। —डिज़राइली

सरकार, मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव-बुद्धि का आविष्कार है। —एडमंड बर्क

सर्वोत्तम सरकार सरकार का न होना है। —अज्ञात

सलाह

सलाह का कदाचित ही स्वागत होता है। जिन्हें इसकी अधिकतम आवश्यकता होती है, वे ही इसे सबसे कम पसन्द करते हैं। —जानसन

सस्ता-महँगा

सस्ता रोये बार-बार, महँगा रोये एक बार। —हिन्दी लोकोक्ति

सहनशीलता

जीओ और जीने दो, क्योंकि पारस्परिक सहिष्णुता और सहनशीलता जीवन का नियम है। मैंने यह सबक क़ुरान, इंजील, ज़ैन्द अवस्ता और गीता से सीखा है। —महात्मा गांधी

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह।
धरती ही पर परत सब, शीत, घाम अरु मेह।। —रहीम

सहनशील होना अच्छी बात है, परन्तु अन्याय का विरोध उससे भी उत्तम है। —जयशंकर प्रसाद

आनंद से रहने के अर्थ हैं सहनशीलता के साथ रहना। अर्थात् सहनशील व्यक्ति ही आनंद से रह सकता है। —शॉपेनहावर

सहनशीलता की भी एक सीमा है जिसके परे वह वरदान न होकर अभिशाप के रूप में बदल जाती है। —एडमंड बर्क

सहानुभूति

सहानुभूति वह सार्वभौम भाषा है जिसे पशु भी समझ लेते हैं और सम्मान करते हैं। —**जेम्स एलन**

कौन हमदर्द किसका है जहाँ में 'अकबर'
एक उभरता है यहाँ एक के मिट जाने से। —**अकबर इलाहाबादी**

(1) व्यथित हृदय से ही सहानुभूति की आशा होती है।
(2) महिला की सहानुभूति हार को भी जीत बना सकती है।

—**प्रेमचन्द**

सहानुभूति मानवता का गौरव है। —**सैमुअल स्माइल्स**

प्रेम के बाद सहानुभूति मानव-हृदय की पवित्रतम भावना है। —**बर्क**

सहायता

प्रभु उसकी मदद करते हैं जो अपनी मदद स्वयं करता है।

—**एक अंग्रेजी कहावत**

साधारणीकरण

(1) 'साधारणीकरण' का अभिप्राय यह है कि पाठक श्रोता के मन में जो व्यक्ति-विशेष या वस्तु-विशेष आती है वह जैसे काव्य में वर्णित 'आश्रय' के भाव का आलम्बन होती है वैसे ही सब सहृदय पाठकों या श्रोताओं के भाव का आलम्बन हो जाती है। (चिंता)

(2) जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नही लाया जाता कि वह सामान्यत: सबके उसी भाव का आलम्बन हो सके तब तक उसमें रसोद्बोधन की पूर्ण शक्ति नही आती। इसी रूप में लाया जाना हमारे यहाँ 'साधारणीकरण' कहलाता है। (वही) —**रामचन्द्र शुक्ल**

साधु

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने॥

(प्रत्येक पर्वत पर माणिक्य नहीं होता और प्रत्येक हाथी में मुक्ता नहीं मिलता, सर्वत्र साधु नहीं मिलते और सब बनों में चंदन नहीं होता।)

—**आचार्य चाणक्य**

अनिक्कसावो कासायं यो वत्थं परिदहेस्सति ।

अपेतो दमसच्चेन न सो कासावमरहति ।। (जो अपने मन को स्वच्छ किए बिना काषाय-वस्त्र को धारण करता है सत्य और संयम से रहित वह व्यक्ति काषाय-वस्त्र का अधिकारी नही है ।) —**धम्मपद**

(1) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान ।।
(2) कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगत बुरो असाधु की, आठो पहर उपाधि ।।
(3) सिहन के लँहड़े नही, हंसन की नहिं पाँत ।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलें जमात ।।
(4) साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय ।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ।। —**कबीर**

जग में सारे मानव जाति के लिए प्रेम भाव व परम सहिष्णुता पैदा होना ही साधुता की सच्ची कसौटी है । —**स्वामी विवेकानन्द**

भारत के पचपन लाख साधु इस देश के लिए बेकार और कलंक हैं ।
—**महात्मा गाँधी**

साम्यवाद

(1) साम्यवादियों का सिद्धान्त इस एक वाक्य मे सूत्रबद्ध किया जा सकता है—निजी सम्पत्ति का अन्त ।

(2) साम्यवाद की यात्रा ही नास्तिकवाद से प्रारम्भ होती है। —**मार्क्स**

साम्यवाद द्वारा उस वस्तु की अवज्ञा जिसे जीवन का नैतिक और आध्यात्मिक पक्ष कहा जा सकता है, मानवीय व्यवहार को सारी मान्यताओं और मूल्यों से वंचित कर देता है । वह बलात् वस्तुतः विध्वंस और उच्छेदन से परिवर्तन लाना चाहता है । —**जवाहरलाल नेहरू**

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद की वृकोदर-वृत्ति की इमारत हिंसा के ही पाये पर रखी जा सकती है । —**पतंजलि**

साम्राज्यवाद ईश्वर की हस्ती का इनकार है । —**महात्मा गाँधी**

साम्राज्य में एक हठ, घमण्ड और अकड़ होती है, जिस पर वह सैकड़ों गुलामों का क़त्ले आम कर सकता है । —**प्रेमचंद**

साहस, साहसी[1]

साहसे खलु श्रीः वसति। (साहस में श्री रहती है।) —चाणक्य

साहसे श्रीः प्रतिवसति। (साहस में सम्पत्ति निवास करती है।)
—भट्टनारायण

(1) दैवमेव हि साहाय्यं करुते सत्त्व शालिनाम्।
(साहसी व्यक्तियों की सहायता भाग्य ही करता है।)
(2) प्राप्यते किं यशः शुभ्रम् अनंगीकृत्य साहसम्।
(क्या साहस को स्वीकार किये बिना ही कहीं शुभ्र यश प्राप्त होता है?)
—सोमदेव

भय की भाँति साहस भी संक्रामक होता है। —प्रेमचंद

संकट में साहस होना आधी सफलता प्राप्त कर लेना है। —प्लॉट्स

साहस गया कि मनुष्य की आधी समझदारी गई। —एमर्सन

थोड़े-से साहस के अभाव में काफी प्रतिभा विश्व में खो जाती है।
—सिडनी स्मिथ

मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, क्योंकि यह सभी गुणों की ज़िम्मेदारी लेता है। —चर्चिल

भाग्य साहसी का साथ देता है। —वर्जिल

साहस अवसर के साथ-साथ बढ़ता है। —शेक्सपियर

साहस ही सब कुछ है। साहस गया तो सब कुछ गया।
—सर जेम्स मैथ्यू बेरी

हारिए न हिम्मत बिसारिए न हरि नाम। —एक हिंदी लोकोक्ति

वही सच्चा हिम्मती है जो कभी निराश नहीं होता। —कन्फ्यूशियस

साहसी व्यक्ति विश्वासी भी होता है। —सिसरो

साहित्य

शब्दार्थयोर्यथावत्सहभावेन विद्या साहित्यविद्या।
(शब्द और अर्थ के यथावत् सहभाव को बतानेवाली विद्या साहित्य-विद्या कहलाती है।) —राजशेखर

(1) विशुद्ध साहित्य अप्रयोजनीय है उसका जो रस है वह अहेतुक है।

(2) मनुष्य का विश्व यदि मनुष्य के मन के बाहर ही हो तो वही तो निरादर का कारण है। मन जब उसे अपना बना लेता है तभी उसकी भाषा में शुरू हो जाता है साहित्य, उसकी लेखनी विचलित हो जाती है नूतन गान की वेदना से।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(1) अशिक्षितों के लिए अन्नसत्र खोला जा सकता है, पर साहित्य नहीं रखा जा सकता। उनके दुःख-सुख का वर्णन करने का नाम ही साहित्य नही है।

(2) जीवन में जिसने प्यार नहीं किया, कलंक मोल नहीं लिया, उसक' दूसरे के मुख से लिए गए स्वाद-सी कल्पना सच्चे साहित्य की सामग्री कब तक बनेगी।

—शरत्चन्द्र

ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(1) मनुष्य ने जगत में जो कुछ सत्य और सुन्दर पाया है और पा रहा है, उसी को साहित्य कहते हैं। (कुछ०)

(2) साहित्य न चित्रण का नाम है, न अच्छे शब्दों को चुनकर सजा देने का, या अलंकारों से वाणी को शोभायमान बना देने का। ऊँचे और पवित्र विचार ही साहित्य की जान है।

—प्रेमचन्द

सारे मानव समाज को सुन्दर बनाने की साधना का ही नाम साहित्य है।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

साहित्य मनुष्य की शक्ति-दुर्बलता, जय-पराजय, हास-अश्रु और जीवन-मृत्यु की कथा है।

—महादेवी वर्मा

सीख

मैंने वाचाल से मौन सीखा है, असहिष्णु से असहिष्णुता और दयाहीन से दयालुता।

—खलील जिब्रान

सीख का कदाचित् ही स्वागत होता है। जिन्हें इनकी अधिक आवश्यकता है वे ही इसे सबसे कम पसन्द करते हैं।

—जॉनसन

सुन्दर, सुन्दरता

किमिव ही मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।
(सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलंकार नहीं होता ?) —कालिदास

किमप्यस्ति स्वभावेन सुन्दरं वाऽप्यसुन्दरम् ।
यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।।
(कोई भी वस्तु स्वभाव से न तो सुन्दर है और न असुन्दर । जिसे जो अच्छा लगे उसे वही सुन्दर है ।) —पंचतंत्र

समय-समय सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय ।
जाकी जैसी भावना ताको तैसा होय ।। —एक कवि

समै-समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होय ।। —बिहारी

जो स्वयं सुन्दर है उसकी सुन्दरता किसी अन्य वस्तु से नहीं बढ़ती ।
—कालिदास

क्षण-प्रतिक्षण जो नवीन दिखाई पड़े वही सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है ।
—टैगोर

अच्छा स्वभाव सदैव सुन्दरता के अभाव को पूरा कर देता है, लेकिन सुन्दरता अच्छे स्वभाव के अभाव की पूर्ति नहीं कर सकती । —एडीसन

सुन्दरता बिना श्रृंगार के ही मन को मोह लेती है । —शेख सादी

सुन्दरता का माधुर्य नित्यप्रति बढ़ता जाता है, उसका कभी ह्रास नहीं होता । —कीट्स

सुन्दरता की खोज में हम चाहे सारे संसार का चक्कर लगा आएँ, अगर वह हमारे अन्दर नहीं तो कहीं नहीं मिलेगी । —एमर्सन

सुन्दरता संसार-भर की सिफ़ारिशी चिट्ठियों से बढ़कर है । —अरस्तू

उपयोगिता में ही सच्चा सौन्दर्य है । —लांगफ़ेलो

सुख, सुखी

तत्सुखं यत्र निर्वृतिः । (सुख वहीं है जहाँ निर्भय जीवन है ।) —पंचतंत्र

जो सुख आरम्भ में विष की भाँति है और अन्त में अमृत की भाँति और जिससे आत्मा और बुद्धि को शान्ति मिलती है, वह सुख सात्त्विक है । जो सुख

आरम्भ में अमृत की भाँति है और अन्त में विष की भाँति, वह राजस सुख है। जो सुख आरम्भ से अन्त तक आत्मा को केवल मोहनिद्रा और आलस्य में डाले रखता है वह तामस सुख है। —गीता

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं। —तुलसी

दिव्य सुख की तुलना में सांसारिक सुख धूल के समान है। —बुद्ध

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक आप दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही अधिक सुगन्ध आपके अन्दर आएगी। —एमर्सन

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता, अन्दर से मिलता है। —गाँधी

सुख का आधार पुण्य है, और निश्चित रूप से उसका आधार सच्चाई होना चाहिए। —कॉलरिज

इस सत्य को जान लो, आदमी के लिए यही जानना काफ़ी है कि यहाँ सद्-गुण में ही सुख है। —पोप

एक महान् उद्देश्य के लिए प्रयत्न करने में स्वतः ही आनन्द है, सुख की अनु-भूति है और कुछ प्राप्ति की मात्रा भी। —जवाहरलाल नेहरू

सूक्ति

प्रत्येक सूक्ति भाषा के विस्तार और उसे चिरस्थायी बनाने में सहयोग देती है। —डॉ० जानसन

उचित हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे, वह तो है काव्य। जो उक्ति केवल कथन ढंग के अनूठेपन, रचना-वैचित्र्य, चमत्कार, कवि के श्रम या निपुणता के विचार में ही प्रवृत्त करे, वह है सूक्ति। (चिन्ता०-1) —आचार्य रामचंद्र शुक्ल

सेवक, सेवा

प्राणवद्रक्षयेद् भृत्याम् स्वकायमिव पोषयेत्। (सेवक की प्राण की भाँति रक्षा करें और अपनी देह की भाँति पोषण करें।) —पंचतंत्र

कष्टोऽयं खलु भृत्यभावः। (यह भृत्य-भाव बड़ा कष्टप्रद होता है।) —हर्ष

सब तें सेवक-धरम कठोरा। —तुलसीदास

अपने सेवक से बहुत हिलमिल न जाओ, शुरू में यह मेल-जोल अच्छा लग सकता है, किन्तु अन्त में तिरस्कार को जन्म देगा। —फ़ुलर

सेवा करे सो मेवा पावे। —एक हिंदी लोकोक्ति

सेवा स्वयं अपना पुरस्कार है। —प्रेमचंद

सौंदर्य दे० 'सुंदरता'

सौभाग्य

सौभाग्य सदा परिश्रम के साथ दिखाई देता है। —गोल्डस्मिथ

सौभाग्य वीर से डरता है और केवल कायर को भयभीत करता है। —सेनेका

सौभाग्य हर ज्ञानी का साथी है। —यूरिपिडीज़

स्त्री (दे० नारी भी)

स्त्रियाश्चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

(स्त्रियों का चरित्र और पुरुषों का भाग्य देवता भी नही जान सकते फिर मनुष्य के बस का कहाँ?) —भर्तृहरि

स्त्री साक्षात् त्याग है। —गाँधी

वास्तव में घर को घर नही कहते, गृहिणी को ही घर कहते हैं। जिस घर में गृहिणी न हो वह बन के ही समान है। —महाभारत

स्त्रियों के मुँह में शहद होता है, और हृदय में छुरी। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

युगों से पुरुष स्त्री को, उसकी शक्ति के लिए नहीं सहनशक्ति के लिए ही दंड देता आ रहा है। —महादेवी वर्मा

स्त्री को जीता जा सकता है, ख़रीदा नहीं जा सकता।
—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

स्त्रियों की उन्नति अथवा अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति निर्भर है। —अरस्तू

स्त्री को पराजित करना हो तो उसकी प्रशंसा करो। —वृन्दावनलाल वर्मा

बिन घरनी घर भूत का डेरा। —एक हिंदी कहावत

स्थान

स्थान स्थितानि पूज्यन्ते पूज्यन्ते च पदे स्थिताः
स्थान भ्रष्टा न पूज्यन्ते केशा दंता नरा नखाः

(अपने स्थान और पद पर ही सम्मान होता है। स्थान च्युत केश, दाँत, व्यक्ति और नाख़ून का सम्मान नहीं होता।) —शौनकीय नीतिसार

स्नेह (दे० प्रेम भी)

स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त का होता है उतना ही प्रबल हुआ करता है। —**टैगोर**

स्नेह के कारण ही विषयों की सत्ता का अनुभव होता है तथा फिर उसमें अनुरक्ति हो जाती है। —**वेदव्यास**

जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिले न कछु संदेहू। —**तुलसी**

इस संसार का सबसे बड़ा जादूगर स्नेह है। —**बंकिमचंद्र**

स्पष्टवादिता

स्पष्टवादिता सर्वोच्च बुद्धिमत्ता है। —**डिजरायली**

साफ़ बात शादुल्ला कहें। सबके मन से उतरा रहे।

—**एक हिन्दी लोकोक्ति**

स्वच्छंदता (दे० स्वतंत्रता)

स्वच्छंदतावाद

कला में उदारतावाद ही स्वच्छन्दतावाद है। —**ह्यूगो**

स्वच्छन्दतावाद, बाह्य अनुभूतियों से पलायन है जिससे आंतरिक अनुभूतियों में केन्द्रित हुआ जा सके। —**एबरक्राम्बी**

आभिजात्यवादी नेतृत्व का सिद्धांत यह है कि प्रतिष्ठा, पद अथवा परम्परा की हो, न कि मनुष्य की। और हमें मनुष्य चाहिए न कि सिद्धान्त। —**इलियट**

स्वतंत्र, स्वतंत्रता (दे० स्वाधीनता भी)

स्वातंत्र्यात् सुखमाप्नोति स्वातंत्र्याल्लभते परम्।
स्वातंत्र्यान्निर्वृतिं गच्छेत् स्वातंत्र्यात् परमं पदम्॥

(मनुष्य स्वतंत्रता से सुख को प्राप्त करता है, स्वतंत्रता से परम् तत्त्व को प्राप्त करता है, स्वतंत्रता से शान्ति को प्राप्त करता है और स्वतंत्रता से परम् पद को प्राप्त करता है।) —**अष्टावक्र गीता**

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। —**बाल गंगाधर तिलक**

जब स्वतंत्रता चली जाती है तब जीवन निस्तेज हो जाता है और उसमें कोई उत्साह नहीं रहता। —**एडिसन**

स्वतंत्रता राष्ट्रों की शाश्वत यौवनावस्था है । —फ्रॉय

आँखों के लिए जैसे प्रकाश है, फेफड़ों के लिए जैसे वायु है, हृदय के लिए जैसे प्रेम है, उसी प्रकार मानवात्मा के लिए स्वतंत्रता है । —इंगरसोल

(1) मनुष्यता का संगीत स्वतंत्रता की ओर क्रियाशील रहता है ।
(2) स्वतंत्रता का मार्ग फूलों की सेज नहीं है । इस पथ पर काँटे बिछे हैं ।
(3) तुम मुझको ख़ून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा । —सुभाषचन्द्र बोस

मानव जन्म से स्वतंत्र है, किन्तु वह सब जगह ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ है । —रूसो

स्वतंत्रता का अर्थ है ज़िम्मेदारी । इसीलिए तो लोग स्वतंत्रता से घबराते हैं । जार्ज बर्नार्ड शा

अत्यधिक स्वतंत्रता भी हानिकर है । वैसे ही जैसे हर इच्छित वस्तु का पा लेना । —पास्कल

स्वतंत्रता प्राप्त करना सरल है, उसे बनाए रखना अत्यन्त कठिन । —आँद्रे गाइड

यह मेरा विश्वास है कि स्वतंत्रता अपनी निर्बलता के कारण ही गँवाई जाती है । महात्मा गाँधी

स्वभाव

न हि निम्बात् स्रवेत् क्षौद्रं लोके निगदितं वचः । (नीम से मधु नहीं टपकता —यह लोकोक्ति सत्य है ।) —वाल्मीकि

मनुष्यों का यह स्वभाव है कि वह दूसरों को अपने से अधिक सुखी समझते हैं । —सुकरात

नीच निचाई नहिं तजै जो पावहिं सतसंग ।
तुलसी चन्दन विटप बसि बिन बिस भय न भुवंग ।। —तुलसी

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ।। —रहीम

कोटि जतन कोऊ करो, परै न प्रकृतिहिं बीच । —बिहारी

कहा करै कोऊ जतन, प्रकृति न बदलै कोइ ।
सानै सदा सनेह में, जीभ न चिकनी होय ।। —वृन्द

स्वर्ग-नरक

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखने को ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है। —ग़ालिब

(1) जिसमें लाखों बरस की हूरें हों, ऐसी जन्नत का क्या करे कोई ?
(2) दुनिया ही में मिलते हैं हमें दोज़खो-जन्नत
इंसान ज़रा सैर करे घर से निकल कर। दाग़

कोई भी व्यक्ति जो नरक से नही गुज़रा, स्वर्ग में नही पहुँच सकता।—अरविंद

उद्यम ही स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —सनाई

स्वर्ग और पृथ्वी सब हमारे ही अंदर है। हम पृथ्वी से तो परिचित हैं, पर अपने अंदर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित हैं। —गांधी

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ बनकर विश्राम करती है, वही स्वर्ग है। वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है। —जयशंकर प्रसाद

जो परोपकार में रत है, परमात्मा में जिसको विश्वास है और जो सत्य का अनुसरण करता है, उसको यह पृथ्वी ही स्वर्ग है। — बेकन

बहुत सारे लोग जितनी मेहनत से नरक मे जाते हैं, उससे आधी से स्वर्ग में जा सकते हैं। — एमर्सन

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, स्त्री कहने मे हो और मन में धन का लोभ न हो, वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा जाता है। —वेदव्यास

नरक ईश्वर का न्याय है, स्वर्ग उसका प्रेम है, पृथ्वी उसकी दीर्घकालीन यातना। —बेसेनबर्ग

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरों के तले है। —हज़रत मुहम्मद

मन अपने अन्दर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है। —मिल्टन

स्वाधीनता (दे० स्वतंत्रता भी)

एतावज्जन्मसाफल्यं यदनायत्तवृत्तिता।
ये पराधीनतां यातास्ते वै जीवन्ति के मृताः॥
(स्वाधीनता का होना ही जन्म की सफलता है और जो पराधीन होने पर भी जीते हैं तो मरे हुए कौन हैं ?) —हितोपदेश

जीवन स्वाधीनता का नाम है, गुलामी तो मौत है । —प्रेमचंद

स्वाभिमान

मानो हि महतां धनम् । (मान ही महापुरुषों का धन है ।) —चाणक्य

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा है और मृतक समान है । —अज्ञात

स्वामी

स्वामी को कभी-कभी अंधा और कभी बहरा होना चाहिए ।
—एक अरबी कहावत

मालिक जो कहे वही ठीक है । —प्रेमचन्द

स्वार्थ

(1) सुर नर मुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ।।
(2) जेहि ते कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ।।
—तुलसी

(1) स्वार्थ में आदमी बावला हो जाता है ।
(2) प्रकृति ने हमको केवल एक भाव प्रदान किया है और वह है स्वार्थ ।
—प्रेमचन्द

स्वावलम्बन

भिक्षुओ ! आत्मदीप और आत्मशरण होकर विहार करो, किसी दूसरे के भरोसे मत रहो । —दीघनिकाय

खेती पानी बीनती औ घोड़े की तंग
अपने हाथ सँवारिए लाख लोग हों संग । —घाघ

(1) करि बहियाँ बल आपनो छाड़ि पराई आस । —एक हिंदी कहावत

स्वावलम्बन सफलता की पहली सीढ़ी है । —महात्मा गाँधी

स्वास्थ्य

शीतोष्णो चैव वायुश्च त्रय: शरीरजा गुणा: ।
तेषां गुणानां साम्यं यत्तदाहु: स्वस्थलक्षणम् ।।

(सर्दी, गर्मी और वायु (कफ, वित्त और बात) ये तीन शारीरिक गुण हैं। इन तीनों का साम्यावस्था में रहना ही स्वास्थ्य का लक्षण बताया गया है।)

—महाभारत

(1) धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रधान कारण आरोग्य है।)

(2) स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए इन तीनों को ठीक-ठीक रखना चाहिए—आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य। —महर्षि चरक

अच्छा स्वास्थ्य मनुष्य की प्रथम महान सम्पत्ति है। —एमर्सन

हँसी

हँसी मन की गाँठें बड़ी आसानी से खोल देती है—मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी। —गाँधी

मुस्कान प्रेम की भाषा है। —होमर

(1) जब भी संभव हो हँसो। यह एक सस्ती दवा है।

(2) ज्ञानी को सबसे अधिक चक्कर में डालने वाली यदि कोई वस्तु है तो वह है मूर्ख की हँसी। —बायरन

जब मैं स्वयं पर हँसता हूँ तो मेरे मन का बोझ हल्का हो जाता है। —टैगोर

मुझे विश्वास है कि हर बार जब कोई मनुष्य मुस्कराता है या अधिक हँसता है तो वह अपने जीवन में वृद्धि करता है। —स्टर्न

मनुष्य बराबर वालों की हँसी नहीं हँस सकता, क्योंकि उनकी हँसी में ईर्ष्या, व्यंग्य एवं जलन होती है। —प्रेमचन्द

काहू कों हँसिये नहीं हँसी कलह कौ मूल।
हाँसी ही तैं ह्वै गयो, कुल कौरव निरमूल॥ —वृन्द

हठ

हठ कीन्हे अंतहु उर दाहू। —तुलसीदास

अति हठ मत कर हठ बढ़ै बात न करिहै कोय।
ज्यों ज्यों भीजै कामरी त्यों त्यों भारी होय॥ —वृन्द

हार

हार जीतने की पहली सीढ़ी है। जो हार चुका है वह अवश्य विजयी होगा।

—नैपोलियन

मन के जीते जीत है मन के हारे हार। —एक हिन्दी कहावत

यदि हार का हमें पता न होता तो विजय में हम प्रसन्न न होते।—कारलाइल

हास्य दे० रोना तथा हँसी

हिंदी

संस्कृत गहरो कूपजल भाखा बहता नीर।
परसत मन उज्ज्वल करै, निरमल होत सरीर॥ -कबीर

हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
—दयानन्द सरस्वती

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी-प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत-बंधु हैं। —अरविन्द

(1) हिन्दी को आप हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी, मेरे लिए तो दोनों एक ही हैं। हमारा कर्तव्य यह है कि हम अपना राष्ट्रीय कार्य हिन्दी भाषा में करें।

(2) यदि दक्षिण के प्रान्तों ने हिन्दी न अपनाई तो यह देश का दुर्भाग्य होगा और उनका भी।

(3) उर्दू को मैं हिन्दी की एक शैली मानता हूँ।

(4) राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। --महात्मा गाँधी

जिस हिन्दी भाषा के खेत में भावों की ऐसी सुनहरी फसल फली है, वह भाषा भले ही कुछ दिन यों ही पड़ी रहे, तो भी उसकी स्वाभाविक उर्वरता नही मर सकती, वहाँ फिर खेती के सुदिन आयेंगे और पौष मास में नवान्न उत्सव होगा। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिन्दी के विरोध का कोई भी आन्दोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।
—सुभाषचंद्र बोस

भारत के सभी भागों में सारी शिक्षा का एक उद्देश्य हिन्दी का पूर्ण ज्ञान भी होना चाहिए। हिन्दी का भारत की राष्ट्रभाषा होना निश्चित है। संचार-व्यवस्था और वाणिज्य की प्रगति निश्चय ही यह कार्य सम्पन्न करेगी।
—चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

(1) हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नही है, वह तो है ही ।

—क० मा० मुंशी

हिन्दू, हिन्दू धर्म

सारी आर्यजाति ही वैज्ञानिकों की जाति थी। —मैक्समूलर

वही हिन्दू है जो ईश्वर में विश्वास करता है, आत्मा को अमर मानता है तथा पुनर्जन्म, कर्म-सिद्धान्त और मोक्ष में विश्वास करता है। साथ ही अपने दैनिक जीवन में सत्य और अहिंसा के अभ्यास का प्रयत्न करता है।

—महात्मा गाँधी

मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मो का अध्ययन किया है, परन्तु मुझे उन सबमें हिन्दू धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है। इसके सामने एक दिन समस्त जगत् को सिर झुकाना पड़ेगा। —रोमाँ रोलाँ

हिन्दू अनुकूल आचरण करने वाले तथा सबके प्रति दयालु होते हैं। उनका संसार मे किसी से बैर नहीं है। —अबुल फ़ज़ल

हृदय

तीर्थानां हृदयं तीर्थं शुचीनां हृदयं शुचिः।

(तीर्थो में श्रेष्ठ तीर्थ विशुद्ध हृदय है, पवित्र वस्तुओं मे अति पवित्र भी विशुद्ध हृदय ही है।) —वेदव्यास

यदि सुन्दर मुख सिफ़ारिशी पत्र है तो सुन्दर हृदय विश्वासपत्र। —बुलवर

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय हृदय से वार्तालाप करता है। —गाँधी

हृदय मे आज जिससे तृप्ति, कल उसी से वितृष्णा है, उसमे ज्वार-भाटा चलता है, कभी उसमें उल्लास तो कभी अवसाद। —टैगोर

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओं का क्रीड़ास्थल एवं कामनाओं का आवास है।

—प्रेमचंद

तलवार के वार की अपेक्षा हृदय का आघात अधिक गहरा होता है।

—लेंडेल

होनहार, होनी

तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलइ सहाइ।
आपुन आवइ ताहि पहिं, ताहि तहाँ लेइ जाइ॥ —तुलसीदास

जो कुछ पहले से सोचा जाता है वह शायद ही होता है। जिसकी जरा भी आशा नहीं रहती वह प्रायः हो जाता है। —डिजराइली

राम न जाते हरिन सँग, सीय न रावण साथ।
जो रहीम भावी कतहुँ, होत आपुने हाथ।। —रहीम

